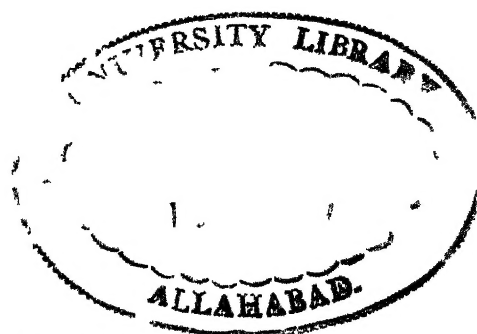
इतिहासकार मुहणोत नैणसी
तथा
उसके इतिहास-ग्रन्थ

इतिहासकार मुहणोत नैणसी
और
उसके इतिहास-ग्रन्थ



डॉ० मनोहरसिंह राणावत
सहायक निदेशक
श्री नटनागर शोध संस्थान
सीतामऊ (मालवा)

राजस्थानी ग्रन्थागार
सोजती गेट के बाहर, जोधपुर

एक मात्र वितरक
राजस्थानी ग्रन्थागार
प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता
सोजती गेट के बाहर, पहली मजिल, जोधपुर

The publication of the thesis was financially supported by the Indian Council of Historical Research, and the responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached, is entirely that of the author and the Indian Council of Historical Research accepts no responsibility for them

सस्करण १९८५

मूल्य साठ रुपये

प्रकाशक
सुखवीरसिंह गहलोत द्वारा राजस्थान साहित्य मन्दिर
सोजती दरवाजा, जोधपुर

मुद्रक कमल प्रेस, गांधीनगर द्वारा
क्रांति प्रेस, शाहदरा दिल्ली-११००३२



मनोहरसिंह राणावत व महाराजकुमार रघुबीरसिंह

प्रस्तावना

भारत के विभिन्न भौगोलिक या राजनैतिक तथा ऐतिहासिक प्रदेशो मे राजस्थान का अपना एक विशिष्ट स्थान रहा है। ईसा की १४वी शताब्दी के आरम्भ से ही वहाँ अनेकानेक राजवशो का उत्थान हुआ और उन्होने कालान्तर मे वही अपने राज्य अथवा अधिकार क्षेत्र स्थापित किये। ये ही राजवश आगे चलकर राजपूत कहे जाने लगे जिससे इस क्षेत्र ने कुछ ही युगो मे राजनैतिक महत्त्व प्राप्त कर लिया। १५वी सदी मे राठोड-शक्ति की स्थापना और विस्तार से मरुप्रदेश को नयी एकता मिली। अकबर और उसके उत्तराधिकारी मुगल बादशाहो के काल मे राजस्थान के अधिकाश राजपूत राजा और उनके वशज मुगल साम्राज्य के महत्त्वपूर्ण आधार-स्तम्भ बन गये। तब उन शताब्दियो मे राजस्थान का इतिहास केवल प्रादेशिक इतिहास ही न रहकर सम्पूण भारतीय इतिहास का महत्त्वपूण अविभाज्य अग बन गया। अत उस विषय से सम्बन्धित समकालीन या पश्चात्कालीन आधार-ग्रन्थ और महत्त्वपूण जानकारियो के सग्रह भी तत्कालीन भारतीय इतिहास के लिए महत्त्वपूण आधार-सामग्री सग्रह है। इसके परिणामस्वरूप भारतीय इतिहासकारो व सशोधको का ध्यान भी उनकी ओर विशेषरूपेण आकर्षित होना स्वाभाविक ही है। मुहणोत नैणसी राजस्थान का प्रथम और महत्त्वपूण इतिहासकार था और उसे 'राजपूताना (राजस्थान) का अबुल फज़ल' भी कहा गया है।

मुहणोत नैणसी मारवाड के शासक राव रायपाल (१४वी शताब्दी) के छोटे पुत्र मोहन का वशज था। जैन कन्या से विवाह होने पर मोहन ने जैन धर्म अगीकार कर लिया था। तदनन्तर उसके वशज जैन धर्मावलम्बी ओसवाल जाति मे सम्मिलित हो गये थे और उस कुल के मूल पुरुष के कारण ही उनको मुहणोत कहा जाने लगा। मुहणोत नैणसी के पूवज भी मारवाड राज्य की सेवा करते रहे। नैणसी का पिता जयमल भी राजा गर्जसिह के शासनकाल मे अनेक उच्च पदो पर रहा था। स्वय नैणसी को भी २७ वष की अवस्था मे ही मारवाड राज्य की सेवा करने का अवसर प्राप्त हो गया था। लगभग १९ वष तक मारवाड राज्य के विभिन्न प्रशासकीय पदो पर सेवारत रहा और अन्त मे मारवाड के सर्वोच्च

प्रशासकीय पद देश-दीवान पद पर पहुँचा था।

मुहणोत नैणसी मारवाड राज्य की सेवा मे रहते हुए ही १६४३ ई० से १६६६ ई० तक अर्थात २३ वष तक निरन्तर ऐतिहासिक जानकारी का सग्रह और ग्रन्थ-निर्माण का काय करता रहा। यो एक इतिहासकार के रूप मे भारतीय साहित्य को नैणसी की देन सवथा अनुपम है। उसकी प्रथम कृति 'मुँहता (मुहणोत) नैणसी री ख्यात' ओझा के अनुसार मुख्यतया राजपूताने और सामान्य रूप से पास-पडोस के अन्य क्षेत्रो (गुजरात, काठियावाड, कच्छ, बुन्देलखण्ड और मालवा) के इतिहास सम्बन्धी सामग्री का बहुत ही बडा सग्रह है। मेवाड आदि क्षेत्रो के सभी गुहिलोत और सीसोदिया शाखाओ, राठोडो, चौहानो की हाडा, देवडा आदि विभिन्न शाखाओ, भाटी राजवश और उसकी खापो के विस्तृत विवरण है। साथ ही पँवार, प्रतिहार, सोलकी आदि प्राय अन्य सभी महत्त्वपूण राजपूत जातियो की भी जानकारी मिलती है। चौहानो और भाटियो का तो इतना विस्तृत विवरण दिया गया है कि वैसा अन्यत्र मिलना सम्भव नही है। १४वी शताब्दी के बाद के राजपूतो के राजनैतिक इतिहास के लिए तो नैणसी की ख्यात० फारसी ग्रन्थो से कही अधिक विशेष महत्त्व की है। फारसी के इतिहास-ग्रन्थो मे राजपूतो के इतिहास सम्बन्धी जो अनेक अतराल पाये जाते है नैणसी की ख्यात० उनकी बहुत-कुछ पूर्ति करती है। ख्यात० मे तत्कालीन विभिन्न राज्यो की राजनैतिक सीमाओ सम्बन्धी जानकारी भी दी गयी है। इसके अतिरिक्त वहाँ के मानव-भूगोल की जानकारी भी है। यो नैणसी की ख्यात० सम्बन्धित इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण पूरक आधार-ग्रन्थ है।

नैणसी का दूसरा ग्रन्थ 'मारवाड रा परगना री विगत' मारवाड का इतिहास-ग्रन्थ ही नही है, अपितु वहा के सब ही परगनो की जानकारी का सव सग्रह है। इसमे राठोड राजवश के सस्थापक राव सीहा से महाराजा जसवन्तसिह के शासन-काल के १६६५ ई० तक के इतिहास का विवरण है। प्रत्येक परगना के इतिहास के साथ ही जोधपुर के शासको द्वारा नियुक्त वहाँ के विभिन्न अधिकारियो का भी उल्लेख कर दिया गया है और प्रत्येक परगने के गाँवो का भी विस्तृत वणन दिया है, जिससे मारवाड राज्य की प्रशासनिक, सामाजिक और आर्थिक परि-स्थितियो की प्रचुर जानकारी मिलती है।

इसी प्रकार मारवाड ही नही प्रत्युत राजस्थान के इतिहासकारो मे नैणसी का अपना विशिष्ट स्थान है। तथापि राजस्थान के मूधन्य इतिहासकार मुहणोत नैणसी की न तो पूरी प्रामाणिक जीवनी अब तक लिखी गयी है और न प्राथमिक महत्त्व की आधार-सामग्री से परिपूर्ण उसके इन इतिहास ग्रन्थो का अब तक कोई विस्तृत विवेचनात्मक अध्ययन किसी ने किया है। प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ मे इन उल्लेखनीय कमियो की पूर्ति करने का यह सवप्रथम प्रयास है।

गौरीशकर हीराचन्द ओझा ने रामनारायण दूगड द्वारा हिन्दी मे अनुवादित 'मुहणोत नैणसी की ख्यात' की प्रस्तावना मे, 'मुँहता नैणसी री ख्यात' के सम्पादक बदरीप्रसाद साकरिया ने उस ग्रन्थ के चौथे भाग मे और डॉ० कालिकारजन कानूनगो ने अपनी पुस्तक 'स्टडीज इन राजपूत हिस्ट्री' मे मुहणोत नैणसी की सक्षिप्त जीवनी दी है। परन्तु ये सब ही अतिसक्षिप्त तथा यत्र-तत्र त्रुटिपूण है। अतएव प्रस्तुत शोध ग्रन्थ मे नैणसी के जीवन और कार्यो का विस्तृत और प्रामाणिक विवरण दिया जा रहा है। उसके प्रशासकीय कार्यों पर प्रथम बार ही यहाँ प्रकाश डाला गया है। साथ ही उसके मृत्यु के कारणो आदि का भी निश्चयात्मक विवरण दिया गया है। इसके लिए सद्य खोज निकाले गये अनेको समकालीन और प्राथमिक महत्त्व के ग्रन्थो का प्रथम वार उपयोग किया गया है।

मुहणोत नैणसी की बौद्धिक क्षमता, उसकी इतिहास-विषयक विद्वता, अपने ग्रन्थो की रचना मे उसका मुरय उद्देश्य, तदथ उसके आयोजन, उसका इतिहास-दशन, उसकी मुख्य अभिरुचि, मानव और उसकी समस्याओ के प्रति उसका दृष्टिकोण, इतिहास के प्रति उसकी अभिव्यक्ति आदि पहलुओ पर अब तक किसी ने भी लिखने का प्रयास नही किया है। प्रस्तुत शोध ग्रन्थ मे इतिहासकार के रूप मे नैणसी का प्रथम बार ही विवेचन और विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुहणोत नैणसी के दोनो ग्रन्थ 'मारवाड रा परगना री विगत' कुछ अपूण है और 'मुँहता (मुहणोत) नैणसी री ख्यात' अपूण ही नही सवथा अव्यवस्थित भी है। अत यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि दोनो ग्रन्थो की सम्भावित परि-योजना और प्रस्तावित लक्ष्य क्या थे ? साथ ही उनकी प्रामाणिकता का पता लगाने के लिए उनमे उल्लेखित तथा अनिर्दिष्ट आधार-स्रोतो की जानकारी भी आवश्यक है। उन दोनो ग्रन्थो के हेतु अत्यावश्यक सामग्री सकलन और उनका रचनाकाल, उसके इन दोनो ग्रन्थो के पुनरुद्धार तथा प्राप्त प्रतियो के बारे मे भी अब तक इतिहासकार मौन ही रहे है। प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ मे इन सब बातो पर सविस्तार विवेचन और प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

नैणसी कृत ख्यात० और विगत०, दोनो ही ग्रन्थो मे वर्णित मारवाड के इतिहास के विभिन्न पहलुओ पर भी प्रकाश डालते हुए यह स्पष्ट कर दिया गया है कि मारवाड के इतिहास के सन्दभ मे कैसे ये दोनो ग्रन्थ एक-दूसरे के पूरक ही है। साथ ही दोनो ग्रन्थो मे वर्णित क्रमबद्ध मारवाड के इतिहास और अन्य सम-कालीन तथा प्राथमिक महत्त्व की आधार-सामग्री के परिप्रेक्ष्य मे नैणसी द्वारा प्रस्तुत विवरणो आदि की प्रामाणिकता की भी जाँच की गयी है। इसके अतिरिक्त ख्यात० मे मारवाड के अतिरिक्त अन्य राज्यो और राजपूत जातियो के जो इतिहास दिये है उनकी भी विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करने के साथ ही उसमे प्रस्तुत विवरणो की प्रामाणिकता का परीक्षण तत्सम्बन्धी अन्य विश्वसनीय

आधार-सामग्री के आधार पर किया गया है।

नैणसी के ग्रन्थो मे वर्णित ऐतिहासिक भूगोल और मानव भूगोल का अब तक कोई अध्ययन नही किया गया है। प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ मे नैणसी के ग्रन्थो मे वर्णित विभिन्न राज्यो और मारवाड के परगनो सम्बन्धी भौगोलिक जानकारी तथा राजनैतिक सीमाओ के निर्देश सम्बन्धी चर्चा भी की गयी है। साथ ही नैणसी के ग्रन्थो से ज्ञात सम्बन्धित क्षेत्रो का मानव भूगोल का विवरण दिया गया है। नैणसी रचित ग्रन्थो सम्बन्धी इन पहलुओ पर इस शोध-ग्रन्थ मे प्रथम बार ही प्रकाश डाला जा रहा है।

मध्यकालीन राजपूती राजतन्त्र विशेषतया तत्कालीन सामन्ती सगठन और मुगलकालीन पट्टादारी व्यवस्था पर लिखते समय अवश्य ही कुछ लेखको ने नैणसी के ग्रन्थो का यत्र-तत्र उपयोग किया है, कुछ ने तो उनमे दिये गये विवरणो और आकडो को लेकर अपने कुछ निष्कर्ष भी निकाले है। परन्तु वे उनमे प्रस्तुत समूचे विवरण का पूरा-पूरा उपयोग नही कर पाये है। नैणसी के कथनो के सही मन्तव्य को समझने मे कुछ भ्रान्तियो का आभास मिलता है। साथ ही मध्य-कालीन राजपूती राजतन्त्र मे राजपू की विभिन्न खांपो का विशेष महत्त्व था। परन्तु इस ओर भी सही रूप मे समुचित ध्यान नही दिया गया है। प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ मे नैणसी के ग्रन्थो मे प्राप्य विवरणो के आधार पर राजपूतो की विभिन्न खापो तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धो पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। इसी प्रकार १७वी शताब्दी मे उत्तराधिकार विषयक राजपूत सहिता, राजपूतो की सैनिक-व्यवस्था, उनकी युद्ध-प्रणाली और राजपूत समाज के अभि-शाप उनमे व्याप्त उत्कट वैर परम्परा से सम्बन्धित विवरण प्रस्तुत किये गये। इनमे से अधिकाश विषयो के बारे मे इस शोध ग्रन्थ मे प्रथम बार विवेचन किया जा रहा है।

इसी प्रकार कुछ लेखको ने मारवाड के प्रशासकीय सगठन और उसकी आर्थिक व्यवस्था के वृत्तान्त लिखने मे भी नैणसी के ग्रन्थो का उपयोग किया है। परन्तु वे नैणसी के ग्रन्थो का सही तौर से गहराई तक अध्ययन नही कर पाये अथवा उसके विवरणो को ठीक-ठीक समझकर उनका उपयुक्त उपयोग नही कर पाये, जिससे प्रशासकीय सगठन विषयक उनका विवरण अति सक्षिप्त रह गया और साथ ही शासनतन्त्र और आर्थिक व्यवस्था के सन्दर्भ मे तब प्रयुक्त होने वाली विशिष्ट शब्दावली की भ्रान्तिपूर्ण व्याख्या अथवा परिभाषा दी गयी है। प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ मे नैणसी के ही ग्रन्थो के आधार पर मारवाड के प्रशासकीय सगठन पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है, साथ ही पूर्व के लेखको की भ्रान्तियो अथवा अशुद्धियो को नैणसी के ही ग्रन्थो अथवा समकालीन अन्य प्रामाणिक ग्रन्थो के आधार पर सुधारने का प्रयास प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ मे किया गया है। यो

प्रशासकीय सगठन और आर्थिक व्यवस्था पर भी सयत्न विस्तार से आवश्यक प्रकाश डाला गया है।

मध्यकालीन राजपूत समाज की अनेक विशेषताएँ रही है जिनका प्रतिबिम्ब नैणसी के ग्रन्थो मे मिलता है। नैणसी के ही ग्रन्थो के आधार पर राजपूतो के जीवन-दशन, विवाह सम्बन्धी राजपूती अवधारणाएँ, सती प्रथा और साथ ही हिन्दुओ की धार्मिक आस्थाओ व अन्धविश्वासो तथा आमोद-प्रमोद के तत्कालीन साधनो आदि पर भी प्रस्तुत शोध-ग्र थ मे प्रथम बार ही प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत शोध-ग्र थ मे न केवल मुहणोत नैणसी के व्यक्तित्व और कृतित्व की विवेचना की गयी है, वरन् उसके ग्र थो का समालोचनात्मक अध्ययन भी किया गया है। पुन उसके ग्रन्थो के ही आधार पर मारवाड राज्य के प्रशासकीय सगठन और उसकी आर्थिक व्यवस्था, राजपूती राजतन्त्र, सामाजिक इतिहास आदि मध्यकालीन राजस्थान के जनजीवन के विभिन्न पहलुओ पर सवथा नवीन प्रकाश डालने का पूरा प्रयत्न किया गया है। मेरे शोध निर्देशक महाराज कुमार डॉ० रघुबीरसिंह की निरन्तर प्रेरणा और विवेचनात्मक सक्रिय सफल निदेशन के फलस्वरूप ही इस शोध-ग्रन्थ को इसके वतमान सवव्यापी रूप मे प्रस्तुत करना सम्भव हो पाया है। १६७१ ई० मे जब महाराज कुमार डॉ० रघुबीरसिंह ने अपने शोध-ग्रन्थ के लिये मुझे यह विषय सुझाया था तब कई दिनो तक मैं इसी असमजस मे रहा कि इस विपय पर शोध करूँ अथवा नही। क्योकि इस पर शोध करने के लिए राजस्थान के इतिहास के सब ही विभिन्न पहलुओ का व्यापक गहरा ज्ञान होना अनिवाय जान पडा। परन्तु अन्त मे राजस्थान इतिहास-लेखन के इस अति महत्त्वपूण तथापि अब तक उपेक्षित विषय पर शोध करना अपना कतव्य समझकर ही इस पर अपना काय प्रारम्भ कर दिया और मेरे गुरु महाराज कुमार डॉ० रघुबीरसिंह के सतत् प्रोत्साहन और निदेशात्मक सहयोग से ही उसे पूरा करने मे सफल हुआ हूँ। परतु तदथ उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने की औपचारिकता के द्वारा उनके अनुग्रह और गुरुआई के गौरव और गरिमा की चर्चा उचित नही जान पडती है, क्योकि जो कुछ भी मैं अब हूँ या इस क्षेत्र मे कर सका हूँ, वह सब उन्ही की देन तथा उनके आशीर्वाद का ही सुफल है। अपने सहकर्मियो डॉ० शिवदत्तदान बारहठ, श्री सुरेशचन्द्र पत्रिया और वयोवृद्ध विद्वान् श्री सौभाग्यसिंह शेखावत का भी आभारी हूँ, जिन्होने समय-समय पर अपन प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग के द्वारा इस महत् काय मे मुझे बहुत-कुछ सहायता दी है।

सितम्बर ५, १६७८ ई० —मनोहरसिंह राणावत
रघुवीर निवास, सीतामऊ (मालवा)

सकेत-परिचय

१	अकबरनामा०	—'अक्बरनामा', अबुल फजल कृत, बेवरीज कृत अग्रेजी अनुवाद, भाग १-३ ।
२	अनूप०	—'कैटेलॉग ऑफ द राजस्थानी मेन्यूस्क्रिप्ट्स इन द अनूप सस्कृत लायब्रेरी', बीकानेर, १९४७ ई० ।
३	अभिलेख०	—'मारवाड के अभिलेख', डॉ० माँगीलाल व्यास कृत ।
४	अहिल्या०	—'अहिल्या स्मारिका', १९७७ ई०, खासगी ट्रस्ट, इन्दौर ।
५	आसोपा०	—'मारवाड का सक्षिप्त इतिहास', प० रामकरण आसोपा कृत ।
६	आईन० (अ० अ०)	—'आईन-इ-अकबरी', अबुल फजल कृत, ब्लाकमन और जेरेट कृत अग्रेजी अनुवाद, भाग १-३ (द्वितीय सस्करण) ।
७	आ० ना०	—मुहम्मद काजिम कृत 'आलमगीरनामा' ।
८	उदेभाण० (ग्रन्थ सख्या १००)	—'उदेभाण चापावत री ख्यात', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या १००, 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत ।
९	ओझा उदयपुर०	—'उदयपुर राज्य का इतिहास', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत, भाग १ ।
१०	ओझा जोधपुर०	—'जोधपुर राज्य का इतिहास', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत, भाग १ ।
११	ओझा डूँगरपुर०	—'डूँगरपुर राज्य का इतिहास', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा ।
१२	ओझा निबन्ध०	—'ओझा निबन्ध सग्रह', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत, भाग १ ।

१३	ओझा बीकानेर०	—'बीकानेर राज्य का इतिहास', डॉ० गौरी-शकर हीराचन्द ओझा कृत, भाग १।
१४	ओझा सिरोही०	—'सिरोही राज्य का इतिहास', डॉ० गौरी-शकर हीराचन्द ओझा कृत।
१५	ओसवाल०	—'ओसवाल जाति का इतिहास', सुखसम्पत-राय भण्टारी, चन्द्रराज भण्डारी, कृष्णलाल गुप्त, भ्रमरलाल सोनी, बलराम रतनावत कृत।
१६	कूपावत०	—'कूपावत राठोडो का इतिहास', राव शिव-नाथसिह कृत।
१७	कविप्रिया०	—'कविप्रिया', श्री केशवदास कृत, टीकाकार —सरदार कवीश्वर, लखनऊ, १८८६ ई०।
१८	कविराजा सग्रह	—जोधपुर के कविराजा बाकीदास के वशज श्री तेजदान से प्राप्त सग्रह जो अब 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मालवा, मे सग्रहीत है, का नाम 'कविराजा बाकीदास मुरारदान सग्रह' रखा गया है।
१९	ख्यात०	—'मुहणोत नैणसी की ख्यात'।
२०	ख्यात० (प्रतिष्ठान)	—'मुहता नैणसी री ख्यात', स० बदरीप्रसाद साकरिया, भाग १-४, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।
२१	ख्यात वशावली० (ग्रन्थ सख्या ७४)	—'राठोडा री ख्यात व वशावली', कविराजा सग्रह, ग्रन्थ सख्या ७४ (हस्तलिखित) 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत।
२२	ख्यात० (वणशूर)	—'जोधपुर राज्य की ख्यात'—वणशूर महा-दान सग्रह, (हस्तलिखित) 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत।
२३	गजगुण०	—'गजगुण रूपक-बन्ध', केसोदास गाडण कृत, स० सीताराम लालस।
२४	गजेटियर (ओरछा)	—'ओरछा स्टेट गजेटियर', १९०७ ई०।

२५ गजेटियर बीकानेर० —'गजेटियर ऑफ द बीकानेर स्टेट' केप्टिन पाउलेट कृत।

२६ चूरू मण्डल० —'चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास', श्री गोविन्द अग्रवाल कृत।

२७ चौलुक्य० —'चौलुक्याज ऑफ गुजरात', अशोक मजूमदार कृत।

२८ जर्नल बंगाल० —'जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल,' कलकत्ता, (न्यू सिरीज), भाग १२, १९१६ ई०।

२९ जयपुर वंशावली० —'जयपुर के कछवाहों की वंशावली', (हस्तलिखित) 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-संस्थान, सीतामऊ', में संग्रहीत।

३० जसवन्त० —'महाराजा जसवन्तसिंह और उसका काल', डॉ० निमलचन्द्र राय कृत।

३१ जहाँगीर० —'जहांगीर का आत्मचरित' (जहाँगीरनामा), हिन्दी अनुवादक—श्री ब्रजरत्नदास।

३२ जातियाँ० —'राजस्थान की जातियाँ', प्रस्तुतकर्ता—श्री बजरंगलाल लोहिया।

३३ जालोर विगत० (छोटी) —'जालोर परगना री विगत', (छोटी बही), (हस्तलिखित) 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-संस्थान, सीतामऊ', में संग्रहीत।

३४ जालोर विगत० (बडी) —'जालोर परगना री विगत', (बडी बही), (हस्तलिखित) 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-संस्थान, सीतामऊ', में संग्रहीत।

३५ जैन सत्य० —'जैन सत्य प्रकाश', वर्ष ५, अंक १२, श्री हजारीमल बांठिया का लेख।

३६ जोधपुर ख्यात० —'जोधपुर राज्य की ख्यात', भाग १ (हस्तलिखित) 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-संस्थान, सीतामऊ', में संग्रहीत।

३७ तबकात० —'तबकात-इ-अकबरी' निजामुद्दीन अहमद कृत, अंग्रेजी अनुवाद बी० डे० कृत, भाग २।

३८ तैस्सीतोरी जोधपुर० —'डिस्क्रिप्टिव कैटेलॉग ऑफ बार्डिक एण्ड हिस्टारिकल मेन्यूस्क्रिप्ट्स', डॉ० एल० पी० तैस्सीतोरी कृत, भाग १, खण्ड १, (जोधपुर स्टेट), १९१७ ई०।

३९ तैस्सीतोरी बीकानेर० —'डिस्क्रिप्टिव कैटेलॉग ऑफ बार्डिक एण्ड हिस्टारिकल मेन्यूस्क्रिप्टस', डॉ० एल० पी० तैस्सीतोरी कृत, भाग २, खण्ड १ (बीकानेर स्टेट), १९१८ ई०।

४० दयाल० —'दयाल री ख्यात', भाग १ (हस्तलिखित) 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'नटनागर शोध-संस्थान, सीतामऊ', में संग्रहीत।

४१ दिग्दर्शन० —'श्री यतीन्द्रविहार-दिग्दर्शन', श्री यतीन्द्र विजय रचित, भाग १, १९२९ ई०।

४२ दुर्गादास —'दुर्गादास राठोड', डॉ० रघुबीरसिंह कृत।

४३ दूगड० —'मुहणोत नैणसी की ख्यात', श्री रामनारायण दूगड कृत हिंदी अनुवाद, भाग १-२, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

४४ परम्परा० —'परम्परा', भाग ३९-४०, राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी, जोधपुर।

४५ पृथ्वीराज० —'पृथ्वीराजरासो—इतिहास और काव्य', डॉ० राजमल बोरा कृत।

४६ प्रबन्ध चिन्तामणि —'प्रबन्ध चिंतामणि', श्री मेरुतुङ्गाचार्य विरचित, सम्पादक—जिनविजय मुनि, भाग १।

४७ पादशाह० —'पादशाहनामा', अब्दुलहामिद लाहोरी कृत, भाग १-२, (बिब० इण्डिका)।

४८ पॉलिटी० —'राजपूत पॉलिटी', डॉ० जी० डी० शर्मा कृत, १९७७ ई०।

४९ पोथी० (ग्रन्थ सं० १११) —'गुरा मोतीचन्दजी री पोथी', (राठोडां री ख्यात), कविराजा संग्रह, ग्रन्थ संख्या १११ (हस्तलिखित) 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-संस्थान, सीतामऊ', में संग्रहीत।

५० फुटकर ख्यात० —'फुटकर ख्यात', (हस्तलिखित), कविराजा

सग्रह, ग्रन्थ सख्या ६, 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत।

५१ फेमिली —'ब्रीफ फेमिली हिस्ट्री ऑफ मुहणोत्स' (टकित प्रनिलिपि, श्री बदरीप्रसाद साकरिया के सौजन्य से प्राप्त।)

५२ बदायूनी० —'मुन्तखबुत-तवारीख', अब्दुल कादिर इब्न मुल्क शाह (अलबदायूनी) कृत, डब्ल्यू० एच० लो कृत, अग्रेजी अनुवाद, भाग २।

५३ बही० —'जोधपुर हुकूमत री बही', (मारवाड अण्डर जसवन्तसिंह), सम्पादक—सतीशचन्द्र, रघुबीरसिंह, जी० डी० शर्मा।

५४ बाँकी० —'बाकीदास री ख्यात', सम्पादक—नरोत्तम स्वामी।

५५ बाल० —'राठोडा री वशावली', (टकित प्रति), बालमुकुन्द खीची, जोधपुर, से प्राप्त, 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत।

५६ बाहादर० —'कवि बाहादर और उसकी रचनाएँ', सम्पादक—भूरसिंह राठोड।

५७ बुन्देलखण्ड० —'बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास', गोरेलाल तिवारी कृत, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

५८ भण्डारियाँ री पोथी —'भण्डारियाँ री पोथी', (हस्तलिखित) कविराजा सग्रह, ग्रन्थ सख्या ७८, 'श्री रघुबीर लायब्रेरी' 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत।

५९ भीमसेन तारीख० —'तारीख-इ-दिलकशा', भीमसेन कृत, अग्रेजी अनुवादक—सर यदुनाथ सरकार आदि, सम्पादक—वी० जी० खोब्रेकर, १९७२।

६० महाराणा प्रताप —'महाराणा प्रताप', डॉ० रघुबीरसिंह कृत।

६१ मा० उ० —'मआसिरुल उमरा', शाहनवाज़ खा कृत, हिन्दी अनुवादक—ब्रजरत्नदास, भाग १ (१९८८ वि०)।

६२ माहेश्वरी०	—'राजस्थानी भाषा और साहित्य', डॉ० हीरालाल माहेश्वरी कृत, कलकत्ता, १९६० ई०।
६३ मीरात-इ-अहमदी (अ०अ०)	—'मीरात-इ-अहमदी', अली मुहम्मद खान कृत, अंग्रेजी अनुवादक—एम० एफ० लोखण्डवाला, १९६५ ई०।
६४ मीरात-इ-सिकन्दरी	—'मीरात-इ-सिकन्दरी', मजु कृत, अंग्रेजी अनुवादक—फजलुल्लाह लुत्फुल्लाह फरीदी।
६५ मुदियाड०	—'मुदियाड री ख्यात', (हस्तलिखित प्रतिलिपि), 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत।
६६ राजपूत०	—'लेक्चस ऑन राजपूत हिस्ट्री', डॉ० दशरथ शर्मा कृत।
६७ राजपूताना गजेटियर	—'राजपूताना गजेटियर', भाग ३-ए, इलाहाबाद, १९०९ ई०।
६८ राठोडाँ री ख्यात (ग्रन्थ सग्रह १११)	—'राठोडा री ख्यात', (हस्तलिखित), कविराजा सग्रह, ग्रन्थ सख्या १११, 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत।
६९ राठोडा री ख्यात (ग्रन्थ सख्या ७२)	—'राठोडाँ री ख्यात', (हस्तलिखित), कविराजा सग्रह, ग्रन्थ सख्या ७२, 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत।
७० राठोडा री वशावली (ग्रन्थ सख्या ३९)	—'राठोडा री वशावली', (हस्तलिखित) कविराजा सग्रह, ग्रन्थ सख्या ३९, 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत।
७१ राजस्थान०	—'प्रोसिडिंग्स् ऑफ राजस्थान हिस्ट्री काँग्रेस'।
७२ राजस्थान (आ० स०)	—'एनाल्स एण्ड एण्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान', कनल जेम्स टाड कृत, भाग १-३ (आक्सफोड सस्करण)।
७३ रु० ॥)	—आधा रुपया।
७४ रेऊ मारवाड०	—'मारवाड का इतिहास', प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत, भाग १।

७५ लालस० —'राजस्थानी सबद कोस', डॉ० सीताराम लालस द्वारा सम्पादित।

७६ लैण्ड रेवेन्यू० – -'लैण्ड रेवेन्यू अण्डर द मुगल्स', डॉ० नोमान अहमद सिद्धीकी कृत।

७७ वशावली० —'बुन्देलो की वशावली', (टकित प्रति) 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', 'श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ', मे सग्रहीत।

७८ वरदा० —'वरदा' राजस्थान साहित्य समिति बीसाऊ, राजस्थान।

७९ विगत० —'मारवाड रा परगना री विगत', सम्पादक—डॉ० नारायणसिंह भाटी, भाग १-३।

८० वीर विनोद —'वीर विनोद', कविराजा श्यामलदास कृत, भाग १-२।

८१ शाहजहा० —'शाहजहानामा', सम्पादक—डॉ० रघुबीर-सिंह और मनोहरसिंह राणावत, १९७५ ई०।

८२ सरकार० —'मुगल एडमिनिस्ट्रेशन', सर यदुनाथ सरकार कृत (चौथा सस्करण, १९५२ ई०)।

८३ सावना मारवाड० —'मारवाड का शौय युग', डॉ० सावना रस्तोगी कृत।

८४ साहित्य सस्थान —'हिन्दी-राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थो की सूची', (ए कैटेलॉग ऑफ हिन्दी-राजस्थानी मेन्यूस्क्रिप्ट्स क्लेक्टेड इन द आर० वी० साहित्य सस्थान, रिसर्च लायब्रेरी, उदयपुर) साहित्य सस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर।

८५ हिन्दुस्तानी० —'हिन्दुस्तानी', हिन्दुस्तानी एकेडेमी की तिमाही पत्रिका (जुलाई-सितम्बर, १९४१), इलाहाबाद।

८६ क्षत्रिय० —'क्षत्रिय जाति की सूची', सकलनकर्ता—ठाकुर बहादुरसिंह, बीदासर, १९७४ वि०।

८७ अम्बष्ठ सरवानी -- 'तारीख-ई-शेरशाही', अब्बास खाँ सरवानी कृत, ब्रह्मदेव प्रसाद अम्बष्ठ कृत अग्रेजी अनुवाद, १९७४ ई०।

विषय-सूची

अध्याय १

मारवाड और उसका पूर्वकालीन इतिहास

१ प्राचीन तथा पूर्व मध्यकाल मे मरुदेश अथवा मारवाड

मारवाड के प्रचलित नाम के पूव अनेक नाम प्रचलित थे। प्राचीन सस्कृत साहित्य मे 'मरु' और 'धन्व' नाम का उल्लेख मिलता है जिसका तात्पय मरुस्थली और रेगिस्तान है।[1] मरुमडल तथा मारव,[2] मरुस्थल या मरुधन्व,[3] मरुस्थली,[4] मरमेदिनी,[5] मरुकान्तर,[6] मरुधर,[7] और मरुदेश[8] आदि नाम प्रचलित रहे है। इन सबका अथ रेगिस्तान या निमल देश है। इस प्रकार प्राचीन कालीन मरुधर, मरुभूमि अथवा निमल देश मध्यकाल मे मारवाड नाम से प्रसिद्ध हो गया।

पूव मध्यकालीन भारत मे पहिले कभी इस मरु-भूमि मे कोई स्वतन्त्र या अर्ध स्वतन्त्र राज्य रहा या नही, और कभी कोई राज्य रहा हो तो उसकी क्या सीमाएँ थी, आदि के सम्बन्ध मे कही कोई जानकारी प्राप्त नही है जिससे इस मरु-भूमि प्रदेश की सीमाओ आदि के सम्बन्ध मे साधिकार सप्रमाण कुछ भी कहा

---

१ ओझा निबन्ध० १, पृ० २६ (अमरकोश, काड २, भूमिवग, श्लोक ५), श्रीमदभागवत्, प्रथम स्कध, अध्याय १०, ओझा जोधपुर०, १, पृ० १।

२ प्रबन्ध चिन्तामणि, पृ० २७५।

३ महाभारत, उद्योग पव, उन्नीसवाँ अध्याय, वन पव, दो सौ एक अध्याय, भतृहरि कृत नीतिशतक, श्लोक ४८।

४ हितोपदेश, मित्रलाभ, श्लोक ११, छोसुडी का शिलालेख जनल बगाल०, जिल्द ५६, भाग १, पृ० ८०।

५ जनल बगाल०, जिल्द ५६ भाग १, पृ० ८०।

६ वाल्मीकि रामायण युद्ध काण्ड, सग २२।

७ कवि ऊमरदान कृत ऊमरकाव्य, पृ० ३२२।

८ जयसिंह सूरि रचित नाटक 'हमीर मद मदन', (पृ० ११) के अनुसार मरुदेश की सीमा आबू राज्य तक थी।

जा सके। आगे चलकर मारवाड अथवा जोधपुर राज्य की स्थापना और उसके विस्तार के बाद 'नव कोटी मारवाड' की बात कही जाने लगी, जिसके अनेकानेक अथ और सीमाएँ बताये जाते रहे है ।

परन्तु निरतर बदलती राजनैतिक सीमाओ की उपेक्षा करते हुए उस मरुक्षेत्र का मोटे तौर पर इस प्रकार सीमाकन किया जा सकता है, जिसमे मारवाड का राजघराना अपने अधिकार क्षेत्र को विस्तृत करता गया । उसके पश्चिम मे सिंध का थरपारकर क्षेत्र और जैसलमेर के भाटियो का राज्य पडता था। उत्तर मे तब इतिहास मे सुज्ञात वे वागड और जागलू क्षेत्र पडते थे, जिन पर कालान्तर मे आधिपत्य कर बीका जोधावत ने एक सवथा विभिन्न बीकानेर राज्य की स्थापना की थी। डीडवाणा के पूव मे होती हुई मरुक्षेत्र की पूर्वी सीमा साभर भील तक पहुँचती थी । दक्षिण मे फैले हुए अडावली पहाड श्रेणी से उत्तर मे ही मरुक्षेत्र की दक्षिणी सीमा सीमित रही और परबतसर, पाली, जालोर, भीनमाल और साचोर से दक्षिण मे होती हुई वह थराड मे कच्छ के रण तक पहुचती थी। उत्तर मुगल काल मे तत्कालीन मारवाड अथवा जोधपुर राज्य ने लगभग इस समूची मरु भूमि पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था।

२ मरु-क्षेत्र मे राठोड घराने का प्रवेश और उनके आधिपत्य का क्षेत्रीय प्रभाव

राठोड वश की पूव परम्परा के सम्बन्ध मे युगो से मतमतान्तर चलते रहे हैं। आधुनिक शोधो के फलस्वरूप अब यह तो सुनिश्चित हो गया है कि राठोड राजवश कन्नौज (वाराणसी) के गाहडवाल राजघराने से सवथा विभिन्न था और जयचन्द को राठोड कहने की परम्परा लगभग ईसा की १५वी शती मे मारवाड से ही प्रारम्भ हुई थी। दक्षिणी राजस्थान मे हस्तकुण्डी (हथूण्डी) मे भी राठडो के शिलालेख मिले है, परन्तु उत्तर पूर्वी राजस्थान मे चूरू जिले के रतनगढ क्षेत्र के हुडेरा-सिद्धान ग्राम मे कुछ वष पूव प्राप्त एक देवली पर अकित लेख मे सोमवार, माच ३१, १२५३ ई० (वैशाख शुदि १, १३०६ वि०) को राठोड नरहरदास की पत्नी पोहड (भाटी) किसना के सती होने का उल्लेख है।[1] इससे ज्ञात होता है कि अपने पूर्वी मूल क्षेत्र से चलकर राठोड राजस्थान मे तब आने लगे थे।

परन्तु मारवाड क्षेत्र मे सर्वप्रथम उल्लेख सीहा सेतरामोत का ही मिलता है। पाली के निकट वीठू नामक स्थान से प्राप्त देवली-लेख से स्पष्ट पता चलता है कि सीहा पाली क्षेत्र मे ही सोमवार, अक्तूबर ६, १२७३ ई० (कार्तिक बदि १२,

---

१ चूरू मडल०, पृ० १२६।

१३३० वि०) के दिन वीरगति को प्राप्त हुआ था।[१] सम्भवत मेरो के साथ हुए युद्ध मे ही वह खेत रहा होगा। सीहा की मृत्यु के बाद भी ब्राह्मणो की सुरक्षार्थ उसके पुत्र आस्थान, सोनग और अज अपने कुटुम्बो, सैनिक साथियो आदि के साथ पाली मे ही ठहरे रहे। तब ब्राह्मणो ने उनके और उनके साथियो के जीवन-यापन के लिए समुचित आर्थिक व्यवस्था कर दी। आस्थान ने मेरो को शीघ्र ही मार भगाया और पाली मे शान्ति व्यवस्था की। इससे आस्थान का प्रभाव पाली के आस-पास के गावो मे भी बढ गया और पास पडोस के गाँवो के चौधरियो ने भी उनकी सुरक्षा करने का आस्थान से आग्रह किया और अपनी इस सुरक्षा के बदले मे नकद और अनाज देना तय किया।[२] इससे आस्थान की आय मे वृद्धि हो गयी और अपनी सेना मे लगभग ५०० घुडसवार रखकर उसने अपनी सैनिक शक्ति मे वृद्धि की।[३]

आस्थान की सैनिक शक्ति बढ जाने और आस-पास के क्षेत्र पर उसका प्रभाव स्थापित हो जाने के बाद उसकी इच्छा बलवती हुई कि क्यो न अपने स्वतन्त्र शासन की स्थापना की जावे। उस समय खेड पर राजा प्रतापसी गुहिल का शासन था। आस्थान ने सवप्रथम उसकी पुत्री के साथ विवाह किया। तदनन्तर गुहिल राजा प्रतापसी के डाभी वशीय प्रधान को अपने पक्ष मे कर उसके ही सहयोग से धोखे से गुहिलो का दमन कर खेड क्षेत्र पर अधिकार जमा लिया।[४]

---

१ ओझा जोधपुर०, १, प० १५७, रेऊ मारवाड०, १, प० ४०। प्राय सभी ख्यातो और विगत० मे थोडी बहुत भिन्नता के साथ सीहा का कन्नौज से द्वारका की तीर्थ यात्रा पर जाना, द्वारका से लौटते हुए मार्ग मे लाखा फूलाणी के विरुद्ध पाटण के शासक सोलकी मूलराज की सहायता करते हुए लाखा फूलाणी को मारकर मूलराज को विजय दिलवाना, तथा बाद मे उसकी बहिन (कुमारी) राजा से विवाह कर कन्नौज लौट जाने का उल्लेख मिलता है। विगत०, १, प० ५-८, ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २६६ ७५, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० १० १५, उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० ९ क १० ख, राठोडा री ख्यात (ग्रन्थ स० १११), प० ३८७ ख ३८८ ख, पोथी० (ग्रन्थ स० १११), प० ४०६ क, ख्यात० (वणशूर), प० १२ ख १३ क। परन्तु बीठू (पाली से १४ मील उ०पू०) मे प्राप्त लेख से निश्चितरूपेण यह स्पष्ट है कि सीहा की मृत्यु पाली क्षेत्र मे ही हुई। अत वह कन्नौज तो कदापि नही लौटा था। सम्भव है कि द्वारका से लौटते हुए सीहा पाली मे ठहरा हो और तब मेरो से युद्ध करता हुआ वह मारा गया। परन्तु तब तक गुजरात के मूल चौलुक्य राजवश का अन्त हो चुका था और उस समय उत्तरकालीन बाघेला राज घराने का अर्जुनदेव गुजरात पर शासन कर रहा था। चौलुक्य०, प० १८० ८१।

२ विगत०, १, प० ९ ११, जोधपुर ख्यात०, १ पृ० १५ १६, ख्यात० (वणशूर), प० १३ क-ख।

३ विगत०, १, प० १२।

४ विगत०, १, प० १२ १४, जोधपुर ख्यात०, १, प० १६ १७, उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० १० ख, ख्यात० (वणशूर), प० १३ क, राठोडा री ख्यात (ग्रन्थ स०

इस प्रकार खेड के १४० गाँवो पर आस्थान का अधिकार हो गया। तदनन्तर आस्थान ने कोढाणे के १४० गाँवो पर और इनके अतिरिक्त अन्य और १४० गाँवो पर अधिकार कर लिया, जिन पर ईसा की १७वी शती के मध्य मे दवराजोतो, गोगादेओतो और चाहडदेओतो का अधिकार था। यो कुल ४२० गाँवो पर आधिपत्य जमाकर राठोड राजघराने ने उस सारे क्षेत्र मे अपना प्रभाव स्थापित कर लिया।[१] आस्थान का उत्तराधिकारी धूहड हुआ, जिसकी मृत्यु १३०९ ई० (१३६६ वि०) मे हुई थी।[२] आस्थान के बाद दूसरी पीढी मे रायपाल हुआ था। उसने बाहडमेर पर अधिकार कर वहा के ५६० गावो का राठोड घराने के आधिपत्य क्षेत्र मे सम्मिलित कर लिया।[३] रायपाल के बाद क्रमश कान्हडराव, जाल्हण, छाडा, तीडा, सलखा और कान्हडदे महेवा के अधिकारी हुए।[४] माला (मल्लीनाथ) सलखावत जालोर के खान (सम्भवत किसी क्षेत्रीय मुसलमान अधिकारी) की सहायता से कान्हडदे को मरवा कर स्वय खेड-महेवा की गद्दी पर बैठा। उस समय तक महेवा और बाहडमेर भी उसके अधिकार मे आ गये थे।[५] माला ने सीवाणा पर भी अधिकार कर उसे अपने भाई जैतमाल का दे दिया।[६] मल्लीनाथ प्रभावशाली शासक हुआ था। इसी कारण उसक बाद उसका यह आधिपत्य क्षेत्र 'मालानी' कहा जाने लगा।[७]

३ क्षेत्रीय राजनैनिक इकाई के रूप मे मारवाड राज्य का उद्भव और विकास

महेवा बाहडमेर पर मल्लीनाथ का अधिकार था और अपने छोटे भाई वीरम को जीवन-यापन के लिए मल्लीनाथ ने पाच-सात गाव दे दिये थे। परन्तु उसमे

---

१११), प० ३८८ ख, पोथी० (ग्रन्थ स० १११), प० ४०६ ख, नगर (वीरमपुर) मे प्राप्त महारावल जगमाल के मगलवार, फरवरी २३, १६३० ई० (चत्र बदि ७ १६८६ वि०) के अभिलेख के अनुसार सीहा के पुत्र और आस्थान के भाई सोनग ने खेड विजय किया था। अत यह सम्भव है कि आस्थान के आदेश से सोनग ने खेड पर आक्रमण कर उस पर अधिकार किया हो। अभिलेख०, प० ६६ ६७, रेऊ मारवाड०, १, प० ४७ पा० टि०।

१ विगत०, १ प० १४, २, प० २६९, ख्यात० (वणशूर) प० १३ ख।
२ इडियन ऐंटिक्वेरी, ४०, प० ३०१, ओझा जोधपुर० १ प० १६७।
३ विगत०, १ प० १५, ख्यात० (वणशूर), प० १४ ख, जोधपुर ख्यात०, १, प० २०।
४ विगत०, १, प० १५, उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० ११ क ११ ख, जोधपुर ख्यात०, १, प० २१ २४।
५ विगत०, १, प० १६, ख्यात० (वणशूर), प० १५ क, जोधपुर ख्यात०, १, प० २४ २५
६ विगत०, १, प० १६।
७ राजपूताना गजेटियर, भाग ३ अ, प० ५४।

वीरम को सन्तोष नही हुआ और उसने महेवा क्षेत्र के बाहर लूट खसोट कर अपनी शक्ति बढा ली। अत मल्लीनाथ के मन मे वीरम के प्रति ईर्ष्या होने लगी, जिसके फलस्वरूप अन्त मे वीरम को महेवा छोडकर जागलू क्षेत्र मे जोइयो के क्षेत्र मे जाना पडा।[1] परन्तु उनके अधिकार-क्षेत्र पर अपना अधिकार करने के प्रयत्नो मे जोइयो के साथ हुए युद्ध मे वीरम वीरगति को प्राप्त हो गया।[2]

वीरम के मरने के बाद उसके पुत्र चूडा का प्रारम्भिक जीवन अभावग्रस्त स्थिति मे ही व्यतीत हुआ।[3] वह माला के यहा नौकरी करने लगा।[4] परन्तु चूडा भी अपने पिता की ही भाति महत्वाकाक्षी था। अत शीघ्र ही माला (मल्लीनाथ) के प्रधान भोपा को अपने पक्ष मे कर उसने अपना स्थानान्तरण सालोडी चौकी पर करवा लिया। तदनन्तर वही से चूडा धीरे-धीरे अपनी शक्ति बढाने लगा।[5]

इधर उन्ही दिनो ईंदा पडिहारो ने मडोर पर अधिकार कर लिया था। तब मडोर के एक ओर नागोर, दूसरी ओर दिल्ली, और तीसरी ओर मेवाड की शक्तिया थी। इन शक्तियो से मडोर को बचा सकने मे स्वय को असमथ समझ-कर पडिहारो ने नवोदित चूडा के साथ अपनी लडकी का विवाह कर मडोर उसको दे दिया।[6] इस प्रकार वीरम सलखावत के पुत्र चूडा के मडोर पर अधिकार करने के साथ ही क्षेत्रीय राजनैतिक इकाई के रूप मे मारवाड राज्य का उद्भव और विकास प्रारम्भ हुआ।

मडोर पर चूडा का अधिकार होने के साथ ही वहा राठोड राज्य का श्रीगणेश हो गया। चूडा ने अपने अधिकार-क्षेत्र मे शान्ति और व्यवस्था स्थापित की। वह मडोर क्षेत्र से ही पूर्ण सन्तुष्ट नही था। अत वह शीघ्र ही अपने राज्य के विस्तार के प्रयत्न मे लग गया। चूडा ने तब नागोर और डीडवाणा पर भी

---

१ विगत०, १, पृ० १६ २०, उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० ११ ख, ख्यात० (वणशूर), प० १५ ख १६ क।

२ विगत०, १, प० २०, जोधपुर ख्यात०, १, प० २७ २८, राठोडा री ख्यात (ग्रन्थ स० १११), प० ३८६ ख ३९० क, ख्यात० (वणशूर), प० १६ ख, बाकी०, बात स० ५०, प० ६।

३ विगत०, १, प० २० २१, जोधपुर ख्यात०, १, प० २८ २९, ख्यात० (वणशूर), प० १६ ख।

४ विगत०, १, पृ० २१, उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० ११ ख, ख्यात० (वणशूर), प० १६ ख, जोधपुर ख्यात०, १ प० २९, विगत० मे दी गयी गाँवो की सूचियो मे सालोडी नाम के गाँव का कोई उल्लेख नही है।

५ विगत०, १, पृ० २१ २२, उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० १६ ख-१७ क, जोधपुर ख्यात०, १, प० २९।

६ विगत०, १, प० २३ २५, उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० ११ ख, १७ क, १७ ख, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ३०, ख्यात० (वणशूर), प० १७ क।

अधिकार कर लिया था। राज्य विस्तार के प्रयत्न मे ही चूडा का भाटियो के साथ भी युद्ध हुआ, जिसमे भाटियो ने मुलतान के सलीम खाँ की सहायता प्राप्त की थी। सन् १४२३ ई० मे हुए इसी युद्ध मे चूडा मारा गया।[१]

चूडा के बाद क्रमश राव कान्हा, राव सत्ता और राव रणमल ने मडोर पर शासन किया।[२] चित्तौड मे रणमल की हत्या के बाद उसके पुत्र जोधा को वहाँ से भागना पडा और राणा कुभा ने राठोडो के आधीन मडोर आदि पूरे क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। मडोर पर पुन अधिकार करने के लिए जोधा बारह वष तक निरन्तर अपनी सैन्य शक्ति बढाता रहा और अन्त मे मेवाड के अधिकारियो को पराजित कर उसने १४५३ ई० मे मडोर पर अधिकार कर लिया।[३]

मडोर पर अधिकार करने के बाद चौकडी, कोसाणा आदि पर नियुक्त राणा के थाणो पर आक्रमण कर जोधा ने सोजत और मेडता क्षेत्रो पर भी अधिकार कर लिया।[४] कुछ समय बाद जैतारण पर भी उसका अधिकार हो गया।[५]

इस प्रकार राव जोधा ने राठोड राज्य की पुनर्स्थापना ही नही की अपितु मडोर, मेडता, सोजत, जैतारण और जागलू पर अधिकार कर अपने राज्य-क्षेत्र का बहुत विस्तार किया।[६] और मारवाड राज्य को स्थायित्व दिया। मारवाड राज्य के इस विस्तार मे जोधा के अनेको छोटे भाई बेटो ने उसका पूरा पूरा साथ दिया था। अत जिन जिन क्षेत्रो मे विशेष रूपेण सक्रिय रहकर, जहा उन्होने राठोड आधिपत्य स्थापित किया था, वे क्षेत्र जोधा ने उन्ही के अधिकार मे रहने दिये,[७] जिससे समूचे मारवाड राज्य मे अनेको अध-स्वतन्त्र राठोड राज्यो की तब स्थापना हो गयी, जिसका परिणाम आगे चलकर हानिकारक ही हुआ। तब इस प्रकार स्थापित राठोड इकाइयो मे बीकानेर राज्य इतना शक्तिशाली हो गया था कि शीघ्र ही वह एक स्वतन्त्र स्थायी राज्य बन गया।

राव जोधा के मरने के बाद क्रमश राव सातल, राव सूजा, राव गागा और

---

१ उदेभाण० (ग्र थ स० १००), प० १२ क १२ ख, जोधपुर ख्यात०, १, प० ३१ ३२, ख्यात० (वणशूर), प० १७ ख १८ क।

२ विगत०, १, प० २५ २७।

३ विगत०, १, प० २६, ३४, उदेभाण० (ग्रथ स० १००), प० १३ ख, १५ क, १८ क, १८ ख, जोधपुर ख्यात०, १, प० ३८, बाकी०, बात स० ६६, ७०, प० ७, ख्यात० (वणशूर), प० १६ क ख, २१ ख २२ ख।

४ विगत०, प० ३४ ३५, उदेभाण० (ग्र थ० स० १००), प० १८ क, बाकी०, बात स० ७२, प० ७, ख्यात० (वणशूर), प० २२ ख २३ क।

५ विगत०, १, प० ३६, ख्यात० (वणशूर), प० २३ क।

६ विगत०, १, प० ३८, ख्यात० (वणशूर), प० २२ ख २३ क, २३ ख।

७ विगत०, १, प० ३८ ४०, ख्यात० (वणशूर), प० २४ क, २४ ख।

राव मालदेव जोधपुर की गद्दी पर बैठे। राव सूजा ने जैतारण पर अधिकार कर वह क्षेत्र अपने पुत्र ऊदा को दे दिया था। सूजा से पूव तथा तत्काल बाद के राठोड शासको के शासनकाल मे राज्य-विस्तार नही हुआ।[१]

राव मालदेव जब गद्दी पर बैठा तब उसके सीधे अधिकार मे केवल जोधपुर और सोजत ही थे।[२] मालदेव राज्य विस्तार की नीति मे विश्वास करता था। अत उसने अजमेर, साचोर, सीवाणा, डीडवाणा, जालोर, फलोधी, पोहकरण, जहाजपुर, बदनोर, भाद्राजण और बीकानेर आदि पर अधिकार कर लिया।[३] परन्तु उसकी इस एकाधिपत्य नीति के कारण उसका जो उत्कट विरोध हुआ, उस कारण कई एक क्षेत्रो पर उसका अधिकार स्थायी नही हो पाया। उसे आन्तरिक विद्रोहो के साथ ही शेरशाह के आक्रमण का भी सामना करना पडा।[४] परन्तु शेरशाह की मृत्यु के बाद तत्परता के साथ शीघ्र ही मालदेव ने स्थिति सँभालकर बहुत कुछ पर पुन अधिकार कर लिया। सन् १५५६ ई० मे दिल्ली पर अकबर का आधिपत्य होने के साथ ही उत्तरी भारत मे मुगल साम्राज्य की पुनस्थापना हो गयी। तब मुगल सेनाएँ अजमेर क्षेत्र मे जा पहुची और आस पास के परगनो पर मुगल अधिकार स्थापित करने लगी। तथापि मालदेव के अन्त समय मे उसके अधिकार मे जोधपुर, सोजत, पोहकरण, सीवाणा और जालोर परगने रह गये थे।[५] अपने शासनकाल मे मारवाड राज्य की सुरक्षाथ मालदेव ने अनक दुर्गो की मरम्मत करवाई और कुछ नवीन दुर्गों का निर्माण भी करवाया था।[६]

मालदेव के समय मे मारवाड राज्य अपने विकास और विस्तार की चरम सीमा पर पहुँच गया था। मालदेव के मरने के साथ ही मारवाड राज्य के इतिहास मे एक अवनतिपूण दुखद अध्याय प्रारम्भ हो गया। मालदेव के बाद उसका तीसरा पुत्र और मनोनीत उत्तराधिकारी राव चन्द्रसेन गद्दी पर बैठा और

---

१ विगत०, १, प० ४० ४१, ख्यात० (वणशूर), प० २५ ख २७ ख, जोधपुर ख्यात०, १, प० ४७ ४८, ५८ ६६।

२ विगत०, १, प० ४३, ख्यात० (वणशूर), प० २८ क।

३ विगत०, १, प० ४३ ४५, जोधपुर ख्यात, १ प० ७८, उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० २१ क, २३ क, २३ ख, ख्यात० (वणशूर), प० २८ क २८ ख, पोथी० (ग्रन्थ स० १११), प० ४०७ क ४०७ ख, राठोडा री ख्यात (ग्रन्थ स० १११), प० ३७९ ख ३८० क, बाकी०, बात स० १२०, १२३, १२४, १२५, १३६, १४७, १५२, प० १२ १५।

४ ख्यात० (वणशूर), प० २५ ख २७ क, जोधपुर ख्यात०, १, प० ६८ ७३, बाकी०, बात स० १२७, १२८, १३६, प० १२, १३।

५ विगत०, १, प० ६७।

६ विगत०, १, प० ४५, उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० २३ ख, ख्यात० (वणशूर), प० २९ क, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ७८ ७९।

उसके साथ ही जोधपुर राज्य मे आन्तरिक विरोध और विद्रोह बढने लगा, जिससे मारवाड मे अशान्ति फैल गयी। चन्द्रसेन के भाई राम, उदयसिह और रायमल ने चन्द्रसेन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।[१] इससे दिल्ली मे पुनर्स्थापित मुगल साम्राज्य ने पूरा लाभ उठाया।

यद्यपि मालदेव के जीवन काल मे ही मुगल सेनाओ ने १५५८ ई० मे जैतारण और १५६२ ई० मे मेडता पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था[२] परन्तु अब चन्द्रसेन के विरोधी भी सहायता की याचना करते हुए मुगल सम्राट या उनके क्षेत्रीय अधिकारियो के पास पहुँचने लगे। राम ने चन्द्रसेन के विरुद्ध मुगल सेना की सहायता प्राप्त की, जिसके फलस्वरूप दिसम्बर ३, १५६५ ई० को अकबर की सेना का जोधपुर पर अधिकार हो गया और चन्द्रसेन को सदैव के लिए जोधपुर छोडकर चला जाना पडा।[३] जोधपुर प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करते रहने पर भी चन्द्रसेन को कोई सफलता नही मिली। उदयसिह ने सन् १५७१ ई० मे ही शाही मनसब स्वीकार कर लिया था। अत विद्रोही विस्थापित राव चन्द्रसेन की मृत्यु के बाद अकबर ने सन १५८३ ई० मे जोधपुर परगना उदयसिह को देकर उसे 'राजा' की पदवी दी।[४] इस प्रकार जोधपुर राज्य की पुनर्स्थापना हुई। परन्तु पुनर्स्थापित यह जोधपुर राज्य स्वतन्त्र राज्य न होकर मुगल साम्राज्य का आश्रित अध-स्वतन्त्र राज्य बन गया, जो तदनन्तर कोई ९५ वष तक निरन्तर विस्तृत और शक्तिशाली ही होता गया।

४ मारवाड मे राठोड राजघराने के इतिहास-विषयक प्रारम्भिक आधार-सामग्री

राव सीहा के साथ ही मारवाड मे राठोड राजघराने का प्रवेश हुआ। इस घराने के इतिहास से सम्बन्धित सवप्रथम सीहा का देवली (स्मारक) का लेख मिलता है। तदनन्तर धूहड, जोधा, सूजा, गागा, मालदेव और चन्द्रसेन आदि मारवाड के विभिन्न शासको के समय के अभिलेख उपलब्ध है,[५] जो मारवाड के

---

१ उदभाण० (ग्रथ स० १००), प० २५ ख २६ ख, २७ ख, बाकी०, बात स० १९६, २०२, २०३, पृ० २० २१, ख्यात० (वणशूर), प० ३२ क ख, जोधपुर ख्यात०, १, प० ८५।

२ अकबरनामा०, २, प० १०२ ३, २४८, तबकात०, २, प० २५८, विगत०, १, पृ० ४९५, ६५, ख्यात० (वणशूर), प० २९ क, ३० क ख, जोधपुर ख्यात०, १, प० ७६ ७७, ७७ ७८।

३ उदेभाण० (ग्र थ स० १००), प० २६ क ख, ख्यात० (वणशूर), प० ३२ ख ३३ क, ३४ क।

४ जोधपुर ख्यात०, १, प० ९७, ख्यात० (वणशूर), प० ३७ क।

५ अभिलेख०, पृ०५४, ६३, ६६ ७०, ७१, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ८२, ८३, ८४।

इन राठोड शासको के शासनकाल के निर्धारण विषयक प्रारम्भिक सामग्री के रूप मे उपयोगी हैं। परन्तु इन प्राप्य अभिलेखो से मारवाड के राठोडो की अति सक्षिप्त जानकारी ही मिलती है। इनके अतिरिक्त राठोड शासको द्वारा तब दिये गये ताम्रपत्र भी ऐतिहासिक जानकारी के लिए महत्वपूण है, परन्तु उन प्रारम्भिक शासको के ताम्रपत्र अब तक उपलब्ध नही हो सके हैं। नैणसी ने विगत० मे सासण गाँवो के विवरण मे महेवा के राव मल्लीनाथ और जगमाल तथा मडोर के राव चूडा, राव सत्ता, राव रणमल, राव जोधा, राव सातल, राव सूजा, राव गागा, राव मालदेव और चन्द्रसेन द्वारा सासण मे दिये गये गावो का उल्लेख अवश्य किया है।[1] अनुमान यही होता है कि यह विवरण लिखते समय नैणसी ने सासण गावो सम्बन्धी तब प्राप्य ताम्रपत्रो आदि अभिलेखो का उपयोग किया होगा, जो अब प्राप्य नही है। मारवाड के इन पूववर्ती पिछले शासको द्वारा दिये गये जागीर पट्टो का उल्लेख मिलता है। मालदेव द्वारा दिये गये एक पट्टे की प्रतिलिपि नैणसी ने विगत० मे सकलित की है।[2] ऐसे कुछ जागीर पट्टो की १८वी शती की प्रतिलिपियाँ राजस्थान राज्य अभिलेखागार मे सुलभ पट्टा-बहियो मे सग्रहीत है। परन्तु उनसे उन विशिष्ट जागीरो के प्रदान किये जाने के अतिरिक्त मारवाड राज्य के इतिहास सम्बन्वी और कोई उपयोगी ऐतिहासिक जानकारी नही मिलती है।

१६वी शताब्दी तक के मारवाड के राठोडो के इतिहास-विषयक समकालीन कोई ख्यात अथवा क्रमबद्ध ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध नही है। रावल मल्लीनाथ (महेवा) के वीरतापूण कार्यो और जीवन पर यत्किंचित भी प्रकाश डालने वाला जो काव्यग्रथ 'वीरमायण' उपलब्ध है उसके सम्बन्ध मे यही मान्यता है कि वह १६वी शती के अन्तिम वर्षों मे ही लिपिबद्ध किया गया था।[3] स्पष्टतया यह काव्य बहुत समय तक कठ पर ही श्रुतिनिष्ठ काव्य के रूप मे चलता रहा, जिससे उसका आदिरूप कालान्तर मे बहुत-कुछ बदला होगा, यह तो सुनिश्चित ही है।[4] इसके अतिरिक्त गाडण पसायत ने राव रणमल और राव जोधा के वीर कृत्यो की प्रशसा मे स्फुट काव्य की रचना की थी।[5] गाडण पसायत की प्रमुख रचनाएँ 'राव रिणमल रो रूपक' और 'गुण जोधायण' है। प्रथम रचना मे राव रणमल की कीर्ति और महाराणा कुम्भा द्वारा उसकी हत्या का वणन है और दूसरी डॉ० हीरालाल माहेश्वरी के अनुसार 'राव जोधा की प्रशसा मे लिखा गया वीर रस का छोटा-सा

१ विगत०, १, पृ० ३६५ ६६, २३६ ४३।
२ विगत०, २, पृ० ६१ ६२।
३ बाहादर०, पृ० २५ २६।
४ बाहादर०, पृ० २६।
५ माहेश्वरी०, पृ० ८७।

काव्य है।"[1] डॉ० हीरालाल माहेश्वरी ने अनुमान के आधार पर दोनो रचनाओ का रचनाकाल १४२३ से १४७४ ई० के बीच माना है,[2] परन्तु अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर मे उपलब्ध हस्तलिखित प्रति[3] १७वी शताब्दी के मध्य मे ही लिखी गयी होगी।[4] अत स्पष्टतया यह कहा जा सकता है कि ये रचनाएँ भी प्रथम बार कब लिपिबद्ध की गयी होगी यह कहना सम्भव नही है। बारहठ आसा कृत 'गुण चौरासी रूपक ब ध' की रचना मालदेव के समय मे हुई थी।[5] इसमे कुँवर चन्द्रसेन के गुणो का वणन किया गया है। डॉ० हीरालाल माहेश्वरी ने इसे छ द साहित्य की महत्वपूण कृति माना है।[6] इनके अतिरिक्त कई और स्फुट कवित्त, छन्द आदि हैं, जिनमे शासको के बारे मे उल्लेख अवश्य मिलते हैं। परन्तु ये सब स्फुट रचनाएँ है, जिनमे किन्ही ऐतिहासिक घटनाओ आदि का व्यवस्थित विवरण नही है, इसलिए उनको प्रामाणिक ऐतिहासिक आधार नही बनाया जा सकता है।

मालदेव के समय मे भटयाणी रानी उमादे के साथ ज्योतिषी चडू पुष्करणा मारवाड दरबार मे पहुचा था, जिसे कुछ युगो बाद मोटा राजा उदयसिह ने 'मोडी बडी' गाव जागीर मे दिया था।[7] उसने चडू पचाग ही नही चलाया अपितु उसने मारवाड के राजघराने के साथ ही अनेक सुविख्यात पुरुषो की जन्म-कुडलियाँ भी एकत्र करने की प्रथा प्रारम्भ की थी। सम्भवत मालदेव या उसके बाद की मुख्य ऐतिहासिक घटनाओ के तिथि-माह-सवतों का ब्यौरा भी ये ज्योतिषी तब से रखने लगे थे, जिनका उपयोग नैणसी ने भी किया है।[8]

परन्तु कालान्तर मे लिखी जाने वाली ख्यातो मे उपयोग की गयी इस पूव-कालीन इतिहास की आवश्यक जानकारी अथवा कई विशिष्ट घटनाओ के सवतो-माह तिथियो आदि का ब्यौरा कहाँ किसने सग्रहीत किया और मुगल आधिपत्य काल (१५६३-१५८३ ई०) मे उन्हे कैसे सुरक्षित रखा—इसका सही पूरा अनुमान लगा सकना अब सम्भव नही रह गया है। ऐसे कुछ सम्भाव्य स्रोतो की ओर नैणसी ने यत्र-तत्र सकेत अवश्य किया है, जिनका विवेचन आगे यथास्थान किया गया है, परन्तु वे सब बहुत ही सक्षिप्त और सीमित है, तथापि इस प्रकार

---

१ माहेश्वरी०, पृ० ८८ ८ ।
२ माहेश्वरी०, पृ० ८८।
३ अनूप०, ग्र थ स० १३६।
४ तैस्सीतोरी बीकानेर० (भाग २, खड १), पृ० ५।
५ विगत०, १, पृ० ५३, माहेश्वरी०, पृ० १२३।
६ माहेश्वरी०, पृ० १२३।
७ गहलोत०, पृ० १३३ ३४, विगत०, १, पृ० २३७।
८ विगत०, १, पृ० ६८।

प्राप्त जानकारी या ब्यौरो का महत्त्व किसी प्रकार कम नही होता है, क्योकि १७वी शती मे लिखी गयी ख्यातो आदि रचनाओ के लेखको ने उसका भरपूर सदुपयोग किया था, तथा उन्ही के आधार पर तब मारवाड आदि क्षेत्रो का प्रामाणिक इतिहास-लेखन सम्भव हो सका था।

५ अबुल फजल का इतिहास-लेखन तथा मारवाड के इतिहास-लेखन पर उसका प्रभाव

मारवाड मे राठोड राज्य की स्थापना से लेकर अकबर के शासनकाल तक के मारवाड राज्य का तब तक कभी कोई क्रमबद्ध इतिहास-ग्रन्थ नही लिखा गया था। जैसा कि पूव मे लिखा जा चुका है कि १६वी शताब्दी के अतिम दशको मे ही जोधपुर के शासक रावल मल्लीनाथ, राव रणमल और राव जोधा से सम्बन्धित, स्फुट प्रशस्ति-काव्य लिखे गये थे, और राव चन्द्रसेन की प्रशसा मे प्रथम काव्य-ग्रन्थ लिखे जाने का उल्लेख मिलता है। इसमे चन्द्रसेन के चरित्र मे पाये जाने वाले गुणो का ही वर्णन है। तदनन्तर ईसा की १७वी शती के प्रारम्भ मे अपने आश्रयदाता मारवाड के राजा गर्जसिह की गुणगरिमा के चित्रण हेतु कवि केशवदास गाडण ने इतिहास-काव्य 'गजगुण रूपक बन्ध' की रचना १६२४ ई० मे की थी।[1] यही प्रथम ऐतिहासिक काव्य है जो मारवाड के तत्कालीन शासक गर्जसिह के जीवन के पूर्वार्द्ध पर पूरा प्रकाश डालता है। परन्तु १७वी शताब्दी के मध्य से पहिले मारवाड के इतिहास से सम्बन्धित कोई क्रमबद्ध ख्यात अथवा ऐतिहासिक काव्य-ग्रन्थ की रचना किये जाने का कोई उल्लेख या जानकारी भी नही मिलती है।

इस काव्य के प्रारम्भ मे कवि ने सीहा से लेकर गर्जसिह के पूव तक के सभी राठोड शासको की केवल क्रमबद्ध नामावली दे दी है। तदनन्तर राजा गजसिह के ज म से लेकर इस काव्य की समाप्ति तक की ऐतिहासिक घटनाओ का विस्तृत विवरण इसमे दिया गया है। परन्तु गर्जसिह के प्रारम्भिक जीवन-काल का वणन करते हुए उसी सन्दभ मे उसके पिता सूरसिह की गतिविधियो तथा मारवाड राज्य सम्बन्धी अन्य महत्वपूण बातो का भी यथास्थान उल्लेख किया है। इस प्रकार १७वी शती के प्रारम्भ से मारवाड मे इतिहास-ग्रन्थ की लेखन मे नयी परम्परा का प्रारम्भ हुआ था।

राजस्थान मे महाराणा कुम्भा के समय मे अनेक लम्बे-लम्बे शिलालेख अकित किये गये थे, जिनसे मेवाड के पूर्ववर्ती इतिहास पर प्रकाश अवश्य पडता है, परन्तु उसके शासनकाल मे भी मेवाड के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक राजघराने या स्वय

---

१ गजगुण०, प० २४३, छ० २०।

महाराणा कुम्भा की जीवनी को लेकर लिखे गये किसी भी समकालीन या पश्चात्कालीन इतिहास-ग्रन्थ का कही कोई उल्लेख नही मिलता है। आश्चय का विषय यह है कि महाराणा सागा जैस प्रतापी शासक पर भी ऐतिहासिक काव्य-ग्रन्थ की रचना करन का किसी ने नही सोचा।

ईसा की १३वी शती मे भारत मे मुसलमान सल्तनत की स्थापना के समय मे ही फारसी मे ऐतिहासिक ग्रन्थो की रचना की परम्परा दिल्ली मे प्रारम्भ हुई, कालान्तर मे जिसका अनुसरण सुदूरस्थ पश्चात्कालीन क्षेत्रीय सल्तनतो की राजधानियो अथवा विद्या-केन्द्रो मे भी होने लगा। राजस्थान के मेवाड राज्य से लगी हुई गुजरात और मालवा की मुसलमानी सल्तनतो मे ईसा की १५वीं शती मे फारसी मे कई इतिहास-ग्रन्थ लिखे गये थे, परन्तु तब भी यह परम्परा मेवाड या मारवाड म प्रारम्भ हुई नही जान पडती है। क्योकि विद्यामूलक या सास्कृतिक धरातल पर तब मुसलमानी सल्तनतो के साथ कभी कोई आदान प्रदान की बात वहा नही हुई।

ईसा की १६वी शती के उत्तरार्द्ध मे राजस्थान के क्षेत्रीय राज्यो पर मुगल आधिपत्य हो जाने के बाद वहाँ के शासक, उनके प्रमुख सरदार, अधिकारी या चारण कवि आदि शाही दरबार और मुसलमानी राज्यो की विभिन्न गतिविधियो से परिचित ही नही होने लगे अपितु कालान्तर मे उनसे प्रभावित होकर वे उनका अनुसरण भी करने लगे। ऐतिहासिक काव्य-ग्रथ लेखन की परपरा भी यो तदनतर ही राजस्थान के इन क्षेत्रीय राज्यो मे पुन प्रारभ होकर कालातर मे प्रस्फुटित हुई।

मोटा राजा उदयसिंह को १५८३ ई०[1] मे शाही मनसब मे जोधपुर परगने की प्राप्ति के साथ ही मारवाड मे पुन शान्ति स्थापित हो गयी थी और इस प्रकार पुनस्थापित मारवाड राज्य का मुगल साम्राज्य से निकट सम्पर्क स्थापित हो गया। सन् १५८७ ई० मे अपनी कन्या मानीबाई का विवाह उदयसिंह ने अकबर के पुत्र सलीम (जहाँगीर) के साथ किया था।[2] राठोड राज्य का मुगल साम्राज्य से तब राजनैतिक के साथ ही सामाजिक और सास्कृतिक सम्बन्ध भी स्थापित हो गया। फलस्वरूप मुगल साम्राज्य का राठोड राज्य पर प्रभाव पडना स्वाभाविक ही था। राजा गजसिंह के शासनकाल मे 'गजगुण रूपक बन्ध' नामक प्रथम ऐतिहासिक काव्य की रचना द्वारा मारवाड मे एक नयी परम्परा तब प्रारम्भ हुई थी।[3] परन्तु १७वी शती मे तदनन्तर उसकी परम्परा म और किसी ऐतिहासिक काव्य-ग्रन्थ की रचना नही हुई। १८वी शती के प्रारम्भ मे अजीतसिंह के शासनकाल मे ही आगे चलकर वह विशेष रूप से प्रस्फुटित हुई।

१ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ९७।
२ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ९८ ९९।
३ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० १४०।

अकबर के साम्राज्य काल के अन्तिम वर्षों मे अबुल फज़ल ने 'अकबरनामा' की रचना सम्पूर्ण की थी।[१] अपने इस विशद सर्वव्यापी इतिहास-ग्रन्थ की रचना के समय अपने उपयोग के लिए अबुल फज़ल ने विभिन्न राजपूत राजाओ आदि को उनके राजघरानो, राज्यो आदि से सम्बधित अत्यावश्यक प्रामाणिक ऐतिहासिक जानकारी एकत्रित कर उसके पास भेजने के निर्देश दिये थे।[२] अत यह अनुमान होता है कि अबुल फजल को अपने राजघराने तथा राज्य सम्बन्धी ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध कराने के लिए मारवाड के तत्कालीन शासक उदयसिह ने भी अपने प्रमुख अधिकारियो को आदेश दिये होगे, जिससे तब राज्य के चारण-भाटो आदि से ऐतिहासिक जानकारी एकत्र की गयी होगी।

प्राय यही माना जाता रहा है कि राजस्थान के अधिकाश राजघरानो की ही तरह मारवाड के राजघराने की पूरी वशावली आदि ऐतिहासिक विवरण सम्भवत इसी समय प्रथम बार विधिवत लेखबद्ध किये गये होगे। तब तक ये सारी वशावलियाँ और अन्य विशिष्ट बातें सम्भवत राजघराने से सम्बद्ध राव, भाटो आदि के कठ पर ही चलती रही होगी। वैसे तो गुर्वावलियो आदि को लेखबद्ध कर उनको सुरक्षित रखने की परम्परा जैन यतियो मे अनेक सदियो से चली आ रही थी। जैन यति कुलगुरु मारवाड के राठोड घराने से भी सम्बद्ध रहे है, जो उक्त राठोड घराने की पोथिया लिखते रहे हैं। कुलगुरु का यह घराना सवप्रथम कब मारवाड के राठोड राजघराने से सम्बद्ध हुआ, इसकी कोई प्रामाणिक जानकारी सुलभ नही है, तथापि अनुमान यही होता है कि जोधा के समय मे तो अवश्य ही वह सम्बद्ध हो गया होगा। परतु उनकी पोथियो मे प्राप्य विवरण अति मक्षिप्त ही मिलते हैं।

पूर्व मध्यकालीन मारवाड मे भी शासकीय कागज़ पत्रो या लिखित आदेशो या विवरणो का प्राय अभाव ही रहा होगा। तथापि जो कुछ भी कभी रहे होगे, वे मुगलो के बीस वर्षीय आधिपत्य-काल मे निश्चितरूपेण पूणतया नष्ट हो चुके थे। मोटा राजा के आधीन जोधपुर राज्य की पुनर्स्थापना के बाद जब राज्य-प्रब ध मे मुगल साम्राज्य के ही तौर-तरीको का अनुसरण किया जाने लगा, तब तो अवश्य ही मारवाड के राजकीय कार्यालयो मे लिखित कायवाही की परम्परा स्थापित हो गयी होगी, जिससे आगे चलकर नैणसी ने पूरा लाभ उठाया था। नैणमी ने अपनी ख्यात और विगत० मे १६२० ई० की बहियो[३] का उल्लेख किया है, जो स्पष्टतया मोटा राजा के राज्यारूढ होने के बाद लिखी गयी बहिया होगी, जिनमे तत्कालीन प्रशासनिक विवरण ही विशेष रूप से लिखा हुआ होगा।

---

१ आईन०, १, पृ० 111।

२ आईन०, ३ पृ० ४७२।

३ विगत०, १, पृ० ४८३।

यह सम्भव है कि तब तक सग्रहीत पूववर्ती काल का ऐतिहासिक वृत्त भी उनमे लिखा गया हो ।

अकबर के समय मे साम्राज्य की ही नही भारतीय इतिहास की जानकारी भी एकत्र कर उसके लेखन को जो महत्त्व दिया जा रहा था और राजकीय तौर पर शाही घराने तथा साम्राज्य के इतिहास-लेखन का जो काय तब हो रहा था, उससे इस पुनर्स्थापित मारवाड मे तो अवश्य ही वहा के राठोड राजघराने के साथ ही क्षेत्रीय इनिहास के प्रति विशेष रुचि जाग्रत हुई होगी । दिल्ली के पूववर्ती सुलतानो के इतिहास तो पहिले भी लिखे जाते रहे थे, परन्तु तत्कालीन मुगल सम्राट द्वारा लिखवाये गये राजकीय इतिहास-ग्रन्थ को सर्वोपरि महत्त्व दिया जाना स्वाभाविक ही था । अत फारसी जानने वालो ने ही नही अपितु उनके द्वारा फारसी-ग्रन्थो मे सुलभ ज्ञान की जानकारी प्राप्त कर उससे प्रेरणा प्राप्त करने वाले सुविज्ञो, इतिहास-प्रेमियो आदि के लिए भी अबुल फजल कृत 'अकबरनामा' तथा विशेष रूप से उसका अन्तिम भाग 'आईन-इ-अकबरी' सहज ही माग-निर्देशक कृतिया बन गयी । साम्राज्य की इस महत्त्वपूण प्रवृत्ति और अबुल फजल की इस विशिष्ट कृति से प्रभावित होकर मारवाड के पूर्ववर्ती इतिहास सम्बन्धी विवरणो को सकलित कर उन्हे कालक्रमानुसार व्यवस्थित करने का आयोजन तब मारवाड मे तो अवश्य ही किया जाने लगा होगा ।

परन्तु तब १७वी शती मे मारवाड मे लिखी गयी ख्यातो अथवा लिखे गये इतिहास-वृत्त इने-गिने ही आज अपने मूल रूप मे सुलभ है । साम्राज्य के शासकीय इतिहास-ग्रन्थ लिखवाने की परम्परा मुगल साम्राज्य मे तब चल पडी थी, अत उसी का अनुसरण करते हुए तब मारवाड मे भी यदि राज्य द्वारा कोई ख्यातें लिखवायी गयी होगी, तो वे सब मारवाड पर तीस वर्षीय मुगल आधिपत्य काल (१६७८-१७०८ ई०) मे सवथा नष्ट हो गयी होगी । मारवाड से सम्बद्ध किन्ही अधिकारियो, पडितो, चारणो आदि के निजी सग्रह मे यदि कही तब लिखी गयी ख्यातो का कोई पूर्व रूप कभी सुलभ रहा होगा तो वह उसी तत्कालीन रूप मे प्राप्य नही रहा, क्योकि उन सबका उपयोग कर कालान्तर मे जब पश्चात्काल की घटनाओ को लेकर तथा तब तक के अन्य सब ही विवरण उनमे सम्मिलित करते हुए, जब उन्हे अधिक विशद रूप मे पुन लिख लिया होगा तब तो उन पूर्ववर्ती ख्यातो का कोई महत्त्व नही रह गया था एव उन्हे सुरक्षित रखने को कौन उत्सुक या प्रयत्नशील होता ? अब प्राप्य 'जोधपुर राज्य की ख्यात,' 'मुदियाड की ख्यात,' आदि मे ऐसी ही पूववर्ती ख्यातो का पश्चात्कालीन विस्तारित स्वरूप मिलता है ।

राजनैतिक घटनावली और पश्चात्कालीन सशोधन-परिवद्धन के आयोजनो के होते हुए भी योगायोग से १७वी शती मे लिखे गये कुछ ग्रन्थ आज भी मूल

रूप मे प्राप्य हैं।[1] 'राव उदेभाण चापावत री ख्यात' की तो सन् १६७०-७५ ई० तक लिखी गयी मूल प्रति ही सुलभ हो गयी है। परन्तु व्यापक महत्त्वपूर्ण इतिहास-ग्र थ के रूप मे उससे भी कही अधिक उल्लेखनीय मुहणोत नैणसी के इतिहास-ग्रन्थ है जिनकी आज सुलभ प्रतिया पश्चात्कालीन प्रतिलिपियाँ होते हुए भी अपने मूल रूप मे ही प्राप्य है। अत अबुल फज़ल के सन्दभ मे १७वी शती मे रचित इन्ही दो इतिहास-ग्रन्थो का विवेचन किया जा सकता है।

पूववर्ती अन्धकारपूण ऐतिहासिक काल के विवरण को प्रस्तुत करने के लिए 'आईन-इ-अकबरी' मे अबुल फजल ने प्राप्य वशावलियो के साथ ही तब प्रचलित काव्य कथानको का भी सहारा लिया था। अबुल फजल ने उसके ऐतिहासिक महत्त्व को मा य कर उसका जो उल्लेख किया था, उसी से प्रेरित होकर तब श्रुति-कठ-काव्य 'पृथ्वीराज रासो' को लेखबद्ध किया गया।[2] उसी प्रकार ऐतिहासिक घटनाओ को लेकर तब राजस्थान मे सवत्र प्रचलित ऐतिहासिक वार्त्ताओ की ओर भी ध्यान दिया जाने लगा। यो मारवाड के ही प्रमुख शासको सम्बन्धी बातो के सक्षिप्त उल्लेख 'राव उदेभाण चापावत री ख्यात' के प्रारम्भिक ऐतिहासिक 'इतिवृत्त' मे दिये है। परन्तु नैणसी ने मारवाड के साथ ही राजस्थान के भी अनेक शासको आदि सम्बन्धी बातो का सयत्न सग्रह कर अपनी ख्यात मे उनका समुचित उपयोग किया है।

अपने ग्रन्थो मे विभिन्न घटनाओ का विवरण देते हुए अबुल फज़ल ने उनके माह, सवतो के साथ ही यथासाध्य उनकी तिथि-तारीखे और यदा कदा वार भी दे दिये हैं। अपनी विगत० मे दिये गये ऐतिहासिक घटनाओ के उल्लेख मे भी नैणसी ने उसी तरह यथासाध्य वार, तिथि, माह और सवतो आदि का उल्लेख किया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि विगत० की सारी रूपरेखा बनाने मे 'आईन-इ-अकबरी' मे दिये गये विभिन्न सूबो के विवरण का ढाँचा अपनाया ही नही गया था अपितु उसे और भी विशेष व्यौरेवार लिखते समय उसमे नैणसी ने अनेको अतिरिक्त बातो को भी सम्मिलित कर लिया, जो अबुल फज़ल के लिए कदापि सम्भव न था, क्योकि जहाँ अबुल फज़ल एक-एक सूबे का विस्तृत वृत्त प्रस्तुत कर रहा था, वही नैणसी वैसे ही सूबे की निम्नतम इकाई 'परगने' की ही जानकारी दे रहा था। इसलिए ही नैणसी के लिए यह सम्भव हो सका था कि परगने के हर एक गाव की व्यौरेवार जानकारी प्रस्तुत कर सका।

---

१ तैस्सीतोरी जोधपुर० (भाग १, खड १), ग्र थ स० १८, २०, प० ५९ ६३, ६६ ६९, कविराजा सग्रह ग्र थ स० २१६, २१७।

२ पथ्वीराज० (समाहरणात्मक प्रस्तावना), प० १७ १८।

अध्याय २

मुहणोत नैणसी
उसका व्यक्तित्व तथा उसका काल

१ मुहणोत वश और मारवाड राज्य

मुहणोत वश की उत्पत्ति—सवमा य प्रवादो के अनुसार मारवाड के शासक राव रायपाल राठोड (१३०९ ई०?) के क्रमानुधिकारी पुत्र कन्हपाल के भाई मोहन (मुहण) से मुहणोत गोत्र का प्रारम्भ हुआ था। मोहन के हिन्दू पुत्र, भीम के वशज आज भी मोहनिया राठोड कहलाते हैं।[1] कालान्तर मे मोहन ने जैन धम ग्रहण कर लिया था, अत उसके जैन धर्मावलम्बी वशज मुहणोत कहलाये और उनकी गणना आसवालो मे की जाने लगी।[2] लेकिन मोहन ने कब और किन परिस्थितियो मे जैन धर्म ग्रहण किया, इस सम्बन्ध मे कोई मतैक्य नही है।

भाटो की ख्यातो के अनुसार एक दिन मोहन जब आखेट पर गया था, तब उसके हाथो एक गभवती हिरणी का वध हुआ। उसकी मृत्यु पीडा देखकर मोहन का हृदय पसीज गया और मन अशान्त हो गया। ऐसी मन स्थिति मे जब मोहन गाँव खेड के एक कुँए पर खडा था तब जैन यति शिवसेन अकस्मात वहाँ आ पहुँचे। उनके आग्रह पर मोहन ने शिवसेन को पानी पिलाया और तदनन्तर उन्हे मृत हिरणी को जीवन-दान देने की प्राथना की। जैन यति शिवसेन ने तदनुसार उसे जीवन-दान दे दिया। तब तो मोहन ने शिवसेन को अपना गुरु मान लिया और १३५१ वि० (१२९४ ई०) मे जैन धम अगीकार कर लिया। इस कारण

---

१ आसोपा०, पृ० ७७, क्षत्रिय०, पृ० २२।

२ दयाल०, १, पृ० ८०, रेऊ मारवाड०, १, पृ० ४९ पा० टि० २, ओझा जोधपुर०, १, पृ० १६९ पा० टि०, फमिली०, पृ० १, जैन सत्य०, पृ० ४३७, ओसवाल०, १, पृ० ४६, हिन्दुस्तानी०, पृ० २६७।

मोहन के वशज मुहणोत कहलाये ।[१] किन्तु स्पष्टतया इसमे दिया गया सवत सही नही है, क्योकि राव रायपाल १३०९ ई० के लगभग ही मारवाड का शासक बना था, और मोहन द्वारा जैन धर्म ग्रहण करने की घटना इसके बाद ही घटित हुई होगी । अतएव ख्यातो का यह कथन कल्पित ही जान पडता है ।

'महाजन वश-मुक्तावली' के अनुसार अपने पिता राव रायपाल के समय मे ही मोहनसिह का अपने भाइयो से आपसी मनमुटाव होने के कारण वह जैसलमेर चला गया था । जैसलमेर के रावल ने उसको आश्रय दिया । श्री जिनमणिक्यसूरि के पट्टधर श्री जिनचन्द्र सूरि तब जैसलमेर मे निवास कर रहे थे । उनके त्याग, वैराग्य और ज्ञानपूण व्याख्यानो से प्रभावित होकर मोहन उनका शिष्य बन गया ।[२] ओझा भी मुहणोत गोत्र का प्रारम्भ स्थान जैसलमेर ही मानता है ।[३] लेकिन 'महाजन वश-मुक्तावली' मे मोहन के जैसलमेर जाने का जो कारण दिया है, उसका समथन अन्य ऐतिहासिक आधार-ग्रन्थो मे प्राप्य विवरण से नही होता है । तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियो आदि को देखते हुए भी यह कारण विशेष विश्वसनीय नही प्रतीत होता है । अत मोहन के तब एकाएक जैसलमेर पहुँचने के जा कारण अन्यत्र दिये गये है, उन पर भी विचार करना आवश्यक जान पडता है ।

सन १८९१ ई० की जनगणना सम्बन्धी 'जोधपुर श्री दरबार रिपोट'[४] मे दिये गये मारवाड की जातियो के विवरण मे मुहणोतो की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे लिखा है कि मोहनसिह एक बार जैसलमेर गया और वहा के प्रधान की कन्या पर आसक्त हो गया, जो श्रीमाल वैश्य जाति की थी । उक्त प्रधान के तद्विषयक शिकायत करने पर जैसलमेर के रावल ने मोहनसिह को उलाहना ही नही दिया अपितु उसको समझा बुझाकर उसका दूसरा विवाह कार्तिक बदि १३, स० १३५१ वि०[५] (१३९१ वि०?)[६] को उस कन्या से करवा दिया । तदनन्तर मोहनसिह जैनी हो गया और उस कन्या से सम्पत नामक जो पुत्र हुआ, वह तथा उसके वशज मुहणोत ओसवाल कहलाये । धम परिवतन का जो कारण यहा बताया गया है, वह भावनापूण अवश्य है, परन्तु तत्सम्बन्धी कुछ अन्य बातो पर भी विचार करना होगा । उक्त विवरण के अनुसार मोहन की प्रथम पत्नी भाटी कन्या थी, एव जैसलमेर के राव का यो स्वय हस्तक्षेप कर मोहनसिह के दूसरे विवाह तथा उसके

---

१ ओसवाल०, प० ४९, हि दुस्तानी०, प० २६७ ।
२ हि दुस्तानी०, पृ० २६७ ।
३ दूगड०, १, वश परिचय, प० १ ।
४ जातियाँ०, प० १३२, गहलोत०, पृ० ९९ १०० ।
५ सोमवार, अक्तूबर १८, १२९७ ई० ।
६ बुधवार, अक्तूबर २६, १३३४ ई० ।

धम-परिवर्तन के लिए पहल करना तत्कालीन देश-काल की परिस्थितियो के परि-प्रेक्ष्य मे मान्य करना कठिन ही जान पडता है ।

जोधपुर राज्य की ख्यात[1] के अनुसार मारवाड और जैसलमेर के बीच पूव समय से ही बर चला आ रहा था । मारवाड के शासक (राव रायपाल) ने भाटी मागा[2] अथवा उसके पुत्र भाटी चन्द[3] को चारण बना दिया था । इसी का बदला लेने के लिए जैसलमेर का शासक राव रायपाल के पुत्र मोहन को पकडकर ले गया और अपने यहाँ के जैन कामदारो के यहा उसका विवाह कर दिया । इस जैन धर्मावलम्बी पत्नी से उत्पन्न मोहन के जैन धर्मावलम्बी वशज मोहणोत (अथवा मुहणोत) ओसवाल कहलाये । ख्यातो के इस कथन का समथन राजस्थान की अधिकतर अन्य प्रामाणिक ख्याते भी करती है । अत यह मान्य किया जा सकता है ।

२ नैणसी के प्रारम्भिक पूर्वज

मोहन से लेकर ईसा की १६वी शती के उत्तराद्ध मे विद्यमान मुहणोत सूजा तक की कोई क्रमबद्ध वशावली और उनके ऐतिहासिक विवरण के लिए कुछ भी प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नही है । अत इस काल मे उसके वशजो के सही अनुक्रम आदि के बारे मे सुनिश्चित रूप से कुछ भी कह सकना सम्भव नही है ।

मुहणोत घराने के प्राप्य विवरणो के अनुसार इस कालान्तर मे मुहणोत सपटसेन और मुहणोत खेतसिह के मारवाड राज्य की शासकीय सेवा मे होने के

---

१ जोधपुर ख्यात०, १, प० २०-२१ ।

२ विगत० (१, पृ० १५) के अनुसार भी मागा बुध (भाटी) को रोहडिया चारण बनाया गया था । वह कुडल का ठाकुर था ।

३ उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००, प० ११ क) तथा कुछ अन्य के अनुसार मागा भाटी के पुत्र भाटी चन्द को ही रोहडिया बारहठ बनाया गया था, जिसे दयाल० (१, पृ० ६०) के अनुसार रायपाल ने युद्ध मे हराया था । इसी आशय का निम्नलिखित प्राचीन डिंगल पद्य भी (आसीपा०, पृ० ७६ पा० टि०) प्रचलित है

"महिरेलण रायपाल चन्द भाटी किय चारण,
तरे बीस तुरग साठ सुडाल बी सासण ।
दे धण सासण दत्त राह अखियात उबारे,
रोहड ने राठवड वधेकी एकण वारे ।
मणि सीस माल सिंधुर मदन्ध,
बडा धणी उजवल वट,
ताहर वचक लागे थया,
बुधहूता म्हे बारहठ ।।"

विगत० के अनुसार चन्द बहुत बडा विद्वान था ।

उल्लेख मिलते है। परन्तु किस शासक-विशेष के समय मे वे क्रमश सेवारत थे, इस बारे मे मतैक्य नही है।[1] मुहणोत मेहराज अवश्य ही राव जोधा का राज्य-कमचारी था।[2] परन्तु उसका कोई समकालीन उल्लेख अथवा अन्य कोई वणन नही मिलता है, और न बाद की प्रामाणिक ख्यातो मे ही उसकी कही कोई चर्चा है। अचला के पिता के रूप मे मुहणोत सूजा का उल्लेख मिलता है।

मुहणोत अचला सूजावत और उसका पुत्र जेसा—नैणसी का प्रपितामह मुहणोत अचला सूजावत जोधपुर के राव चन्द्रसेन की सेवा मे निरन्तर बना रहा। जोधपुर पर मुगल आधिपत्य हो जाने के कारण राव चन्द्रसेन को जब जोधपुर छोडकर पहाडो और जगलो मे बहुत ही कष्टमय जीवन व्यतीत करना पडा, उस समय भी स्वामी-भक्त सेवक मुहणोत अचला सूजावत ने अपने स्वामी का साथ नही छोडा। मुगल सेना के दबाव के कारण जब राव चन्द्रसेन मारवाड छोडकर डूगरपुर, बासवाडा और मेवाड मे भटकता फिरा, तब अपने स्वामी के साथ स्वय भी कष्टप्रद जीवन बिताते हुए अचला सवत्र चन्द्रसेन के साथ निरन्तर रहा। सोजत के सरदारो के आमन्त्रण पर जब चन्द्रसेन वहा लौटा, और तब सोजत परगने के सवराड गाव मे स्थित मुगलो के थाने पर उसने आक्रमण कर रविवार, जुलाई १६, १५७६ ई० को उस पर अधिकार कर लिया, उस समय हुई सवराड गाँव की इस लडाई मे यह स्वामी-भक्त सेवक मुहणोत अचला वीरगति को प्राप्त हुआ।[3]

चन्द्रसेन के देहान्त के बाद अचला के वशजो तथा उसके अन्य मुहणोत समथको को चन्द्रसेन के बडे भाई मोटा राजा उदयसिह ने प्रश्रय दिया। अत सन् १५८३ ई० मे जोधपुर पर मोटा राजा का आधिपत्य हो जाने पर वे सब ही वापस जोधपुर लौट आये।[4]

इस मुहणोत घराने से सम्बद्ध शिलालेखो[5] और ख्यातो मे अचला के पुत्र और नैणसी के पितामह, जेसा का नाम अवश्य मिलता है, किन्तु इसके विषय मे कोई

---

१ फैमिली० (पृ० १) के अनुसार राव चूडा के समय मे सपटसेन था। किन्तु हिन्दुस्तानी० (पृ० २६८) और ओसवाल० (पृ० ४६, ४७) के अनुसार राव कन्हपाल के समय में सपटसेन, और चूडा के समय मे खेतसिह मारवाड राज्य की शासकीय सेवा मे थे।

२ फमिली०, पृ० १, हिन्दुस्तानी०, पृ० २६८, ओसवाल०, पृ० ४७।

३ उदेभाण० (ग्र थ स० १००), पृ० २६ ख, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ११६, विगत०, १, पृ० ७३।

४ उदेभाण० (ग्र थ० स० १००), पृ० २६ ख।

५ जालोर दुग मे प्रथम चत्र बदि ५, १६८१ वि० का शिलालेख, आषाढ बदि ४, १६८३ वि० का शिलालेख और गुरुवार, प्रथम चत्र बदि ५, १६८१ वि० का शिलालेख (दिग्दशन०, पृ० १८३, १८४, १८५)।

अतिरिक्त जानकारी उपलब्ध नही है।

मुहणोत जयमल जेसावत—मुहणोत नैणसी के पिता जयमल जेसावत का जन्म बुधवार, जनवरी ३१, १५८२ ई० को हुआ था।[1] वह युवावस्था मे ही राजा सूरसिंह की राज्य-सेवा मे नियुक्ति पा चुका था। गुजरात के उपद्रवकारियो का दमन करने के लिए सन् १६०६ ई० के मध्य मे जहागीर बादशाह के आदेशानुसार जब राजा सूरसिंह वहा गया था, तब उसे गुजरात के कुछ परगने जागीर मे मिले, जिनमे वहाँ की पट्टन सरकार का बडनगर परगना भी था। अत तब राजा सूरसिंह ने मुहणोत जयमल को वहा का हाकिम बनाया।[2] १६१५ ई० तक मुहणोत जयमल इस परगने का प्रबन्ध करता रहा। तदनन्तर यह बडनगर परगना २०,००० रुपये मे ठेके (मुकाता) पर मुहता रामा को दे दिया गया, जिससे वह मुहणोत जयमल के अधिकार मे नही रहा।[3] इसी वष बादशाह जहागीर ने राजा सूरसिंह को फलोधी परगना जागीर मे प्रदान कर दिया था। अत तब मुहणोत जयमल को वहा का हाकिम बना दिया गया।[4] वहा पर उसने अच्छा बन्दोबस्त किया।

शाहजादा खुरम ने फरवरी, १६२१ ई० मे अपने अधिकार वाला जालोर परगना राजा गजसिंह को दे दिया था। तब इस परगने का शासन प्रबन्ध गजसिंह ने मुहणोत जयमल को सौप दिया था। सितम्बर १३, १६२१ ई० को गजसिंह के मनसब मे हजारी जात हजार सवार की वृद्धि हुई थी, तब उसी के फलस्वरूप यह परगना औपचारिक रूपेण भी गजसिंह के नाम लिख दिया गया होगा।[5] अगस्त, १६२२ ई० मे साँचोर परगना महाराजा गजसिंह को प्राप्त हो गया था और १६८१ वि० (१६२४ २५ ई०) मे मुहणोत जयमल जेसावत वहा का हाकिम था। इसी समय पाच हजार काच्छियो[6] के दल ने साचोर पर आक्रमण कर दिया, तब मुहणोत जयमल के सेवको ने लडाई की और काच्छियो को पराजित कर भगा दिया। इस युद्ध के बाद शहर कोट की आवश्यकता को जानकर, जहा जहा साचोर का कोट गिर गया था, उसको जयमल ने पुन बनवाया और साचोर

---

१ हिदुस्तानी०, पृ० २६९।

२ मीरात इ अहमदी (अँग्रजी), प० १६३, जोधपुर ख्यात०, १, प० १२५, विगत०, १, प० ९८, ९४।

३ विगत०, १, प० ९४।

४ विगत०, २, प० ७, जोधपुर ख्यात० (१, प० १४३) म फलोधी पर सूरसिंह का अधिकार सन १६१३ ई० मे हाना लिखा, सो ठीक नही है।

५ विगत०, १, प० १०६ ७, जालोर विगत० (बडी), प० ९७ ख, पोथी० (ग्र थ स० १११), प० ४११ क, जहाँगीर०, प० ६१०, ७२७।

६ सम्भवत कच्छ क्षेत्र के उपद्रवकारी।

के सम्पूर्ण कोट की मरम्मत करवा दी ।[1]

जयमल एक अच्छा प्रशासक ही नही वरन् वीर योद्धा भी था। अत १६२६ ई० मे महाबत खाँ का पीछा करने को मारवाड की जो सेना भेजी गयी थी कुछ समय तक उमका भी सेनापतित्व जयमल ने किया था।[2] बाद मे सन् १६२९ ई० मे उसने सुराचन्द, पोहकरण, राडधरा और महेवा के विद्रोही सरदारो को दड देकर उनसे पेशकश ली।[3]

उसकी कायकुशलता और कायक्षमता से प्रभावित होकर राजा गजसिंह ने १६२९ ई० मे सिंघवी सिरमल (सहसमल) के स्थान पर मुहणोत जयमल को मारवाड राज्य के देश दीवान पद पर नियुक्त किया।[4] इसके कुछ ही समय बाद सोमवार, दिसम्बर १४, १६२९ ई० को राजकुमार अमरसिंह को २,००० जात १,३०० सवार का मनसब मिला, जिसकी जागीर के हिसाब का विवरण देश-दीवान होने के नाते मुहणोत जयमल के पास शुक्रवार, माच २६, १६३० ई० को सोजत मे प्राप्त हुआ था।[5] इस पद पर उसने लगभग ५ वष काय किया। १६३३ ई० (स० १६९० वि०) मे मुहणोत जयमल के स्थान पर सिंघवी सुखमल को देश-दीवान बनाया गया।[6]

मुहणोत जयमल मूर्तिपूजक जैन श्वेताम्बर पन्थ का अति धमपरायण दानवीर व्यक्ति था। उसने अपने जीवन-काल मे मारवाड, मेवाड, गुजरात आदि क्षेत्रो के अनेक स्थानो मे जैन मन्दिर बनवाकर उनमे जैन-देवो की प्रतिमाओ की प्रतिष्ठा प्राय तपगच्छ के सुविख्यात आचाय महाराज श्री विजयदेव सूरि अथवा उनके शिष्यो द्वारा ही करवायी थी। राजा गजसिंह के समय मे जब वह जालोर परगने का हाकिम था, तब जालोर के किले मे उसने दो मन्दिर बनवाये थे। प्रथम मन्दिर मे गुरुवार, फरवरी १७, १६२५ ई० को महावीर की मूर्ति की प्रतिष्ठा करवायी।[7] इसी मन्दिर के एक अन्य कमरे मे गुरुवार, मई २४, १६२७ ई० को

---

१ विगत०, १, प० १०७, ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २२७।

२ विगत०, १ प० ११० जोधपुर ख्यात०, १, प० १६०।

३ हिन्दुस्तानी०, प० २६९ ७०, फमिली०, प० २।

४ जोधपुर ख्यात०, १, प० १७७, बाल०, १, प० स० ७२, पोथी० (ग्र थ स० १११), प० ४११ ख।

५ पादशाह० १ अ, पृ० २९१, जोधपुर ख्यात०, १, प० १७७, १५२, बुधवार, मगसिर शुक्ल १३, १६८९ वि० (बुधवार, नवम्बर १४, १६३२ ई०) का फलोधी का शिलालेख, जनल बगाल०, १२, (१९१६ ई०), पृ० ९७।

६ पोथी० (ग्र थ स०१११), प० ४११ ख।

७ गुरुवार, प्रथम चत्र बदि ५, स० १६८१ वि० (फरवरी १७, १६२५ ई०) का जालोर का शिलालेख (दिग्दशन०, प० १८३ ८४)।

धमनाथ की प्रतिमा की स्थापना करवायी।[1] द्वितीय चौमुख का मंदिर है, उसमे गुरुवार, फरवरी १७, १६२५ ई० को जयमल ने आदिनाथ की मूर्ति प्रस्थापित करायी थी।[2] इसी प्रकार साँचोर मे जैन मन्दिर बनवाकर फरवरी १७, १६२५ ई० को भगवान की मूर्ति की प्रतिष्ठा करवायी।[3] १६२५ ई० मे शत्रुजय (पालीताणा) मे एक जैन मंदिर बनवाया।[4] नाडोल नगर मे शुक्रवार, मई २१, १६३० ई० को राय विहार मन्दिर मे पद्मप्रभ और शान्तिनाथ की मूर्तियो की प्रतिष्ठा करायी।[5] फलोधी मे भी १६३२ ई० मे उसने शान्तिनाथ के मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया था।[6] स० १६२६ ई० मे उसने सपरिवार शत्रुजय, गिरनार, आबू आदि तीर्थों की यात्रा की और तदथ सघ भी निकाले।[7]

१६३०-३१ ई० (१६८७ वि०) मे जालोर मे अकाल पडा, परन्तु उसके कारण राजस्व आदि करो की वसूली मे मुहणोत जयमल ने कोई रियायत नही की। सख्ती के साथ चौथाई भाग लगान वसूल किया। महेवा पर तब रावल भारमल और महेचा महेशदास का अधिकार था, परन्तु महेवा की पेशकश की पूरी रकम वसूल नही हो रही थी जिससे सन् १६३२ ई० (१६८९ वि०)[8] मे मुहणोत जयमल ने अपने आदमी भेजकर महेशदास के गाँव गादहरो[9] (गादसरो) को

---

१ गुरुवार, आषाढ बदि ४, स० १६८३ वि० (मई २४, १६२७ ई०) का जालोर म धमनाथ की मूर्ति पर शिलालेख (दिग्दशन० पृ० १८४)।

२ गुरुवार, प्रथम चैत्र बदि ५, स० १६८१ वि० (फरवरी १७, १६२५ ई०) का जालोर मे आदिनाथ की प्रतिमा पर लेख (दिग्दशन०, पृ० १९५)।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २२७।

४ हिन्दुस्तानी०, पृ० २७३।

५ शुक्रवार, प्रथम आषाढ बदि ५, स० १६८६ वि० (मई २१, १६३० ई०) के नाडोल मे पदमप्रभ और शान्तिनाथ प्रतिमाओ के लेख (हिन्दुस्तानी०, पृ० २७३-७४)।

६ बुधवार, मगसिर शुदि १३, १६८९ वि० (नवम्बर १४, १६३२ ई०) का फलोधी का शिलालेख, (जनल बगाल०, १२ (१९१६ ई०), पृ० ९७)।

७ हिन्दुस्तानी०, पृ० २७०, ओसवाल०, १, पृ० ४९।

८ यह सवत् उदेभाण० (ग्रथ स० १००, प० ४७ ख ४८ क) के आधार पर दिया गया है। जोधपुर ख्यात० (१, पृ० २५०), और पोथी० (ग्रन्थ १११, प० ४१२ क) म घटना का स० १७०० वि० और बाल० (१ पृ० ७८) मे स० १७०२ वि० दिये है, जो ठीक नही है, क्योकि जालोर परगना १६३८ ई० से मारवाड के शासको के आधीन नही था और सितम्बर १, १६४२ ई० (कार्तिक बदि ८, १६९९ वि०) में तो जालोर परगना राठोड महेशदास दलपतोत को दिया जा चुका था। (जालोर विगत० (छोटी), प० ४ ख ५ क, शाहजहाँ०, पृ० १७७)।

९ जोधपुर ख्यात० (१, पृ० २५०), बाल० (१, पृ० ७८) और पोथी० (ग्रन्थ स० १११, प० ४१२) मे महेचा महेशदास के गाँव 'राडधरा (परगना जालोर)' के लूटे जाने के उल्लेख हैं, परन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि उनमे गाँव का नाम 'राडधरा' लिखने मे भूल हो

लुटवाया। उस पर महेचा महेशदास विद्रोही होकर लूट मार करने लगा, तब उसका दमन करने के लिए मारवाड की जो सेना भेजी गयी उसके सेनानायक के रूप मे मुहणोत नैणसी का उल्लेख[1] मिलता है। उसने महेचा महेशदास के मुख्य स्थान कोट-मकान आदि ढहा दिये।

सम्भवत करो की वसूली मे की गयी मुहणोत जयमल की इस सख्ती के कारण ही सन १६३३ ई० मे उसे पदच्युत कर दिया गया। और उसके स्थान पर सिंघवी सुखमल को देश-दीवान बना दिया गया।[2] मुहणोत जयमल का अन्तिम शिलालेख फलोधी मे शान्तिनाथ के मन्दिर मे बुधवार, नवम्बर १४, १६३२ ई० का मिलता है, जिसमे उसको 'मन्त्रीश्वर' लिखा है। देश दीवान पद से हटाये जाने के बाद मुहणोत जयमल का कोई विवरण उपलब्ध नही है। अत १६३३ ई० के बाद उसकी क्या गतिविधि रही थी और उसकी मृत्यु कब हुई—इस बारे मे निश्चयात्मक रूपेण कुछ भी कह सकना सम्भव नही है। परन्तु तब तक अपनी सदियो पुरानी परम्परा को निभाते हुए उसका ज्येष्ठ पुत्र और भावी इतिहासकार नैणसी मारवाड राज्य की शासकीय सेवा मे रत हो गया था। राजकीव सेवक के रूप मे उसका सवप्रथम उल्लेख १६३७ ई० का मिलता है।[3]

३ नैणसी का प्रारम्भिक जीवन

नैणसी के पिता जयमल ने दो विवाह किये थे। प्रथम पत्नी वैद मेहता लाल-चन्द की पुत्री सरूपदे थी। उससे नैणसी, सुन्दरदास, आसकरण, और नरसिंहदास नामक चार पुत्र हुए। द्वितीय पत्नी सुहागदे सिंघवी बिडदसिंह की लडकी थी, जिसने जगमाल नामक एकमात्र पुत्र को जन्म दिया था।[4]

जयमल के ज्येष्ठ पुत्र नैणसी का जन्म शुक्रवार, नवम्बर ९, १६१० ई० (स० १६६७ वि० मागशीष शुदि ४) को हुआ था।[5] नैणसी का प्रथम विवाह भडारी नारायणदास की पुत्री से हुआ था और द्वितीय मेहता भीमराज की लडकी से।[6] नैणसी का एक और विवाह-सम्बन्ध बाहडमेर के कामदार कमा की

गयी है क्योकि राडधरा कभी भी महेचा महेशदास या उसके पूवजो के अधिकार मे नही रहा। जालोर विगत० (छोटी), प० ३७ ख ३८ क, ४५ क।

१ जोधपुर ख्यात०, १, प० २५०। पोथी (ग्र थ स० १११, प० ४१२ क) मे मुहणोत सुन्दरदास का भी नाम जोड दिया गया है।

२ जालोर विगत० (बडी), प० ९७ ख, जोधपुर ख्यात०, प० १७७।

३ विगत०, १, प०११९।

४ ओसवाल०, प० ४८, (प्रथम चैत्र बदि ५, वि० १६८१) गुरुवार, फरवरी १७, १६२५ ई० का जालोर का लेख।

५ नैणसी की जन्मकुडली की प्रतिलिपि बदरीप्रसाद साकरिया से प्राप्त हुई।

६ ओसवाल०, प० ४९।

बेटी से भी होना तय हुआ। उस समय तक नैणसी परगना हाकिम पद तक पहुच गया था। अत विवाह करने के लिए स्वय बाहडमेर न जाकर उसने अपने प्रतिनिधि के रूप मे कुछ व्यक्तियो के साथ अपना खड्ग ही भेज दिया। परन्तु उक्त कामदार कमा ने इसे अपना अपमान समझा और अपनी पुत्री का विवाह अन्यत्र कर दिया। इस बात पर नैणसी बिगड गया और उसने बाहडमेर के कई क्षेत्रो मे लूटमार की और वहाँ के मुख्य दरवाजे के किवाडो को उठवा लाया और उन्हे जालोर के मुख्य दरवाजे पर लगवा दिया।[1]

नैणसी की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा के बारे मे कोई जानकारी उपलब्ध नही है। परन्तु वह जोधपुर राज्य के सर्वोच्च पदाधिकारी का पुत्र था और जैन धर्मावलम्बी था। अत तब दी जा सकने वाली सारी आवश्यक शिक्षा-दीक्षा उसे अवश्य ही दी गयी होगी। वह युवावस्था मे राज्य-सेवा मे प्रवृत्त हो गया था। अपने जीवन काल मे कई परगनो का हाकिम रहकर अन्त मे वह देश-दीवान के पद पर पहुच गया था। इन सबसे स्पष्ट अनुमान लगाया जा सकता है कि उसे सैनिक, प्रशासनिक आदि हर प्रकार की उच्च शिक्षा और समुचित प्रशिक्षण अवश्य ही दिये गये थे। आगे सेवा मे रहते हुए अध्ययन और अनुभव से ही उसने बहुत कुछ सीखा था।

नैणसी की योग्यता की परख कर ही राजा गजसिंह ने २७ वर्ष की वय मे ही उसे अपनी राज्य-सेवा मे ले लिया था।

४ मारवाड राज्य के सैनिक अधिकारी के रूप मे मुहणोत नैणसी

अपने योग्य पिता की इच्छानुसार पुत्र नैणसी भी निरन्तर योग्यता का परिचय देता रहा। यो मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत जोधपुर राज्य क्षेत्र मे पहिले की अपेक्षा कही अधिक शान्ति और सुव्यवस्था थी, तथापि कई एक सुदूरस्थ क्षेत्रो मे या जहाँ के निवासी सम्भवत थोडे-बहुत उच्छृखल होते थे वहाँ यदा-कदा विरोध और उपद्रव उठ खडे होते थे अथवा आस पास या दूर के उपद्रवी आक्रमण कर वहा यत्र-तत्र लूटमार करते थे, जिनको दबाना भी स्थानीय अधिकारी का कर्तव्य होता था। कई बार राजा उस हेतु किसी विशिष्ट अधिकारी को आवश्यक सैन्य दल देकर उस क्षेत्र मे उपद्रवियो या आक्रमणकारियो का दमन कर वहा शान्ति तथा व्यवस्था स्थापित करने का काम सौप देता था।

फलोधी परगना जोधपुर राज्य के पश्चिमी सीमान्त का क्षेत्र था, अत वहाँ की भौगोलिक तथा प्राकृतिक परिस्थितियो से लाभ उठाकर उसके दक्षिण पश्चिम मे स्थित सिंध और उससे आगे बलूचिस्तान आदि क्षेत्रो मे उपद्रवी या लुटेरे

---

१ बाकी०, पृ० १७६, बात स० २१२५।

सहज ही वहाँ पहुचकर अपना स्वाथ-साधन करते रहते थे। राजा गर्जसिह के शासनकाल के अतिम वर्षो मे मुहता जगन्नाथ फलोधी का हाकिम था। उसके समय मे फलोधी क्षेत्र मे बलोचियो की लूटमार बहुत बढ गयी थी। माच, १६३४ ई० समय मे बलोच मुगल खा और समायल खा ने फलोधी के दो गाँवो मे लूटमार की। सितम्बर, १६३६ ई० मे बलोच हैदरअली, मदा और फतेहअली आदि पुन लूटमार कर वहा से धन-दौलत व पशु ले गये। मुहता जगन्नाथ उक्त बलोचियो का दमन करने मे असमथ रहा। उसके कई व्यक्ति भी मारे गये।[1] पुन गुरुवार, अक्तूबर ५, १७३७ ई० को बलोच मुजफ्फर खाँ फलोधी के गाव नेनऊ पर चढ आया। उससे हुई मुठभेड मे कई राजपूत सरदार मारे गये और मुजफ्फर खाँ धन-दौलत व पशु लूटकर सुरक्षित लौट गया।[2]

फलोधी पर आक्रमण कर लूटमार के बाद ये बलोची हर बार सुरक्षित चले जाते थ और हाकिम जगन्नाथ उनका दमन नही कर पा रहा था। मुहता जगन्नाथ की अयोग्यता स्पष्ट रूप से सामने आ चुकी थी। अत हाकिम जग नाथ को वहाँ से स्थाना तरित कर उसके स्थान पर अ य योग्य व्यक्ति को भेजने के अतिरिक्त राजा गर्जसिह के लिए कोई चारा नही था। अत तब गुरुवार, अक्तूबर १२, १६३७ ई० मे मुहणोत नैणसी को फलोधी का हाकिम नियुक्त कर बलोचियो के दमन और वहा शान्ति स्थापना करने का काय उसे सौपा गया। नैणसी के लिए यह महत्त्वपूण मौका था, क्योकि इसके परिणाम पर ही उसका भविष्य निभर था। अक्तूबर २०, १६३७ ई० को नैणसी फलोधी पहुचा।[3] बलोच मुगल खा ने सवत्र आतक फैला रखा था। नवनियुक्त हाकिम नैणसी को इसका अन्त करना था। सोमवार, दिसम्बर ११, १६३७ ई० को मुगल खा गाव वाप के राव मोहनदास पर चढ आया। राव मोहनदास उसका सामना करने मे असमथ था। अत उसने शहर-कोट के द्वार ब द करवा दिये और दो ऊँट सवारो को नैणसी के पास फलोधी भेजा। उन ऊँट सवारो के द्वारा मुगल खा के आक्रमण की सूचना पाते ही अपने पास के इने-गिने १० व्यक्तियो को लेकर नैणसी तुरन्त ही राव की सहायताथ रवाना हो गया। रवाना होने के पूव उसने और सैनिको को भी आगे सम्मिलित होने के निर्देश दिये थे, जिससे कीरडा पहुचते पहुचते और २० सैनिक उससे आ मिले। तब रणभेरी बजवा दी। बलोच मुगल खा ने समझा कि सहायताथ और भी सेना आ रही है, जिसका मुकाबला करना सम्भव नही होगा, अत वह वहाँ से भाग निकला।[4]

---

१ विगत०, १, पृ० ११८ १६, २, पृ० ८।
२ विगत०, १, पृ० ११६, २, पृ० ८।
३ विगत०, १, पृ० ११६।
४ विगत०, १ पृ० १२०।

वाप पहुचकर नैणसी ने राव मोहनदास से मुगल खाँ के बारे मे पूछा। उसके भाग निकलने की खबर पाकर उसने आदेश दिया कि अविलम्ब उसका पीछा किया जाय। परन्तु तब राव मोहनदास ने कहा कि इस समय हमारे पास सैनिक बहुत कम हैं। अत सभी सैनिक एकत्रित होने पर ही आगे बढना चाहिए। उसकी राय को उचित समझकर तब उस दिन बलोच मुगल खाँ का पीछा नही किया गया। दूसरे दिन दिसम्बर १२, १६३७ ई० को प्रात प्रस्थान के समय ही अपशकुन हो जाने के कारण उस दिन भी बलोच मुगल खाँ का पीछा नही किया जा सका। इसी बीच राव मोहनदास के गुप्तचरो ने आकर खबर दी कि मुगल खा बीकुम्पुर मे ठहरा हुआ है और उसकी सैनिक शक्ति अधिक है। यह समाचार सुनकर राव मोहनदास भयभीत हो गया और उसने नैणसी के सम्मुख वापस लौट जाने का प्रस्ताव रखा। बलोचो का दमन कर फलोधी मे शान्ति स्थापना का उत्तरदायित्व नैणसी पर था। अत वह उस प्रस्ताव को कैसे स्वीकार कर सकता था? ऐसी स्थिति मे बाध्य होकर राव को भी नैणसी को सहयोग देना पडा। उसी रात को जैसलमेर के रावल मनोहरदास का सदेश भी मिला कि इधर से बीकुम्पुर पर वह स्वय आक्रमण करेगा और उधर से नैणसी भी उस पर चढाई कर दे। तब तो राव मोहनदास और नैणसी ने बीकुम्पुर पर चढाई कर दी।[1]

बलोच मुगल खाँ को नैणसी और रावल मनोहरदास के इस सयुक्त आक्रमण का पता लग गया था। अत उनके वहा पहुचने के पूव ही वह वहाँ से भाग गया। भारमलसर गाव मे रावल मनोहरदास नैणसी से आ मिला। रावल के गुप्तचरो द्वारा तब पता लगा कि बलोच मुगल खा ने अहवाची नदी पर मोरचा-बन्दी कर ली थी। अत रावल ने सम्पूण सेना को तीन दलो मे विभाजित किया, एक दल का सेनापति स्वय बना, दूसरे का राव मोहनदास और तीसरे का नैणसी। इन तीनो दलो ने दिसम्बर १४, १६३७ ई० को प्रात ही मुगल खा पर कूच कर दिया। दोनो पक्षो के मध्य घमासान युद्ध हुआ। अन्त मे मुगल खा रणक्षेत्र मे ही मारा गया।[2] यो नैणसी ने उस आतककारी का अन्त कर फलोधी परगने मे शान्ति स्थापित कर दी।

जोधपुर के राजा गजसिंह की मृत्यु के बाद भी फलोधी पर उसके उत्तरा-धिकारी राजा जसवन्तसिंह का अधिकार बना रहा। जसवन्तसिंह के शासक बनने के लगभग आठ महीने के बाद ही गुरुवार, जनवरी ३१, १६३६ ई० को बलोच मदा और फतेह अली अपने ७५० साथियो के साथ फलोधी आकर पुन उपद्रव करने लगे। तब मुहणोत नैणसी और सुन्दरदास ने ससैन्य उनका पीछा कर उन्हे

१ विगत०, १, पृ० १०२१, २, पृ० ८।
२ विगत०, १, पृ० १२१ २३, २, पृ० ८।

परगने से निकाल बाहर किया, जिससे तदनन्तर वहा स्थायी शान्ति स्थापित हो गयी ।[1]

सोजत के उपद्रवियो का दमन—दक्षिण मे स्थित मारवाड के मगरा क्षेत्र मे मेर बसते थे। जो यदा-कदा उपद्रव कर उस क्षेत्र मे अशान्ति और अव्यवस्था उत्पन्न कर देते थे, मन १६४२ ई० (१६९९ वि०)[2] मे जब उन्होने उपद्रव किया तब महाराजा जसवन्तसिंह ने सोजत परगने के पहाडी क्षेत्र मे हो रहे मेरो के उपद्रव के दमनाथ नैणसी को भेजा। उन पर आक्रमण कर नैणसी ने मगरा के मेरो को पराजित किया और उन्हे भयभीत करने के लिए तब उसने उनके अनेक गाँव भी जला दिये। नैणसी की इस कायवाही से इस क्षेत्र मे तब तत्काल कुछ समय के लिए उपद्रव अवश्य शात हो गया।

परन्तु १६४५-४६ ई० मे मेरो का मुखिया रावत नारायण पहाडो मे रह कर पुन परगना सोजत की शाति भग करने लगा। वह सोजत के आसपास के गाँवो को लूटा करता था। महाराजा जसवन्तसिंह ने उसके दमनाथ नैणसी और सुन्दरदास को नियुक्त किया। नैणसी और सुन्दरदास ने कूकडा, कराणा, कोट और माकड गावो को नष्ट कर दिया,[3] जिससे रावत नारायण का उपद्रव समाप्त हो गया और पुन मेरो ने जोधपुर के शासक के विरुद्ध कोई आवाज नही उठायी।

पोहकरण पर चढाई—पोहकरण का परगना जोधपुर और जैसलमेर के राज्यो की सीमाओ पर स्थित होने के कारण उस पर अधिकार करने को दोनो ही राज्यो के शासक निरन्तर प्रयत्नशील रहते थे। राव चन्द्रसेन के समय से ही जैसलमेर राज्य का उस पर अधिकार हो गया था। सूरसिंह के समय से ही पोहकरण का परगना मुगल बादशाहो की ओर से जोधपुर राज्य के शासको के मनसब मे लिखा जाता रहा था, परन्तु उस पर उनका अधिकार नही हो पाया था। राजा गजसिंह को भी पोहकरण शाही मनसब मे मिला हुआ था, परन्तु उस पर जैसलमेर के भाटियो का ही अधिकार रहा। गजसिंह के मरणोपरान्त जब जसवन्तसिंह जोधपुर राज्य के सिंहासन पर बैठा, तब भी पोहकरण जसवन्तसिंह को मनसब मे मिला था। परन्तु उसने भी पोहकरण पर अधिकार करने का कोई प्रयत्न नही किया। रविवार, नवम्बर ११, १६४९ ई० (मागशीष बदि २,

---

१ विगत०, २, प० ८।

२ पोथी० (ग्रन्थ स० १११), प० ४१२ क, जोधपुर ख्यात० (१, प० २५०), ख्यात० (वणशूर), (प० ५६ ख) और बाल० (प० ७८) मे स० १६८९ (१६३२ ई०) दिया है सो सही नही है।

३ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २५०, मुदियाड०, पृ० १२५, ओझा जोधपुर०, १, प० ४२०।

१७०६ वि०) को जैसलमेर के रावल मनोहरदास की मृत्यु हो गयी।[1] तब बाई मनभावती[2] के निवेदन पर मगलवार, अप्रैल २३, १६५० ई० को बादशाह ने फरमान लिखकर पोहकरण जसवन्तसिंह को दे दिया।[3] रावल मनोहरदास के कोई सन्तान नही होने से उसका चचेरा भाई रामचन्द्र सिघोत जैसलमेर की गद्दी पर बैठा। अत फरमान प्राप्त करन के बाद जसवन्तसिंह ने जुलाई, १६५० ई० मे राठाड सार्दूल गोपालदासोत और बिहारीदास राघोदासोत को जैसलमेर रावल रामचन्द्र के पास भेजा। उन्होने रामच द्र को पोहकरण सम्बन्धी शाही फरमान दिखा दिया, परन्तु रावल रामचन्द्र ने स्पष्ट कह दिया कि बिना युद्ध पाहकरण मिलने वाला नही।[4] अत राजा जसव तसिंह को विवश होकर पोहकरण पर सेना भेजनी पडी। पोहकरण पर भेजी जाने वाली सेना को तीन दलो मे विभाजित किया गया।

प्रथम दल का सेनापति राठोड गोपालदास को, दूसरे का राठोड विट्ठलदास और तीसरे हरावल दल का सेनापति नाहर खा राजसिंहोत को बनाया। इसी तीसरे दल के साथ नैणसी भी नियुक्त किया गया।[5] इस सम्पूण सेना मे दो हजार घुडसवार और चार हजार पैदल सैनिक थे।[6] इस राजकीय सेना ने शनिवार, सितम्बर ७, १६५० ई० का जोधपुर से कूच किया और देवझर, तीवरी, चेराई, साँवडाऊ, पीलवा होती हुई शनिवार, सितम्बर १४, १६५० ई० को वह जालीवाडा पहुची। यहाँ उसने ८ दिन तक डेरा किया।[7] सेना को सुव्यवस्थित किया गया और तब रविवार, सितम्बर २२, १६५० ई० को कूच कर पोहकरण के

---

१ विगत०, २, प० २६८, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० १०३। जोधपुर ख्यात० (१, प० २०१) और बाकी० (पृ० ३०, बात स० ३१६) के अनुसार रावल मनोहरदास की मत्यु गुरुवार, नवम्बर ६, १६४६ ई० (कार्तिक शुदि १५, १७०६ वि०) को हुई।

२ यह राजा सूरसिंह की पुत्री और राजा गजसिंह की बहिन थी। इसका विवाह शाहजादा परवेज के साथ हुआ था। जोधपुर ख्यात०, १, प० १४७।

३ विगत०, २, प० २६८, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० १०५।

४ विगत०, २, पृ० २६८, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० १०५।

५ विगत०, २, प० २६६, बाकी०, प० ३०, बात स० ३२१, ३२२, जोधपुर ख्यात०, १, प० २०१।

६ विगत०, २, प० २६६। कि तु जोधपुर ख्यात० (१, प० २०१) और बाकी० (प० ३० बात स० ३२०) मे सैनिको की सख्या १५०० सवार और २,५०० पैदल दी है।

७ विगत०, २, पृ० २६६। पर तु जोधपुर ख्यात०, (१, प० २०१), उदेभाण० (ग्रथ स० १००, प० ३५ ख), ख्यात वशावली (ग्र थ स० ७४, प० ५५ ख) और बाकी० (प० ३०, बात स० ३२१) के अनुसार इस सेना ने बुधवार, सितम्बर १८, १६५० ई० को कूच किया।

गाव खारे डेरा किया।[१]

इमी समयान्तर मे बादशाह शाहजहाँ ने जैसलमेर के रावल पद के उत्तराधिकारी के बारे मे पूछताछ की। तब अवसर का लाभ उठाकर किशनगढ के राजा रूपसिंह ने स्वर्गीय रावल मनोहरदास के दूसरे चचेरे भाई सबलसिंह दयालदासोत को बादशाह के समक्ष प्रस्तुत कर दिया जो तब उसी के वहा सेवारत था। शाहजहाँ ने उसे ही जैसलमेर के रावल का टीका कर दिया।[२]

तब रावल सबलसिंह जोधपुर के राजा जसवन्तसिंह के पास पहुचा। राजा जसवन्तसिंह ने उसे प्रोत्साहित किया और सहायता देने का आश्वासन दिया। जसवन्तसिंह ने उसे निर्देश दिया कि वह फलोधी होता हुआ पोहकरण जावे, जहा उसकी सना पहले ही पहुच चुकी थी, इसलिए वही उसकी सहायता करेगी। निर्देशानुसार रावल सबलसिंह पोहकरण पहुचा और खारा (खारखेडा) गाँव मे जसवन्तसिंह की सेना से जा मिला। तब सयुक्त सेना ने कूच किया। सितम्बर २६, १६५० ई० को उक्त सेना ने पोहकरण दुग को घेरकर उस पर आक्रमण कर दिया। प्रारम्भिक आक्रमणो मे कोई सफलता नही मिली और सेना अपने-अपने डेरो मे चली गयी।[३] परन्तु मुहणोत नैणसी नही लौटा। वह नाहर खाँ के सैनिको को लेकर नाल के पास डटा रहा। तब नैणसी की सहायताथ कई राठोड व भाटी सैनिक वही रह गये थे। सूर्यास्त के कुछ समय पहिले उसने सब सैनिको का शहर मे लूटमार करने का आदेश दे दिया। शहरकोट के दरवाजे के पास के मन्दिर के पास उसने अपना मोरचा लगाया। तब नैणसी ने कूटनीति से काम लिया। घोडो को तो हाट-बाजार मे बाध दिया और वे सब मदिर मे छिप गये। दुग वालो ने समझा कि वे वही होगे। अत घोडो पर ही उनकी बन्दूकें आग उगलने लगी। परन्तु नैणसी का एक भी व्यक्ति उनसे आहत नही हुआ। इधर नैणसी ने मन्दिर के मोरचे से उन पर गोलियो की वर्षा की, जिससे भाटियो के दो सैनिक मारे गये। दिन भर इसी प्रकार युद्ध चलता रहा था। सूर्यास्त होने पर राठोड गोपालदास ने नैणसी को मोरचे से बुलवा लिया और उस मोरचे पर अपने सैनिक भेज दिये।[४]

इसी प्रकार दुग का घेरा कई दिन तक चलता रहा और छुट पुट आक्रमण होते रहे। अन्त मे किले मे स्थित भाटियो की शक्ति क्षीण हो गयी। उनका वहा अधिक दिनो तक रहना कठिन हो गया। ऐसी स्थिति मे विवश होकर भाटियो

---

१ विगत०, २ पृ० ३००।

२ विगत०, २, पृ० ३००, जोधपुर ख्यात० १, पृ० २०१।

३ विगत०, २, पृ० ३०० ३०२, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २०१।

४ विगत० २, पृ० ३०२ ३।

ने समझौता कर गढ खाली कर देने का सन्देश भेजा। रावल सबलसिंह की मध्यस्थता मे बातचीत हुई। अन्त मे भाटियो ने दुग खाली कर दिया। कुछ भाटी जो स्वाभिमानी थे, वे तब दुग से यो निकल जाने को तैयार नही हुए और जसवन्तसिंह की सेना का सामना करते हुए काम आये और शुक्रवार, अक्तूबर ४, १६५० ई० को पोहकरण पर जसवन्तसिंह की सेना का अधिकार हो गया।[1] जोधपुर राज्य की ख्यात' के अनुसार पोहकरण पर अधिकार करने के बाद जसवन्तसिंह की सेना जैसलमेर गयी। सेना का आगमन सुनकर रावल रामचन्द्र भाग गया। रावल सबलसिंह वहाँ की गद्दी पर बैठा। तब सेना वापस पोहकरण लौट आयी।

पोहकरण जैसलमेर पर मुहणोत नैणसी की दूसरी चढाई (१६५६ ई०)—सितम्बर ७, १६५७ ई० को शाहजहा बीमार पडा और तब मुगल साम्राज्य के सिंहासन के लिए शाहजहाँ के पुत्रो मे उत्तराधिकार-युद्ध प्रारम्भ हुआ। दक्षिण से औरगजेब और गुजरात से मुराद का सामना करने को महाराजा जसवन्तसिंह को भेजा गया। परन्तु शुक्रवार, अप्रैल १६, १६५८ ई० को हुए धरमाट के युद्ध मे महाराजा जसवन्तसिंह पराजित हुआ था। अत जब औरगजेब मुगल सिंहासन पर बैठा तब जसवन्तसिंह को भी उसकी आधीनता स्वीकार करनी पडी थी। परन्तु शुजा के साथ होने वाले खजवा के युद्ध से पहिले ही रात मे वह पुन औरगजेब का पक्ष छोडकर जोधपुर लौट आया था। अत महाराजा जसवन्तसिंह के प्रति औरगजेब का मनमुटाव और बढ गया। इसी अवसर का लाभ उठाकर जैसलमेर के रावल सबलसिंह ने फरवरी २४, १६५६ ई० को औरगजेब से पोहकरण का फरमान प्राप्त कर लिया और मार्च, १६५६ ई० को अपने पुत्र कुवर अमरसिंह के नेतृत्व मे पोहकरण पर अधिकार करने के लिए सेना भेज दी, जिसने मार्च १६, १६५६ ई० को पोहकरण को जा घेरा और मार्च २६, १६५६ ई० को पोहकरण पर अधिकार कर लिया।[3]

परन्तु जब गुजरात की राह दारा ने पुन राजस्थान मे होकर औरगजेब पर चढाई की, तब जसवन्तसिंह को दारा के पक्ष मे नही होने देने के उद्देश्य से

---

१ विगत०, २, प० ३०३ ५, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० १०८। जोधपुर ख्यात०, (१, प० २०१), ख्यात वंशावली० (ग्रन्थ ७४, प० ५५ ख) और उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००, प० ३६ क) के अनुसार शनिवार, अक्तूबर ५, १६५० ई० को दुग पर अधिकार हुआ परन्तु वह मान्य नही है। बाकी० (प० ३०, बात स० ३२३) के अनुसार आश्विन शुदि १५, १७०६ वि० (सितम्बर २६, १६५० ई०) को अधिकार हो गया था। यह भी मान्य नही किया जा सकता क्योकि इस दिन तो दुग घेरा गया था।

२ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २०३।

३ विगत०, २, पृ० ३२३, १, पृ० १३७, १३६, बही०, पृ० ३६।

औरगजेब को जसवन्तसिंह के साथ समझौता करना पडा था । महाराजा जसवन्तसिंह को जोधपुर राज्य आदि के साथ उसका मनसब पूववत् प्रदान कर दिया गया जिससे पोहकरण परगना भी उसे पुन मिल गया । यही नही, तब बुधवार, माच १६, १६५६ ई० को औरगजेब ने जसवन्तसिंह को गुजरात की सूबेदारी प्रदान कर उसे वहाँ जाने का आदेश दिया ।[1] माच १८, १६५६ ई० को जसवन्तसिंह जोधपुर से गुजरात रवाना हुआ, तब देश-दीवान के रूप मे मुहणोत नैणसी भी जसवन्तसिंह के साथ था । उस समय दारा का पीछा कर रही शाही सेना मे मिर्जा जयसिंह और बहादुर खा थे । बुधवार, माच ३०, १६५६ ई० को जालोर के गाव सैणा मे जसवन्तसिंह भी उनसे मिला ।[2] मार्च ३१, १६५६ ई० को सिरोही के गाव ऊड (सिरोही के ८ मील उत्तर-पश्चिम मे) डेरे पर जसवन्तसिंह को मुहणोत करमसी नैणसिंहोत द्वारा भेजे गये ऊँट सवारो ने पोहकरण पर भाटियो के आक्रमण की सूचना दी । जसवन्तसिंह की सारी सेना तब उसके साथ थी और वह स्वय युद्ध के पक्ष मे भी नही था । अत जसन्वतसिंह के आग्रह पर जयसिंह ने चौधरी रतनसिंह के साथ रावल सबलसिंह के पास इस आशय का पत्र भेजा कि पहिले पोहकरण तुमको दी थी, परन्तु अब जसवन्तसिंह को ही पुन प्रदान कर दी गयी है ।[3] साथ ही पोहकरण पर अधिकार करने के लिए ही जसवन्तसिंह ने इसी दिन अपने सबसे अधिक विश्वासपात्र देश दीवान मुहणोत नैणसी के नेतृत्व मे सेना देकर विदा किया ।[4]

उस समय नैणसी के पास २,०७१ सवार, ८११ ऊँट और २,६२२ पदल सैनिक थे । नैणसी स्वय प्रधान सेनापति नही बनना चाहता था । अत उसने जसवन्तसिंह से कहा कि प्रधान सेनापति किसी अन्य को बनाया जाय । तब जसवन्तसिंह ने राठोड लखधीर और राठोड भीम के नाम परवाने लिख दिये, परन्तु वे सेना मे सम्मिलित नही हो सके और प्रधान सेनापतित्व का कार्य-भार अन्त मे नैणसी को ही सँभालना पडा ।[5] नैणसी सिरोही से सेणा आया, जालोर पहुचा, वहा से बाला दुनाडा और साल्हावास होता हुआ वह जोधपुर पहुचा और चार दिन तक वहा रहा । सेना का सामान एकत्रित किया और आवश्यक अन्य व्यय के लिए २०,००० रुपये खजाने से लिए। इस अभियान मे सम्मिलित

---

१ विगत०, १, पृ० १३६, बही०, पृ० ३७ ३८ ।

२ विगत०, १, पृ० १३७, बही०, पृ० ३८ ।

३ विगत०, १, पृ० १३७, बही०, पृ० ३६ ४० ।

४ नैणसी की आधीनता मे की गयी इस चढाई का विशेष विवरण जोधपुर राज्य की ख्यातो मे नही मिलता है । पुन इस चढाई में नैणसी के चातुय और युद्ध कौशल का पूरा पता लगता है । अत इस चढाई का सविस्तार वणन दिया जा रहा है।

५ विगत०, १, पृ० १३८, बही०, पृ० ४० ।

होने के लिए सभी परगनो को सन्देश भेजे गये कि आवश्यक सैनिक भेजें। समुचित व्यवस्था करने के बाद शनिवार, अप्रैल ६, १६५६ ई० को प्रात काल ही जोधपुर से रवाना होकर नैणसी ने चैनपुर डेरा किया।[1] यहाँ पर राठोड बिहारीदास ४० सवारो के साथ आकर सम्मिलित हो गया। आगे देवीझर और बाल्हरवा डेरा किया। यहाँ पर भारी वर्षा हुई लेकिन इस कारण नैणसी इस अभियान मे जरा भी ढील देना नही चाहता था, क्योकि निरन्तर समाचार प्राप्त हो रहे थे कि भाटियो ने पोहकरण को घेर रखा है और फलोधी मे भी लूटमार करने वाले है। अत नैणसी निरन्तर ससैन्य आगे बढता ही रहा। बुधवार, अप्रैल १३, १६५६ ई० को चेराई मे डेरा किया। यहाँ पर परगना जैतारण से भाटी आसकरण के नेतृत्व मे १०० सवार और ३०० पैदल सैनिक आकर सम्मिलित हुए। चेराई से शुक्रवार, अप्रैल १५, १६५६ ई० को कूच किया। और इसी दिन साँवडाऊ डेरा किया। यही पर कोढाणा से उहड जगन्नाथ कुछ सैनिको के साथ आकर सम्मिलित हुआ। अप्रैल १६, १६५६ ई० को नैणसी वहा से रवाना हुआ और इसी दिन लाखन कोहर डेरा किया। यहा पर सीवाणा के ८०० सैनिक साथ लेकर भाटी लालचन्द आ मिला। वहाँ से रवाना होकर सम्पूण सेना ने फलोधी के गाँव जालीवाडा और वहा के तालाब पर डेरा किया। यहा पर फलोधी के ४०० सैनिको का लेकर सी० जैतमल और सा० जगन्नाथ उपस्थित हुए। सोमवार, अप्रैल १८, १६५६ ई० को यहाँ से कूच कर पोहकरण के गाव ढेढू की तलाई पर डेरा किया। यही राठोड जगमाल के व्यक्तियो ने आकर सूचना दी कि भाटियो ने पोहकरण को खाली कर दिया है। नैणसी अप्रैल १६, १६५६ ई० को वहा से कूच कर पोहकरण पहुचा।[2] तब भाटियो का पता लगाने के लिए दो ऊँट-सवारो को भेजा। साथ ही दूसरे दिन अप्रैल २०, १६५६ ई० पोहकरण पर पुन आधिपत्य की सूचना देने के लिए कासीद भेजे। यही पर सोजत के हाकिम मुहणोत आसकरण के द्वारा सा० जगमाल चोवेडिया के साथ भेजे गये १२४ सवार और १०० पैदल सैनिक आ मिले। अप्रैल २३, १६५६ ई० तक पोहकरण ही मुकाम रहा। यही पर महवा के रावल महेशदास और रावल भारमल भी सहायताथ उपस्थित हो गये। नैणसी ने यही पर सम्पूर्ण सेना की गिनती करवायी। इस समय उसके पास कुल चार हजार सैनिक थे। लडाई से सम्बन्धित सेना के सारे सामान की व्यवस्था की। तब शनिवार, अप्रैल २३, १६५६ ई० को सम्पूण सेना ने कूच किया। गोली बारूद सेना मे बाँट दिया गया और सेना को आवश्यक निर्देश दे दिये।[3]

---

१ विगत०, १, पृ० १३८, बही० पृ० ४१ ४२।

२ विगत०, १, पृ० १३८ ३६, बही०, पृ० ४१ ४२।

३ विगत०, १, पृ० १३६, बही०, पृ० ४२ ४३।

पोहकरण से मारवाड की सेना भाटियो का पीछा करती हुई रविवार, अप्रैल २४, १६५६ ई० को रूपा की तलाई पहुची। इसी समय चौधरी रतनसी और कछवाहा फतेहसिंह इनसे मिले। ये जयसिंह का पत्र लेकर जैसलमेर गये थे। नैणसी ने इनसे भाटियो की सेना के बारे मे जानकारी चाही। तब उनसे पता चला कि यहा से ६ कोस पर बचीहाय पर उनका डेरा है। नैणसी ने भाटी भीम, राठोड किसना, भाटी किशनचन्द और भाटी जोगीदास को भाटियो को सतक करने भेजा कि 'राजा की सेना आ रही है सो सतक रहना।' तब कुँवर अमरसिंह और अन्य कई भाटियो ने तो वहा से कूच कर दिया, परन्तु स्वाभिमानी भाटी रामसिंह ने वही डटे रहकर मारवाड की सेना का सामना करने की चुनौती दी।[1] नैणसी ने सेना को कूच का आदेश दिया। तब सेना ने अप्रैल २६, १६५६ ई० को जैसलमेर की सीमा मे प्रवेश कर कोभा की तलाई डेरा किया। नैणसी ने सेना को लूटमार का आदेश दे दिया। अत सेना ने डेलासर, धायसर, जीवन्द, और कोभव का गाव जेसुरणा आदि गावो मे लूटमार की।[2]

जसवन्तसिंह की सेना ने अप्रैल २७, १६५६ ई० को वही डेरा किया। दूसरे दिन अप्रैल २८ को कूच कर चाधण डेरा किया। तीन दिन तक यहाँ ही सेना का मुकाम रहा। नैणसी के आदेश से सेना ने पाच-सात कोस के क्षेत्र मे पडने वाले गावो मे भारी लूटमार की। सोमवार, मई २, १६५६ ई० को चाधण से कूच कर बासणपी डेरा किया। यहाँ पर बासणपी, लोहर का गाव, धनवा, भेंसडेच का गाव आदि गावो मे लूटमार कर आग लगा दी। मगलवार, मई ३, १६५६ ई० को अहप डेरा किया और आसपास के गावो को लूटा। मई ४, १६५६ ई० को आसणीकोट डेरा किया और आसणीकोट, देवडा का छोडा, बोला, नाथ का वास, सगवणी, नेडाणा, और कोटडी आदि गावो मे लूटमार की। गुरुवार, मई ५, १६५६ ई० को देग डेरा किया। यहा पर अणद पढीयो का बास, रायसल का वास, अचला जसहड का वास, वीरदास जसहड का वास, केराडा, सावत का वास और मुलडा गॉव लूटे।[3] पुन मई ११, १६५६ ई० को यहाँ से पोहकरण को लौट गये।[4]

नैणसी तीन दिन तक पोहकरण रहा। वहा शान्ति और सुरक्षा की सुव्यवस्था की। तब शनिवार, मई १४, १६५६ ई० को पोहकरण से जोधपुर के लिए रवाना हुआ। लोहवा गाव मे उसने कुछ समय के लिये विश्राम किया और सिवाणा, फलोधा और महेवा के जो सैनिक दल चढाई मे नैणसी की सहायताथ आये थे,

---

१ विगत०, १, पृ० १३६, बही०, पृ० ४३ ४४।
२ विगत०, १, पृ० १३६ ४०, बही०, पृ० ४४।
३ विगत०, १, पृ० १४०, १४१, बही०, पृ० ४५ ४७।
४ विगत०, १, पृ० १४१, बही०, पृ० ४७ ४८।

उन्हे विदाई दी । तब उसी दिन वहा से रवाना होकर लौलटा, जेलू के तालाब, बाल्हरवा होता हुआ मगलवार, मई १७, १६५६ ई० को वह जोधपुर पहुचा ।[१]

नैणसी को जोधपुर पहुचे अभी पूरे १० दिन भी नही हुए थे कि गुरुवार, मई २६, १६५६ ई० को पोहकरण से और, मई २७, १६५६ ई० को फलोधी से सन्देश आया कि भाटियो ने पुन पोहकरण और फलोधी मे लूटमार मचा दी है ।[२] अत नैणसी के लिए आवश्यक हो गया कि भाटियो के दमनाथ पुन कूच करे, परन्तु बिना पूर्ण सैनिक साज-बाज के एकाएक कूच करना कठिन था, अत सभी परगनो से सहायता प्राप्त करने के लिए आदमी भेजे । तब शनिवार, जून ४, १६५६ ई० को जोधपुर से रवाना होकर चेनपुरा, देवीभर, बाल्हरवा, बिराई, भलेलाई, जालीवाडा होता हुआ शुक्रवार, जून १०, १६५६ ई० को फलोधी पहुचा । नैणसी स्वय ने जैसलमेर कूच करना उचित नही समझा । वह स्वय फलोधी ही रहा और सैनिको को जैसलमेर मे लूट खसोट करने की खुली छूट दे दी । दोनो ओर आक्रमण प्रत्याक्रमण होते रहते थे ।[३]

इसी समय बीकानेर का राजा करण विवाह के लिए जैसलमेर जा रहा था। उसने इस झगडे को समाप्त करने के लिए मध्यस्थ बनना चाहा । अत मार्ग मे जाते हुए सेवासर मे उसने नैणसी को अपने पास बुलाया । जुलाई ११, १६५६ ई० को नैणसी उससे मिला । बातचीत और विचार-विमर्श करके पुन लौट आया ।[४] नैणसी भी शान्ति का इच्छुक था, परन्तु भाटी इस हेतु उत्सुक नही थे । भाटी पोहकरण के एक या दो गाव लूटते तो नैणसी जैसलमेर के दस गाव लूटता । राजा करण के जैसलमेर से पुन लौटने तक यही चलता रहा ।[५] अत जैसलमेर मे राजा करण ने रावल सबलसिंह को समझाया और शान्ति स्थापित करने के लिए उसे सहमत कर वह रावल सबलसिंह के प्रतिनिधि भाटी रामसिंह और रघुनाथ को अपने साथ लेता आया । इधर नैणसी को भी रामदेहरा पर आमन्त्रित किया गया । नैणसी कई राजपूत सरदारो को भी अपने साथ लेता आया । राजा करण ने दोनो पक्षो से विचार विमर्श कर लिखित आपसी समझौता करवा दिया । यो जुलाई ३१, १६५६ ई० को समझौता होने पर अगस्त १, १६५६ ई० को भाटी राजपूत जैसलमेर के लिए रवाना हो गये और अगस्त २, १६५६ ई० को नैणसी और उसके साथ के सरदारो और सेना ने भी फलोधी से कूच किया और अगस्त ४, १६५६ ई० को वह जोधपुर पहुच गया ।[६]

---

१ विगत०, १, पृ० १४१, १४२, बही०, पृ० ४७, ४६ ।
२ विगत०, १, पृ० १४२, १४३, बही०, प० ४६ ।
३ विगत०, १, पृ० १४३, बही०, प० ४६ ५० ।
४ विगत०, १, पृ० १४३ ४४, बही०, पृ० ५० ५३ ।
५ विगत०, १, पृ० १४४, बही०, प० ५३ ५५ ।
६ विगत०, १, पृ० १४४, बही०, प० ५३ ।

५ मारवाड राज्य के शासकीय अधिकारी के रूप मे मुहणोत नैणसी

मुहणोत नैणसी की प्रशासकीय योग्यता उसकी अपनी वश-परम्परागत थी। जमव तसिंह की सैनिक सेवा मे रहकर उसने अपने सामरिक कौशल का भी पूग परिचय जसवन्तसिंह को दिया था। अत जसवन्तसिंह ने उसे परगना हाकिम बना दिया था। सवप्रथम नणसी को परगना फलोधी का हाकिम बनाया गया। अक्तूबर, १६३७ ई० मे उसने फलोधी के हाकिम-पद का कायभार सभाल लिया, और जनवरी, १६३९ ई० तक वह इस परगने मे कायरत था ही।[१] परन्तु सम्भव है पोहकरण का हाकिम नियुक्त होने के पूव तक नैणसी फलोधी का ही हाकिम बना रहा हो, क्योकि मई, १६४२ ई० और १६४५-४९ ई० मे सोजत क्षेत्र के मेरो के विरुद्ध आक्रमण के अतिरिक्त १६३९ ई० से अक्तूबर, १६५० ई० के पूव उसके कार्यो का विवरण उपलब्ध नही है।

मुहणोत नैणसी को शनिवार, अक्तूबर १६, १६५० ई० मे पोहकरण का हाकिम बनाकर जोधपुर से पोहकरण रवाना किया। वह तब गुरुवार, अक्तूबर ३१, १६५० ई० को पोहकरण पहुचा और लगभग ४० दिन तक वहाँ का हाकिम रहा था।[२] इसके बाद आगरा सूबा मे हिंडोन सरकार के अन्तगत उदेही पचवार परगना का वह हाकिम बना और सम्भवत दिसम्बर, १६५० ई० से अगस्त, १६५२ ई० तक नैणसी इसी परगने का हाकिम रहा।[३]

मुहणोत नैणसी अगस्त, १६५२ ई० से जून, १६५६ ई० तक परगना मलारणा[४] का हाकिम रहा।[५] १६५६ ई० से १६५८ ई० मे देश दीवान बनने के पूव तक नैणसी सम्भवत परगना बदनोर का हाकिम रहा होगा, क्योकि मई, १६५८ ई० मे वही से लौटकर नैणसी जसवन्तसिंह की सेवा मे पहुचा था।[६]

इस प्रकार मुहणोत नैणसी लगभग २० वष तक विभिन्न परगनो का हाकिम रहा था। अपने आधीन परगनो मे उसने शान्ति और सुव्यवस्था बनाये रखी थी। राजा जसवन्तसिंह उसके कार्यों से बहुत प्रभावित हुआ था। १६५८ ई० मे उसे

---

१ विगत०, २, प० ८।

२ विगत०, २, प० ३०५ ६, ३२३।

३ विगत०, १, प० १२६ २७, आईन० २, प० १९३। परगना उदेही सितम्बर, १६४८ ई० से सितम्बर, १६५७ ई० तक जसवन्तसिंह के अधिकार मे रहा था।

४ मलारणा—परगना मलारणा तब सूबा अजमेर के अन्तगत सरका ररणथम्भौर मे था। विगत०, १ प० १२७, आईन०, २, प० २८०।

५ विगत०, १, प० १२७। जोधपुर ख्यात०, १, प० २५४ के अनुसार वह १६५८ ई० तक मलारणा का ही हाकिम रहा था। जो ठीक नही है, क्योकि १६५६ ई० मे मलारणा परगना खालसा हो गया था। विगत०, १, प० १२७, १२९।

६ वही०, प० २७।

एक ऐसे योग्य व्यक्ति की आवश्यकता हुई, जो राज्य-शासन मे सैनिक और कूट-नीति का भी सहारा ले सके। पिछले लगभग २० वर्षों के निरन्तर अनुभव पर गहराई से विचार करने के बाद वह इसी निणय पर पहुचा कि ऐसा व्यक्ति नैणसी ही था। अत मई १८, १६५८ ई० के दिन महाराजा जसवन्तसिंह ने नैणसी को जोधपुर राज्य के देश दीवान के पद पर नियुक्त किया।[1]

मुहणोत नैणसी से पूव जोधपुर राज्य का देश दीवान मियाँ फरासत था, जिसे बुधवार, जून २५, १६४५ ई० को आगरा मे पहिली बार देश-दीवान के पद पर नियुक्त कर जोधपुर भेजा था। तीन वर्ष तक फरासत जोधपुर का देश दीवान रहा, तदनन्तर जुलाई १२, १६४८ ई० को राजा जसवन्तसिंह ने फरासत को अपने पास वापस बुला लिया। भाटी सुरताण मानावत को देश-दीवान का काय सौपा, परन्तु वह विशेष सफल नही हो पाया। अत बुधवार, जनवरी १६, १६५० ई० को फरासत को देश-दीवान बनाकर पुन जोधपुर भेज दिया। तब मई १८ १६५८ ई० तक वह इस पद पर काय करता रहा।[2] तदनन्तर उसे परगना जालोर का हाकिम बना दिया गया।[3]

धरमाट के युद्ध से लौटकर जब गुरुवार, अप्रैल २६, १६५८ ई० को जसवन्तसिंह जोधपुर पहुचा,[4] उस समय मुहणोत नैणसी बदनोर था, सो वापस बुलाये जाने पर वह रविवार, मई ६, १६५८ ई० को जोधपुर पहुचा।[5] राजा जसवन्तसिंह ने मियाँ फरासत को देश दीवान के पद से अलग कर मगलवार, मई १८, १६५८ ई० को मेडता मे मुहणोत नैणसी को देश-दीवान पद का महत्त्वपूण कायभार सौपा।[6] इस पद के वतन के रूप मे नैणसी को रु० ६,००० वार्षिक तथा इसके अतिरिक्त जागीर का पट्टा[7] अलग से दिया। इस पद पर नैणसी दिसम्बर, १६६६

---

१ विगत०, १, प० १३२, बही०, प० २७, पोथी० (ग्रन्थ स० १११) प० ४१२ ख।

२ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २२५।

३ बही०, पृ० ७७, जोधपुर ख्यात०, १, प० २५५।

४ विगत०, १, पृ० १३२, बही०, प० २६।

५ बही० प० २७।

६ बही०, प० २७, विगत०, १, प० १३२, २, प० ६२। जोधपुर ख्यात० (१, प० २२८) के अनुसार महाराजा जसवन्तसिंह जब जून, १६५८ ई० में अजमेर आया था, तब वही पर मियाँ फरासत को देश दीवान पद से हटाया और वही नैणसी को यह पद प्रदान किया। परन्तु ख्यात० का यह कथन मान्य नही किया जा सकता। बही० और विगत० जसे दोनो समकालीन प्रामाणिक ग्रन्थो में मेडता मे ही उसे यह पद प्रदान करने के उल्लेख हैं।

७ बही० की मूल हस्तलिखित प्रति (प० ३७ ब) में रु० ६,००० ही है, परन्तु छापे की भूल से बही०, प० २७ पर रु० ८००० छप गया है। नैणसी को कहाँ का और कितनी आय का पट्टा दिया इस सम्बन्ध मे कोई उल्लेख नही मिलता है।

ई० तक काय करता रहा।

अपनी देश-दीवानी के काय-काल मे नैणसी ने अनेक प्रशासनिक सुधार किये। देश दीवान बनने के तुरन्त बाद उसने मेडता की ओर ध्यान दिया था। बुधवार, मई २६, १६५८ ई० तक जसवन्तसिंह मेडता मे ही रहा। मई २६ को वहाँ से रवाना होकर उसने रविवार, मई ३०, १६५८ ई० को थावला मे डेरा किया। तब नैणसी भी महाराजा के साथ था। दूसरे दिन मई ३१, १६५८ ई० को मुहणोत नैणसी को एक ईराकी घोडा प्रदान कर मेडता लौटने के लिए विदाई दी।[१] देश दीवान के पद पर रहते हुए भी तब मेडता का प्रशासन भी वही स्वय देखता था। मेडता पहुचकर उसने वहाँ के करो आदि की जाच-पडताल की और यह अनुभव किया कि कुछ कर वास्तव मे प्रजा पर भार हैं। कुछ समय मेडता रहने के बाद जब वह जसवन्तसिंह की सेवा मे पहुचा, तब वहा उसने महाराजा से निवेदन कर बल कर मे, जो प्रति बडे गाँव २० रु० अथवा २५ रु० लिया जाता था, और उसके साथ ही अन्य कर भी खच भोग के रूप मे वसूल होते थे, उनमे भी कमी करायी। जून, १६५८ ई० मे यह राशि घटाकर बडे गाँव पर १० रु० और छोटे गाव पर ५ रु० मात्र कर दी गयी।[२]

जोधपुर से लौटकर नैणसी (माह शुदि ४, १७१५ वि०) रविवार, जनवरी १६, १६५९ ई० को मेडता पहुचा ही था कि उसे जसवन्तसिंह ने बुला लिया, जो तब खजवा के युद्ध-क्षेत्र से वापस जोधपुर लौट रहा था। अत दो दिन मेडता ठहरकर नैणसी लपोलाई मे जसवन्तसिंह के पास पहुचा। यही पर आवश्यक विचार-विमश करने के बाद नैणसी को मेडता रवाना किया और जसवन्तसिंह जोधपुर के लिए रवाना हुआ।[३] फरवरी, १६५९ ई० मे जब मुहणोत नैणसी मेडता मे ही था, तब गुजरात मे होकर अजमेर की ओर बढते हुए दाराशिकोह ने अपने पुत्र सिपरशिकोह को जसवन्तसिंह के पास जोधपुर भेजा, और वह स्वय ससैन्य गुरुवार, फरवरी १८, १६५९ ई० को मेडता पहुचा। तब अन्य राजपूत सरदारो को साथ लेकर मुहणोत नैणसी उससे मिला। फूल महल के पास मालकोट के डेरे पर तीन दिन ठहरकर दाराशिकोह अजमेर की ओर बढा। परन्तु जसवन्तसिंह टाल-मटोल करता रहा और दारा के पक्ष मे लडने नही गया। सिपरशिकोह अकेला ही वापस लौटकर दाराशिकोह से जा मिला।[४]

माच के प्रथम सप्ताह मे जसवन्तसिंह का डेरा राबडियावास मे था।

---

१ बही०, पृ० २७।

२ बही०, प० ३३, विगत०, २, प० ८९, ९०, ९१ भडारिया री पोथी (ग्रन्थ स० ७८), प० ३८ ख ३९ क।

३ बही० प० ३३ ३५।

४ बही०, पृ० ३७, विगत०, १, प० १३६।

मुहणोत नैणमी भी मेडता से रवाना होकर सोमवार, मार्च ७, १६५९ ई० को राबडियावास पहुँचा, जो अजमेर से ३५ मील पश्चिम मे है, वही जसवन्तसिंह को मिर्जा राजा जयसिंह के द्वारा औरगजेब का तसल्ली देने वाला फरमान मिला। अत जयसिंह के लिखे अनुसार राबडियावास से ही जसवन्तसिंह बुधवार, मार्च ९, १६५९ ई० को वापस जोधपुर की ओर लौट गया। तब देश-दीवान मुहणोत नैणसी भी जसवन्तसिंह के साथ बना रहा। बालमभन्द के डेरे पर मार्च १७, १६५९ ई० को जसवन्तसिंह को गुजरात की सूबेदारी का शाही फरमान मिला एव वह तत्काल ही जोधपुर की राह गुजरात के लिए चल पडा। सोमवार, मार्च २१, १६५९ ई० को जसवन्तसिंह साथलाणा था। तब समाचार आये कि दोराई के युद्ध मे पराजित और गुजरात की ओर भागे दाराशिकोह का पीछा करते हुए राजा जयसिंह और बहादुर खाँ शीघ्र ही उधर आ रहे है। अत साथ-लाणा से कूच कर वह स्वय तो भीनमाल चला गया और राठोड महेशदास और देश दीवान नैणसी मिर्जा राजा जयसिंह (आम्बेर) की पेशवाई के लिये भेजे। बुधवार, मार्च २३, १६५९ को पाल्हावासणी मे राजा जयसिंह कछवाहा और बहादुर खाँ से वे मिले और अपनी सेना सहित उनके साथ हो गये।[1] मार्च ३०, १६५९ ई० को जालोर के सेणे गाव मे जसवन्तसिंह भी शाही सेना के साथ आ मिला। मार्च ३१, १६५९ ई० को सिरोही परगना के गाव ऊड मे डेरा हुआ। यही पर जसवन्तसिंह को भाटियो द्वारा पोहकरण पर आक्रमण के समाचार मिले, जिस पर उसने नैणसी को भाटियो के विरुद्ध भेजा।[2]

१६६१ ई० मे परगना मेडता का हाकिम बनाकर भाटी राजसी सूजावत को भेजा गया। प्रजा उससे असन्तुष्ट हो गयी, और दिसम्बर, १६६१ ई० मे जब शिकायत के लिए जाटो का एक शिष्ट मण्डल बादशाह औरगजेब के पास जाने लगा तब नैणसी ने उन लोगो को समझाने का प्रयत्न किया, साथ ही कुछ करो मे और कमी कर दी जिसके सम्बन्ध मे उपर्युक्त आदेश नैणसी ने बाद मे शनिवार, जनवरी २५, १६६२ ई० को जारी किया था। इस पर भी जब जाट वे दिसम्बर, १६६२ ई० मे बादशाह के पास पहुँचे तब राजा जसवन्तसिंह और नैणसी ने सयत्न मुगल साम्राज्य के दीवान राजा रघनाथ के द्वारा औरगजेब को अवगत कराया कि राजा जसवन्तसिंह के समय मे करो मे कोई वृद्धि नही की गयी है। औरगजेब ने आदेश दिया कि राजा गजसिंह के समय जो कर लिये जाते थे वे ही लिये जाते रहे। अत सन् १६६१ ई० मे नैणसी द्वारा दी गयी छूट भी निरस्त हो गयी और उनके ही कर्मों से किसानो पर कर-भार पुन बढ गया।[3]

---

१ बही०, पृ० ३७ ३८, विगत०, १, प० १३६ ३७।
२ बही०, पृ० ३९ ५३। इस चढाई का विस्तृत विवरण पहले दिया जा चुका है।
३ विगत०, २, प० ९३-९६।

देश दीवान के रूप मे नैणसी के कर्तव्य और कार्य—देश दीवान की नियुक्ति राजा स्वय करता था। ईमानदार, प्रशासनिक कार्य मे अनुभवी, सैनिक योग्यता वाले व्यक्ति को ही इस पद पर नियुक्त किया जाता था। देश दीवान राज्य का मुख्य प्रशासनिक अधिकारी और राजस्व का प्रधान कार्याध्यक्ष होता था। राज्य का प्रत्येक परगना कुल कितने तफो मे विभाजित था, इसकी उसे जानकारी होती थी, और प्रशासनिक दृष्टि से आवश्यकतानुसार उन तफो की सख्या कम या ज्यादा कर सकता था।[१] देश दीवान के कार्यालय मे सभी परगनो, तफो व गाँवो का सारा आवश्यक विवरण रहता था। जब कभी मुगल बादशाह से राजा को कोई नया परगना मिलता तो राज्य का वकील मुगल दरबार से उसका विवरण प्राप्त कर उसे अपने राज्य के देश दीवान के पास भेज देता था।

साधारणतया किसी भी व्यक्ति को पट्टा देने का अधिकार केवल शासक को ही था, परन्तु विशेष परिस्थितियो मे राज्य-हित मे उपयोगी व्यक्ति को देश-दीवान भी पट्टा दे देता था। उसी की सिफारिश पर शासक पट्टादार (जागीर) का पट्टा खालसा भी कर लेता था।[२] साधारणतया राजा के आदेश पर जब देश-दीवान किन्ही व्यक्तियो को पट्टा देता था, तब देश-दीवान पहिले पट्टा-जागीर का अध्ययन करता था, और तब ही उस पर ली जाने वाली पेशकश निश्चित करता था।[३] किसी भी पट्टादार का पट्टा खालसे करने का अधिकार देश-दीवान को भी था। परन्तु तदनन्तर यथासम्भव शीघ्र ही इसकी सूचना अनिवाय रूपेण उसे राजा को देनी पडती थी।[४] कौन पट्टादार कब मरा या किसी ने कोई पट्टा छोडा आदि का पूरा ब्यौरा भी देश-दीवान के कार्यालय मे रखा जाता था और उसकी सूचना तुरन्त महाराजा को भेजी जाती थी।[५] जब कभी देश-दीवान किसी सेवक पर नाराज हो जाता था तो वे आपस मे लड मरें इस उद्देश्य से एक ही क्षेत्र का

---

१ विगत०, १, प० १६४ ६५। मुगल कार्यालय के कागज पत्रो मे जोधपुर परगना मुगल आधिपत्यकाल मे निर्धारित १४ तफो मे विभाजित था। जोधपुर परगने की तफा हवेली के गाँवो की सख्या ५०५ थी। अतएव मुहणोत नैणसी ने प्रशासनिक सुविधा के लिए तफा हेवली को हवेली के अतिरिक्त पाच और तफो मे विभक्त कर दिया था, जिससे ही विगत०, १, मे जोधपुर परगना के विवरण मे कुल बीस तफो का अलग अलग विवरण दिया गया है।

२ वही०, प० १३०, १३१ ३२, १३४, १४५।

३ वही०, प० १५२ ५४।

४ वही०, प० १५१, १७८। मियाँ फरासत ने रविवार, जून १७, १६६६ ई० को राठोड सु दरदास के ३५०० रु० के जालोर के पाँच गाव खालसे करके तत्सम्बधी सूचना महाराजा को भेज दी थी। तब फरासत देश दीवान नही था। इस वणन से स्पष्ट है कि परगना हाकिम होने पर भी वह देश दीवान के अधिकारो का उपयोग करता था।

५ वही०, पृ० १८३।

दो व्यक्तियो को पट्टा देता था ।[1] यदि कोई पट्टादार अपने वतमान पट्टे से सन्तुष्ट नही होता तो वह अपना पट्टा बदलने के लिए महाराजा से निवेदन करता था । उचित समझने पर उस पट्टे के बदले मे नया पट्टा देने के लिए शासक अपने देश-दीवान को आदेश देता था । उस आदेशानुसार देश दीवान पट्टादार को नया पट्टा प्रदान करता था और उसका पिछला पट्टा खालसे कर लिया जाता था ।[2] देश-दीवान की सिफारिश पर भी पट्टा दिया जाता था ।[3] कभी कभी देश दीवान अपने शासक की पूव स्वीकृति के बिना भी पट्टा दे दिया करता था ।[4] देश दीवान को थानेदार नियुक्त करने का भी अधिकार था ।[5]

मुहणोत नैणसी महाराजा जसवन्तसिह के समय फलोधी, पोहकरण, मलारणा, बदनोर आदि विभि न परगनो का हाकिम रहा था, उसने परगनो के प्रशासन मे और भू-राजस्व मे सुधार किया था और अपनी योग्यता से देश-दीवान के पद पर पहुच गया था । वहाँ तब महाराजा जसवन्तसिह का अति विश्वसनीय अधिकारी था । परन्तु विधि की विडम्बना है कि ऐसे सुयोग्य और महत्त्वपूण व्यक्ति की, जिसकी स्वय जसवन्तसिह को ही नही, तत्कालीन समाज और देश को भी आवश्यकता थी, जसवन्तसिह का कोपभाजन बनकर आत्महत्या करनी पडी ।

६ उसके जीवन का दु खान्त बन्दी-गृह मे उसका आत्मघात

महाराजा जसवन्तसिह गुरुवार, नवम्बर १, १६६६ ई० मे लाहोर पहुचा था ।[6] यही पर उसने जोधपुर राज्य के केन्द्रीय प्रशासन मे एकाएक फेरबदल किये । सवप्रथम उसने रविवार, दिसम्बर ६, १६६६ ई० (पौष बदि ८, १७२३ वि०) को प्रधान के पद पर राठोड आसकरण की नियुक्ति की[7] और उसे तत्काल जोधपुर जाने का आदेश दिया । वह जनवरी, १६६७ ई० मे जोधपुर पहुचा था ।[8] इसी बीच सोमवार, दिसम्बर २४, १६६६ ई० को देश-दीवान मुहणोत

---

१ वही०, प० १४७ । मियाँ फरासत ने शनिवार, नवम्बर २२, १६५१ ई० को फलोधी मे राठोड केशरीसिंह से ऊँट पेशकश का कर ४०० रु० मे तफा ओइसा का जेतसी पाना को दे दिया जबकि जान बूझकर उसन रा० आसकरण का इसका पट्टा भी बहाल रखा ।

२ वही०, प० १८५ ।

३ वही०, पृ० १६२ ।

४ वही०, प० २०७ । रविवार, मई २२, १६५६ ई० को जब नैणसी पोहकरण मे था, तब वहाँ नैणसी ने राठोड रघुनाथ को ४,००० रु० का पट्टा दिया था और तदथ जसवन्तसिह की पूव स्वीकति नही ली थी ।

५ वही०, प० १६६ ।

६ जोधपुर ख्यात०, १, प० २३६ ।

७ बाकी०, बात स० ३३६, प० ३२, दुर्गादास०, पृ० ३१ ।

८ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ३२४ ।

नैणसी और तन दीवान मुहणोत सु दरसी को पदच्युत कर दिया गया।[१] मुहणोत नैणसी तब जोधपुर था एव उसके सम्ब ध मे आदेश जोधपुर भेजे गये और उसके स्थान पर वही लाहोर मे पचोली केशरीसिह रामच दोत को नैणसी के स्थान पर देश-दीवान नियुक्त कर[२] जोधपुर भेजा, जो उससे पहले बरशी के पद पर काय कर रहा था।[३] तलाशी लेने पर मुहणोत सुन्दरदास का धन राठोड श्यामसिह गोविन्ददासोत के पास निकला था अत श्यामसिह का पट्टा जब्त कर उसे सेवा-मुक्त कर दिया गया।[४]

अब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि मुहणोत नैणसी जैसे विश्वस्त उच्च पदाधिकारी को महाराजा जसव तसिह ने यो एकाएक क्यो पदच्युत किया और बाद मे क्यो बन्दी बनाया ? सुनिश्चित् कारण का तो अब तक कही कोई प्रामाणिक उल्लेख नही मिलता है। अत उसके सम्भावित कारण स्वरूप जो कुछ बातें हो सकती थी, उन्ही का उल्लेख किया जा रहा है।

परगना मेडता के राजस्व के आकडे देखने से पता चलता है कि परगना मेडता मे १६६१ ई० (सम्वत् १७१८ वि०) मे नैणसी ने राजस्व की वसूली मे सख्ती बरती थी।[५] अत वहा के पाच दस गावो के जाटो का एक शिष्ट-मडल बादशाह के पास फरियाद लेकर पहुचा। उस समय वकील मनोहरदास ने करो मे कुछ कमी करवा दी।[६] १६६२ ई० (सम्वत् १७१६ वि०) मे परगना मेडता के आकेली, बावलले, चादारण और लवेरा के जाट पुन बादशाह के पास फरियाद लेकर पहुँच गये थे।[७] उस समय महाराजा जसवन्तसिह ने शाही दीवान राजा रघुनाथ को लिखा कि करो मे कोई वृद्धि नही की गयी है। पूव के अनुसार ही लिया जा रहा है। जाट तो उच्छृखलतावश फरियाद लेकर आ रहे हैं।[८]

गुजरात सूबा तागीर (जब्त) कर दक्षिण जाने का औरगजेब का आदेश जसवन्तसिह को नवम्बर ४, १६६१ ई० मे प्राप्त हुआ था और शाही मनसब मे गुजरात के परगनो के स्थान पर हाँसी हिसार के परगने प्रदान कर दिये थे।[९] तब

---

१ जोधपुर ख्यात०, १ प० २५४, २५५ राठोडा री ख्यात (ग्र थ स० ७२), प० ८६ ख।
२ पचोली केशरीसिह को लाहोर मे पोष बदि ८, १७२३ वि० (दिसम्बर ६, १६६६ ई०) को देश दीवान बनाकर जोधपुर भेजा। राठोडा री ख्यात (ग्रन्थ स० ७२), प० ५६ क।
३ जोधपुर ख्यात०, १, प० ३२४।
४ वही०, प० १६१।
५ विगत०, २, प० ७८ ८० ११७ २१३।
६ विगत०, २, प० १३, १४।
७ विगत०, २, प० १४, भडारिया री पोथी (ग्र थ स० ७८), प० ३८ ख।
८ विगत०, २, प० ६४ ६५।
६ विगत०, १, प० १४६ ५२, जोधपुर ख्यात०, १, प० २३१। दक्षिण जाने का आदेश

उन परगनो का परगना हाकिम बनाकर नैणसी के पुत्र मुहणोत कमसी और पचोली बछराज को वहाँ भेजा गया था।[1] परन्तु वहाँ के उनके अत्यल्प समय के प्रशासन मे ही हासी हिसार की प्रजा नैणसी से नाराज हो गयी।[2] अत १६६६ ई० (१७२३ वि०) को वहा की प्रजा के कुछ प्रमुख व्यक्ति बादशाह औरगजेब के पास फरियाद (शिकायत) लेकर पहुचे, तब औरगजेब ने एक लाख की राशि छुडवायी थी[3] तो जसवन्तसिंह न इस पर अविलम्ब कार्यवाही करना आवश्यक समझा। सवप्रथम उसन हासी-हिसार पर व्यास पद्मनाभ[4] को हाकिम बनाकर भेजा। बाद मे इसी वष दिसम्बर २४, १६६६ ई० को मुहणोत नैणसी को पदच्युत कर बाद मे कैद किया गया था।

मुहणोत नैणसी को पदच्युत कर बन्दी बनाये जाने के बाद मुहणोत नैणसी के सेवको की तलाशी ली गयी, और जिन सेवको ने डर के कारण अपना सामान अन्य व्यक्तियो के पास रख दिया था, जसवन्तसिंह को पता चलने पर उन लोगो के पट्टे भी जसवन्तसिंह ने खालसे कर लिये।[5] इससे यह बात तो स्पष्ट लगती है कि नैणसी पर मुख्यतया कडाई कर पैसे वसूल करने और प्रजा पर अत्याचार करने का ही दोषारोपण था। 'मारवाड परगना री विगत' मे स० १७१५ से १७१९ वि० तक परगनो व गाँवो की आय के वास्तविक आँकडे दिये गये हैं। उनको देखने से ज्ञात होता है कि नैणसी के पूर्व प्रत्यक परगना या गाँवो से जो राजस्व वसूल होता था, उससे कही अधिक बल्कि कही कही तो दुगुना राजस्व वसूल किया गया था।[6] अत देश-दीवान मुहणोत नैणसी ने अपने स्वामी राजा जसवन्तसिंह की आय मे वृद्धि करना चाहा और इस दृष्टि से उसने राजस्व वसूली मे सख्ती बरती। इसी सख्ती के कारण ही मेडता के जाट और बाद मे हाँसी हिसार के प्रमुख व्यक्तियो ने नैणसी की शिकायत तब मुगल बादशाह से की। सम्भव है इस स्थिति का लाभ उठाकर मुहणोत नैणसी के विरोधियो ने महाराजा के मन मे नैणसी के प्रति शका उत्पन्न कर दी। महाराजा जसवन्तसिंह को यह शका हो गयी थी कि

जसवन्तसिंह को आ० ना० (पृ० ६४७) के अनुसार दिसम्बर २८, १६६० ई० में और मीरात० (अ० अ० पृ० २२४ २५) के अनुसार अगस्त, १६६१ ई० मे दिया गया था। किन्तु जून १५, १६६१ ई० तक तो जसवन्तसिंह निश्चित ही अहमदाबाद मे था (वही०, पृ० १६३)।

१ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २३१, पोथी० (ग्रन्थ स० १११), पृ० ४१४ क।

२ पोथी० (ग्रन्थ स० १११), पृ० ४१४ ख ४१५ क।

३ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २५५, पोथी० (ग्रन्थ स० १११), पृ० ४१४ ख-४१५ क।

४ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २५५, पोथी० (ग्रन्थ स० १११), पृ० ४१४ ख ४१५ क।

५ वही०, पृ० १९१, १९९।

६ विगत०, २, पृ० ७८ ८०।

नैणसी ने प्रजा पर अत्याचार किये है और अनैतिक रूप से धन एकत्रित कर लिया है। अत नैणसी को ब दी बना लिया गया और उस पर एक लाख रुपये कबूलात के देने का दबाव डाला गया था। ओझा०[1] और हजारीमल बाठिया[2] के अनुसार श्रुति से यह पाया जाता है कि नैणसी ने अपने रिश्तेदारो को बडे बडे पदो पर नियत कर दिया था और वे लोग अपने स्वाथ के लिए प्रजा पर अत्याचार किया करते थे। इसी बात को जानने पर महाराजा उससे अप्रसन्न हो गये थे, परन्तु यह आरोप सही नही है। 'जोधपुर हुकूमत री बही' मे स० १७१४ से १७२६ वि० तक दिये गये सारे पट्टो की सूचिया और काय विवरण हैं। उससे स्पष्ट पता चलता है कि नैणसी ने अपने किसी भी रिश्तेदार को कोई पट्टा नही दिया।[3] साथ ही नैणसी ने अपने किसी रिश्तेदार को किसी बडे पद पर नियुक्त किया हो, उसका भी किसी समकालीन या बाद के प्रामाणिक आधार ग्र थ[4] मे उल्लेख तो क्या सकेत भी नही है। मुहणोत नैणसी के भाई सुन्दरदास और आस-करण नैणसी के देश दीवान बनने के पूर्व ही परगना-हाकिम थे, और बाद मे नैणसी का पुत्र कमसी भी हाकिम बना। परन्तु परगना हाकिम की नियुक्ति राजा स्वय करता था।

अगरचन्द नाहटा के लेख 'अपूव स्वामी-भक्त राजसिंह खीवावत की बात' मे 'अथ राजसिंघ खीवावत आसोप रे धणी री बात' के अनुसार मुहणोत नैणसी ने मेडता मे भूमि-कर मे वृद्धि कर दी, जिससे वहाँ की प्रजा गाँव छोडकर जाने लग गयी और गाँव सूने होने लग गये और जिसके कारण सात वर्षो मे राज्य की अठारह लाख की हानि हो गयी। राजा जसव तसिंह को पता चलने के बाद उसने नैणसी पर क्षति पूर्ति का दबाव डाला। बाद मे प्रधान राजसिंह के आग्रह पर जसव तसिंह ने नैणसी को क्षमा कर दिया, पर तु साथ ही पदच्युत कर दिया, और आगे कभी मुहणोत वश के लोगो को राजकीय सेवा मे न रखने की शपथ ली।[5] उक्त बात अस्पष्टत प्रचलित प्रवादो के आधार पर सम्भवत १९वी शताब्दी के लगभग ही लिखी होगी, क्योकि इसमे कालक्रमानुसार सही घटना-क्रम का अभाव है और अनैतिहासिकता का पूण बाहुल्य भी है। प्रथम तो यह वृत्तान्त नैणसी के देश-दीवान पद पर नियुक्त होने के बाद का, अर्थात् १६५८ ई०

---

१ दूगड०, १ वश परिचय प० ३ ४।

२ हिन्दुस्तानी०, प० २७५।

३ बही०, प० २११ १२ (मुहता रा पट्टा)।

४ विगत० (विगत० मे प्रसगवश अनेक पदाधिकारियो के नाम आते हैं पर तु नैणसी के किसी रिश्तेदार का नाम उनमे नही मिलता है।), जोधपुर ख्यात०, १, बाकी, और बही०।

५ वरदा०, वष ३, अक १, प० ३२ ३३, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ४, प० २८ २९।

के बाद का था और प्रधान राजसिंह की मृत्यु इसके १८ वर्ष पूर्व १६४० ई०[1] मे हो गयी थी। अत नैणसी को प्रधान राजसिंह के समकालीन बताना किस प्रकार मान्य हो सकता है ? इसी बात मे यह भी लिखा है कि नैणसी को पदच्युत करने के बाद भडारी मन्ना को देश-दीवान बनाया, किन्तु भडारी मन्ना तो नैणसी के बाल्यकाल मे ही प्रधान के पद पर था।[2] दूसरे, नैणसी ने मेडता मे कोई भूमि-कर मे वृद्धि नही की थी और नैणसी के देश दीवानी के काल मे मेडता के कुल राजस्व मे वृद्धि ही हुई है, न कि किसी प्रकार की कोई हानि।[3]

रामनारायण मुहणोत[4] ने दो घटनाओ का उल्लेख किया है—

१ महाराजा जसवन्तसिंह का उत्तराधिकारी पुत्र पृथ्वीसिंह वीरता के लिए प्रसिद्ध था। बादशाह औरगजेब के समक्ष पृथ्वीसिंह ने जगली सिंह से लडाई कर नि शस्त्र होते हुए भी उस सिंह को चीर डाला था। इससे औरगजेब को पृथ्वीसिंह से ईर्ष्या हो गयी और उसके साथ ही उसके गुरु नैणसी से भी। अत औरगजेब ने दोनो के विरुद्ध जाल बिछाना प्रारम्भ कर दिया।

२ एक बार नैणसी ने अपने स्वामी जसवन्तसिंह को दावत दी। दावत की तैयारी और अद्भुतता देखकर जसवन्तसिंह और औरगजेब के दरबारी दग रह गये। औरगजेब के दरबारियो ने यह उपयुक्त अवसर पाकर महाराजा जसवन्तसिंह के कान भरे। तब जसवन्तसिंह ने नैणसी से कबूलात के रूप मे एक लाख रुपये की माँग की। नैणसी ने उक्त राशि देना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझा। लेखक ने आगे लिखा है कि इससे नैणसी ने जोधपुर मे रहना उचित नही समझा और गुजरात की ओर चला गया तथा मार्ग मे ही उसकी मृत्यु हो गयी। उसी समय औरगजेब ने महाराजा को सूबेदार नियुक्त करके काबुल भेज दिया और पृथ्वीसिंह को युवराज बना दिया। युवराज के पद के उत्सव के समय औरगजेब ने पृथ्वीसिंह को विशेष प्रकार की ऐसी पोशाके पहनायी जिनके पहिनते ही पृथ्वीसिंह का काम तमाम हो गया। पृथ्वीसिंह की मृत्यु के समाचार से दुखी होने के कारण जसवन्तसिंह की भी काबुल मे मृत्यु हो गयी।[5] लेखक के उपर्युक्त कथनो मे सर्वत्र अनैतिहासिकता ही है। नैणसी को औरगाबाद मे ही बन्दी बनाया था और औरगाबाद से जोधपुर की ओर अग्रसर होते समय रास्ते मे नैणसी और

---

१ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २५३, कूपावत०, पृ० २२४।

२ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० १४४।

३ विगत० २, पृ० ७८ ७९, ८८ ९८।

४ विश्वमित्र' दीपावली विशेषाक, १९६३ ई० ख्यात० (प्रतिष्ठान), ४, पृ० २९ ३० से उद्धृत।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ४, पृ० २९-३०।

सुन्दरदास ने आत्मघात किया था, न कि जोधपुर से गुजरात जाते समय।[1] साथ ही पृथ्वीसिंह की मृत्यु चेचक की बीमारी के कारण बुधवार, मई ८, १६६७ ई० को हुई थी।[2] राजा जसवन्तसिंह इसके लगभग ११ वष बाद तक जीवित रहा था। अत रामनारायण मुहणोत द्वारा लिखित सब ही कथन सवथा असगत, अप्रामाणिक और अविश्वसनीय हैं।

यो उपर्युक्त कारणवश ही महाराजा जसवन्तसिंह ने सोमवार, दिसम्बर २४, १६६६ ई० को[3] मुहणोत नैणसी और सुन्दरदास को लाहोर के मुकाम पर पदच्युत किया। इस समय तन-दीवान मुहणोत सुन्दरदास महाराजा जसवन्तसिंह के साथ लाहोर मे ही था।[4] माच १०, १६६७ ई० को जसवन्तसिंह वापस दिल्ली लौट आया था और माच ११, १६६७ ई० को उसने बादशाह औरगजेब से भेंट की।[5] इसी समय महाराजा जसवन्तसिंह को दक्षिण जाने का आदेश हुआ था। इसी समय जसवन्तसिंह ने पदच्युत देश दीवान नैणसी को भी अपने पास बुला लिया था। तब दक्षिण जाते समय मुहणोत नैणसी और सुन्दरदास भी जसवन्तसिंह के साथ ही थे। ५७ वर्षीय पदच्युत देश-दीवान मुहणोत नैणसी और उसके भाई मुहणोत सुन्दरदास को औरगाबाद के मुकाम पर शुक्रवार, नवम्बर २६, १६६७ ई० (पौष बदि ६, १७२४ वि०) को बन्दी बना लिया गया।[6] एक वर्ष तक बन्दी रखाकर महाराजा जसवन्तसिंह ने उससे एक लाख रुपये की माग की तथा यह आदेश देकर कि उक्त राशि कबूलात के रूप मे राजकीय खजाने मे जमा करा दें, १६६८ ई० (१७२५ वि०) मे उसको छोड दिया गया।[7] परन्तु नैणसी जैसा

---

१ देखिये पृ० ४१ ४२।

२ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २४०, मुदियाड०, पृ० १५७, बही०, पृ० १५४।

३ जोधपुर ख्यात०, १ पृ० २३८ ३६, २५४ ५५, बही० पृ० १९१।

४ बही०, पृ० १९१।

५ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २३६।

६ जोधपुर ख्यात० १ पृ० २५१ ख्यात० (वणशूर) पृ० ६६ क। परन्तु जोधपुर ख्यात० और ख्यात० (वणशूर) मे सम्वत् १७२३ वि० (१६६६ ई०) दिया है, जो सही नही है एव मान्य नही किया जा सकता क्योकि महाराजा जसवन्तसिह आषाढ बदि १३, १७२३ वि० (रविवार जून १ १६६७ ई०) को ही औरगाबाद पहुँचा था (जय० अख० जुलूसी सन १० ख० १ पृ० ३०७, ३१३)। अत उसे ठीक कर सम्वत १७२४ कर दिया है। मुदियाड० (पृ० १७०) और बाल० ख्यात (१ पृ० ५०) मे भी सम्वत १७२४ ही दिया है। ओझा० जोधपुर० (१ पृ० ४६२) ने माघ बदि ६ १७२४ वि० (रविवार, दिसम्बर २६ १६६७ ई०) लिखा है जिसका आधार भी जोधपुर राज्य की ख्यात दिया है जिसमे पौष' माह दिया है। स्पष्टतया भ्रान्तिवश ही ओझा० मे माह 'पौष के स्थान पर माघ' दे दिया जान पडता है।

७ जोधपुर ख्यात०, १ पृ० २५१, पोथी० (ग्रन्थ स० १११), पृ० ४१५ क।

स्वामी-भक्त, ईमानदार और स्वाभिमानी व्यक्ति लाख रुपये तो क्या एक पैसा भी देने को तैयार नही था।[1] अत मगलवार, दिसम्बर २८, १६६९ ई० (माह बदि १, १७२६ वि०) को जसवन्तसिंह ने मुहणोत नैणसी को पुन बन्दी बना लिया। तब नैणसी को अनेक प्रकार की यातनाये दी जाने लगी, जिससे नैणसी को बहुत आत्मग्लानि हुई। जो लोग उसके आधीन थे, अब वे ही उस पर अत्याचार कर रहे थे। अत ऐसे जीवन से तो मर जाना ही उसने अच्छा समझा। यही सोचकर फूलमरी गाँव[2] मे (भाद्रपद बदि १३, १७२७ वि०) बुधवार, अगस्त ३, १६७० ई० को[3] नैणसी और उसके भाई सुन्दरदास दोनो ने आत्महत्या कर ली।[4]

---

१ बाकी० (क्र० स० २१०६, प० १७४) के अनुसार नागोर निवासी सहदेव चूहडमलोत सुराणा ने स्वय एक लाख रुपये राज्य मे जमा करवा कर मुहणोत नैणसी और सुदरदास क परिवार को कद से मुक्त करवाया था।

२ फूलमरी—(२० ५° उ०, ७५ २५° पू०) औरगाबाद से १४ मील उ० पू० उ० मे स्थित।

३ पोथी० (ग्रन्थ स० १११), प० ४१२ क, ख्यात० (वणशूर), प० ६९ ख, जोधपुर ख्यात०, १ प० २५१, मुदियाड०, पृ० १७१, दूगड, २, वश परिचय, प० ३।

४ बाल० (१, प० स० ९३) के अनुसार मुहणोत नणसी ने मरने के पूव कबूलात के रुक्के पर निम्न दोहे लिखे थे—

१ राजा मागे लाख, (सो) लाख लखारा लाभसी।
ताम्बो देण तलाक, नटियो सुदर नैणसी॥ एक॥
२ लाख लखारा नीपजे, (के) वड पीपड री साख।
नटियो सुदर नैणसी, ताम्बो देण तलाक॥ दो॥

जोधपुर ख्यात० (१, प० २५१) के अनुसार—

लेसो पीपल लाख लाख लखारा लावसी।
ताम्बो देंण तलाक नटिया सुदर नैणसी॥ एक॥

अध्याय ३

नैणसी का इतिहासलेखन और तदर्थ उसके आयोजन

१ नैणसी की बौद्धिक क्षमता, शैक्षणिक प्रशिक्षण और इतिहास विषयक विद्वता

पूव मे ही यह लिखा जा चुका है कि मुहणोत नैणमी की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा के बारे मे कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नही है। परन्तु युवावस्था मे ही नैणसी की नियुक्ति सेनानायक और परगना प्रशासनिक जैसे उत्तरदायित्व-पूण पदो पर हुई थी तथा उनमे सफलता प्राप्त करते रहने पर ही अन्त मे मारवाड राज्य की प्रशासन व्यवस्था मे सर्वोच्च पद, देश दीवान, तक पहुच गया था। अत यह सब इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि ऐसी सब ही सेवाओ के लिए अत्या-वश्यक तब दी जाने वाली सारी शिक्षा-दीक्षा अवश्य ही उसे दी गयी होगी।

यह तो स्पष्ट ही है कि मारवाड मे जन्मा और वही पाला पोसा गया तथा प्रशिक्षित हुआ नैणसी राजस्थानी-हिन्दी के साथ ही डिंगल भाषा मे पूरी तरह स पारगत था। नैणसी के जीवनकाल मे मारवाड के राजदरबार मे कवियो का विशेष समादर होता रहता था। अनेक चारणो को लाख पसाव दिये गये थे। महाराजा जसवन्तसिंह स्वय भी सुकवि तथा साहित्यशास्त्र का पूण विद्वान था। नैणसी ने अपनी ख्यात० मे यत्र तत्र सन्दर्भो के उपयुक्त छन्द उद्धृत किये है। उसके स्वरचित कुछ दोहे तो आज भी सुज्ञात है।[1] उसकी काव्य-रचना पर्याप्त सख्या मे सुलभ नही होने के कारण यदि तत्काल कवियो मे उसकी गणना नही भी की जावे, परन्तु यह नही कहा जा सकता है कि वह राजस्थानो या ब्रजसाहित्य

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ४ प० ३१। "जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम के दीवान प्रसिद्ध ख्यात लेखक—मुहता नैणसी।"

और काव्य से अनभिज्ञ था।

अपने एक लेख मे डॉ० रघुबीरसिंह ने लिखा है—"सन १५८३ ई० मे मोटा राजा के जोधपुर की गद्दी पर बैठने के समय से ही जोधपुर राज्य के राजघराने तथा राज्य कर्मचारियो के साथ मुगल शाही दरबार और मुगल शाही अधिकारियो का निकट सम्पर्क स्थापित हो गया था। अतएव अनुमान यही होता है कि मुहणोत नैणसी जैसे सुयोग्य कर्मठ राज्य-हितैषी प्रमुख राज्य कर्मचारी ने अवश्य ही फारसी भाषा सीख ली होगी कि शाही अधिकारियो के साथ विचार-विनिमय करने या उनके साथ लिखा पढी मे किसी प्रकार की कोई भी बाधा या कठिनाई नही उपस्थित होवे।"[1] इस सन्दर्भ मे इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि इस मत के पक्ष या विपक्ष मे कोई भी निश्चयात्मक निर्णय कर सकने के लिए कोई प्रामाणिक जानकारी या कुछ भी सुनिश्चित सकेत प्राप्य नही है। नैणसी सदैव ऐसे पदो पर रहा था, जहाँ उसका मुगल राजदरबार या वहाँ के उच्चाधिकारियो से सीधे सम्पर्क का शायद ही कभी कोई अवसर आता हो। उसके मुगल दरबार मे उपस्थित होने का एक बार ही सन् १६६५ ई० मे अवसर आया था, जब वह महाराजकुमार पृथ्वीसिंह को लेकर शाही दरबार मे दिल्ली पहुचा था।[2] दूसरे, सन् १६५६ ई० मे गुजरात सेससैन्य अजमेर पर चढाई करते समय जब दारा मेडता पहुचा था, तब उससे नैणसी ने भेंट की थी।[3] इन अवसरो पर शाही दरबार मे नैणसी ने किस भाषा के माध्यम से बातचीत की होगी, यह निश्चित रूपेण नही कहा जा सकता है।

सफल प्रशासक होने से यह तो मानना ही पडेगा कि राज्य-शासन सम्बन्धी अत्यावश्यक प्रशिक्षण उसे मिला ही था और कालान्तर मे निरन्तर व्यावहारिक अनुभव और कार्यों के फलस्वरूप तदविषयक सारी शासकीय या राजदरबारी औपचारिकताओ मे वह पूर्णतया पारगत हो गया होगा।

नैणसी के इतिहास-ग्रन्थ ख्यात० और विगत० का गहन अध्ययन करने पर यह निश्चित अनुमान लगाया जा सकता है कि तब वहाँ सुलभ और उपयुक्त सारे शैक्षणिक प्रशिक्षण के साथ ही उसे सैनिक प्रशिक्षण भी दिया गया था। नैणसी की सैनिक और प्रशासनिक कार्यो मे प्राप्त सफलता से सैनिक-सचालन और युद्ध व्यूह-रचना विषयक उसकी क्षमता का भी पूरा पता चलता है। उसने प्रत्येक सैनिक अभियान मे सफलता प्राप्त की थी। जैसलमेर पर चढाई के समय विभिन्न परगनो से सेनाओ और युद्ध का अन्य आवश्यक सामान एकत्रित करने

---

१ परम्परा, भाग ३९ ४०, पृ० ३६।
२ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २३६ ३७।
३ वही०, पृ० ३६ ३७।

तथा चढाई करने मे कदापि यत्किंचित् विलम्ब भी नही होने देने से व्यवस्था कर सकने की उसकी कायक्षमता का परिचय मिलता है। इसी प्रकार उसने विभिन्न सैनिक अभियानो मे उपद्रवकारियो अथवा आक्रमणकारियो के क्षेत्रो के गावो पर आक्रमण कर वहा लूटमार कर या जलाकर ऐसा आतक फैला दिया था कि वे आक्रमणकारी पुन विद्रोह या आक्रमण का साहस नही कर पाये। विभिन्न प्रशासनिक पदो पर नियुक्त होने पर उसने परगनो मे शाति और व्यवस्था बनाये रखी और देश-दीवान नियुक्त होने पर प्रशासन मे अनेक समयोचित अत्यावश्यक सुधार काय किये थे। ये सब उसकी बुद्धिमत्ता और उसकी बौद्धिक क्षमता के ही परिचायक थे।

नैणसी ने सम्पूण राजस्थान के राजवशो का ही नही, पर न्तु भारत के कई अ य दूरस्थ राजपूत राजघरानो के भी ऐतिहासिक विवरण एकत्र करने की विस्तृत योजना बनायी थी। पुन जोधपुर राजघराने के आधीन मारवाड के सब ही परगनो की विस्तृत ब्यौरेवार विगत० लिखने का जो सफल आयोजन किया था, उस सबमे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नैणसी राजस्थान के ही नही अ यत्र क्षेत्रीय राजपूत राजघरानो के इतिहासो का भी गहन विद्वान था। तब वहाँ जो भी सुलभ हो सके उन सारे महत्त्वपूण ऐतिहासिक ग्रन्थो की उसे पूरी-पूरी जानकारी थी और उन सभी को ध्यान मे रखकर उसने अपनी ये दोनो योजनाएँ बनायी थी।

२ अपने इतिहास-ग्रन्थो की रचना मे नैणसी का मुख्य उद्देश्य, उसके आयोजनो का तौर-तरीका तथा उसकी सम्भावित रूप रेखा

मुहणोत ने सवप्रथम अपनी ख्यात० के लिए जानकारी का सकलन किया और बाद मे उसको लिखने का काय प्रारम्भ किया। वह ३३ वष की अवस्था मे सन १६४३ ई०[1] से ही ख्यात० की सामग्री के सकलन के काय मे जुट गया था। ख्यात० का सागोपाग अध्ययन करने पर स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि मुहणोत नैणसी भारत भर के तत्काल ीन सब ही सुविख्यात राजपूत राजवशो का क्रमबद्ध इतिहास लिखना चाहता था। इसी उद्देश्य से उसने गुहिलोत, सीसोदिया, चन्द्रावत, चौहान, राठोड, कछवाहा, भाटी, परमार और सोलकी आदि सब ही प्रमुख विभिन्न राजपूत राजवशो से सम्बन्धित सारी प्राप्य ऐतिहासिक आधार-सामग्री का बृहत् सकलन किया।

सभी राजपूत राजवशो का ऐसा इतिहास लिखने के लिए सूझ-बूझ पूण एक निश्चित् योजनाबद्ध तरीके से काय करना आवश्यक था। अत नैणसी ने सभी

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २ पृ० ६। "माह बदि ६, स० १७०० वि० मे मु० लखा ने जैसलमेर राज्य का विवरण लिखवाया।"

राज्यो अथवा राजवशो के इतिहास से सम्बन्धित सामग्री सकलन की योजना बनायी और यह निश्चय किया कि सामग्री सग्रह के बाद ही उन सभी राज्यो अथवा राजघरानो का व्यवस्थित और क्रमबद्ध इतिहास लिखा जावे। अत उसने लगभग १६४३ ई० से ही सामग्री सकलन काय प्रारम्भ किया। जिन-जिन स्थानो पर भी वह गया, वहाँ की जानकारी प्राप्त करने के लिए उसने सारे सम्भावित सूत्रो की टोह लकर उनसे सम्पक साधा और अपेक्षित सारी ऐतिहासिक बाते लखबद्ध की। उसका भाई नरसिंहदास जब कभी किसी अन्य राज्य मे गया, तब उस राज्य की जानकारी उसने वहा से प्राप्त की। चारण और भाटो से भी जानकारी प्राप्त कर एकत्रित की जाती रही। प्राचीन ग्रन्थो का अध्ययन कर उपयोग की सामग्री को सकलिन किया। प्रचलित प्रवादो और पद्यो का भी सकलन किया गया। हर समय प्रयत्न कर यो राजवशो के इतिहास विषयक सारी प्राप्य आधार-सामग्री और उपयोगी जानकारी सगृहीत की गयी।

नैंणसी का दूसरा ऐतिहासिक ग्रन्थ 'मारवाड रा परगना री विगत' है। सभी राजपूत राजवशो का इतिहास लिखने के अपने आयोजन के अन्तगत मारवाड राज्य के राठोड राजघराने का इतिहास भी नैंणसी लिखने वाला था, परन्तु इसी समयान्तर मे १६५८ ई० मे वह मारवाड राज्य का देश दीवान बना दिया गया। अत उसने सवप्रथम अपन वतन क्षेत्र मारवाड राज्य के इतिहास की ओर विशेष ध्यान दिया। ख्यात० के हेतु मारवाड के राजघराने विषयक पूर्वकालिक विभिन्न वार्ताओ आदि का सकलन तो करवाया ही था। परन्तु मारवाड राज्य का व्यारेवार प्रामाणिक इतिहास और उसके आधीन सब परगनो का भी सूत्रबद्ध ऐतिहासिक इतिवृत्त प्रस्तुत कर विभिन्न विषयक उनकी जानकारी सुलभ कर सकने के हेतु एक सर्वथा विभिन्न ग्रन्थ तैयार करवाने की उसने ऐसी योजना बनायी, जिसके द्वारा जनसाधारण के समक्ष मारवाड की सब विषयक विस्तृत और निष्पक्षीय जानकरी प्रस्तुत की जा सके।

मुहणोत नैंणसी जसवन्तसिंह कालीन मारवाड के सभी परगनो का ऐसा क्रमबद्ध विस्तृत व्यौरा लिखना चाहता था। अत १६६२ ई० (१७१६ वि०) म उसने सभी परगना-हाकिम अथवा कानूनगो को निर्देश दिय कि वे अपने-अपने परगने का पचवर्षीय (१६५८ १६६२ ई०) सर्वेक्षण तैयार करवाकर उसके पास भेजे। यो कुछ ही समय मे सात परगनो का विवरण तो उसको प्राप्त हो गया। जिनका वह अपनी उक्त विगत० मे उपयोग कर सका। जोधपुर परगने के ऐस इतिवृत्त मे उसने परगने के साथ ही मारवाड राज्य और वहाँ के शासक राठोड घराने का इतिहास तैयार करवाया। इस ऐतिहासिक विवरण को लिखने के लिए अपनी ख्यात० के हेतु सकलित मारवाड के प्रारम्भिक शासको सम्बन्धी अधिकाश बातो का भी उसने समुचित उपयोग किया है। इसके अतिरिक्त नैंणसी ने प्राचीन

स्तम्भ लेख, देवली लेख, पुरानी वशावलियो, प्राचीन पुराणादि ग्रन्थ, राज्य के कारोबार सम्बन्धी विभिन्न बहियो और राज्य ज्योतिषी घराने द्वारा तैयार किये गये पचागो अथवा तिथि वार महत्त्वपूण घटनाओ के व्यौरो आदि का भरपूर उपयोग किया। ब्राह्मणो, चारणो आदि को दी गयी सासण भूमि का विवरण लिखने के लिए उसने उनको दिये गये ताम्रपत्रो और पट्टो का भी उपयोग किया।

इस प्रकार अपने इन दोनो ग्रन्थो को तैयार करने के लिये नैणसी ने विभिन्न प्रकार की यथासाध्य सारी प्रामाणिक आधार-सामग्री तथा अन्य विश्वसनीय सूत्रो से जानकारी प्राप्त की। उनमे सुलभ विवरण की सत्यता या प्रामाणिकता आदि की जाँच के लिए उमने अलग अलग सूत्रो द्वारा प्राप्त प्रमाणो का समुचित उपयोग किया था सारी छान बीन के बाद जब उसे यह विश्वास हो गया कि कोई बात सही है, तब ही उसने उसे मान्य किया है।

३ नैणसी का इतिहास-दर्शन और इतिहास विषयक उसकी अवधारणा

मुहणोत नैणसी एक सुविज्ञ चिन्तनशील इतिहासकार था। इतिहास को उसने अत्यावश्यक वैज्ञानिक दृष्टि से देखा-भाला और परखा था। जहा तक सम्भव हो मका सही प्रामाणिक विवरण ही प्रस्तुत करना, उसका एकमात्र इतिहास-दशन था। मानवीय जीवन के घटना-क्रम या राष्टीय अथवा राजकीय विकास व ह्रास के कारणो या राजघरानो के उदगम और उत्थान आदि विषयक किन्ही विशेष सिद्धान्तो की स्थापना तथा प्रतिपादन करने मे उसे कोई भी रुचि नही थी। ऐतिहासिक घटना क्रम सम्बन्धी बारम्बार उठने वाले क्यो और कैसे विषयक प्रश्नो की ओर भी नैणमी ने अपने इन इतिहास-ग्रन्थो मे कोई विशेष ध्यान नही दिया। उस प्रकार के विवेचन के लिए अत्यावश्यक पृष्ठभूमि की सही जानकारी अथवा अधिक व्यापक क्षेत्र के लिए समुचित अध्ययन आदि का तब अभाव ही था। पुन तब तक विगत क्षेत्रीय इतिहासो की राजनैतिक रूपरेखा भी निश्चित नही हो पायी थी कि उसके आधार पर सम्बन्धित अध्ययन को व्यापक अथवा समीक्षात्मक बनाया जा सके।

ऐतिहासिक मत्य के सम्बन्ध मे उसका दृष्टिकोण स्पष्ट और बहुत ही सुलझा हुआ था। अत 'मारवाड रा परगना री विगत' की रचना मे उसने पूण सत्यता का निर्वाह किया है। इसी कारण कही कही पर किसी घटना या विवरण की आधार-सामग्री[1] का उल्लेख भी कर दिया है। उसने प्रत्येक घटना को तार्किक दृष्टि से देखा। इतिहासलेखन मे उसका दृष्टिकोण समीक्षात्मक ही था। प्रत्यक

१ विगत०, १ पृ० २ (नाहडराव पडिहार री पीढीया भाटे लिखाई) १, ६८, १५३, १५७, ३६१, २, पृ० ४१, ६५

घटना का विवरण लिखने से पूव उससे सम्बन्धित उपलब्ध सभी सामग्री का गहन अध्ययन कर लेता था और जहाँ प्राप्य विभिन्न विवरणो मे अन्तर्विरोध पाता, या उसे किसी भी प्रकार की कोई शका होती जिससे उस पर अपना निणय नही कर पाता था, तब वह वहा स्पष्ट उल्लेख कर देता है कि 'एक बात ऐसी सुनी है'[1], अथवा 'ऐसा कहते है'[2] (लोक मान्यता है), कोई कहता है'[3], 'सभी ऐसा कहते है'[4] आदि। इसी प्रकार कोई विवरण लिखते समय जब उसके बारे मे प्रामाणिक जानकारी नही मिल पायी, तब वहा उसने स्पष्ट उल्लेख कर दिया है कि सत्यता का 'पता लगाना है।'[5] अथवा 'पता नही है।'[6] इसी प्रकार यदि नैणसी को किसी घटना के बारे मे निश्चित प्रमाण नही मिला तो यदा कदा उसने निजी अनुमान के आधार पर ही उस ऐतिहासिक कडी को जोडने का भी प्रयास किया है।[7] अगर किसी गाँव आदि के प्रचलित नाम और दफ्तर के कागज पत्रो के उल्लेखो मे अन्तर पाया तो उसे भी उसने स्पष्ट लिख दिया है।[8] यो उसने प्रत्येक गाव के सगृहीत विवरण तक की प्रामाणिकता की जाच कर, उस सम्बन्धी पूरी-पूरी जानकारी नैणसी ने अपनी विगत० मे लिखी है।

४ उसकी मुख्य अभिरुचि

इतिहासलेखन मे नैणसी की मुख्य अभिरुचि राजनैतिक इतिहास लिखने की ही रही है। इस राजनैतिक इतिहास को स्पष्ट करने तथा उसमे आये हुए इतिवृत्तो को खुलासा करने अथवा उन्ही सन्दर्भो मे प्रयुक्त भौगोलिक या अन्य नामो आदि की जानकारी देना आवश्यक प्रतीत हुआ, उन्हे भी उसमे यथास्थान जोडकर राजनैतिक वृत्तान्तो को ही परिपूण करने का उपयुक्त प्रयत्न नैणसी ने अवश्य ही यथास्थान किया है। उसके द्वारा रचित विगत० और ख्यात० के अध्ययन से उसकी यह अभिरुचि हो जाती है। विगत० मे प्रत्येक परगने की अलग अलग विगत लिखते समय सवप्रथम उस परगने का पूर्वकाल से जसवन्तसिंह तक का ब्यौरेवार यथासाध्य प्रामाणिक इतिहास दिया गया है। ख्यात० का सकलन भी

---

१ विगत०, १, पृ० ३८, २, प० ६६।

२ विगत०, १, पृ० ५६, ४८४ (कहै छ राव मालदे रो दीयो छ), २, प० ५, ६८।

३ विगत०, १, प० ८३।

४ विगत०, २, पृ० ३७।

५ विगत०, १, प० १८१।

६ विगत०, १, प० २६८, २८४, ३१८, ३२५, ४२०, ४७४ ५५४, २, पृ० २४।

७ विगत०, १, पृ० ३८३।

८ गाँव पालडी के बारे मे लिखा है 'फरसता माहे गाँव पाडली माडे छै, सु छै, विगत०, १, पृ० ४६८।

राजनैतिक इतिहास विषयक सारी सम्बन्धित जानकारी प्रस्तुत करने के उद्देश्य से ही किया गया है। इसीलिए उसने राजस्थान के राजघरानो, उनके पास-पडोस के सगे-सम्बन्धियो आदि सब ही प्रमुख राजपूत राजवशो विषयक सामग्री एकत्रित की थी। उसने सब ही महत्त्वपूण सामरिक घटनाओ आदि का भी विस्तृत विवेचन किया है। इन युद्धो का विवरण लिखते हुए उनके कारणो तथा परिणामो की जानकारी देते हुए उन युद्धो की सही तिथि और प्रत्येक युद्ध मे मरने वाले विभिन्न वीरो की सूचियाँ भी दी गयी हैं।

नैणसी द्वारा लिखे गये इसी प्रकार के विवरणो मे कई अन्य बातो का अनायास ही समावेश हो गया है, जिनसे तत्कालीन प्रशासन और समाज की बहुत-कुछ जानकारी प्राप्त हो जाती है।[1] उसके राजनैतिक एव सामरिक विवरणो मे राजपूत विवाह और सती-प्रथा आदि के बारे मे प्रासगिक उल्लेख मिलते हैं, जिनसे तत्कालीन राजपूतो मे विवाह सम्बन्धी परम्पराओ और सती प्रथा पर प्रकाश पडता है। इसी प्रकार उत्तराधिकार सम्बन्धी राजपूत सहिता,[2] हिन्दुओ की धार्मिक मान्यताओ और हिन्दुओ के विभिन्न जातीय उत्सवो और आमोद-प्रमोद के तत्कालीन साधनो आदि के कई प्रासगिक उल्लेख मिलते हैं।[3] नैणसी ने सब ही सम्बन्धित राज्यो की राजधानियो की भौगोलिक स्थिति स्पष्ट करने हेतु उन नगरो से अन्य प्रमुख नगरो की दूरी का भी यथास्थान उल्लेख कर दिया है जिससे नैणसी की ही नही तत्कालीन प्रबुद्ध शासक वर्ग मे सुलभ भौगोलिक जानकारी के स्पष्ट सकेत मिल जाते हैं।

५ मानव और उसकी समस्याओ आदि के प्रति नैणसी का दृष्टिकोण

प्रत्येक युग मे हरेक क्षेत्र और समाज के साथ उनके वर्गो आदि की अपनी-अपनी मानवीय समस्याएँ रही हैं, जिनका तत्कालीन राजनीति पर ही नही समाज तथा शासन पर सीधे या परोक्ष रूपेण पर्याप्त प्रभाव पडता रहा है, और जिनकी ओर सब ही प्रबुद्ध शासको तथा अधिकारियो का ध्यान जाता रहा है। नैणसी भी ऐसी मानव समस्याओ के प्रति बहुत ही सजग था।

सब ही कालो मे जनसाधारण की विशिष्ट समस्या मूलत आर्थिक ही रही है, क्योकि उसकी सारी गतिविधियो तथा जीवन यापन पर भी उसका अनिवार्य प्रभाव पडता है। पुन व्यक्ति-विशेष, कुटुम्ब और वर्ग या क्षेत्रीय इकाई पर सीधे या परोक्ष रूपेण लगने वाले शासकीय करो की समस्या सदैव शासितो के साथ ही

---

१ देखिये अध्याय १० और ११।

२ देखिये अध्याय ६।

३ देखिये अध्याय ११।

शासको के सामने रही है। इन दोनो मे व्यवहारिक मध्यवर्ती उचित हल निकालना राज्य के उच्चाधिकारियो का कर्तव्य होता था, और उसमे ही उसकी मानवीयता तथा चतुराई स्पष्ट होती थी।

नैणसी ने अनेको परगनो के हाकिम पद पर कार्य करते हुए मारवाड राज्य की आर्थिक व्यवस्था को अच्छी तरह जाना-बूझा था और उसने जनसाधारण पर लगने वाले करो के भार को कम करने के लिए कदम उठाये थे। जब वह देश-दीवान बना उस समय 'हुजदार री बल' के रूप मे प्रति बडे गाँव से रु० २० अथवा २५ लिए जाते थे। नैणसी ने उक्त राशि को सामान्य प्रजा पर अत्यधिक भार मानकर राजा जसवन्तसिंह से निवेदन कर उपयुक्त कर मे कमी करवायी और तब उक्त राशि के स्थान पर प्रति बडे गाँव रु० १० और छोटे गाव रु० ५ लिया जाने लगा।[1] इसी प्रकार नवम्बर-दिसम्बर, १६६१ ई० मे मेडता परगने मे शासकीय करो के भार को कम कर देने के लिए भी नैणसी ने पूरी पहल की थी, यद्यपि वहाँ के जाटो के हठ के कारण ही अतत वहा की प्रजा को इसका लाभ नही मिल पाया था।[2]

नैणसी ने अपने ग्रन्थो मे प्रासगिक रूप मे स्त्रियो की तत्कालीन दशा पर भी यत्र तत्र प्रकाश डाला है। मध्यकाल मे सामान्यत सब ही वर्गों की स्त्रियो की दशा अच्छी नही थी। उनको घर या समाज मे कोई उपयुक्त सम्मान नही दिया जाता था। अपने पति की आज्ञाकारिणी होकर स्त्रियो को घर की दासी के रूप मे रहना पडता था, अन्यथा पति द्वारा उसकी दुर्दशा की जाती थी।[3] पति द्वारा उसका बहुत अधिक अपमान और दुर्दशा किये जाने पर स्त्री अपने पति को छोड-कर चली जाती थी।[4] बहुविवाह प्रथा के कारण जब अपनी किसी पत्नी के प्रति विरोध बहुत उत्कट हो जाता था तब वह उस पत्नी को हर तरह से अपमानित और दु खी करने मे हद कर देता था, यहाँ तक कि उसके समक्ष ही उसकी सौत के साथ सहवास करता था। साधारणतया पत्नी अपने पति द्वारा हर यातना को सहने के लिए तैयार थी, परन्तु ऐसे दुर्व्यवहार वह कदापि सहन नही कर सकती थी।[5] पूर्व-मध्यकाल में कई एक क्षेत्रो मे तब वहाँ प्रचलित परम्पराओ के अनुसार वहाँ के जागीरदार अपने आधीन प्रजा के स्त्री वर्ग से मनमानी करते थे। वहाँ की नवविवाहिता कन्याओ को विवाह के तत्काल बाद ही प्रथम तीन रातें वहाँ के ठाकुर के साथ बितानी पडती थी। अत ऐसे क्षेत्रो मे अनेक लोग अपनी कन्याओं

---

१ विगत०, २, पृ० ९२-९३, ९७ ९८।
२ विगत०, २, पृ० ९४ ९५।
३ विगत०, २, पृ० ४९३ ९४, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १४१ ४८, २८१।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १४८।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १४४।

का विवाह भी नही करते थे ।[1] तब मदिरापान का सवत्र बहुतायत से प्रचलन था। अत अधिकतर व्यक्ति, विशेषतया जिन्हे सहज सुलभ हो जाता, शराब पीकर अपनी विवेक बुद्धि खो बैठते थे और उसी नशे मे अपनी स्त्रियो से दुर्व्यवहार करते थे ।[2] अपने जीवन के लिए परिस्थितिवश स्त्रियो को मजदूरी भी करनी पडती थी ।[3]

६ उसका कालक्रम-विज्ञान कालावधि तथा इतिहास के प्रति उसकी अभिव्यक्ति

विगत० के अध्ययन से हमे पता चलता है कि नैणसी ने इतिहासलेखन के सन्दर्भ मे कालक्रम विज्ञान के महत्त्व को पूरी तरह से समझा ही नही था बल्कि पूरी तरह से उसकी विधि को अपनाया भी था। विगत० मे प्रत्येक परगने के विवरण को प्रस्तुत करने मे उसने उसमे वर्णित घटनाओ के सही कालक्रम का पूरा ध्यान रखा था। प्रत्येक शासक सम्बन्धी विवरण तथा तत्कालीन घटनाओ का तिथि क्रमानुसार ही क्रमबद्ध विवरण लिखा है ।[4] अपवाद स्वरूप कही-कही तिथि क्रम का निर्वाह नही हो पाया है इसमे नैणसी का ही दोष था यह निश्चित रूप से नही कहा जा सकता है क्योकि सम्भव है कि प्रतिलिपिकर्ताओ की असावधानी से ही ऐसा हुआ हो। जोधपुर परगने के इतिहास मे राव मालदेव का विवरण पूरी तरह व्यवस्थित नही है। उदाहरणार्थ—राव मालदेव की पुत्रियो का विवरण देने के बाद चारणो, राव की मृत्यु, मालदेव की फुटकर बातें और तदनन्तर मालदेव की रानियो का विवरण दिया है।[5] इसी प्रकार शेरशाह के साथ हुए मालदेव के युद्ध की कुछेक घटनाओ की पुनरावृत्ति है ।[6]

विगत० मे गावो के विवरण प्रस्तुत करने मे भी नैणसी ने एक सुव्यवस्थित क्रमबद्ध पद्धति का अनुसरण किया है। सवप्रथम परगने के विभिन्न तफो और उनके गावो की सख्याएँ दी हैं । तदनन्तर आबाद बस्तियो तथा निर्जन गावो की सख्याएँ, उनमे विशेष रूपेण बसने वाली जातियो के आधार पर प्रत्येक जाति के गावो की अलग अलग सूचियाँ दी है। गाँवो की ऐसी अनेक प्रकार की अलग-अलग सूचिया देने के बाद नैणसी ने परगने के प्रत्येक गाँव का अलग-अलग क्रमबद्ध विवरण लिखा है, जिसमे गाँव की रेख, गाव की भौगोलिक स्थिति, गाँव मे बसने

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २७६ ७७ ।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १३, १४ ।
३ विगत०, १, पृ० ४६४ ।
४ विगत०, १, पृ० १५०, १७० ८६, ३८३ ६०, ४६३ ६६ ।
५ विगत०, १, पृ० ५२ ५५ ।
६ विगत०, १, पृ० ५६, ६३, ६५ ।

वाली जातियो सम्बन्धी स्पष्ट जानकारी, उस गाँव मे सिचाई अथवा पीने के पानी के साधनो आदि का विवरण दिया गया है। उस गाँव सम्बन्धी विशेष जानकारी तथा उसके बारे मे कई ऐतिहासिक बातो को भी दे दिया गया है। अन्त मे उस गाँव की वार्षिक आय के स० १७१५ से १७१९ वि० तक के आँकडे दिये गये हैं।

नैणसी ने प्रत्येक परगने का इतिहास तो लिखा है, परन्तु विभिन्न गाँवो के जो विवरण दिये है, उनमे भी मारवाड के विगत इतिहास सम्बन्धी इतनी जानकारी खण्डश मिलती है कि उसको सकलित कर राठोड राजघराने, वहा के शासको अथवा मारवाड क्षेत्र के इतिहास की अनेको लुप्त कडियाँ जोडी जा सकती हैं तथा वहाँ के इतिहास के कुछ उपक्षित पहलुओ पर बहुत कुछ प्रकाश पड सकता है। जैसे परगना सिवाणा के गाँवो के विवरणो से सिवाणा और जालोर के शासको मे हुए सीमा-क्षेत्र सम्बन्धी झगडो की जानकारी मिलती है।[1] सिवाणा से पहिले समदडी ही इस परगने का मुख्य केन्द्र था।[2] मुसलमान आक्रमणकारियो के साथ रावल माला के युद्ध तथा सकट के वर्षों मे राव मालदेव के आश्रय स्थान आदि के उल्लेख हैं।[3] किसी गाँव मे तब विद्यमान पुरातत्त्व का भी उल्लेख कर दिया गया है।[4] सिवाणा क्षेत्र मे अनेको गाँव ऐसे हैं जिनमे उस क्षेत्र के मूल निवासी नही रहते है। बाद मे राजपूत अपनी बसी लेकर वहाँ जा पहुचे और ये गाँव बसते गये।[5] पूर्वकाल मे किस प्रकार राजपूत घरानो ने अपने कुटुम्बो और अपनी बसी के अन्य जातीय अनुचरो को साथ लाकर इन क्षेत्रो मे गाँव बसाये ये इसकी कुछ झलक सिवाणा आदि परगनो के गाँवो मे इन विवरणो से मिलती है। कई एक गाँवो की बसाहट मे समय-समय पर हुए हेरफेरो की भी जानकारी[6] यत्र तत्र गाँवो सम्बन्धी इन विवरणो मे मिलती है। किन्ही गाँवो सम्बन्धी पुराणकालीन घटनाओ विषयक जो भी किवदन्तियाँ तब वहाँ प्रचलित थी उन्हे भी इन विवरणो मे सम्मिलित कर लिया गया था।[7] सासण मे दिये गये कई विवरणो से उस क्षेत्र के पुरातन इतिहास पर नया प्रकाश पडता है।[8] इस प्रकार नैणसी द्वारा सकलित और प्रस्तुत बहुविध ऐतिहासिक अथवा तदथ उपयोगी आधार-सामग्री से नैणसी के विस्तृत गहन इतिहास बोध की पूण अभिव्यक्ति होती है।

१ विगत०, २, पृ० २४६, २५१, २६५।
२ विगत०, २, प० २३४।
३ विगत०, २, पृ० २५३, २५१ ५०, २५५।
४ विगत०, २, प० २४१।
५ विगत०, २, प० २४६, २५०, २५१ ५५।
६ विगत०, २, पृ० २५५।
७ विगत०, २, पृ० २५०।
८ विगत०, २, प० २६६ ६७, २६८।

७ भौगोलिक, स्थानीय और जातिवृत्त-सम्बन्धी विवेचन मे उसकी विशेष सजगता

राजनैतिक इतिहास के साथ सदैव से तत्कालीन राजनैतिक भूगोल का सर्वथा अकाट्य सम्बन्ध रहा है। विभिन्न पडोसी राज्यो के बीच उनके बीच के सीमाकन को लेकर चिरकाल से पारस्परिक विवाद, झगडे और युद्ध होते रहे हैं एव यह अत्यावश्यक ही नही अनिवार्य भी होता है कि प्रत्येक राज्य की बाह्य सीमाओ का सही निर्धारण और स्पष्ट सीमाकन हो, एव नैणसी ने अपनी ख्यात० मे सतत प्रयत्न किया है कि विभिन्न राज्यो की राजनैतिक सीमाओ का सही भौगोलिक विवरण भी दे देवें। पुन राज्य के निवासियो का चरित्र, जन-जीवन की गतिविधियो, कृषि और उद्योगो आदि पर उस क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियाँ, आबोहवा, नदी-नालो और सिंचाई के साधन, आवागमन के मार्गों आदि का पूर्ण प्रभाव पडता है। अत नैणसी ने तत्सम्बन्धी सारी जानकारी एकत्र कर उसे भी उस राज्य का विवरण लिखते समय यथास्थान लिख दिया है। स्पष्टतया नैणसी भौगोलिक विवेचन की आवश्यकता और उसके महत्त्व से पूर्णतया परिचित था, एव उसने इस ओर विशेष ध्यान दिया है, जिसकी सविस्तार चर्चा अन्यत्र की जावेगी।

पुन विभिन्न राज्यो के विस्तार के साथ शासको की पास-पडोस के क्षेत्रो के पूर्ववर्ती जमीदार आदि के साथ उन राज्यो के शासको की मुठभेड होना अवश्यभावी थी। यही नही, एक बार उन्हे आधीन कर लेने के बाद उनका बारम्बार विद्रोह और तब उनसे सघर्ष होना उस काल मे कोई अनहोनी बातें नही थी। अत ऐसे स्थानीय क्षेत्रो की भी यत्र-तत्र पर्याप्त जानकारी देते हुए नैणसी ने वहा की समस्याओ को स्पष्ट किया है। मेवाड के पश्चिमी क्षेत्र के छप्पन क्षेत्र, मेरो के मेवल क्षेत्र, नाहेसर के भील, जालोर मे सैणा का इलाका आदि के सम्बन्ध मे भी नैणसी ने थोडा बहुत लिख दिया है,[1] क्योकि वहाँ के निवासियो का भी क्षेत्रीय इतिहास मे कुछ योगदान रहा है। इसी प्रकार विगत० मे भी विभिन्न गावो की जानकारी देते हुए जैतारण परगने मे राज्य शासन के सम्मुख तब भी विद्यमान मेरो की समस्या को स्पष्ट किया था कि जहा कई गाँवो के मुख्य निवासी मेर राज्याधिकार को मानते थे वही कोई ८ गाव के मेर न तो राज्याधिकारी के आधिपत्य का स्वीकार करते थे और न कोई शासकीय राजस्व आदि कर चुकाते थे।[2] यो नैणसी ने इन गावो सम्बन्धी राजस्व के सन्दर्भ मे वस्तुस्थिति स्पष्ट की थी और साथ ही व्यवस्था सम्बन्धी शासकीय समस्या की ओर भावी शासकीय

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३६, ४५ ४६, २४५ ४६।

२ विगत०, १, पृ० ५०४ ५, ५०६, ५३२ ३७, ५५२ ५४।

अधिकारियो का ध्यान आकर्षित किया था।

किसी प्रदेश, क्षेत्र या नगर-गाँव के सामाजिक, आर्थिक या सास्कृतिक इतिहास का कोई भी स्वरूप या दिशा देन मे प्राकृतिक परिस्थितियो, राजनैतिक समस्याओ के साथ ही मानवीय जनसाधारण का बहुत बडा हाथ रहता है। अतएव मारवाड के विभिन्न नगरो, कसबो के साथ ही गावो मे बसन वाली सब ही जातियो के महत्त्व को समझकर ही अपने इतिहासलेखन मे मुहणोत नैणसी ने जातियो के उल्लेख की ओर विशेष ध्यान दिया है। विगत० मे जोधपुर के अतिरिक्त अन्य परगना केन्द्र नगर मे निवास करने वाली जातियो का विवरण दिया है। यह जानकारी यथासम्भव प्रामाणिक हो इस बात की ओर नैणसी का विशेष ध्यान था। अत सोजत मे निवास करने वाली विभिन्न जातियो की जानकारी उसने पचोली रामदास से मंगवायी थी। जैतारण, फलोधी, मेडता, सिवाणा और पोहकरण नगर की जनसख्या के बारे मे स्वय ने लिखा है।[1] नैणसी ने विगत० मे प्रत्येक गाव मे निवास करने वाली प्रमुख जातियो का उल्लेख किया है। जिससे उस गाँव के जनसाधारण के बारे में शासन को समुचित जानकारी सुलभ हो, क्योकि बस्ती सम्बन्धी शासकीय अथवा आर्थिक या सामाजिक समस्याओ का स्वरूप मूलत वहाँ के निवासियो पर ही निर्भर रहता था। गावो मे बसने वाली जातियो सम्बन्धी इन उल्लेखो से जहाँ परगनो के अनेको पूर्ववर्ती निर्जन क्षेत्रो मे तब समय-समय पर हुए नये बसावो की जानकारी मिलती है, वहाँ यह बात भी सामने आती है कि कई एक गाँव ऐसे थे, जहाँ नैणसी के शब्दो मे 'देसी लोक कोई नही। बसी रा राजपूत बसै।'[2] पुन यह भी बात स्पष्ट हो जाती है कि कई एक गाँव ऐसे भी थे जिनकी पूरी-की पूरी बस्ती समय-समय पर बदल जाती थी, क्योकि नैणसी ने स्पष्ट लिख दिया है कि 'जिण नु पटे हुवै तिण री बसी रा रजपूत बाभण बसें।'[3] तत्सम्बन्धी नैणसी के कथनो से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि इस प्रकार की बस्ती में पट्टेदारों के केवल सजातीय ही नही होते थे परन्तु 'बसी रा राजपूत जाट बाणीया कुंभार रेबारी बसे।'[4] ऐसे कई एक उल्लेखो से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन शतियो मे जब भी कोई राजपूत पट्टेदार या उसी स्तर का प्रमुख सरदार परिस्थितिवश, स्थानान्तरित होता था, तब उसकी बसी में उस घराने सम्बन्धित और उसके आश्रित सब ही जातियो के घराने होते थे, उसी आश्रयदाता के घराने के साथ ही वे सब भी स्थानान्तरित होते थे।

---

१ विगत०, १, पृ० ३६१, ४६६ ६७, २, पृ० ६, ८३ ८६, २२३ २४, ३१०।
२ विगत०, २, प० २५५।
३ विगत०, १, प० ५३०।
४ विगत०, १, पृ० ५२८।

पुन मारवाड राज्य के विभिन्न परगनो मे निवास करने वाली अनेकानेक जातियो की जानकारी, तथा बडे नगरो या कसबो मे बसने वालो की अलग-अलग जातिगत व्यक्तियो या उनकी दुकानो की सख्याएँ आदि भी सगृहीत कर विगत० मे यथास्थान यत्र तत्र दे दी है।[१]

अन्तत विभिन्न युद्धो मे काम आये हुओ की जो सूचियाँ नैणसी ने अपने ग्रन्थो मे दी हैं, उनमे राजपूत सरदारो अथवा राजपूत योद्धाओ के साथ ही कई एक अन्य जातियो के व्यक्तियो के नाम भी मिलते है, जैसे चारण,[२] ब्राह्मण-पुरोहित,[३] कायस्थ और ओसवाल जातीय अधिकारी,[४] गुजर धायभाई[५] नाई, ढोली।[६] इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इन युद्धो मे राजपूतो के साथ ही अन्य जातीय योद्धा भी भाग लेते थे और मारे जाते थे। राजपूत सरदारो और योद्धाओ की नामावली देते हुए उनकी खापो का भी अनिवाय रूपेण उल्लेख कर दिया है। इस प्रकार नैणसी ने अपने इस जाति बोध की अभिव्यक्ति के द्वारा उस काल मे राजपूतो की अलग अलग खापो या उपखापो और विभिन्न जातियो के साथ शासन के सम्बन्धो और उनके सहयोग आदि पर विशेष प्रकाश डाला है, और साथ ही तत्कालीन सामाजिक इतिहास सम्बन्धी जानकारी के कुछ सूत्र मिल जाते है।

८ इतिहासलेखन सम्बन्धी उसके उपक्रम का वस्तुस्वरूप और विविध आधार-स्रोत तथा उनके उपयोग की रीति

नैणसी ने अपने इतिहास-ग्रन्थो की रचना करने के लिए तदथ आवश्यक तर्क-सगत उपयुक्त उपक्रम को अपनाया। सवप्रथम उसने सम्बन्धित विषय की सभी प्रकार की विश्वसनीय या प्रामाणिक आधार-सामग्री का सकलन किया। तब उसकी पूरी जाँच पडताल करने के बाद समुचित रूपेण ब्यौरेवार क्रमबद्ध किया। तदनन्तर ही उसके आधार पर उसने अपने ग्रन्थो को क्रमश लिखने का कार्य प्रारम्भ किया। ख्यात० और विगत० के लिए जिन विविध आधार-स्रोतो का उपयोग किया उनका विवरण सम्बन्धित अध्याय मे पहिले दे दिया गया है।

उन आधार स्रोतो का उपयोग करने मे उसने वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया। ख्यात० मे तो उसने अधिकाश आधार स्रोतो का उल्लेख कर दिया जिससे उसके

१ विगत०, १, पृ० १८६ ८८, ४९६ ९७, २, पृ० ६, १०, २२३ २४।
२ विगत०, १, पृ० ६२ ६३, १०५, १८४।
३ विगत०, १, पृ० १८४।
४ विगत०, १, पृ० ७३, ८१, ९८, ११४, १८५।
५ विगत०, १, पृ० ७६, ८७, १४५।
६ विगत०, १, पृ० ७२, १८५।

द्वारा दिये गये विवरण की प्रामाणिकता के बारे मे बाद के संशोधको को सन्देह नही रहे, तथा यदि कोई चाहे तो उस जानकारी के आधार पर अपनी राय बना सके और अधिक खोज कर पाये। विगत० विशुद्ध रूप से एक ब्यौरेवार घटनापूण इतिहास-ग्रन्थ है। उसमे उसने जोधपुर परगने के विवरण मे राठोडो के प्रारम्भिक इतिहास मे ख्यात० मे सगृहीत विभिन्न बातो का भी उपयोग किया। एक ही शासक के बारे मे जहाँ अनेक बातें ज्ञात हुई, वहाँ उसने उन सबका अध्ययन कर अपने निश्चय के अनुसार प्रामाणिक विवरण देने का प्रयत्न किया। ऐसा विवरण देते समय यदि किसी घटना सम्बन्धी विवरणो मे भिन्नताएँ होती थी और वह कोई निणय नही ले पाया, तब वहाँ उसने स्पष्ट रूप से लिख दिया कि ऐसी बात भी प्रचलित है अथवा ऐसा भी सुना जाता है। साथ ही जहाँ किसी के बारे मे उसे शका थी तो उसके लिए उसने लिख दिया कि तत्सम्बन्धी जाच करनी है अथवा इसके बारे मे कोई पता नही चलता है। इसके अतिरिक्त नैणसी ने अनेक शासको सम्बन्धी प्रस्तुत इतिवृत्तो की प्रामाणिकता का समर्थन करने के लिए सव साधारण मे प्रचलित तत्कालीन पद्यो को भी उद्धृत किया है। उदाहरणाथ—
'सावत मडोवर भोगवीयौ छै। तिण री साष रौ कवत्त—

'मडोवर सावत हुवौ, अजमेर सिध सु।
गढ पुगल गजमल हुवौ, लद्रवै भाग मु॥
जोगराज धर धाट हुवौ, हासु पारकर।
अल्ह पाल्ह अरबद, भोजराज जालाधर॥
नवकोटि किराडू सु जुगत, थिर पवाराहर थापिया।
धरणीवाराह धर भाईया, कोट वाट जु जु किया॥'[1]

अथवा रा पत्तौ दुरजणसालोत चरडो अरडक्मल चूडा रौ साख—

'पातल लग पातसाह, बात हुई बढवा तणी।
गढ माडू गजगाह, रहियौ दुरजणसाल रौ॥'[2]

इसी प्रकार आगे एक स्थान पर लिखा है—

'राम जोरावर ठाकुर थौ, जिण आपरै परधान जगहथ दीवावत विस दे मारीयौ, तिण री साष रौ दूहौ—

जगहथ वानु नाल जु न, राव माल रै रतन।
दुनी राम मरता गई, रह गई भाग ठकुराई॥'[3]

इसी प्रकार ख्यात० मे भी यत्र-तत्र कई वीरो सम्बन्धी कई एक प्राचीन गीत,

---

१ विगत०, १, पृ० १।
२ विगत०, १, प० ५८।
३ विगत०, २, पृ० ३।

कवित्त आदि उद्धृत कर दिये हैं[1] और साथ ही उनके रचयिता के नामो को भी दे दिया है।[2] इस प्रकार तब प्रचलित पुरातन काव्य भी सगृहीत और सुरक्षित रह सका है।[3]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), प० ४ ५, १८ १६, २२६, २३१, २४४ ४५, २५३, २६० ६१, ३५४, १८४ ६२, ५२ ५४, ५८ ५६, २२३।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ५ ६, १७० ७१, २७७ ७८, २, प० १४ १५, ५६-५६, ६०, ६२ ६५, ३२६, १०१ २, ८२ ८३, ७४ ७५, ४८ ५०, ५१ ५३, २०७ ८, २४१ ४३ २२४ २५, २१५ १६, २७४, २६७ ६८।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ४ ५, १७० ७१।

अध्याय ४

नैणसी कृत मारवाड रा परगना री विगत

१ उसकी सामान्य परियोजना तथा उसका वास्तविक उद्देश्य

प्रमुख राजपूत राजघरानो की वशावलिया और उनका क्रमबद्ध इतिहास लिखने की अपनी योजना मे नैणसी ने सर्वप्रथम अपने वतन क्षेत्र मारवाड पर लिखने का निश्चय किया। परन्तु मारवाड राज्य और वहाँ के राठोड राजघराने का इतिहास लिखने की सोचना उसे पर्याप्त और समीचीन नही ज्ञात हुआ, एव उसने मारवाड की राजधानी जोधपुर के अतिरिक्त जसवन्तसिह कालीन मारवाड के बाकी रहे अन्य छ ही परगनो का भी अलग अलग क्रमबद्ध प्रामाणिक इतिहास लिखने की योजना बनायी। उसके अन्तर्गत जोधपुर समेत कुल छ परगनो का पूरा विवरण लगभग १६६४ ई० तक लिखा जा चुका था।[1] सातवें परगने, पोहकरण, का विवरण तब भी बाकी रह गया था और सन १६६६ ई० मे तैयार करवाया जा रहा था। तब ही उसको एकाएक पदच्युत कर कैद किये जाने के कारण उसका विवरण अपूर्ण ही रह गया।[2] पोहकरण परगने के २५ गावो के विवरण तब तक लिखे नही गये थे, एव सब ही ८६ गावो के विवरणो को तदनन्तर समुचित क्रम मे व्यवस्थित करने का आवश्यक काम भी रह गया था। यो इस सातवे परगने का विवरण पूरा नही किया जा सका।

जनसाधारण के समक्ष समूचे मारवाड के परगनो का ब्यौरेवार पूरा-पूरा विवरण और एक निष्पक्ष इतिहास प्रस्तुत करना ही नैणसी का प्रमुख उद्देश्य रहा होगा। नैणसी स्वय देश दीवान (प्रमुख प्रशासकीय) पद पर कायरत था। अत

---

१ विगत०, १, पृ० १८६, ४०२, ५००, २, पृ० १०, ८०, २२३। परन्तु जोधपुर परगने का ऐतिहासिक विवरण उसके बाद भी अप्रैल १६, १६६६ ई० तक जोडा जाता रहा था। विगत०, १, पृ० १५०।

२ विगत०, २, पृ० ३५५, ३५६।

उसकी यह इच्छा होनी स्वाभाविक ही थी कि सम्पूण मारवाड की सारी उपयोगी प्रामाणिक जानकारी एकत्रित कर ली जावे जिससे उसे स्वय और आगे के प्रशासको को वह एकत्र व्यवस्थित रूप मे उपलब्ध हो सकेगी। इसी कारण उसने गावो का विवरण सविस्तार लिखा था। विगत० के उपलब्ध हो जाने पर सब ही गाँवो की रेख के पुन निर्धारण मे शासको को सुविधा हो सकेगी। गावो के सीमा सम्बन्धी होने वाले झगडो मे भी यह ग्रन्थ निर्णायक भूमिका निभा सकेगा।

अबुल फजल की भाति नैणसी को उसके शासक ने इतिहास लिखने का कोई आदेश नही दिया था और न महाराजा जसवतसिंह की प्रेरणा से ही उसने अपना कोई भी ग्रन्थ लिखा था।[1] नैणसी ने तो अपनी अन्त प्रेरणा से ही अपना यह ग्रन्थ लिखा था। हो सकता है विगत० को उसका वतमान प्राप्य स्वरूप देने मे उसे अबुल फजल कृत आईन-इ-अकबरी के द्वितीय भाग से प्रेरणा और निर्देशन मिले हो, क्योकि दानो के ग्रन्थो की योजनाओ के स्वरूप मे पर्याप्त समानता दीख पडती है। यद्यपि दोनो ग्रन्थो मे वण्य और विवेच्य विषयो के विस्तार क्षेत्र बहुत ही भिन्न थे, क्योकि जहाँ आईन० मे निम्नतर स्तर पर परगनो और उच्चतम स्तर पर समूचे सूबे को लेकर सारी जानकारी प्रस्तुत की, वहा विगत० मे परगना ही उसकी उच्चतम इकाई और प्रत्येक गाव उसकी निम्नतर इकाई था। इस सम्बन्ध मे आगे अधिक विस्तार के साथ विवेचन किया जावेगा।

२ विगत० की आधार-सामग्री, सकलन की कालावधि और उसका रचनाकाल

मुहणोत नैणसी ने 'मारवाड रा परगना री विगत' की सामग्री के सकलन का काय मई, १६५८ ई० मे देश दीवान बनने के कुछ समय बाद से ही प्रारम्भ कर दिया होगा, यद्यपि उसके तत्काल बाद के वर्षो का स्पष्ट उल्लेख विगत० मे नही मिलता है।[2] उसने परगनो का प्राचीन इतिहास लिखने के लिए प्राचीन स्तम्भ लेख,[3] पट्टो,[4] प्राचीन वशावलिया,[5] प्राचीन पुराणादि ग्रन्थ,[6] बहियो,[7] और

---

१ नैणसी के ग्रथो मे और समकालीन तथा बाद के किसी भी उपलब्ध प्रामाणिक ग्रन्थ मे यह उल्लेख नही मिलता है कि ग्रथ लिखने के लिए नणसी को किसी ने आदेश दिया हो। यदि एसा होता तो नैणसी उसका उल्लेख अवश्य ही अपने ग्रथो मे कर देता।

२ विगत०, १, प० ३६१। विगत० की सामग्री सकलन सम्बधी सबसे पहिला काल उल्लेख सोजत परगने के विवरण मे माच, १६६० ई० का मिलता है।

३ विगत०, २, प० ५ ४१।

४ विगत० २, प० ६१।

५ विगत० १, प० २।

६ विगत०, १, प० १ ३८३।

७ विगत०, १, पृ० ४८३।

पचागो,[1] का उपयोग किया था। दान मे दी गयी भूमि का वणन करने के लिए ताम्र-पत्रो, पट्टो आदि का उपयाग किया।[2] फरवरी, १९७४ ई० मे महाराजकुमार डॉ० रघुबीरसिह, सीतामऊ, ने जालोर परगने के वश-परम्परागत कानूनगो मुहता कानराज से दो हस्तलिखित ग्रन्थो की प्रतिलिपियाँ प्राप्त की थी। उक्त दोनो ही बहिया उनके पूवज तत्कालीन कानूनगो दफ्तरियो की थी।[3] जिनमे सम्मिलिन उस परगने के गावो की सूचिया तब जालोर के परगना हाकिम मियाँ फरासत के समय मे सन १६६२-६३ ई० मे तैयार की गयी थी।[4] उन बहियो मे उन ग्रन्थो का कोई शीर्षक नही होने के कारण, विषय और विवेचन की समानता के आधार पर ही, उनका नाम 'जालोर परगना री विगत' रखा गया है। यद्यपि अपनी विगत० मे नैणसी ने जालोर परगने सम्बन्धी यह विवरण सम्मिलित नही किया था, तथापि इन दोनो की बहियो को देखने से स्पष्ट पता चलता है कि नैणसी ने विभिन्न परगनो के कानूनगो को आदेश देकर उनके आधीन परगनो सम्बन्धी पिछल पाच सालो (१६५८ ई० से १६६२ ई० तक) का सर्वेक्षण तयार करवाकर मँगवाया था और यो कुल सात परगनो—जोधपुर, जैतारण, मेडता, फलाधी, सोजत, सिवाणा और पोहकरण से सम्बन्धित अधिकाश सामग्री प्राप्त हुई। उन प्राप्त सूचियो और विवरणो के आधार पर तदनन्तर नैणसी ने ही विभिन्न आधारो पर प्रत्येक परगने के गाँवो का वर्गीकरण करवा कर उनकी अलग अलग सूचियाँ आदि बाद मे ही बनवायी थी।[5]

विगत० का ऐतिहासिक विवरण तैयार करने के लिए ख्यात० के लिए एकत्र सामग्री का भी उपयाग किया है।[6] जोधपुर के शासको के मनसबो व जागीरो का विवरण उसने शासकीय कागज पत्रो के आधार पर लिखा है और उसके समय मे मुगल दरबार मे नियुक्त वकीलो[7] द्वारा भेजे गये तालिका विवरणो का भी उसने

---

१ विगत०, १, पृ० ९८।

२ विगत० १, पृ० ७७, ४८९।

३ 'कानुगा री बहीया—२ दफतरी मुा मोतीचन्द तुलसीदास री बहीया नग २, १ दफतरी मुा नरसीघ षुबचन्द री" विगत जालोर० (छोटी), पृ० १ क, (बडी), पृ० २ क।

४ विगत जालोर० (छोटी), पृ० ७ क, (बडी), पृ० १६ क।

५ विगत०, १ पृ० १८९।

६ राव आसथान के विवरण के लिए 'राव आसथान जी री बात' (ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २७८ ७९) का उपयोग किया गया (विगत०, १, पृ० १२-१४)। इसी प्रकार ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३३४ ३५ पर दिये गये वतात का उपयोग विगत० (१, पृ० १४ १५) मे किया गया। राव चूडा के विवरण को (विगत०, १, पृ० २१ २२) ख्यात० (प्रतिष्ठान), (२, पृ० ३०६ ७) से लिखा गया।

७ विगत०, १, पृ० १५८, १५७, १५३।

समुचित उपयोग किया है, जिन जिन परगनो मे वह स्वय गया, उन परगनो का स्वय उसने अवलोकन किया तथा उसके आधार पर परगना शहर की तत्कालीन दशा और वहाँ निवास करने वाली जातियो आदि का वणन उसने लिखा।[१] प्रत्येक परगने के राजस्व तथा अन्य करो की जानकारी अपनी निजी जानकारी की राजकीय कागज़ पत्रो से पुष्टि कर वहा के 'दस्तूर अमलो' के आधार पर दी गयी।[२] अपने लम्बे राजकीय सेवा काल मे नैणसी स्वय भी ऐसी सारी शासकीय जानकारी अथवा कानून कायदो आदि का चलता-फिरता जीवित कोश बन गया था।[३] विगत के लेखन काल के मध्य कुछ परगनो की जनसख्या आदि का विवरण देने के लिए उन परगनो से सम्बन्धित व्यक्तियो से तद्विषयक सामग्री का सकलन करवाया था।[४]

परगनो का राजनैतिक इतिहास लिखते समय उसने यत्र तत्र तब सुविज्ञ जनो मे प्रचलित तद्विषयक समकालीन पद्यो का भी आधार-सामग्री के रूप मे उपयोग किया।[५] इन सबके अतिरिक्त प्राचीन व अपने समय से पूव का इतिहास लिखने के लिए जहा उसे कोई प्रामाणिक आधार सामग्री उपलब्ध नही हो सकी वहाँ उसने तब प्रचलित विभिन्न बातो (प्रवादो) का समावेश कर दिया है,[६] अथवा लोकमान्यता का समथन किया है। गावो की रेख का उल्लेख करते समय भी जहाँ पर उसे शासकीय आधार नही मिला वहा कही कही पर अनुमान का सहारा भी लिया है।[७] इस प्रकार वि० स० १७१९ (१६६२-६३ ई०) तक वह विभिन्न परगनो की आधार सामग्री का सकलन करता रहा था[८] और तदनन्तर ही नैणसी ने लेखन-काय प्रारम्भ किया। एक बार लेखन काय प्रारम्भ हो जाने के बाद तब दीख पडने वाली कमियो को पूरी करने के लिए बाद मे भी वह विषय विशेष सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने का आदेश देता रहा। सिवाणा कसबे की जन-सख्या स० १७२१ वि० (१६६४-६५ ई०) मे लिखी गयी थी। जोधपुर नगर के हाटो का विवरण और नगर के माप की जानकारी भी इसी साल मे लिखी गयी थी।[९]

---

१ विगत०, २, प० १, ३ (एक कोट माहे कोहर करायो थो, बूरीयो पडीयो छै), ८३।
२ विगत०, २, प० ८८ ९०।
३ विगत०, २, प० ९४।
४ विगत०, १, प० ३९१।
५ विगत०, २, प० ४२, ४५।
६ विगत०, १, प० ३७, २, प० ४२, ४७।
७ विगत०, १, प० ५०२।
८ सामग्री सकलन काल सम्बन्धी अतिम उल्लेख स० १७१९ (१६६२ ६३ ई०) का विगत०, १, प० ४९६।
९ विगत०, २, प० २२३, १, प० १८८।

इस प्रकार ही नैणसी ने भरसक प्रयत्न कर अपनी विगत० को इसका वतमान वास्तविकतापूण प्रामाणिक रूप दिया।

३ विगत० की प्रमुख विशेषताएँ— 'आईन-इ-अकबरी' से उनकी विभिन्नताएँ

विगत अपनी विशिष्ट विशेषताएँ लिए हुए है। नैणसी ने कुल सात परगनो का वणन किया है। सवप्रथम प्रत्यक परगना का राजनैतिक इतिहास प्रारम्भ से लेकर जसवन्तसिंह के शासनकाल के पूर्वार्द्ध (लगभग १७२२ वि०) तक का लिखा है। तदनन्तर प्रत्येक परगना के कुल गाँवो की सख्या, तफो की सख्या और प्रत्येक तफा के गावो की सख्या की जानकारी दी है। इसके बाद तत्कालीन मारवाड मे पायी जाने वाली प्रमुख जातियो के निवास के अनुसार गावो की सूची, कई जातिया साथ निवास करने वाली जातियो के गाँवो की सूचिया दी गयी है और तदनन्तर प्रत्येक गाव का स० १७१५ मे १७१९ तक का पाच वर्षीय सर्वेक्षण विवरण दिया है।

सन १६५५ ई० मे महाराजा जसवन्तसिंह के आधीन मारवाड प्रदेश के सातो ही परगनो का एक एक कर क्रमश विस्तृत विवरण इस विगत० मे इस प्रकार दिया है कि उसे पढकर पाठक को उक्त परगनो के सम्बन्ध मे हर प्रकार की ऐसी जानकारी हो सके, जिससे वहाँ के शासकीय प्रबन्धक को किसी प्रकार की कठिनाई और उलझन का सामना नही करना पडे। प्रत्येक परगने का वर्णन करते समय उसने परगना केन्द्र कसबे से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी दी है, जैसे उस कसबे की स्थापना कब कैसे हुई थी, उसका नामकरण कैसे हुआ और उसका पूर्ववर्ती कोई नाम रहा है तो वह भी दे दिया गया है।[1] उन परगना-केन्द्र कसबो की स्थापना से पहिले उस परगना या क्षेत्र का व्यवस्था-केन्द्र कही अन्यत्र रहा होगा तो उसका उल्लेख भी कर दिया गया है, जिससे उस परगना केन्द्र के साथ उस क्षेत्र के प्रारम्भिक प्राचीन इतिहास से लेकर महाराजा जसवन्तसिंह के शासनकाल मे लगभग सन् १६६४-६५ ई० (स० १७२१ वि०) तक के इतिहास का विवरण दे दिया है।[2]

विभिन्न परगनो के ऐतिहासिक विवरणो मे परगना जोधपुर का विवरण बहुत ही विस्तृत होने के साथ विशेष महत्त्वपूर्ण भी है। मारवाड राज्य की स्थापना के समय से ही मडोवर नगर उसकी राजधानी रहा। अत मडोवर

---

१ विगत०, १, पृ० १, ३८३, ४९३, २, पृ० १, ३७, २१५, २१६, २८९ ९०।

२ विगत०, १, पृ० १-१८९, ३८३ ९०, ४९३ ९६, २, पृ० १ ८, ३७ ७७, २१५ २०, २८९-३०९।

शहर का प्राचीन इतिहास देखते हुए नैणसी ने मारवाड क्षेत्र मे राठोडो से पूर्व-वर्ती (प्रतिहार) शासको का विवरण दे दिया है। मडोवर पर राठोडो का कब-कैसे आधिपत्य हुआ और जोधपुर शहर की स्थापना कब हुई आदि जानकारी दी है। उस नगर की स्थापना के बाद जोधपुर परगना-केन्द्र के साथ ही राठोडों के मारवाड राज्य का भी प्रमुख शासन-केन्द्र बन गया था। जोधपुर परगने के ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत वस्तुत मारवाड राज्य और वहाँ के राठोड राज-घराने का यथासम्भव प्रामाणिक इतिहास सविस्तार दिया गया है।[1] यो विगत० मे जोधपुर परगने के इतिहास के अन्तर्गत दिया गया मारवाड के राठोड राज-घराने का इतिवृत्त उसी की ख्यात० मे दिये गये ऐतिहासिक विवरण का हर तरह से पूरक हो गया है। ख्यात० की ही तरह विगत० मे दिया गया प्रारम्भिक कालीन इतिवृत्त मूलत प्राचीन प्रवादो, प्रचलित कथानको या दन्तकथाओपूर्ण ख्यातो पर ही आधारित है, परन्तु जोधपुर की स्थापना और विशेषकर मालदेव के बाद के विवरणो की घटनाओ मे अधिकतर तिथि, माह और सवत् भी दिये गये हैं, जो अन्य प्रमाणो के आधार पर जाचे जाने पर सही प्रमाणित होते है।[2]

जोधपुर परगना के विवरण मे ही राठोड-मुगल सम्बन्धो विषयक पूरी प्रामा-णिक जानकारी दी गयी है। अकबर के समय मे कोई १८ वष (१५६५ १५८३ ई०) तक जोधपुर नगर पर मुगल आधिपत्य रहा। राव मालदेव के द्वितीय पुत्र उदयसिंह ने पहिल से ही अकबर की आधीनता स्वीकार कर ली थी। अत उसका मारवाड का राज्य मिलने के बाद जोधपुर के शासक मुगल आधीनता मे ही रह। तब से समय समय पर मुगल शासको की ओर से जोधपुर के शासको को मिलन वाले मनसब तथा उसमे वृद्धि का ब्यौरेवार वणन सन सवतो सहित पूरा मिलता है। साथ ही मनसब के वेतन के बदले जागीर मे दिये जाने वाले सारे परगनो के नाम, उनकी सम्भावित आय आदि के आकडो सहित उनका भी पूरा वणन है।[3] उक्त विवरणो से मनसबदारी प्रथा के नियमो मे १७वी सदी मे जो परिवतन हुए थे उन पर भी विशेष प्रकाश पडता है। नैणसी द्वारा दी गयी जानकारी से यह स्पष्ट हो जाता है कि अकबर के शासनकाल मे निश्चित नियमो मे उल्लेखनीय हेरफेर शाहजहा के ही शासनकाल मे हुए थे। पुन शाही आदेशा-नुसार स्वीकृत सवारो की सख्या मे बरावर्दी और दो अस्पा से अस्पा सवारो मे अपेक्षित अनुपात के बारे मे भी कोई सही निष्कष निकालने के लिए पर्याप्त जान-

---

१ विगत०, १, पृ० १ १५८।

२ विगत०, १, पृ० ४२।

३ विगत०, १, पृ० ८३, ९३, ९४ ९७, १०५ १०६ १०८ १२४, १२५, १२६, १२७, १२९, १३०, १३१ १३२, १३३ १३४, १४५ १४६, १४७, १४८, १४- १५१ १५६।

कारी विगत में सुलभ है ।[1]

अन्य परगनो के ऐतिहासिक विवरणो मे वहाँ का क्षेत्रीय इतिहास देते समय मारवाड राठोड राजघराने के साथ उस परगने के सम्बन्धो आदि का विशेष रूपेण उल्लेख किया गया है । पूर्व मे ये क्षेत्र अन्य किस किस शासक के आधीन रहे थे, और उन पर राठोड राजघराने का अधिकार हो जाने के बाद मारवाड के महाराजाओ ने वहाँ किन उल्लेखनीय अधिकारियो को भेजा था, इसकी भी जानकारी दे दी गयी है। उन परगनो के विभिन्न शासको या वहा के राजकीय अधिकारियो के विशेष कार्यों का उल्लेख कर उन परगनो के इन वृत्तान्तो मे वहा का तत्कालीन महत्त्वपूण क्षेत्रीय इतिहास प्रस्तुत किया गया है ।[2]

कुछ परगनो मे विवरणो के प्रारम्भ मे ही जोधपुर परगने के सन्दभ मे उनकी भौगोलिक स्थिति भी स्पष्टतया दे दी गयी है ।[3] परन्तु आगे चलकर तो हरेक परगने की भौगोलिक सीमाओ को स्पष्टतया निर्धारित करने का पूरा प्रयत्न किया है। तदथ उसमे लगे हुए प्रत्येक परगने अथवा साथ लगे पडोसी राज्य के सीमान्त गाँवो की पूरी पूरी सूचिया दी गयी है,[4] जिससे उस क्षेत्र के किसी भी बडे मानचित्र पर उस परगने का सीमाकन करना सवथा सरल हो गया है। यही नही विगत से मारवाड के परगनो और गाँवो का बहुत ही स्पष्ट निश्चित भूगोल ज्ञात हो जाता है। राजधानी नगर जोधपुर के सन्दभ मे प्रत्येक परगना केन्द्र की भौगोलिक स्थिति और दूरियो का उल्लेख उसमे किया गया है। जोधपुर परगने के अतिरिक्त अन्य सब ही परगनो के परगना-केन्द्र कसबे के सन्दभ मे उस परगने के हर गाव की भौगोलिक स्थिति का भी स्पष्ट उल्लेख करते हुए उनके बीच की दूरी और दिशा भी दे दी गयी है।[5]

विगत० मे सब ही परगना केन्द्रो के कसबो की बस्तियो के बहुत कुछ सविस्तार विवरण दिये हैं, जिनसे उन सब ही कसबो की आबादी, वहा क जन-जीवन तथा सामाजिक अथवा आर्थिक व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश पडता है। जोधपुर कसबा समूचे मारवाड राज्य की राजधानी था एव उसकी आबादी और विस्तार अन्य परगना-केन्द्रो की अपेक्षा बहुत अधिक थे। अत जोधपुर नगर के विभिन्न पहलुओ

---

१ राजस्थान०, १९७०, पृ० ४४ ४७ ।

२ दष्टव्य—विगत० (१ और २ भाग) के परगना सोजत, जैतारण, फलोधी, मेडता, सीवाणा और पोहकरण का ऐतिहासिक विवरण ।

३ विगत०, १ जैतारण, पृ० ४६३, २, सीवाणा, पृ० २१५ ।

४ विगत०, १, पृ० ४७२ ८२ ५५५ ५७, २, पृ० ६, ३२ ३४, ९८ १०६, २७८ ८०, ३२० २२।

५ विगत०, १ पृ० ४२४ ८९, ५०९ ५४, २, पृ० १२ ३१, ११७ २१२, २३२ ७७, ३२७ ५५।

की पारस्परिक दूरियो के नाप दिये है, और तब वहा की आबादी की गणना नही देकर केवल उसके अलग-अलग भागो के हाटो की गणना देते हुए उनमे किन धन्धो के लोग बैठते थे, इसका भी यत्र-तत्र उल्लेख किया है।[१] अन्य सभी परगनो के केन्द्र कसबो, सोजत, जैतारण, फलोधी, मेडता, सीवाणा और पोहकरण मे बसने वाली विभिन्न जातियो और पायी जाने वाली प्रत्येक जाति के व्यक्तियों की तब की गणना दी है।[२] उनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उस समय उन कसबो की आबादी बहुत अधिक नही थी, परन्तु प्रत्येक कसबे मे प्राय सब ही विभिन्न जातियो के लोग वहाँ पाये जाने से आवश्यक सेवाओ के लिए प्रत्येक कसबा-केन्द्र बहुत-कुछ आत्मनिभर था। विगत० लिखे जाते समय जोधपुर शहर तथा अन्य परगनो के केन्द्र-कसबो, सोजत, फलोधी, सीवाणा और पोहकरण की जो भी स्थिति थी इसका वृत्तात नैणसी ने उसमे लिख दिया है।[३]

जोधपुर परगने के विवरण मे ही परगना जोधपुर, परगना सोजत, जैतारण, सीवाणा और फलोधी परगनो मे सवत १७१५ से १७१९ या १७२० तक विभिन्न साधनो से प्राप्त वार्षिक आय की सारणी दे दी गयी है।[४] इससे मारवाड राज्य की आय के तत्कालीन अधिकाश साधनो पर प्रकाश पडता है। परगना जोधपुर के सवत १७११ से १७२० तक के दस वर्षों मे हुई वार्षिक आय के साधनो की भी पर्याप्त जानकारी दी गयी है।[५] साथ ही परगना सोजत के वणन मे भू राजस्व और राज्य की आय के अन्य साधनो का विवरण है।[६] इसी प्रकार मेडता परगना मे 'परगने मेडता रौ अमल दस्तूर' मे राजा गजसिह के समय मे परगना मेडता मे जो विभिन्न कर लिये जाते थे, उनका विस्तृत वणन दिया गया है, साथ ही जसवन्तसिह के समय तक उसमे क्या कुछ घटा-बढी हुई, उसका भी सुस्पष्ट उल्लेख किया गया है।[७] पोहकरण परगना मे भी 'परगने पोहकरण रौ अमल दस्तूर' मे राज्य की आय के विभिन्न साधनो का विवरण है।[८] उक्त दिये गये विवरणो से तत्कालीन राजस्व व्यवस्था और साधनो पर पूरा प्रकाश पडता है। मुगलकाल मे जोधपुर राज्य के इन सब ही परगनो की सीमाओ मे यत्किंचित भी छोटे मोटे जो परिवर्तन हुए थे, विशेषतया जब कोई गाव उनमे से निकालकर अजमेर जैसे

---

१ विगत०, १, पृ० १८८ ८९, १८९ ८८।
२ विगत० १ पृ० ३९१, ४९६ ९७, २, पृ० ९, ८३ ८६, २२३ २४, ३१० ११।
३ विगत०, १ पृ० ३९० ९१, २, पृ० ८, २१५, ३०९।
४ विगत०, १, पृ० १५८ ६०।
५ विगत०, १, पृ० १६६ ६८।
६ विगत०, १, पृ० ३९५ ४००।
७ विगत०, २ पृ० ८८ ९८।
८ विगत०, २, पृ० २३२ ३२७।

शाही खालसा के परगने मे सम्मिलित कर लिए गये थे, तो उनकी भी स्पष्ट जानकारी दी गयी है।[1] इसी प्रकार किसी परगने के कोई गाँव किसी पडोसी राज्य के अधिकार मे चले गये या किसी अन्य क्षेत्र मे सम्मिलित हो गये थे तो उसका भी विगत० मे उल्लेख है।[2]

परगनो के ऐतिहासिक वणन के अन्तगत दिये गये विवरणो से वहा के सामाजिक, धार्मिक और सास्कृतिक इतिहास पर भी प्रकाश पडता है। उदाहरण स्वरूप जाति-प्रथा, विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा, खान-पान और पहिनावा, विभिन्न देवी-देवताओ की पूजा, लोक देवताओ मे आस्था और अन्धविश्वास, होली, दीपावली, रक्षाबन्धन और दशहरा आदि प्रमुख त्यौहारो आदि के बारे मे पर्याप्त जानकारी मिलती है।[3]

राठोड राजवश का राजनैतिक इतिहास लिखते समय विगत० मे भी प्रसगानुसार अन्य राजपूत शाखाओ पडिहार,[4] चौहान,[5] सोलकी,[6] सोनगरा,[7] इदा,[8] सीधल,[9] साखला,[10] कोटेचा,[11] आसायच,[12] सीसोदिया,[13] भाटी,[14] झाला[15] हाडा,[16] सोढा,[17] बाघेला,[18] कछवाहा,[19] आहडा, पँवार,[20] देवडा,[21] खीची,[22]

---

१ विगत०, १, प० ५०५, ५०८ ६।
२ विगत०, २, प० ३१६।
३ विगत०, १, प० १, ४ ५, ६ ७, ८, १२, १३, ३३, ६४ ८२, १०१, १२०, १५० १५७ १७५, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३६०, ३६३, ४६३, २, प० १ ४, ५ १२, ४१, ४७, ५५, ७१, २१६, २४१, २८६, २६०, २६३, ३०५, ३०६, ३११।
४ विगत०, १, प० १ २, ३, ४, ३८, १४२।
५ विगत०, १, पृ० २, ३, ४१, १७५।
६ विगत०, १, पृ० ५, ६, ७, ८, ६, १५।
७ विगत०, १, प० १५ १०४।
८ विगत०, १, पृ० २३, २४, १४१।
६ विगत०, १, पृ० २३, १०४, १४१।
१० विगत०, १, पृ० २३, ११७।
११ विगत०, १, पृ० २३।
१२ विगत०, १, प० २३।
१३ विगत०, १, पृ० २७, ३१, १०४, १७३।
१४ विगत०, १, प० ३०, ४७, ६६, ८५, ८६, ८७, ६३, ६६, १०३।
१५ विगत०, १, पृ० ४७, ४८, ५५।
१६ विगत०, १, प० ५१, ५३, ५५, ६६, ११५, १७३।
१७ विगत०, १, पृ० ५२।
१८ विगत०, १, प० ५३।
१६ विगत०, १, प० ५५।
२० विगत०, १, प० ५५।

गौड,[1] बुन्देला[2] आदि शाखाओ के सम्बन्ध मे प्रसगसगत वणन भी यथास्थान दिया गया है।

अप्रैल १६, १६५८ ई० को लडें गये धरमाट के इतिहास प्रसिद्ध युद्ध मे जसवन्तसिह के साथ भेजी गयी शाही सेना और उसमे नियुक्त मनसबदारो, उनके सहायक सेनानायको के नामो और प्रत्येक के आधीन सैनिको की व्यौरेवार परन्तु अधूरी सूची विगत० मे मिलती है। उस युद्ध का समकालीन विस्तृत विवरण और उस युद्ध मे काम आये सेनानायको और महत्त्वपूण सैनिको की विस्तृत सूचिया दी गयी है।[3]

विगत० मे गाँवो का विवरण भी विस्तृत और समुचित दिया गया है। प्राय सभी गावो की रेख, परगना केन्द्र से प्रत्येक गाव की दूरी, गाँव मे निवास करने वाली प्रमुख जातियो के नाम, खेती योग्य भूमि का माप, सिचाई के साधन और उनकी सख्या, पानी का बाहुल्य या कमी, मुख्य फसलें, खेतो की किस्म, गाव की तत्कालीन दशा, और गाव मे निवास करने वाले लोगो के पीने के पानी के साधन और अन्त मे प्रत्येक गाँव की पचवर्षीय (१७१५ वि० से १७१६ वि० तक) वास्तविक आय आदि के आकडे दिये हैं।[4] गाव का वणन करते समय गाव मे कोई विशेष पेड थे[5] अथवा नदी नाले[6] होकर निकलते थे तो उनका विवरण लिख दिया है। गाव के मन्दिर[7] आदि का भी उल्लेख कर दिया गया है। यदि किसी गाव मे नमक बनाया जाता था तो यह बात भी दर्ज कर दी गयी है।[8] विपत्ति आदि के

---

२१ विगत०, १, प० ६६, ६७, ११५।

२२ विगत०, १, प० १०४ ११७।

२३ विगत०, १ प० ११६।

१ विगत० १, प० १७३।

२ विगत० १, प० १७३।

३ विगत०, १, प० १७६ १८६। विगत० की प्राप्य प्रतियो में यह सूची अधूरी ही मिलती है। स्पष्टतया पश्चात्कालीन प्रतिलिपिकारो की असावधानी से यह सूची पूरी नकल नही की गयी थी, अथवा सम्भवत जिस प्रति से ये प्रतिलिपियाँ नकल की गयी थी उसके बाकी रही सूची वाले पत्र लुटित या लुप्त हो गये थे जिससे उसकी पूरी नकल नही हो सकी थी। इस पूरी सूची के लिए देखो 'जाधपुर हुकूमत री बही', प० ७ १५, विगत०, ३, प० ६० ६३।

४ विगत०, १, गाँवो का विवरण प० २०४ ३५३ ४२५ ८६ ५०६ ५२, २, प० १२ ३१, ११६ २१३, २३२ ७७, ३२७ ५५।

५ विगत०, १ प० ५३८।

६ विगत०, १, प० ५३८, ५३६, २, प० १६१, २३४ २३५ ३१५, ३४६।

७ विगत०, १ प० ५३६, ५४१, २, प० २५४, ३०६, ३११।

८ विगत०, १, प० ४४४, ४४७, ४४८, ४५७, ४७४, ४७८, २, पृ० २१, ३६।

समय यदि कभी कोई शासक आकर किसी गाव मे रहा था तो उसका भी उल्लेख है जिससे इतिहास की अनेको विलुप्त साधारण परन्तु उपयोगी कडियाँ मिल जाती है।[१] उदाहरणार्थ—'काणुजी विपा माँहे राव चन्द्रसैण अठै रह्यो छै विषै रह्याण सारीपो।'[२]

इसी प्रकार यदि किसी गाव की जमीन मुकाते[३] पर दी हुई है तो उसका उल्लेख कर दिया गया है। कही कही पर पट्टादार का नाम और नैणसी के समय मे तब उसका उपभोग कर रहे जागीरदार का नाम भी दे दिया है।[४]

ब्राह्मणो, चारणो, भाटो, भोपो, जोगियो आदि को सासण (दान) मे दिये गये गाँवो की जानकारी विस्तार से दी गयी है। प्रत्येक परगना मे कुल कितने और कौन कौन से गाव सासण के थे और किस-किस शासक ने किसको वह गाव सासण मे दिया था और उस समय (नैणसी के समय) कौन व्यक्ति उसका उपभोग कर रहा था, आदि का पूरा विवरण दिया गया है।[५] साथ ही अनेक गावो मे सासण भूमि किसको कब और क्यो दी गयी थी इसका भी उल्लेख किया गया है।[६] किसी सासण गाव के स्वामित्व मे यदाकदा जो भी परिवतन हुए उनका भी उल्लेख कर दिया गया है।[७] यदि किसी गाव का कोई प्राचीन नाम था और बाद मे उसका नाम बदला गया तो उसका भी उल्लेख कर दिया गया है।[८] यदि किसी व्यक्ति विशेप ने किसी गाव को बसाया तो उसकी भी जानकारी दे दी गयी है।[९]

तत्कालीन जैतारण परगने की दक्षिणी सीमा पर मेरो की बस्ती को, जिसे कालान्तर मे 'मेरवाडा' मे सम्मिलित कर लिया गया, इस क्षेत्र मे मेरो ने कई नये गाव बसाये थे, उनकी जानकारी विगत० मे दी गयी है। यही नही, जिन ८ गावो के मेर तब राज्याधिकार नही मानते थे उनका भी स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है।[१०]

नैणसी के इस विगत० को तैयार करने से कोई ७५-८० वष पहिले अबुल

---

१ विगत०, २, पृ० २५१, २५५।

२ विगत०, १, पृ० ५३६ (सकट के समय मे राव चन्द्रसेन यहाँ रहा था विपत्ति काल मे रहने योग्य स्थान।)

३ विगत०, २, पृ० ३३०, ३३४, ३३५, ३३६, ३३९।

४ विगत०, २, पृ० ३३१ ३२, ३३३, ३३७, ३३८।

५ विगत०, २ पृ० ४८७।

६ विगत०, १, पृ० ३७, ७९, ८२।

७ विगत०, १, पृ० ५४४, ५४६, ५४८।

८ विगत०, १, पृ० ५४३।

९ विगत०, १, पृ० ५४६, ५४९, ५५०, ५५१।

१० विगत०, १, पृ० ५०५, ५०९, ५५२ ५३।

फज़ल ने अपने सुविख्यात ग्रन्थ 'अकबरनामा' के अन्तिम भाग मे मुगल साम्राज्य सम्बन्धी एकमात्र विवरणात्मक ग्रन्थ सवमान्य 'आईन-इ अकबरी' की रचना की थी। उसमे उसने अकबर कालीन मुगल साम्राज्य, शाही दरबार, साम्राज्य-व्यवस्था, शाही सेना और उसका सगठन आदि अनेको विस्तृत विवरण तथा विवेचनो मे तत्कालीन दरबारी जीवन और सस्कृति का विस्तृत विवरण लिखा है। अतएव तत्कालीन मुगल साम्राज्य सम्बन्धी सब ही प्रकार की जानकारी का यह सव-सग्रह बन गया है। ईसा की १७वी सदी के प्रारम्भिक युगो मे ही सब ही शाही कामकाज मे प्रमाणित सन्दभ ग्रन्थ के रूप मे उसका उपयोग किया जाने लगा था। पुन फारसी भाषाविज्ञ विद्वत समाज को तो उसकी प्रतिया अवश्य ही सुलभ हो गयी थी। यदि कही नैणसी फारसी भाषा मे पारगत नही रहा हो तथापि आइन० ग्रन्थ, उसमे वर्णित विपय, उसकी लेखन-शैली आदि से नैणसी जैसा इतिहास का ज्ञाता सुविज्ञ अवश्य ही पूणतया परिचित होगा इस सम्बन्ध मे कोई शका नही होती है। अत यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि उसी तरह के अपने इस ग्रन्थ विगत० की रूपरेखा बनाने और बाद मे उसको तैयार करते समय नैणसी आइन० से कहा तक प्रभावित हुआ था।

आईन इ-अकबरी के प्रथम भाग मे शाही राजमहल, शाही दरबार, मुग़ल सैनिक तथा व्यवस्था सम्बन्धी विस्तृत विवरण दिया गया है। आइन० के तृतीय भाग मे हिन्दुस्तान का भौगोलिक वणन, हिन्दू धम, दर्शन, समाज और सस्कृति सम्बन्धी वृत्तान्त प्रस्तुत किया गया है। विगत० मे इस प्रकार के कोई विस्तृत क्रमबद्ध विवरण नही है, यत्र तत्र केवल कुछ प्रासगिक उल्लेख ही मिलते है। विगत० का स्वरूप आइन० के द्वितीय भाग की ही तरह का है। परन्तु आइन० के भाग २ मे विवेच्य विषय का क्षेत्र बहुत अधिक विस्तृत है। अकबर के सम्पूण साम्राज्य के विभिन्न सूबो, सरकारो और परगनो (महलो) का वणन इसमे सम्मिलित किया गया है। क्षेत्र अतीव विस्तृत होने के कारण अबुल फज़ल के लिए अपने इस ग्रन्थ मे वहा की निम्नस्तरीय उन सब ही विभिन्न छोटी छोटी बातो का समावेश कर सकना सम्भव नही था, जिनका समावेश नैणसी ने अपनी विगत० मे किया है।

अबुल फज़ल ने आइन० के इस द्वितीय भाग मे प्रान्तीय शासन व्यवस्था की जानकारी देने के बाद सवप्रथम विभिन्न राजस्व अधिकारियो का विवरण दिया है। उसके बाद इलाही गज, बीघा, बिस्वा और जमीन तथा उसका वर्गीकरण आदि का विस्तृत विवेचन किया है। इसमे उपज के आधार पर अलग अलग प्रकार की भूमि का पोलच, पडती, चचर और बजर मे वर्गीकरण किया है। साथ ही इन विभिन्न प्रकार की जमीनो से कितना और किस प्रकार लगान वसूल किया जाता था इसका वणन है। इलाहाबाद, अवध, आगरा, अजमेर, दिल्ली,

लाहोर, मुलतान और मालवा सूबो की दस वर्षीय भू व्यवस्था का विस्तृत विवरण, वहाँ के राजस्व और सरकार की जानकारी देने के बाद वहाँ की दोनो फसलो मे पैदा होने वाली वस्तुओ के नाम और उनका भाव (मूल्य) दाम और जीतल मे दिया गया है। आगे चलकर अबुल फजल ने तत्कालीन मुगल साम्राज्य के १२ सूबो का अलग-अलग ब्योरेवार विस्तृत विवरण दिया, जो आइन० के द्वितीय भाग का सबसे महत्त्वपूर्ण जानकारीप्रद अश है। प्रत्येक सूबे की भौगोलिक स्थिति वहा का प्राकृतिक भूगोल तथा सीमाएँ, उस सूबे मे मापी जा चुकी भूमि का क्षेत्रफल, उल्लेखनीय वृक्षो और फलो सम्बन्धी आदि बहुविध विवरण दिया गया है। सूबा केन्द्र अथवा मुख्य सरकारो अथवा विशिष्ट नगरो का सक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण और उनकी प्रमुख विशेषताओ का उल्लेख किया गया है। उदाहरणार्थ—उडीसा के विवरण मे पुरी के जगन्नाथ मन्दिर और कोणार्क के सूर्य मन्दिर का विवरण तथा वहा के खान पान, रहन-सहन का विवरण आइन० मे पढने को मिलता है, प्रत्येक सूबे की कुल सरकारो तथा प्रत्येक सरकार के अन्तर्गत सब ही परगनो की मापी गयी भूमि का क्षेत्रफल बीघा बिस्वा मे, प्रत्येक का राजस्व, सुयूरगल और वही नियुक्त घुडसवारो और पैदल सैनिको की सख्याएँ दी है। यो सूबा, सरकार और परगनो या महलो का आर्थिक विवरण ही सर्वाधिक दिया गया है। वही की राजस्व व्यवस्था की जानकारी दी गयी और विभिन्न परगना या महल केन्द्र स्थान की विशिष्टता भी अति सक्षेप मे दे दी गयी है। जैसे अजमेर और चित्तौड के पहाड पर पत्थर के सुदृढ किलो का उल्लेख उसमे है। मारवाड के विभिन्न स्थानो के किलो की स्पष्ट जानकारी है। विभिन्न परगनो मे बसने वाली अथवा वहाँ शासन कर रही प्रमुख जातियो की जानकारी सक्षेप मे दे दी है। अत आइन० मे शासन व्यवस्था के साथ ही वहाँ के समकालीन जन जीवन का प्रतिबिम्ब भी देखने को मिलता है।

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णन से आइन० से विगत० की विभिन्नता स्पष्ट हो जाती है। अबुल फजल ने प्रत्येक सूबे का सक्षिप्त इतिहास और भौगोलिक वर्णन दिया है जबकि नैणसी ने परगनो का विस्तृत इतिहास और भौगोलिक वर्णन दिया है। विशेषकर जोधपुर परगना का ता १७२२ वि० स० (१६६५ ई०) तक का सम्पूर्ण इतिहास लिख दिया है।

आइन० मे सूबा, सरकार और महलो की राजस्व के आँकडे दिये है, विगत० मे परगना, तफा और गावो के राजस्व के आकडे दिये गये हैं। साथ ही विगत० मे १७१५ से १७१६ वि० स० तक प्रत्येक गाँव की वास्तविक आय के आँकडे भी दिये हैं।

आइन० मे प्रत्येक सरकार की सैनिक सख्या और क्षेत्रफल का उल्लेख किया है। विगत० मे तत्सम्बन्धी विवरण नही है। विगत० मे कुछेक परगनो के गाँवो

का क्षेत्रफल अवश्य दिया गया है।

विगत० मे प्रत्येक गाव का विस्तृत वणन दिया है, उसमे गाव मे निवास करने वाली मुख्य जातियो, सिंचाई के साधन, पीने के पानी के साधन, परगना से गाँव की दूरी और दिशा का वणन है। आइन० मे गाँवो के विवरण का अभाव है।

४ विगत० की प्राप्य प्रतिलिपियाँ और उनका प्रकाशन

'मारवाड रा परगना री विगत' की प्रतिलिपि की सूचना और विस्तृत जानकारी सवप्रथम तैस्सीतोरी ने ही अपने 'डिस्क्रिप्टिव केटेलाग ऑफ बार्डिक एड हिस्टारिकल मैनुस्क्रिप्ट्स' विभाग १, खड १, जोधपुर राज्य' मे (क्र० १२, पृ० ४८-५१) दी थी और उसके प्रशासनिक और आर्थिक महत्त्व की ओर ध्यानाकषण किया था। उक्त प्रतिलिपि तब जोधपुर राज्य के चारण वणसूर महादान के सग्रह मे थी। तैस्सीतोरी ने विगत० की विषय सूची और कई एक सक्षिप्त उद्धरण भी उसमे दिये जिससे उस ग्रन्थ के महत्त्व को समझने मे आसानी हो गयी।[1] इसके बाद डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा ने विगत० पर प्रकाश डाला,[2] परन्तु उन्होने कौन और किस हस्तलिखित प्रति को देखा इसका उल्लेख नही किया है। स्पष्टतया उन्होने यह सारा उल्लेख तैस्सीतोरी के उक्त केटेलाग मे दिये गये विवरण के ही आधार पर किया होगा। निश्चित रूपण यह कहा जा सकता है कि उनके सग्रह मे तो उक्त ग्रन्थ की कोई प्रति नही थी, क्योकि यदि उनके पास तब विगत० की प्रति उपलब्ध होती तो वह अपने ग्रन्थ 'जोधपुर राज्य का इतिहास' मे उसका उपयोग अवश्य करते।

अब तक विगत० की दो ही प्रतिया उपलब्ध हो पायी हैं और दोनो हो प्रतिया अब 'राजस्थानी शोध-सस्थान', चौपासनी (जोधपुर) मे सगृहीत हैं।[3] प्रथम प्रति वि० १८वी शताब्दी के मध्य[4] की प्रतिलिपि बतायी जाती है। परन्तु किस आधार पर उसका यह रचनाकाल निश्चित किया गया है, इसका कोई सकेत उसके सम्पादक ने कही नही दिया। प्रयत्न करने पर भी इस प्रति को देख नही पाया एव उसके बारे मे निश्चयात्मक रूपेण कुछ अधिक कह सकना सम्भव नही है। उक्त प्रथम प्रति मे सात परगनो जोधपुर, सोजत, जैतारण, फलोधी, मेटता, सीवाणा और पोहकरण का ही विवरण है। विगत० के सम्पादक के अनुसार इस प्रति की पत्र सख्या ३६२ है और प्रत्येक पत्र के हरेक पृष्ठ पर २० से लेकर

---

१ तस्सीतोरी० जोधपुर०, १, प० ५० ५१।

२ दूगड०, १, (मुहणोत नैणसी वश परिचय, प० १०)।

३ विगत०, १, भूमिका, पृ० ३७।

४ विगत०, १, भूमिका, प० ३७।

२३ पक्तिया लिखी हुई है। एक ही व्यक्ति ने इसे सुवाच्य मारवाडी लिपि मे लिखा है। इस प्रति के सब ही पत्र खुले हुए अलग अलग हैं और कुछ पत्र खडित हो जाने से उनका मूल पाठ नष्ट हो गया है।[1]

इस विगत० की दूसरी प्रति वही है जो पहिले जोधपुर के चारण वणसूर महादान के सग्रह मे थी, और जिसे तब तैस्सीतोरी ने देखा और जिसका विस्तृत विवरण तब उसने लिखा था।[2] यहाँ आगे दिये गये उसके ब्यौरेवार जानकारी का मूल आधार तैस्सीतोरी द्वारा यह सविस्तार वत्तान्त ही है। राजस्थानी शोध-सस्थान, चौपासनी ने उक्त प्रति वणसूर महादान के वशजो से ही प्राप्त की होगी। तैस्सीतोरी के अनुसार उक्त दूसरी प्रति की प्रतिलिपि सवत् १९३७ (सन १८८१ ई०) के लगभग या उसके कुछ समय बाद[3] की गयी थी। इनमे विशष रूपण ध्यान दने की बात यह है कि 'नागोर की हगीगत' मे दिया गया ऐतिहासिक और भौगोलिक विवरण स्पष्टतया सन १८८१ ई० (स० १९३७ वि०) मे मारवाड मे हुई जनगणना के बाद ही लिखा गया था। यह समूची प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा लिखी गयी थी, जिससे उसका प्रतिलिपिकाल उससे तत्काल बाद का ही स्पष्टतया निश्चित किया जा सकता है।

उक्त दूसरी प्रति मे पहिली प्रति से कुछ भिन्नताएँ हैं। इसके प्रारम्भ और अन्त मे कुछ अतिरिक्त विवरण हैं तथा मूल ग्रन्थ से पूर्व व पश्चात काल की जानकारिया लिख दी गयी हैं जो प्रथम प्रति मे नही है। इस प्रति के प्रारम्भिक २५ पत्रो मे निम्नलिखित विविध जानकारी है—

(क) 'अकबर रै समै री मनसप री विगत', पत्र स० १ अ से १११ अ तक मे। (ख) पातसाही हिन्दू उमरावो री विगत'[4] (पत्र स० IV अ से IX अ तक) मे अकबर, जहाँगीर, शाहजहा और औरगजेब के हिन्दू मनसबदारो के नाम, उनकी जातिया, और मनसब की सूची दी गयी है। (ग) 'नागोर री हगीगत'[5] (पत्र सख्या X अ से XII ब तक) मे नागोर का भौगोलिक और ऐतिहासिक विवरण सवत् १८०८ तक का दिया है। (घ) 'जोधपुर महाराजा जसवतसिंघ जी रै मनसप रौ नावो ने थोडो वृतान्त (पत्र स० १ अ से ७ ब तक) मे जसवन्तसिंह के मनसब के आँकडे और सवत् १७२७ से १७३० वि० तक की घटनाओ का सक्षिप्त विवरण दिया गया है। (ङ) 'जैपुर महाराजा जसिंघ जी रै मनसप रौ

---

१ विगत०, १, भूमिका, पृ० ३७।

२ विगत०, १, भूमिका, पृ० ३७, तैस्सीतोरी० जोधपुर०, १, पृ० ४८ ५१।

३ तैस्सीतोरी० जोधपुर०, १, पृ० ४८।

४ तस्सीतोरी० जोधपुर०, १, पृ० ४८, विगत०, २, परिशिष्ट ९ पृ० ४९७-९९। अकबर-कालीन मनसबदारो की सूची 'आईन इ अकबरी' से ली गयी बतलायी जाती है।

५ तस्सीतोरी० जोधपुर०, १, पृ० ४८, विगत०, २, परिशिष्ट ९ (घ), पृ० ४२१ २४।

नावो ने थाडौ वृतान्त"[1] (पत्र स० ८ अ से १३ अ तक) मे मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा के मनसब और कार्यों का विवरण दिया गया है।

इसी प्रकार इस प्रति के अन्त के प० ४५३ ब से ४५६ ब तक के पत्रो मे 'जोधपुर सम्बन्धी फुटकर वार्ता' शीषक मे कई प्रकार की स्फुट जानकारी एकत्र कर लिख दी गयी है। जोधपुर परगने के गावो की तीन बार की गयी अलग अलग गणनाओ के अक क्रमश दिये गये हैं। स० १७१६ वि० मुहणोत नैणसी और पचोली नरसिंघदास द्वारा की गयी अलग गणना की सारणिया और आकडे दिये है, तदनुसार गावो की सख्या १२६६ थी। तीसरी गणना के अनुसार १४४० गाव थे। राव राम और चन्द्रसेन के बीच हुए स० १६२०-२२ वि० के सघष का विवरण है। उदयसिंह, सूरजसिंह, गजसिंह और जसवतसिंह की तनख्वाह मे जोडे गये जोधपुर परगने के विभिन्न तफो की आमदनी के आकडो की जो सूची कानूनगो महेशदास ने सकलित कर लिख दी थी वह सारणी दी गयी है। स० १६१४ वि० मे जैतारण पर मुगल सेना के आक्रमण सम्बन्धी एक टिप्पणी है। स० १६४१, १६४३ और १६४४ वि० की घटनाओ का उल्लेख करते हुए माटा राजा उदयसिंह का सक्षिप्त विवरण दिया है। मुहणोत नैणसी ने स० १७२० वि० मे जो 'लाहिणा' भरा उसकी जानकारी दी है और अत मे 'करमूलो' नामक कर पर एक टिप्पणी दी गयी है।[2]

ये सारे विविध विवरण विगत० की प्रथम प्रति मे नही है। स्पष्टतया इस दूसरी प्रति के प्रतिलिपिकर्ता ने विभिन्न बहियो या पोथियो से लेकर इन सारे स्फुट प्रकरणो को इस प्रतिलिपि की नकल करते समय स्वय ने मूल ग्रन्थ के प्रारम्भ या अन्त मे जोड दिया था।

मुहणोत नणसी द्वारा लिखित विगत० के इस उपयोगी ग्रथ को तीन भागो मे सम्पादित करने का श्रेय डॉ० नारायणसिंह भाटी, निदेशक, राजस्थानी शोध-सस्थान, चौपासनी (जोधपुर), को है और उक्त ग्रन्थ को प्रकाशित[3] करने का श्रेय राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर को है। प्रथम भाग मे परगना जोधपुर, सोजत और जैतारण का विवरण है। अन्य सूत्रो से सकलित कर सम्पादक ने इस प्रथम भाग मे एक परिशिष्ट जोड दिया है, जिसमे कुछ अतिरिक्त सामग्री भी प्रकाशित कर दी है। दूसरे भाग मे परगना फलोधी, मेडता, सीवाणा और पोहकरण का वर्णन है। उक्त भाग मे भी सम्पादक ने दस परिशिष्ट जोडकर जोधपुर

१ तैस्सीतोरी० जोधपुर० १, प० ४६, विगत०, २, परिशिष्ट ८ प० ४८६ ८६ मे केवल 'राजा जैसिंघ रा मनसब रौ नावो सम्वत १७२१ था लिखाया' ही छाप दिया गया है।

२ तस्सीतोरी० जोधपुर०, १, प० ५१, विगत०, २, परिशिष्ट २ (क), प० ४२८ ३५।

३ प्रथम भाग का प्रकाशन १९६८ ई०, दूसरे का १९६९ ई० और तीसरे भाग का १९७३ ई० मे हुआ।

तथा अन्य परगनो सम्बन्धी जानकारी के लिए अतिरिक्त सामग्री सगृहीत की है। इसमे परिशिष्ट (घ), ८ और ९ तैस्सीतोरी० द्वारा उल्लेखित विक्रम की २०वी शती की प्रतिलिपि (ख) के प्रारम्भ या अन्त मे प्रतिलिपिकार द्वारा जोडी गयी की 'फुटकर वार्ता' से लिये गये है।[1] तीसरे भाग मे सम्पादक ने सब ही भागो की अनुक्रमणिकाएँ और कुछ विशिष्ट शब्दो की परिभाषा देने का प्रयास किया है। कुछ शासको की जन्म पत्रियाँ भी सगृहीत कर दी गयी है।

५ विगत की बहु-विधि विषयवस्तु, उसकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता तथा इस ग्रन्थ का सर्वांगीण प्राथमिक महत्त्व

विगत मे तत्कालीन मारवाड के सात परगनो, जाधपुर, सोजत, जैतारण, फलोधी, मेडता, सीवाणा और पोहकरण का प्रारम्भ से लेकर १७१९, १७२०, १७२१ और १७२२ वि० तक का विस्तृत विवरण दिया है जिससे इतिहास के अतिरिक्त विवाह प्रथा, दहेज का प्राधान्य, सती प्रथा, होली, दीपावली, दशहरा और रक्षाबधन आदि त्योहारो की जानकारी, धार्मिक विश्वास, विभिन्न देवी-देवताओ मे विश्वास, मूर्ति-पूजा सम्बन्धी विवरण, लोक देवता के प्रति मान्यता, हिन्दुओ के मृतक सस्कार, मारवाड राज्य क केन्द्रीय प्रशासन के अधिकारियो के कर्तव्य और कार्यों पर प्रकाश, परगना प्रशासन के अधिकारियो के कार्यों आदि सम्बन्धी विशेष जानकारी, विभिन्न युद्धो मे मारे जाने वाले विशिष्ट व्यक्तियो के नामो, खापो आदि की जानकारी, जागीरदारी व्यवस्था पर प्रकाश, जोधपुर का अन्य राज्यो से सम्बन्ध, मारवाड-मुगल सम्बन्ध, मुगलो से अथवा मुसलमानो स वैवाहिक सम्बन्धो पर नवीन प्रकाश, मनसबदारी प्रथा विशेषकर मनसब के जात सवार आदि के आधार पर दिये जाने वाले वेतनमानो की दरो आदि के सम्बन्ध मे प्रामाणिक जानकारी मिलती है।

सातो परगनो मे प्रत्येक गाँव का ब्यौरेवार विवरण लिखते हुए गाव का नाम, परगना-केन्द्र से उसकी दूरी, प्रत्येक गाव मे सिचाई के साधन, गाँव मे पीने के पानी की व्यवस्था, गाँव की रेख और स० १७१५ वि० से १७१९ वि० तक प्रत्येक गाँव की वार्षिक आय, गाँव की मुख्य फसलो, नैणसी के समय मे गाँव की तत्कालीन दशा आदि का विवरण दिया है। उस गाँव विशेष सम्बन्धी कोई खास ऐतिहासिक घटना हुई हो या विशेष बात हो तो उसका भी उक्त विवरण मे स्पष्ट उल्लेख है जिससे मारवाड राज्य और राजघराने के पूववर्ती इतिहास की अनेको छोटी-छोटी लुप्त कडियाँ प्राप्त हो जाती है। जैसे कुडल (सीवाणा) के

---

१ तैस्सीतोरी० जोधपुर०, १, पृ० ४८ ४९, ५१, विगत०, २, पृ० ४२१ २४, ४२८ ३५, ४८६ ९९।

विवरण मे दिया गया है कि 'विषै राव श्री मालदेवजी कुडल रे भाखर रहा था।'[१] सासण के गाँवो का विवरण लिखते हुए भी वह कब किसे दिया गया था आदि जानकारी भी दे दी गयी। जैसे पचेटीयो (सोजत) के सन्दर्भ मे लिखी है 'दत्त महाराजा गजसिंघजी रो आढा दुरसा मेहावत कीसन दुरसावत नु० समत १६७७ रा काती सुद ७ री बही मे आढो महेसदास किसनावत है।'[२] ब्राह्मणो आदि के सासणो के सम्बन्ध मे भी ऐसी ही क्रमबद्ध ऐतिहासिक जानकारिया मिलती हैं। जैसे सीवाणा परगना मे 'सीलोर रा वास के सम्बन्ध मे लिखा है—'दत्त रावल हापा जैतमलोत रो प्रो० नाना रोहडोयोत जात राजगुर नु० पहला पुवार रौ दीयौ अगनोतीया (अग्निहोत्रियाँ) नु सासण थौ। हिमे प्रो० मेहराज भोजा रौ नै लिषमीदास देवीदास रो नै हेमराज षेतै सूरा रो नै रतनौ रावतोत।[३] परगनो की भौगोलिक सीमा, राज्य की आमदनी के साधन, इस प्रकार नैणसी के इस ग्रन्थ से मारवाड के राजनैतिक इतिहास, भौगोलिक, प्रशासनिक, सामाजिक, धार्मिक और सास्कृतिक तथा आर्थिक दशा आदि सभी विषयो पर पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

मुहणोत नैणसी ने विगत० मे सातो परगनो का ऐतिहासिक वणन करते समय तब तत्सम्बन्धी उपलब्ध सारी आधार सामग्री का उपयोग किया है। जहा से सामग्री प्राप्त की या जिस सामग्री का उपयोग किया, उसका उसने अनेक स्थानो पर स्पष्ट उल्लेख कर दिया। इस प्रकार अपने ग्रन्थ की प्रामाणिकता उसने स्वय ही स्पष्ट कर दी है। प्रत्येक परगने का प्राचीन इतिहास लिखने के लिये तब उसे कोई अन्य प्रामाणिक आधार सामग्री उपलब्ध नही हो पायी थी इस कारण उसे प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ, प्राचीन पद्य और वशावली आदि का सहारा लेना पडा और उमे तब उसमे प्रचलित कथानको या प्रवादो का भी समावेश करना पडा। विशेषकर जोधपुर परगना सम्बन्धी विवरण मे ऐसी बातो का समावेश बहुत मिलता है। अत राव जोधा के पूव का राजनैतिक इतिहास प्रामाणिक नही माना जा सकता है। राव जोधा के बाद के राजनैतिक इतिहास को लिखते समय उसने तब उपलब्ध शासकीय कागज पत्रो, निजी व्यक्तियो के सग्रहो, ताम्र पत्रो, स्तम्भ लेखो आदि आधार-सामग्री का उपयोग कर लिखा, जिनकी प्रामाणिकता मे सन्देह नही किया जा सकता था। परन्तु इस काल के विवरणो मे भी अनेक स्थानो

---

१ विगत०, २, प० २५१ (विपत्ति के समय राव मालदेव कुडल के पहाडो मे रहा था)।

२ विगत०, १, पृ० ४८३।

३ विगत०, १, पृ० २६६ (रावल हापा जैतमलोत ने पुरोहित नाना रोहडियोत राजगुरु को दान मे दिया। पूव मे अग्निहोत्रियो को पवार ने दान मे दिया था। वतमान मे पुरोहित मेहराज भोजा का, लक्ष्मीदास देवीदास का, हेमराज खता सूरा का और रतना रखनोत हैं।)

पर सुनी-सुनायी बातो का आधार लेना पडा जिनकी ऐतिहासिकता स्पष्ट नही है। मालदेव-शेरशाह युद्ध सम्बन्धी विवरण मे उसने लिखा कि 'राव जी कहै छै अजमेर आया।'[1] इसी प्रकार मोटा राजा उदयसिंह के विवरण मे लिखा कि 'मोटा राजा नु राव मालदे रै मरण फलोधी भाली सरूपदे दिराय, पछै चन्द्रसेन नु जोधपुर रौ टीकौ हुग्रा। फलोधी थकाँ री वात कोई कहै छै कोई गाघाणी रो हासल लीयौ।'[2] 'एक वात यु सुणी है—समत १६३७ तथा १६३६ रा० सुरताण जेमलोत नु कोई दिन सोभत पातसाही री दीवी जागीर माँह पायी छै।[3]

विभिन्न परगनो के कुल राजस्व आदि के उल्लेख उसने शासकीय कागज-पत्रा के आधार पर किये थे और परगनो के गावो की रेख और १७१५ वि० से १७१६ वि० तक के वार्षिक आय के आकडे व वहाँ के गावो का विवरण उसने तब परगनो के कानूनगो से प्राप्त किये थे। जोधपुर मे लगने वाली हाटो के वणन भी किसके-किसके द्वारा लिखवाकर एकत्र किये और तब ही उसने उन्हे प्रस्तुत किया था, इसका भी उसने यथास्थान उल्लेख किया है। इसी प्रकार तब परगनो की कुल जातियो आदि का वणन करते हुए भी उनके आधार दिये है।

विगत० का महत्त्व न केवल मारवाड के इतिहास के लिए ही है बल्कि राजस्थान और तत्कालीन भारतीय इतिहास के लिए भी इसका प्राथमिक महत्त्व है। मारवाड के ही नही मुगलो के राजनैतिक व सामाजिक इतिहास के लिए इसका आधार सामग्री के रूप मे उपयोग किया जा सकता है। मध्यकालीन मारवाड के राजनैतिक इतिहास के लिए (राव जोधा से जसवन्तसिंह तक) भी आधार-सामग्री के रूप मे इसका प्राथमिक महत्त्व है।[4] तत्कालीन मारवाड के धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक इतिहास के लिए यह ग्रन्थ अत्यधिक महत्त्वपूण है, जिसकी विशद व्याख्या आगे अध्याय १० और ११ मे की गयी है।

विगत० मे गाँवो का वणन मे भी अनेक महत्त्वपूण बातो का उल्लेख किया गया है। कभी किसी गाँव मे किसी समय विशेष प्रयोजन से कोई शासक रहा था, उसका भी उल्लेख मिलता है, साथ ही गाँव की यदि कोई विशिष्ट उपलब्धि है तो उसका विवरण भी इसमे मिलता है। विभिन्न परगनो, अथवा उनके अलग-

---

१ विगत०, १, पृ० ५६ (ऐसा कहा जाता है कि रावजी अजमेर आया।)

२ विगत०, १, पृ० ८३ (राव मालदेव के मरणोपरान्त झाली स्वरूपदे के समथन से मोटा राजा का फलोधी पर अधिकार हुआ, तदनन्तर ही राव चन्द्रसेन जोधपुर की गद्दी पर बैठा। कुछ लोग कहते हैं कि फलोधी निवास काल के समय मोटा राजा गाघाणी का लगान वसूल किया था।)

३ विगत०, १, पृ० ६६ (एक बात ऐसी सुनी है—सम्वत १६३७ अथवा १६३६ वि० किसी दिन बादशाह ने रा० सूरताण जमलोत को सोजत जागीर मे दी थी।)

४ अध्याय ६ में विशद विवरण दिया गया है।

अलग उपविभाग, तफो की तब भौगोलिक सीमाएँ क्या थी इसका विवरण विगत० के अतिरिक्त अन्य किसी समकालीन ग्रन्थ मे प्राप्त नही है। यो तत्कालीन मारवाड के राजनैतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक इतिहास के लिए इस ग्रन्थ का उपयोग प्राथमिक आधार-ग्रन्थ के रूप मे किया जा सकता है।

अध्याय ५

मुहणोत नैणसी री ख्यात

१ ख्यात की सम्भावित परियोजना और उसका प्रस्तावित लक्ष्य

मुहणोत नैणसी की ख्यात० और विगत० के सागोपाग अध्ययन के बाद ख्यात की सम्भावित परियोजना के बारे मे कुछ निष्कर्ष पर पहुचा जा सकता है। नैणसी ने लगभग ३३ वर्ष[1] की अवस्था मे ही यह परियोजना बनायी होगी कि वह सभी राजपूत राज्यो का विस्तृत प्रामाणिक इतिहास लिखे। अत अपनी इस परियोजना के ही अनुसार उसने लगभग १६४३ ई० से ही ऐतिहासिक सामग्री का सकलन प्रारम्भ कर दिया था। महाराजा जसवन्तसिंह के आदेशानुसार वह मारवाड मे ही यत्र तत्र सेवारत रहा। कोई १५ वर्ष बाद मई, १६५८ ई० मे वह मारवाड का देश दीवान बन गया। विभिन्न परगनो का हाकिम रहते हुए भी उसे सूझा होगा, परन्तु अब समूचे देश का शासन भार पाने के बाद तो विशेष रूप से उसका ध्यान सर्वप्रथम मारवाड के सभी परगनो का इतिहास लिखने और उनके सम्बन्ध मे बहुविध अत्यावश्यक शासकीय राजस्व आदि सम्बन्धी जानकारी एकत्र करने की ओर गया होगा। अत मारवाड के इतिहास की सामग्री के सकलन और लेखन की ओर अधिक ध्यान दिया।[2]

परन्तु इस समयान्तर मे भी उसने अपनी उक्त ख्यात सम्बन्धी परियोजना मे कोई ढील नही दी। उसने 'मारवाड रा परगना री विगत' की आधार सामग्री के सकलन और लेखन के साथ साथ ख्यात की भी सामग्री के सकलन का काम पूर्ववत् जारी रखा और वह अपने उस लक्ष्य को भी पूरा करने मे लगा रहा। जून,

---

१ मुहणोत नैणसी का जन्म १६१० ई० मे हुआ था और १६४३ ई० से ख्यात विषयक सामग्री के सग्रह का प्रथम उल्लेख मिलता है। देखिये अध्याय २, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ६।

२ देखिये अध्याय ४, पृ० ८४ ८५।

१६६६ ई० तक ख्यात सम्ब धी सामग्री के सकलन और उसके लेखन का उल्लेख मिलता है।[1] दिसम्बर २४, १६६६ ई० मे नैणसी को पदच्युत कर दिया गया था[2] और नवम्बर २६, १६६७ ई० को उसे बन्दी बना लिया गया था।[3] अत १६६६ ई० से ही ख्यात का सकलन और लेखन काय एकाएक रुक गया और यह काय अपूण ही रह गया।

२ उल्लिखित तथा अनिर्दिष्ट आधार-स्रोत

मुहणोत नैणसी ने अपनी सुविख्यात ख्यात को लिखते समय यथासम्भव सब ही विभिन्न प्रकार के आवश्यक उपयोगी आधार स्रोतो का उपयोग किया है जिनमे से अधिकाश आधार स्रोत का उसने यथास्थान स्पष्ट उल्लेख भी कर दिया है। विभि न राजपूत राजवशो की उत्पत्ति तथा प्राचीन जानकारी के लिए उसने कई प्राचीन ग्र थो का अध्ययन किया और उनके आधार पर तत्सम्ब धी विवरण दिया है। उसने जैसलमेर के भाटियो की उत्पत्ति का विवरण हरिवशपुराण और यादवो के वश का विवरण श्रीमद्भागवत के आधार पर दिया है। उसने स्वय ने उल्लेख किया है 'भाटिया री सोमवसी हरिवस पुराण माहे इणा री उत्पत कही'[4], तथा 'अै सोमवसी, एकादसमे तीसमे अध्याय मे जादव स्थल मे इतरा जादवा रा वश कहया'।[5] इसके अतिरिक्त उसने अनेको उपयोगी काव्य ग्रन्थो का भी अध्ययन किया था। बुन्देलो के विवरण मे उसने लिखा कि 'कवि प्रिया ग्रन्थ केसोदास रो कियो— तिण माहे बुन्देला रे वश री इण भाँत वात कही छै'।[6] साथ ही नैणसी ने विभिन्न शासको से सम्बन्धित गीत, दोहे, छन्द और कवित्त आदि काव्य का भी सग्रह कर उन्हे सम्बन्धित शासको के विवरण मे लिख दिया है। उदाहरणाथ—'कवित्त रावल बापा रो'[7], 'रावल खुमाण बापा रो तिण रो कवित्त'[8], 'कवित्त रावल आलू मेहदारा रो'[9], 'रावल बैरड रो कवित्त'[10], 'दूहो राणा नाग-

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६५।
२ देखिये अध्याय २।
३ देखिये अध्याय २।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० १५।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३। श्रीमदभागवत०, ११ स्कद, ३० अध्याय, श्लोक १८।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १२८ (केशवदास रचित कवि प्रिया मे बु देलो के वश की बात इस तरह कही है।)
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० ४।
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४ ५।
१० ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ५ ६।

पाल रो'[१], 'गीत दहिया हमीर रो'[२], 'कवित्त छप्पय सीरोही रा टीकायता रा परयावली रो आसियो मालो कहै'[३], 'कवित्त राव रायसिंघ सीरोहिया रा 'आसियो करमसी खीवसरोत कहै'[४], 'कवित्त सिधराव जैसिंघ दे रा देहुरा रा लल्ल भाट रा कह्या'[५] आदि ।

चारण ही उस समय के अधिकाश सुप्रसिद्ध साहित्यकार और कवि थे और वे राजाओ के आश्रय मे रहकर जीवन यापन करते थे। शासको के गुणग्राहक भी होते थे और अपना अधिकाश समय वे अपने आश्रयदाताओ की ही सेवा मे बिताते थे और उन सम्बद्ध घरानो के बारे मे जानने को समुत्सुक रहते थे। अपने ऐसे निकटस्थ सम्पक के कारण भी उनको विभिन्न राजवशो की जानकारी रहती थी। इसलिए नैणसी ने भी इन चारणो से ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त कर उसे ख्यात मे लिपिबद्ध किया। नैणसी ने जिन जिन चारणो से जो जानकारी प्राप्त की उसका उल्लेख किया है। कब यह जानकारी प्राप्त की गयी थी, यह भी उसने यथासम्भव लिख दी है। कुछ ऐसे विशिष्ट उल्लेख है—'सीसोदिया री विरद 'आहूठमो नरेस' कहावे छै। तिण रो भेद आढै महेश समत १७०६ मे कह्यो'[६], 'खिडीये खीवराज बात कही'[७], 'खिडीये खीवराज कह्यो—'चीतोड तूटी पेहली वरस ५ तथा १० उदैपुर राणे उदेसिंघ वसायो'[८], 'वात चारण आसीये गिरधर कही समत १७१६ रा भादवा सुदी ६ नै'[९] 'वात पठाण हाजीषा राणे उदेसिंघ वेढ हरमाडै हुई, तिण री घधवाडिये खीवराज लिख मेली समत १७१४ रा वेसाख माहे'[१०], सीसोदिया चूडावत री साख समत १७२२ पोह बदी ५ खिडीये खीवराज लिखाई'[११], 'आ वात चारण भूलै रुद्रदास भाण रै साइया भूला रै रै पातरै कही समत १७१६ रा चेत माहे मुहता नैणसी आगै जेतारण मे'[१२], 'पीढी सीरोही रा धणिया री समत

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६ ।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १२५ ।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १८४ ।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १६१ ।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २७७ ।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८ ।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० २० ।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४८ (खड़िया खीवराज ने कहा कि चित्तौड टूटने (अकबर का आधिपत्य) से ५ या १० वष पहिले ही राजा उदयसिंह ने उदयपुर बसाया था ।)
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४६ ।
१० ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६० ।
११ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६६ ।
१२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८८ ।

१७२१ रा माह माहे आढै महेसदास लिख मेली"[1], 'भाटीया री पीढी चारण रतनू गोकलै इण भाँत मडाई"[2], 'समत १७०६ रै फागुण सुदी १५ आढा महेसदास किसनावत कही"[3], 'भाटिया माहे एक साख मगरिया छै। पैहली तो सुणियो थो, अै मगलराव रा पोतरा छै। पछै गोकल रतनू कह्यो"[4], 'वात एक जीवै रतनू धरमदासाणी कही"[5], 'मेवाड रा झाला री पीढी आढै महेसदास लिख मेली समत १७२२ रा आसाढ सुद ७"[6]। इसके अतिरिक्त नैणसी ने कुछ प्रमुख राजपूत खापो के भाटो से भी सम्बन्ध स्थापित कर उन भाटो से भी जानकारी प्राप्त की थी। 'साख इत्ती पडिहारा मिलै, भाट खगार नीलिया रै लिखाई"[7], 'पीढी कछवाहा री, भाट राजपाण उदैही रै मडाई तिण री नकल छै'[8]।

नैणसी ने अपने भाई मुहणोत नरसिहदास और मुहणोत सुन्दरदास को भी इतिहास विषयक सामग्री एकत्रित कर उसके पास भेजने के निर्देश दे रखे थे। अत 'समत १७०७ रै वरस मुहतो नरसिघदास जैमलोत डूगरपुर गयो थो। तरे रावल पूजा रो करायोडो देहरो छै। तिण रै थाभे रावल पूजै आप री पीढी मडाई छै। तठा थो लिख ल्यायो"[9], 'प्र० सीरोही री फिरसत मु० सुन्दरदास जालोर थका इण भात लिख मेली हुती"[10]।

जब कभी नैणसी किसी राज्य के प्रमुख व्यक्ति से मिला तो उसने उनसे भी जानकारी प्राप्त की और उसे ख्यात मे सगृहीत किया। साथ ही कब किस व्यक्ति से क्या जानकारी प्राप्त की उसका भी उसने स्पष्ट उल्लेख कर दिया है—'समत १७२१ रा जेठ माहे रा० रामचन्द जगनाथोत मडाई"[11], 'बुन्देला सुभकरण रै

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १३५।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ९।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० १५।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३१ (भाटियो की एक शाखा मागरिया है। पहिले तो सुना था कि ये मगलराव के वशज हैं। बाद मे गोकल रतनू ने कहा।)
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २५३।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६५।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८९।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २८७ (उदेही के भाट राजपाण ने कछवाहो की पीढी लिखवाई उसकी प्रतिलिपि है।)
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ७७ (सम्वत १७०७ वि० मे मुहता नरसिहदास जैमलोत डूगरपुर गया था। वहा रावल पूजा द्वारा बनवाया हुआ मन्दिर है, उसके स्तम्भ पर रावल पूजा ने अपनी वशावली लिखाई है, वहाँ से वह लिख लाया।)
१० ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १७३।
११ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ११३।

चाकर चक्रसेन मडाया समत १७१०'[१], 'समत १७१७ रा भाद्रवा रै मास माहे मु० नैणसी गुजरात श्री जी री हजुर गयो। आसोज माहे पाछो आयो, तरै देवडा अमरा चन्दावत रो प्रधान वाघेलो रामसिंघ नू अमरै नैणसी कनै मैलियो हुतो। ओ जालोर आयो तरै सीरोही री हकीकत पूछी, उण कही'[२], 'अथ जैसलमेर रै देस री हकीकत वीठलदास लिखाई'[३], 'जैसलमेर रा देस री हकीकत मुा लखै मडाई, समत १७०० रा माह बदी ९ मुकाम मेडतै'[४]। इसके अतिरिक्त नैणसी जिन-जिन स्थानो पर गया, उन स्थानो की जानकारी उसने स्वय ही प्राप्त कर तब उसे लिख लिया, जिसका कि उल्लेख सम्वत्, माह, मिति के साथ उसने किया है। उसने सिद्धपुर के वणन के पूर्व लिखा कि 'समत १७१७ रा भादवा माहे मु० नैणसी नू हजूर बुलायो, तरै भादवा बदि ७ मु० नैणसी रो सिधपुर डेरो हुवो। सु सिधपुर भलो सहर छै'[५]। इसी प्रकार उसने अन्यत्र लिखा है 'परवतसर माहे लिखी समत १७२२ आसोज माहे'[६]।

मुहणोत नणसी ने जिस राजवश अथवा शाखा या व्यक्ति विशेष के बारे मे जिस किसी से जानकारी प्राप्त की थी उसे भी उसने रयात मे यथावत उल्लिखित कर दिया है। परन्तु इसके अतिरिक्त अन्य विवरण किस आधार पर उसने दिया इसका कोई उल्लेख नही किया है। उसने अनेक शासको तथा व्यक्तियो का विवरण तब प्रचलित कथाओ के आधार पर दिया, उमका भी स्पष्ट सकेत नैणसी ने स्वय कर दिया है—'आदि सीसोदिया गैहलोत कहिजै। एक वात यू सुणी'[७], 'एक वात यू सुणी छै'[८], 'वात एक राणो उदैसिंघ उदैपुर बसाइया री'[९], 'वात पहली यूं सुणी थी। समत १६२४ चीतोड तूटी। तठा पछै राणै उदैसिंघ आय

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १२७।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १७२ (मुहणोत नैणसी स० १७१७ वि० के भाद्रपद माह मे गुजरात में श्री जी (जसवन्तसिंह) के पास गया था। माह आश्विन मे वह पुन जालोर आया। तब देवडा अमरा चन्दावत ने अपने प्रधान बाघेला रामसिंह को नणसी के पास भेजा। वह जालोर मे नैणसी से मिला तब नैणसी ने उससे सीरोही की हकीकत पूछी और उसने कही।)

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ६।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २७६।

६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १२२।

७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १ (आदि सीसोदिया गहलोत कहे जाते हैं। एक बात ऐसी सुनी।)

८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ८ (एक बात ऐसी सुनी है।)

९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३२ (बात एक राणा उदयसिंह द्वारा उदयपुर बसाने की।)

उदैपुर बसायो"[१], एक वात सुणी हुती"[२], 'एक वात यू सुणी'[३], 'एक वात यूं पण सुणी छै'[४]। यदि किसी के बारे मे विभिन्न मत रखने वाली एक से अधिक बातें प्रचलित थी तो उसे भी नैणसी ने लिख लिया है।—'वात एक जीवे रतनू धरमदासाणी कही नै पहला सुणी थी तिका तो लिखी हीज हुती। वात जाडैचा साहिब नै झाला रायसिंघ री फेर लिखी"[५]।

मुहणोत नैणसी ने ख्यात का विवरण लिखने के लिए विभिन्न ग्रन्थो का अध्ययन किया था। उसमे से कुछ का तो उल्लेख कर दिया, परन्तु कुछ के नाम नही लिखे हैं, यथा—'एकण ठौड पीढिया यू पिण माडी छै।'[६]

इसके अतिरिक्त मुहणोत नैणसी की ख्यात के अधिकाश ऐतिहासिक और भौगोलिक विवरण मे नैणसी ने किसी भी आधार-स्रोत का उल्लेख नहीं किया है जिस कारण उसके अनिर्दिष्ट आधार स्रोतो के बारे मे कोई निश्चित मत प्रकट नही किया जा सकता है। परन्तु सम्भवत भौगोलिक विवरण उसने स्वय की जानकारी के आधार पर अथवा किन्ही व्यक्ति विशेषो से जानकारी प्राप्त कर अथवा तत्सम्बन्धी सवत्र मान्यताओ के आधार पर लिखा होगा। इसी प्रकार सत्रहवी सदी का अर्थात् उसके समकालीन विभिन्न राज्यो तथा प्रमुख व्यक्तियो की घटनाओ का विवरण भी उसने व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर लिखा होगा। जागीरदारो के जागीर गाव, पट्टे तथा उनकी विशिष्ट घटनाओ के उल्लेखो के सम्बन्ध मे भी यही सुस्पष्ट सम्भावना व्यक्त की जा सकती है कि जोधपुर शासको के आधीन जागीरदारो का विवरण शासकीय दस्तावेज के आधार पर ही लिखा होगा। वह स्वय तब देश-दीवान के पद पर था, अत सारे राजकीय पुरा-लेख सीधे उसी के नियन्त्रण मे होने के कारण उसे सहज सुलभ थे।

३ सकलन अथवा रचना का काल

मुहणोत नैणसी ने ख्यात का सकलन और लेखन कब से प्रारम्भ किया इस सम्बन्ध मे प्राप्त प्रमाणो के आधार पर निर्विवाद रूप से कुछ भी कह पाना सम्भव नही है। ख्यात मे सुलभ जानकारी अथवा उल्लेखो के आधार पर इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि नैणसी ने ३३ वर्ष की अवस्था मे तथा १६४३ ई०

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४८।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ५१ (एक बात सुनी थी।)
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६८ (एक बात ऐसी सुनी।)
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ६६ (एक बात ऐसी भी सुनी है।)
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २५३।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १३०।

से ख्यात का योजनाबद्ध लेखन और सकलन काय प्रारम्भ कर दिया था ।[1] इसके बाद १६५० ई०, १६५१ ई०, १६५३-५४ ई०, १६५८ ई०, १६६० ई०, १६६२ ई०, १६६३ ई०, १६६५ ई० और जून १६६६ ई० तक ख्यात सम्बन्धी सामग्री के सकलन विषयक उल्लेख ख्यात मे मिलते है ।[2] अत यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि १६४३ से १६६६ ई० तक तो अवश्य ही निरन्तर २३ वष तक मुहणोत नैणसी ख्यात का सकलन और लेखन काय करता रहा था । परन्तु तब ही एकाएक महाराजा जसवन्तसिह द्वारा उसे पदच्युत कर बन्दी बना लिये जाने के कारण सकलन और लेखन काय सम्बन्धी उसका यह समूचा काम एकाएक बन्द हो गया और यह महत्त्वपूण ऐतिहासिक सग्रह-ग्रन्थ अपूण ही रह गया ।

४ ख्यात का अपूर्ण और अव्यवस्थित स्वरूप उसकी लेखन-प्रक्रिया का आकस्मिक अन्त

मुहणोत नैणसी की ख्यात की मूल प्रति अथवा उसकी ही प्रामाणिक प्रतिलिपियाँ तो वतमान मे कही भी उपलब्ध नही हैं । इस कारण उसके तत्कालीन वास्तविक मूल स्वरूप के बारे मे निश्चित रूप से कुछ भी कह सकना कठिन ही है । वतमान मे नैणसी की समूची ख्यात की सबसे प्राचीन प्रति अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर, मे सगृहीत है (अनुक्रमाक २०२), जो वि० स० १८९९ (१८४३ ई०) मे लिखकर पूरी हुई थी । समूची ख्यात की ऐसी सब अन्य प्राप्य प्रतिया इसी की प्रतिलिपियाँ हैं । इसी प्रति मे नैणसी स्वय का एक उल्लेख मिलता है कि "एक बात तो ऊपर के पत्र ४९७ मे लिखी है और एक बात नोकरणा ब्राह्मण कवीश्वर जसवन्त के भाई जोशी मनोहरदास ने इस प्रकार लिखायी है ।"[1] उक्त उल्लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान मे उपलब्ध समूची ख्यात की पूरी प्रति का प्रारम्भ सीसोदियो की जिस ख्यात से होता है, नैणसी द्वारा तैयार की गयी ख्यात की मूल प्रति मे वही विवरण पत्र सख्या ४९७ पर था । इससे यह सम्भावना लगती है कि ख्यात की जिन तब प्राप्य प्रति या प्रतियो से अब मान्य मूल प्रति तैयार की गयी उसमे विभिन्न विवरणो का क्रम आदि सवथा भिन्न ही थे । नैणसी को समय-समय पर राजवशो के जो विभिन्न विवरण प्राप्त हुए उन्हे तब वह क्रमश लेखबद्ध करता गया होगा । सामग्री-सकलन का कार्य पूरा होने के बाद ही उस सबको पूरी तरह सुव्यवस्थित करने

---

[1] ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ६ ।
[2] ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० १५, १, पृ० ८, ७७, १२७, ६०, १७२, २७६, ४६, ८८, ११३, १२२, १३५, २, पृ० २६५ ।
[1] ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ९ ।

की नैणसी की योजना रही होगी, परन्तु उसे हाथ मे लेने से पहले ही बन्दी बना लिया गया था। अत उसे वह व्यवस्थित नही कर पाया था।

बाद के प्रतिलिपिकर्ता ने प्रत्येक राजवश की सामग्री को एक ही स्थान पर सगृहीत कर उसे कुछ व्यवस्थित रुप देने का प्रयत्न किया होगा। परन्तु वतमान मे ख्यात की सन् १८४३ ई० की वीठू पना द्वारा बीकानेर मे लिखित जो सबसे पुरानी समग्र प्रति उपलब्ध है वह भी पूणतया व्यवस्थित नही है, उदाहरणाथ— सीसोदियो के विवरण मे प्रारम्भ मे बापा रावल से राणा राजसिह तक की पीढियाँ आदि दी है। तदनन्तर पुन रावल बापा का विवरण दिया है।[1] इसके बाद बापा के पूव की पीढियाँ, सीसोदिया नागदा कहलाने का कारण, बापा का हारीत ऋषि की सेवा और चित्तौड पर अधिकार, बापा रावल से करण तक की पीढियाँ, रावल और राणा कहलाने सम्बन्धी विवरण, रावल रत्नसिह, राणा राहप से राणा राजसिह तक की वशावली और सक्षिप्त विवरण, मेवाड का भौगोलिक विवरण, राणा प्रताप और कुँवर मानसिह, मेवाड के पहाड, नदिया, उदयपुर बसाया जाने सम्बन्धी,[2] कुवर मानसिह कछवाहा और प्रताप,[3] राणा अमरसिह और शाहजादा खुर्रम,[4] बहादुरशाह का चित्तौड पर आक्रमण,[5] राणा कुभा,[6] राणा राजसिह,[7] राणा कुम्भा द्वारा राघवदे को मारना,[8] राणा रायमल के पुत्र पृथ्वीराज सम्बन्धी विवरण,[9] महाराणा अमरसिह,[10] राणा खेता,[11] राणा उदयसिह,[12] राणा अमरसिह,[13] चूण्डावतो की शाखाओ का विवरण।[14] इस प्रकार उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि नैणसी की ख्यात की यो सशोधित क्रम मे नकल की गयी वीठू पना की उस प्रति मे भी सही क्रम का पूण निर्वाह नही हुआ है। एक शासक का विवरण भी एक स्थान पर सगृहीत नही है साथ ही उसे

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १७।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३२, ४८।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४८।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४८ ४९।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४९ ५१।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ५१।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० ५२ ५३।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १ पृ० ५३ ५४।
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ५५ ५६।
१० ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० ५६ ५९।
११ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ५९ ६०।
१२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६० ६२।
१३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६२ ६५।
१४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६६ ७०।

उपयुक्त रूप मे क्रमबद्ध नही किया जा सका है ।

सकलनकर्ता लेखक नैणसी का आकस्मिक अन्त हो जाने के कारण ख्यात पूण भी नही हो पायी थी । मेवाड के राजसिह का विवरण अपूण है, राजसिह को मनसब मे प्राप्त जागीर का ही विवरण दिया है।[१] इसी प्रकार बीकानेर के राठोड राज्य की सामग्री का तो सकलन ही अपूण है । बीकानेर राज्य के राव बीका और राव लूणकरण सम्बन्धी विवरण,[२] शासको के सिहासन पर बैठने का वष, शासको के पुत्रो के नाम[३] और शासको के मरणोपरान्त सतियो का नामोल्लेख ही किया गया है ।[४] इससे भी स्पष्ट है कि राव जैतसी से करणसिह तक इन शासको के कायकलापो का विवरण वह प्राप्त नही कर पाया था एव वह यो अपूण ही रहा । ख्यात का अव्यवस्थित और अपूण स्वरूप हाने का कारण यह है कि ख्यात की सामग्री के सकलन काल मे ही १६६६ ई० मे देश दीवान मुहणोत नैणसी का महाराजा जसवन्तसिह ने बन्दी बना लिया और बाद मे उसने आत्महत्या कर ली । अत नैणसी अपनी योजना अनुसार ख्यात को व्यवस्थित नही कर पाया । जिस तरह आकस्मिक रूप से उसे बन्दी बना लिया गया उसी तरह ख्यात का भी आकस्मिक अन्त हो गया ।

५ ख्यात का पुनरुद्धार तथा उसका सुव्यवस्थित पुनर्गठन

मुहणोत नैणसी की मृत्यु के बाद उसके पुत्र करमसी ने महाराजा जसवन्त सिह की सेवा छोड दी और वह अपने परिवार सहित नागोर मे राव रायसिह की सेवा मे चला गया । सोलापुर गांव मे रायसिह की दो-तीन दिन बीमार रहकर मई २९, १६७६ ई० को अचानक मृत्यु हो गयी । इस पर रायसिह के सरदारो और कामदारो ने वैद्य से मृत्यु का कारण पूछा तो उसने गुजराती मे उत्तर दिया कि 'करमानो दोष है' अर्थात् (हमारे) कर्म (भाग्य) का दोष है । रायसिह के सरदार गुजराती भाषा नही समझ पाये और 'करमा से उन्होने मुहणोत नैणसी के पुत्र करमसी का सकेत समझा और उनके कथन का अर्थ लगाया कि करमसी ने (विष देकर) धोखे से मरवा दिया है[५] एव उन्होने करमसी को जीवित दीवाल मे चुनवा दिया और नागोर भी समाचार भेजे कि उसके सारे परिवार को कोल्हू

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ५२-५३ ।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १३ १५, १९ २० ।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १८१, २०५ ८ ।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २०९ १० ।
५ ख्यात वशावली (ग्रथ स० ७४), पृ० ६५ ख, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २७२, ख्यात० (वणभूर), पृ० ६९ ख, बाल०, पृ० ९३ ।

मे डालकर मरवा देवें ।[1] करमसी की दो सेविकाएँ किसी प्रकार उसके दो पुत्र सावन्तसिह और सग्रामसिह को लेकर भाग निकली और किशनगढ चली गयी । यो नैणसी के अधिकाश परिवार का अन्त हो गया । मात्र दो पौत्र बच निकले थे जो किशनगढ चले गये ।[2] और तदनन्तर वहा से बीकानेर जा रहे ।[3]

मुहणोत नैणसी और उसके सम्पूण परिवार की ददनाक हत्या हो जाने पर तथा उसके सारे सामान पर इन्द्रसिह का कब्जा हो जाने के बाद नैणसी की ख्यात कहाँ-कहा और किन-किन हाथो मे रही इस बारे मे कुछ भी नही कहा जा सकता है । नैणसी स्वय की लिखी, उसके समय मे लिखी गयी या उसके बाद की 'नैणसी की ख्यात' की प्राचीनतम मूल प्रतिलिपियो के बारे मे अनेको बातें कही जाती सुनी गयी है परन्तु वे अब तक किसी को भी देखने को मिली नही हैं। अत उनके बारे मे कुछ भी नही कहा जा सकता है । मुगल आधिपत्य काल मे रचित प्रचुर वात साहित्य के सग्रह ईमा १८वी शती के उत्तराद्ध मे जब तैयार किये जाने लगे थे उनमे कुछ मे 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' की कई एक बातें भी यत्र-तत्र सगृहीत मिलती हैं । ऐसे तीन सग्रह बीकानेर की अनूप सस्कृत लायब्रेरी मे सुरक्षित है, जिनमे प्राचीनतम है १७६३ ई० मे बीकानेर मे महाराजा गजसिह के आदेश पर तैयार कराया गया 'फुटकर बाता रो सग्रह'[4] मे नैणसी की ख्यात की कुछ बातो की प्रतिलिपि की गयी थी । इसी प्रकार पश्चात कालीन दो और हस्तलिखित ग्रन्थो मे भी 'मुहणोत नैणमी री ख्यात' की बातें सम्मिलित हैं ।[5] इनसे यह तो स्पष्ट हो जाता है कि नैणसी की ख्यात ईसा की १८वी शती के उत्तराद्ध के प्रारम्भिक युगो मे अवश्य ही बीकानेर मे पहुच गयी थी । परन्तु यह कहना सम्भव नही है कि ख्यात कब और कैसे बीकानेर पहुँची ।

परन्तु नैणसी की ख्यात का पुनरुद्धार और वर्तमान मे सुलभ व्यवस्थित पुनगठन करने का सही श्रेय बीकानेर मे ही बीकानेर के महाराजा रतनसिह के अनुज लक्ष्मणसिह और चारण वीठू पना को है । लक्ष्मणसिह के ही आदेश पर वीठू पना ने मुहणोत नैणसी की समूची ख्यात की प्रतिलिपि सन् १८४३ ई० मे तैयार की थी । यद्यपि निश्चित रूपेण यह नही कहा जा सकता है, परन्तु बहुत सम्भव है कि आज इस ख्यात को जो कुछ भी अद्धव्यवस्थित और क्रमबद्ध स्वरूप मिलता है वह वीठू पना की ही देन है । आज तो वह उसी स्वरूप मे उपलब्ध है और सर्वत्र

---

१ ख्यात० (वणशूर), प० ६९, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २७२, बाल०, प० ९३ ।
२ ख्यात० (वणशूर), प० ६९ ख, बाल०, प० ९३ ।
३ दूगड० (मुहणोत नणसी वश परिचय), १, प० ५ ।
४ देखिये आगे प० स० ९३ का फुटनोट क्र० २ ।
५ देखिये आगे प० स० ९३ का फुटनोट क्र० ४ और प० ९४ का क्र० १ ।

उसी की प्रतिलिपियाँ मिलती है ।[1]

नैणसी की समूची ख्यात की वीठू पना की लिखी जो वतमान प्राचीनतम प्रति उपलब्ध है और जो आज के तत्सम्बन्धी प्रकाशनो का मूल आधार बन गयी है उसमे कुछेक स्थलो पर सन् १६६६ ई० के बाद के शासको, सरदारो आदि से सम्बन्धित उल्लेख या सूचिया मिलती है । स्पष्टतया यह सब जानकारी वीठू पना ने स्वय या अपने सहयोगी द्वारा एकत्रित करवाकर नैणसी की मूल ख्यात मे यत्र-तत्र यथास्थान जोड दी है। ख्यात० मे यह स्पष्ट लिखा है 'महाराजा श्री अनूपसिहजी कस्य वशावली' 'महाराजा श्री सूरतसिह जी परत लिखाई' है ।[2] अत सन् १८८२ ई० के पूव तैयार की गयी इस वशावली को भी यह ख्यात लिखते समय वीठ् पना ने सवद्धित कर दिया था । इसी प्रकार वीठू पना ने यत्र-तत्र राजाओ आदि की सूचियो मे कई नाम जोडे है ।[3] सम्भवत जोधपुर और किशनगढ के राजाओ की ख्यात-विगत तथा जोधपुर और बीकानेर के सरदारो की समूची सूचियाँ भी उसी समय इस ख्यात० मे जोडी गयी थी ।[4] अत नैणसी की इस ख्यात का मूल रूप निर्धारित करते समय य सारे अश जोड दिये जाने चाहिए ।

मुहणोत नैणसी की ख्यात का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का श्रेय रामनारायण दूगड को है । रामनारायण दूगड ने सम्पूण ख्यात को पूरी तरह सुव्यवस्थित कर उसका हिन्दी अनुवाद किया और नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ने इस अनुवाद को दो भागो मे प्रकाशित किया ।

---

१ दूगड०, १, पृ० ६ १० ।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १७७ ८० (समूचा विवरण बाद मे जोडा गया ।)

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ७९ क्र० स० १७० से १७३ तक, पृ० ८७ पर क्र० स० ७ से ६ तक, २, पृ० १०८ में क्र० स० ६ से पृ० ११० मे पृ० १६ तक, ३ पृ० ३२ का सम्पूण विवरण, पृ० ३६ ३७ मे क्र० स० २८ और जसलमर के सरदारो की पीढियो मे नणसी के बाद के सरदारो के नाम । भुगल चकता भाटियो की सूची नैणसी स्वय ने लिखी थी अथवा बाद मे जोडी गयी निश्चित रूप से नही कहा जा सकता । पृ० १८१ मे पृ० ११ से अन्तिम तक, पृ० २०८ पर महाराजा करणसिह, अनोपसिह और आनन्द सिह के पुत्रों के नाम, पृ० २०९ पर महाराजा अनोपसिह की सतियो तथा पृ० २१०-१२ पर महाराजा करणसिह, सुजाणसिह, जोरावरसिह की सतियो के नाम भी बाद मे जोडे गये हैं ।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २१३ १७ तक तथा पृ० २२३-३७ तक । इसके अतिरिक्त पृ० २३८ पर 'विगत' सूची मे 'वरस ४८ पातसाही कीवी' 'समत १७३३ फोत हुवो' भी बाद में जोडा गया है ।

६ प्राप्य प्रतिलिपियाँ तथा प्रकाशित सस्करण

आज इतिहास जगत मे बहुचर्चित और सर्वाधिक महत्त्वपूण मुहणोत नैणसी की ख्यात का राजस्थान के सुविरयात आदि इतिहासकार कनल जेम्स टॉड को पता भी नही था। यह वस्तुत आश्चर्य की बात है कि टॉड के समकालीन मारवाड के सवमान्य सुविख्यात इतिहासविज्ञ कविराज बाकीदास के बहुविध ऐतिहासिक जानकारी सग्रह 'बाकीदास की रयात' मे भी न तो नैणसी के इतिहास ज्ञान सम्बन्धी कोई सकेत है और न उसकी ख्यात आदि ऐतिहासिक रचनाओ का कही कोई सकेत है। स्पष्टतया यह जान पडता है कि महाराजा जसवन्तसिह द्वारा पदच्युत कर उसको कैद किये जाने तथा मारवाड राज्य द्वारा लाछित और उस पर भी आत्मघाती मुहणोत नैणसी को तब कौन याद करता ? नागोर मे भी नैणसी के कुटुम्बियो और वशजो पर जो बीती वह इतिहास बन चुका है।

परन्तु ऐसे इतिहास पुरुष नैणसी तथा साथ ही उसकी अति महत्त्वपूण परन्तु बिना सँवारी-सजाई इस ऐतिहासिक 'ख्यात' को मारवाड ने तदनन्तर पूणतया भुला दिया। मारवाड मे पुन नैणसी तथा 'नैणसी री ख्यात' की चर्चा नैणसी की मृत्यु के कोई सवा दो सौ वष बाद ही जोधपुर मे तब प्रारम्भ हुई जब जोधपुर राज्य के पदमुक्त रेसीडेण्ट कनल पी० डब्ल्यू० पाउलेट ने बीकानेर राज्य के हस्तलिखित ग्रथागार मे सुलभ वीठू पना की तैयार की गयी 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' की अपनी प्रतिलिपि कविराजा मुरारदान को सन् १८९२ ई० मे दी थी।[१] कविराजा के वशज से जब सारा 'कविराजा सग्रह' दिसम्बर, १९७६ ई० मे 'श्री नटनागर शोध सस्थान' ने क्रय कर लिया तब साथ ही यह प्रति भी सस्थान को उपलब्ध हो गयी थी।

अब तक प्राप्य जानकारी के अनुसार नैणसी की ख्यात की कुछ बातो का सग्रह[२] बीकानेर महाराजा गजसिह के आदेश पर 'फुटकर बाता रो सग्रह' तैयार किया गया था, यह ग्रथ वि० स० १८२० (१७६३ ई०) मे तैयार किया गया था।[३] यह ग्रन्थ अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर मे सुरक्षित है। अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर मे ही दो और ग्रन्थ 'फुटकर वाता' क्रमश १८४७ वि०[४] और

---

१ दूगड०, १, भूमिका, प० ८ ९, राजपूताना गजेटियर (१९०८), भाग ३ ब, पृ० ३।

२ तस्सीतोरी बीकानेर० भाग २, ग्र थ स० २२, प० ७१ ८८ मुहणोत नैणसी जी री ख्यात रो अेक भाग, प० १०१ अ ११३ ब मुहणोत नैणसी जी री ख्यात रो अेक भाग, प० १४३ ब १५२ ब मुहणोत नणसी जी री ख्यात रो अेक भाग, प० ३०७ अ ३१३ अ, और मुहणोत नणसी जी री ख्यात रो अेक भाग, प० ३४३ ब ३५० अ तक।

३ तैस्सीतोरी बीकानेर० भाग २, ग्र थ स० २२, प० ७१, अनूप०, अनुक्रमाक २१०, विषयाक १० प० ९६।

४ तैस्सीतोरी बीकानेर०, भाग २, ग्र थ स० १८, प० ५६, अनूप०, अनुक्रमाक २०७, विषयाक ३, पृ० ९०।

वि० स० १८४५ तथा १८९२[1] (नैणसी की ख्यात का विवरण १८९२ मे प्रति-लिपि किया गया) तैयार किये गये थे। इन ग्रन्थो मे भी नैणसी की ख्यात मे वर्णित कुछ बातो का सग्रह प्रतिलिपि किया गया था।

जैसा कि पहिले ही लिखा गया है मुहणोत नैणसी की पूरी ख्यात की प्राचीनतम प्रति बीकानेर राजघराने के आधीन उसके निजी ग्रन्थागार अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर मे उपलब्ध है। उक्त प्रति बीकानेर महाराजा रतनसिंह के अनुज लक्ष्मण सिंह ने वीठू पना से लिखवाई थी। इम प्रति की पुष्पिका म लिखा हे—'समत १८९९ ।। मिती ।। माह् बदि ।।८।। सोमवासरे श्री श्री बीकानेर मध्ये माहाराजाधिराज माहाराजा शिरोमण' माहाराजा श्री श्री ।।१०८।। श्री रतनसिंहजी अनुज श्री लक्षमणसिंहजी इद पुस्तक वार्ता लिखायिताम ।। लिपतम् ।। वीठू पनो वाचै सो सिरदार जे श्री ।। रुघनाथजी री वचावज्यो ।। शुभ भवतु ।। कल्याणमस्तु ।। अ ।। श्री गणेशायनम ।। श्री ।।

यो सोमवार, जनवरी २३, १८४३ ई० को इस प्रति का लिखा जाना सम्पूण हुआ था। वतमान मे जो भी प्रतिया अन्यत्र पायी जाती है वे सब ही मूलत अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर वाली इसी मूल प्रति की नकलें है। 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' की एक प्रति उदयपुर राज्य मे भी पहुची थी। वतमान उक्त ख्यात की एक प्रति प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर मे उपलब्ध है। आगे चलकर 'वीर विनोद' लिखे जाते समय इसका समुचित उपयाग किया गया। यही नही, तदनन्तर ईसा की १९वी सदी के मध्य मे जब सिंढायच दयालदास 'बीकानेर रै राठोडा री ख्यात' लिखने लगा तब उसन 'नैणसी री ख्यात' की इस प्रति का यथासम्भव लाभ उठाया था।[2] कनल पी० डब्ल्यू० पाउलेट से १८९२ ई० मे प्राप्त प्रतिलिपि की नकल करवाकर कविराजा मुरारदान ने गौरीशकर हीराचन्द ओझा को दी थी।[3] ओझा की प्रति की उसके तीन-चार मित्रो ने भी उसकी प्रतिलिपियाँ करवायी थी, परन्तु ओझा ने नाम सिफ एक रामनारायण दूगड का ही दिया है।[4] ओझा का यह कथन कि 'नैणसी की सम्पूण ख्यात को प्रसिद्धि मे लाने का यश उक्त कविराजाजी मुरारदान को ही है' सवथा सत्य है, परन्तु इस प्रचार मे ओझा ने स्वय भी पूरा पूरा योगदान दिया था।

---

१ तैस्सीतोरी बीकानेर०, भाग २, ग्रन्थ स० १८, पृ० ४५, अनूप०, अनुक्रमाक २०६, विषयाक २, पृ० ८६।

२ गजेटियर बीकानेर०, इट्रोडक्शन, प० ii iii, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ४, भूमिका, प० ६, पा० टि० ६।

३ दूगड०, १, भूमिका, प० ८ ९।

४ दूगड०, १, भूमिका, पृ० ९।

अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर मे भी नैणसी की ख्यात की एक अपूर्ण प्रति 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' है। इसमे 'सीसोदिया री ख्यात' मे 'कछवाहा री ख्यात' तक की प्रतिलिपि है।[१] यह भी उक्त लायब्ररी के अनुक्रमाक २०२ की प्रतिलिपि जान पडती है। यद्यपि उसका इसमे लिपिकाल नही दिया है।

तैस्सीतोरी के अनुसार कविराजा गणेशदान के पास भी नैणसी की ख्यात की प्रतिलिपि थी। उक्त प्रतिलिपि स० १९२८ वि० (१८७१ ई०) मे पचोली गुमानमल ने की थी। उक्त प्रतिलिपि मे 'सीसोदिया री ख्यात' से 'कानडदे री वात' तक का विवरण है।[२] इसका क्रम भी अनूप० के अनुक्रमाक २०२ के समान ही है। इसी से अनुमान है कि यह प्रतिलिपि भी अनूप० अनुक्रमाक २०२ की ही प्रतिलिपि हो। परन्तु वतमान मे उक्त प्रतिलिपि अनुपलब्ध है। गणेशदान के सग्रह की उक्त प्रति की प्रतिलिपि चारण वणसूर ने वि० स० १९४१ मे प्राप्त की थी।[३] इसी प्रकार चारण वणसूर महादान के पास 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' की पूण प्रति थी, परन्तु उक्त प्रति मे अनूप० अनुक्रमाक २०२ की प्रति से क्रम मे कुछ भिन्नता है। अनूप० अनुक्रमाक २०२ की प्रति 'सीसोदिया री ख्यात' से प्रारम्भ होती है, जबकि उक्त प्रति का प्रारम्भ, 'भाटिया री ख्यात' से और अन्त मे 'सीसोदिया री ख्यात' का विवरण है।[४] परन्तु वणसूर महादान की उपयुक्त दोनो ही प्रतियाँ अब उसके वशज के पास है या नही है इसकी जानकारी सुलभ नही है।

प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर की प्रति की एक अपूण प्रतिलिपि साहित्य सस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर मे उपलब्ध है। इसमे 'सीसोदिया री ख्यात' से 'बुदेला री ख्यात' तक का विवरण है।[५]

इसके अतिरिक्त स्व० प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, स्व० प० रामकण आसोपा और प्रो० नरोत्तमदास के पास भी नैणसी की ख्यात की प्रतियाँ थी। परन्तु उक्त सभी प्रतियाँ अनूप सस्कृत लायब्रेरी अनुक्रमाक २०२ प्रति की प्रतिलिपिया हैं।[६]

मुहणोत नैणसी की ख्यात के अब तक दो प्रकाशित सस्करण हैं। सवप्रथम मुहणोत नैणसी की ख्यात के सम्पादित हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ने दो भागो मे किया है।[७] प्रथम भाग का अनुवाद

---

१ अनूप०, अनुक्रमाक २०३, विषयाक २५, प० ८५।
२ तैस्सीतोरी जोधपुर०, भाग १, ग्रन्थ स० ६, प० २१ २६।
३ तैस्सीतोरी जोधपुर०, भाग १, ग्रन्थ स० ७, प० २६ २७।
४ तस्सीतोरी जोधपुर, भाग १, ग्रन्थ स० १३, प० ५१ ५२।
५ साहित्य सस्थान, ग्रन्थ स० २६, प० १२४।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ४, भूमिका, प० २२।
७ प्रथम भाग का १९८२ वि० और द्वितीय भाग का १९९१ वि० मे प्रकाशन हुआ।

और सम्पादन रामनारायण दूगड ने किया था। दूसरे भाग का अनुवाद रामनारायण दूगड और सम्पादन गौरीशकर हीराचन्द ओझा ने किया था।

मुहणोत नैणसी की ख्यात का प्रकाशन प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ने चार भागो[1] मे किया है। प्रथम, दूसरे और तीसरे भाग मे मूल ग्रन्थ तथा चौथा भाग अनुक्रमणिका है। इसका सम्पादन बदरीप्रसाद साकरिया ने किया है। उक्त सम्पादित ख्यात मे सम्पादक ने मूल ख्यात के क्रम मे कोई फेर-फार नही किया है। अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर अनुक्रमाक २०२ वीठू पना की लिखित प्रति के क्रम का पूरी तरह निर्वाह किया गया है। सम्पादक ने तो सिफ कठिन शब्दो के अर्थ और कही कही पर पाद-टिप्पणिया अवश्य दी हैं।

---

१ प्रथम भाग का १९६० ई०, दूसरे भाग का १९६२ ई०, तीसरे भाग का १९६४ ई० और चौथे भाग का १९६७ ई० मे प्रकाशन हुआ।

अध्याय ६

नैणसी और मारवाड का इतिहास

नैणसी के दोनो ही ग्रथो 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' और 'मारवाड रा परगना री विगत' मे मारवाड का इतिहास मिलता है। ख्यात० मे राव सीहा से मालदेव तक की बातो का वर्णन मिलता है, जबकि विगत० मे प्रारम्भ से जसवतसिह तक का क्रमबद्ध इतिहास दिया गया है। परन्तु नैणसी ने इन दो ग्रथो मे मारवाड का जो इतिहास दिया है वह एक ही काल सम्बन्धी होते हुए भी एक-दूसरे से बहुत कुछ भिन्न है क्योकि वे तत्कालीन इतिहास के दो विभिन्न पहलू प्रस्तुत करते है।

१ प्रत्येक ग्रथ मे मारवाड के इतिहास का अपना विशिष्ट विभिन्न पहलू

नैणसी का प्रथम ग्रथ 'मुहता (मुहणोत) नैणसी री ख्यात' है। जैसा कि पहले ही लिखा जा चुका है। इस मूल ख्यात० की जो समूची प्रतिलिपि आज प्राप्य तथा सर्वत्र प्रचलित रही है वह वीठू पना की लिखी है, सभवत जिसने उसे थोडा-बहुत व्यवस्थित रूप देने का प्रयत्न किया था। परन्तु वह भी सही रूप मे पूणतया व्यवस्थित नही है। रामनारायण दूगड ने अवश्य ही उसके हिन्दी अनुवाद को यथासभव पूरी तरह से व्यवस्थित करने का भरसक प्रयत्न किया है, अत यह विवेचन रामनारायण दूगड द्वारा निर्धारित क्रमानुसार ही दिया जा रहा है। नैणसी ने ख्यात० मे राठोड वश की सुविख्यात १३ शाखो[1] उनके विभिन्न नामो और प्रसार का विवरण दिया है। राठोडो के इतिहास की पूर्वपीठिका के रूप मे कन्नौज के शासक राजा वर्दाईसेन के पुत्र और मारवाड के राठोडो के आदि पुरुष राव सीहा के पिता सेतराम के अफीम सेवन और वीरता से सबन्धित कथा दी गयी है।[2]

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २१८ १९।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १९३-२०४।

तदनन्तर राव सीहा का कन्नौज से द्वारका की यात्रा, माग मे पाटण मे मूलराज सोलकी की सहायता करना और मूलराज की बहन से विवाह करने का उल्लेख है। सीहा की मृत्यु के बाद राव सीहा की चावडी रानी अपने तीनो पुत्रो को लेकर मायके चली गयी थी। वहा वह अधिक समय तक नही रही और उसके पुत्र पाली मे आकर रहने लगे। यही रहते हुए उसके ज्येष्ठ पुत्र आस्थान ने खेड के गुहिल को मारकर खेड पर अधिकार कर मारवाड मे राठोड राज्य की स्थापना की।[१] इन सब घटनाओ का वर्णन ख्यात० मे वार्ता कथानक के ही रूप मे दिया गया है, जो स्पष्टतया दतकथाओ पर ही आधारित है।

ख्यात० मे राव धूहड, रायपाल, कान्हा और जालणसी नामोल्लेख है। राव टीडा का सोनगरो से युद्ध, उनकी सीसोदणी राणी को अपने अन्त पुर मे डालने और उसी के पुत्र कान्हडदे का उत्तराधिकारी बनाने आदि का उल्लेख जो राव टीडा के बाद गद्दी पर बैठा था।[२] कान्हडदे ने सलखा को सलखावासी गाव जागीर मे दिया था। नि सतान सलखा के पुत्र उत्पन्न होने के सम्बन्ध मे ख्यात० मे दो विभिन्न घटनाओ का उल्लेख है।[३]

यो सलखा के चार पुत्र माला (मल्लिनाथ), वीरम, जैतमाल और सोभत हुए थे। अवसर पाकर माला ने कान्हडदे से राज्य का तीसरा हिस्सा किस प्रकार प्राप्त कर लिया था, कुछ समय बाद कान्हडदे के पुत्र त्रिभुवनसी की हत्या करवाकर कैसे महेवा पर भी अधिकार कर लिया इस बात का ख्यात० मे उल्लेख है। माला के अन्य भाई जागीर प्राप्त कर वहाँ ही रहने लगे। परन्तु माला के पुत्रो ने वीरम को परेशान करना प्रारम्भ कर दिया था। अत वह जोइयो के वहाँ जाकर रहने लगा। माला के समय दिल्ली के बादशाह की महेवा पर चढाई का भी ख्यात० मे वणन है। माला के बाद महेवा पर जगमाल गद्दी पर बैठा था। इस समय हेमा ओर कुभा के वैर भाव का वणन है।[४]

तदनन्तर ख्यात० मे वीरमदेव सलखावत का सविस्तार विवरण दिया है।[५] दल्ला जोइया की सुरक्षा, महेवा छोड जैसलमेर और बाद मे जोइयो के पास जाना, और अन्त मे जोइयो से युद्ध कर मारे जाने आदि का उल्लेख है।

वीरमदेव की मृत्यु के बाद उसके पुत्र चूण्डा को लेकर उसकी माँ आल्हा चारण के पास गाँव कालाऊ पहुँची। नैणसी ने चूण्डा से सम्बन्धित चमत्कारिक घटना का उल्लेख किया है जिससे आल्हा प्रभावित हुआ और चूण्डा को मल्लि-

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६६ ७५, २७६-७९।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २३ २४।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २८० ८१, ३, २६ २७।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २८१ ९७।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २९९ ३०३।

नाथ के पास ले गया। मल्लिनाथ की सेवा मे रहते चूण्डा ने अपनी सैनिक शक्ति बढा ली। उधर मण्डोवर पर अधिकार कर इंदो ने चूण्डा को कैसे वहाँ का शासक बनाया,[१] इन सभी बातो का वणन ख्यात० मे है।

अपने सरदार तेजा और पिता वीरमदेव का बदला लेने के लिये राणा माणिकराव मोहिल और जोइया दला से गोगादेव वीरमदेवोत के युद्ध करने और अन्त मे जोगी गोरखनाथ के साथ चले जाने का विवरण नैणसी ने दिया है।[२] इसी प्रकार अडकमल द्वारा राणगदे से बदला लेने का वर्णन है।[३]

चूण्डा की मृत्यु के बाद मण्डोवर का शासक उसका ज्येष्ठ पुत्र रिणमल राज्याधिकार से वचित होकर मेवाड चला गया और बाद मे राणा मोकल की सहायता से उसने मण्डोवर पर अधिकार कर लिया। आगे चलकर राणा मोकल के हत्यारे चाचा-मेरा को मारकर रिणमल ने कुभा को गद्दी पर बैठाया। तब मेवाड राज्य मे रिणमल का बढता हुआ प्रभाव देखकर राणा कुभा ने रिणमल को मरवा दिया, परन्तु उसका पुत्र जोधा बचकर भाग निकला। नैणसी की ख्यात० मे इन सब बातो का विवरण तीन अलग-अलग स्थानो पर कुछ भिन्नता लिये हुए मिलता है।[४]

नबद सत्तावत ने किस प्रकार अपनी पूर्व मगेतर सुपियारदे को प्राप्त किया इसका भी वणन ख्यात० मे है।[५] ख्यात० मे राव जोधा का सेना एकत्र कर राणा पर चढाई करना, दूदा को मेधा सिंधल के विरुद्ध भेजना आदि का विस्तार से वर्णन है।[६]

नैणसी ने सीहा सिंधल और माण्डण कूपावत के मध्य झगडे का उल्लेख किया है।[७] माता के कहने पर नरा सूजावत के पोहकरण पर आक्रमण करने और अन्तत लूका द्वारा नरा के मारे जाने आदि का विवरण ख्यात० मे है।[८]

राव गागा—सूजा की मृत्यु के बाद सरदारो द्वारा वीरम को राज्य से वचित कर गागा को गद्दी पर बैठाये जाने, वीरम को जागीर मे सोजत मिलने और राव गागा का वीरम से निरन्तर युद्ध करने आदि बातो का विवरण दिया है।[९] हरदास ऊहड राव गागा की सेवा छोडकर, वीरम और शेखा के पास

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३०६ १६।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३१६ २३।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २ पृ० ३२४ २८।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३२९ ४२, ३, पृ० १२९ ४०, १, पृ० १६ १७।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १४१-४८।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ५ १२, ३८ ४०।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १२३ २८।
तिष्ठान), ३, पृ० १०३ १४।
तिष्ठान), ३, पृ० ८० ८६, ८७ ९४।

जाना और गागा से युद्ध करना आदि का विवरण दिया है।

राव मालदेव द्वारा वीरमदेव दूदावत को पराजित कर अजमेर पर अधिकार करना, तदनन्तर वीरमदेव का शेरशाह के पास जाकर उसे मालदेव के विरुद्ध चढा लाना, युद्ध मैदान से मालदेव का भाग जाना आदि का विवरण ख्यात० मे है। आगे चलकर राव मालदेव और जयमल मेडतिया के मध्य हुए युद्ध का विवरण भी मिलता है।[१]

पाबू राठोड की चमत्कारिक बातो[२] और राजा बीसल और सगमराव राठोड के मध्य हुए झगडे[३] का विवरण दिया गया है। इसी प्रकार खेतसी और उसके बाद भटनेर पर जिस-जिस का अधिकार रहा उनका विवरण दिया गया है।[४] ख्यात० मे बीकानेर के भी प्रारभिक राजाओ का कुछ विवरण दिया है।[५]

ख्यात० मे दी गयी मारवाड के इतिहास सम्बन्धी इन सारी बातो मे नैणसी ने कही भी उनके कोई सवत्, तिथिया आदि नही दी है। न यह ऐतिहासिक विवरण पूर्णतया क्रमबद्ध है। इसम बीच-बीच में कई एक घटनाएँ या शासको आदि के वृता त छूट गये है। ख्यात० का यह सारा विवरण मारवाड सम्बन्धी विभिन्न ऐतिहासिक कथाओ का सग्रह मात्र ही हे, जिसे वास्तविक रूप से ऐतिहासिक वृतान्त नही कहा जा सकता है। ये ऐतिहासिक बातें तत्कालीन मारवाड के अनेको इतर प्रसगो पर कुछ प्रकाश डालती है, साथ ही मारवाड के तत्कालीन जीवन, तब के अन्ध विश्वासो, लोक-मान्यताओ और पारस्परिक आचार-विचार या नित्य-प्रति के जीवन सम्बन्धी बहुत कुछ जानकारी देती है जो तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक और सास्कृतिक आदि परिस्थितियो के कई एक विभिन्न पहलुओ का समुचित चित्रण कर देती है।

इससे सर्वथा विपरीत 'मारवाड रा परगना री विगत' मूलत एक क्रमबद्ध इतिहास ग्रन्थ है, जिसमे मारवाड के राठोड राजघराने की राजधानी मण्डोर-जोधपुर वाले वतन परगने के इतिहास के अन्तर्गत वस्तुत मारवाड क्षेत्र का राजनैतिक इतिहास प्रस्तुत किया गया है, यो सर्वप्रथम 'बात परगने जोधपुर री' मे नैणसी ने मारवाड मे राठोडो के पूर्व के शासको तथा मारवाड मे राठोड राजवश की स्थापना से लेकर महाराजा जसवन्तसिह (१६६४ ई०) तक का क्रमबद्ध ऐतिहासिक विवरण दिया है। मारवाड म राठोड राजवश की स्थापना

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ९५-१०२, ११५ २२।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ५८ ७९।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० २८० ९४।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १५ १८।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १३ १५, १५१ ५२।

के बाद उस राज्य क्षेत्र मे विस्तार, फिर चूण्डा द्वारा मण्डोवर पर अधिकार और बाद मे जोधा द्वारा जोधपुर दुर्ग के निर्माण और राठोड राज्य की नयी राजधानी जोधपुर नगर की स्थायी स्थापना और विस्तार, मारवाड के राठोड़ शासको द्वारा पूवकालीन मुसलमान आक्रमणकारियो तथा पडोसी राज्यो के साथ सघष, मालदेव का उत्कष और अन्त मोटा राजा उदयसिंह तथा बाद के शासको द्वारा मुगलो की आधीनता स्वीकार करना और तदनन्तर मारवाड मे राजनैतिक शान्ति और प्रशासनिक सुधार आदि सभी बातो विषयक मारवाड के इतिहास का पर्याप्त विवरण मिलता है।

मारवाड राज्य के इस ऐतिहासिक इतिवृत्त मे सवप्रथम राव चूण्डा की मृत्यु तिथि और सवत् दिया है। उसके बाद अधिकाश महत्त्वपूर्ण घटनाओ के सवत् दिये है। राव गागा के शासनकाल के बाद तो वह निरन्तर निश्चित तिथि, माह, सवत् देता गया और अनेको बार उस दिन का वार भी दिया गया है। यो राव चूण्डा के बाद का और विशेषकर राव गागा से लेकर बाद का समूचा वृतान्त इतना तथ्यात्मक है कि वह फारसी मे लिखे विवरणो से कही अधिक स्पष्ट और सही प्रमाणित होता है। मारवाड के शासको को दिये गये मनसबो तथा उनमे की गयी वृद्धियो के आकडे और जागीर मे दिये जाने वाले परगनो आदि की सही-सही जानकारी पूरे ब्यौरे के साथ दी गयी है। शाही कागज पत्रो के आधार पर दी गयी यह जानकारी बहुत ही सही व प्रामाणिक है जो मुगल-कालीन राजकीय इतिहास ग्रन्थो मे प्रस्तुत सूचनाओ की पुष्टि और उनका खुलासा भी करती है।

जोधपुर परगने की बात के अन्तर्गत दी गयी इस सारी जानकारी की पूरक सामग्री जोधपुर परगने के अतिरिक्त अन्य छ परगनो के ऐतिहासिक विवरणो मे मिलती है। मारवाड राजघराने के आधीन होने के पूर्व के क्षेत्रीय इतिहास की तब सुलभ समुचित जानकारी प्रत्येक परगने की बात के अन्तगत अलग से दे दी गयी जिससे वहा के क्षेत्रीय इतिहासो के सम्बन्ध मे बहुत ही महत्त्वपूर्ण नयी जान-कारी प्राप्त होती है तथा यो समूचे मारवाड क्षेत्र का पूर्ववर्ती इतिहास क्रमबद्ध और यथासाध्य पूरा करने मे विशेष सहायता मिल सकेगी। तदनन्तर उस क्षेत्र विशेष के साथ मारवाड के राठोड घराने के साथ के सम्बन्धो का अधिक ब्यौरेवार पूरा-पूरा वृतान्त मिलता है जो मारवाड तथा वहाँ के राठोड राजघराने के इतिहास की कई एक लुप्त कडिया जोडकर उसका समग्र चित्र प्रस्तुत करता है। परगनो के इस सारे इतिवृत्त मे भी तिथि सवत् आदि यथास्थान दे दिये गये है जिनसे इनका सही काल भी ज्ञात हो जाता है। परगनो के विभिन्न गाँवो का विवरण लिखते समय भी उस गाव विशेष से सम्बद्ध मारवाड के इतिहास या शासक सम्बन्धी घटना विशेष के जो उल्लेख कर दिये गये हैं, उनसे उक्त इतिहास की

कई अज्ञात बातें प्रकाश मे आती है और उनकी सहायता से मारवाड के राठोड राज्य तथा राजघराने का इतिहास अधिक परिपूर्ण बनाया जा सकेगा ।

२ मारवाड क्षेत्र का पूर्वकालीन इतिहास वहाँ राठोड राज्य की स्थापना

मारवाड क्षेत्र का पूवकालीन इतिहास—मारवाड क्षेत्र क पूववर्ती इतिहास का विवरण देते समय नैणसी ने विगत० म सवप्रथम वहा पवारो अर्थात् परमारो के शासन का उल्लेख किया है । बाहडमेर के शासक धरणीवाराह न अपने भाई सावत को मण्डोवर दिया था, जिसने मण्डोवर मे पवार राज्य की स्थापना की ।[१] कुछ समय बाद पवारो को वहा से निकालकर मण्डोवरपर पडिहारो ने अधिकार कर लिया ।[२] पडिहार शासको मे नाहडराव प्रसिद्ध शासक हुआ था । उसने मण्डोवर मे कई भवन निर्माण काय भी करवाये थे । नाहडराव को दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान[३] सामेश्वर पुत्र का समकालीन लिखा है । वैवाहिक सम्बन्ध को लेकर दोनो मे युद्ध हो गया । पृथ्वीराज विजयी रहा तब नाहडराव ने उसकी आधीनता स्वीकार कर अपनी पुत्री का विवाह उससे कर दिया । नाहडराव की मृत्यु के बाद चौहान पृथ्वीराज ने मण्डोवर का शासक महणसी को बनाया जो पृथ्वीराज की मृत्यु तक वहा का शासक रहा । सवत् ११७३ मे तुर्कों ने पडिहारो को पराजित कर मण्डोवर पर अधिकार कर लिया । अन्त मे नैणसी ने नाहडराव के जन्म के सम्बन्ध मे प्रचलित कहावत को भी जोड दिया है ।[४]

मारवाड मे राठोड राज्य की स्थापना—यह इतिवृत्त सीहा चेतरामोत[५] की द्वारका की तीथयात्रा से ही प्रारम्भ होता है जिसके लिए उसने तब कन्नौज से प्रस्थान किया । तब प्रचलित अनैतिहास प्रवादो का ही आधार लेकर नैणसी ने यह विवरण लिखा है। तदनुसार उस समय अणहलवाडा पाटण पर मूलराज सोलकी का राज्य था । उसने अपने पिता का बदला लेने के लिए लाखा फूलाणी को मारने के लिए अनेक बार युद्ध किये परन्तु वह पराजित ही होता रहा । एव तब उस माग से गुजर रहे सीहा से मूलराज ने सहायता प्राप्त की और

१ विगत०, १, पृ० १ ।
२ विगत०, १, पृ० २ ।
३ विगत०, १, पृ० २४ ।
४ विगत०, १, पृ० ४५ ।
५ ख्यात० (३, पृ० १९३-२०४) मे नैणसी ने वरदाईसेन के पुत्र सेतराम के सम्बन्ध मे एक लोक कथा का विवरण भी दिया है, उसमे उल्लेखित विवरण का अन्य किसी समकालीन ग्रथ मे उल्लेख नही मिलता है । नैणसी ने विगत० मे भी उसका विवरण नही दिया है ।

लाखा फूलाणी को युद्ध मे पराजित किया।[1] तदनन्तर मूलराज ने अपनी बहन राजा सोलकिणी का विवाह सीहा से किया, जिसे साथ लेकर सीहा वापस कन्नौज लौट आया।[2]

इसी राणी के तीन पुत्र—१ आसथान, २ सोनग, और ३ अज हुए थे।[3] नैणसी के अनुसार पटरानी के उत्तराधिकारी पुत्र के दुर्व्यवहार के कारण सोलकिणी राणी ने अपने तीनो पुत्रो को लेकर पाटण के लिए प्रस्थान कर दिया। परन्तु माग मे पाली के ब्राह्मणो ने चोरो से अपनी सुरक्षा हेतु इनको वहाँ ही रख लिया[4] और यो तब मारवाड मे राठोडो का प्रवेश हुआ।[5] पाली मे रहकर आसथान ने अपना प्रभाव जमा लिया। पाली के आसपास के अनेक गावो की सुरक्षा का पूण आश्वासन देकर उसने उनसे भी 'घुघरी' लेना तय कर लिया। अत उसकी आय मे वृद्धि होनी गयी जिससे वह भी अपनी सैनिक शक्ति मे वृद्धि करता गया।[6]

उक्त समय खेड पर गुहिल राजा प्रतापसी का अधिकार था। राजा प्रतापसी ने अपनी पुत्री का विवाह आसथान से किया। विवाह के कुछ समय बाद आसथान ने गुहिल शासव प्रतापसी के प्रधान को अपनी ओर मिलाकर धोखे से आक्रमण कर खेड पर अधिकार कर लिया।[7] खेड के १४० गावो पर आधिपत्य जमाने के बाद कोटणे के भी १४० गॉवो पर उसने अधिकार कर लिया और तब ही देवराज गोगादे के भी १४० गावो पर आसथान का अधिकार हो गया।[8] आसथान के

---

१ विगत०, १, प० ५ ८, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६६ ७३। ख्यात० का यह विवरण अतिशयोक्तिपूर्ण है। विगत०, १, पृ० ५ ६ और ख्यात० (प्रतिष्ठान) (२, प० २६७ ७३, २, प० २७०-७२, २७३ २७४ ७५) मे अंधविश्वासपूण विवरण और अनैतिहासिक बातें ही उल्लेखित हैं।

२ विगत० और नैणसी० मे वर्णित सारा विवरण काल्पनिक है। मूलराज और लाखा फूलाणी दोनो ही सीहा के समकालीन नही थे। सीहा की मत्यु भी पाली जिले मे ही हुई थी। ओझा जोधपुर०, १, पृ० १५० ५२।

३ विगत०, १, पृ० ८, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० २९।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान) (२, प० २७६-७७, २७८) के सीहा की मृत्यु के बाद के विवरण और पाली पर अधिकार के सम्बन्धित उल्लेखो मे कुछ भिन्नता है।

५ विगत०, १, पृ० ८ १०।

६ विगत०, १, पृ० ११ १२।

७ विगत०, १, प० १२ १४, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० २७८ ७९, १, प० ३३४।

८ विगत० १, प० १४। आसथान सम्बधी सम्पूण विवरण कुछ अतर के साथ प्राय सभी ख्यातो मे मिलता है (जोधपुर ख्यात०, १, प० १५ १९, उदेभाण० (ग्रथ १००) प० १० ख, ख्यात० (बणशूर), प० १३ क १४ क, मुदियाड०, पृ० ३ ५)। परतु उनकी प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए कोई प्रामाणिक आधार सामग्री उपलब्ध नही है।

मरणोपरान्त उसका पुत्र धूहड गद्दी पर बैठा परन्तु उसने पिता से उत्तराधिकार मे प्राप्त क्षेत्र मे कोई वृद्धि नही की। धूहड के बाद रायपाल गद्दी पर बैठा। उसने अपने दादा के क्षेत्र मे और विस्तार कर बाहडमेर पर अधिकार कर ५६० गाव और अपने आधीन कर लिये।[१]

रायपाल की मृत्यु के बाद राव कान्हड गद्दी पर बैठा। उसने किसी नवीन क्षेत्र पर अधिकार नही किया। उसके समय मे शान्ति रही। उसके बाद जाल्हण गद्दी पर बैठा था। उस पर तुर्कों ने आक्रमण किया। वह उनका सामना करता हुआ मारा गया। तब छाडा गद्दी पर बैठा। उसने सोनगरो से युद्ध किया और उसमे ही मारा गया था,[२] तब उसकी गद्दी पर तीडा बैठा था। उसने अपने पिता का बदला लेने के लिए सोनगरो से युद्ध किया और भीनमाल पर अधिकार कर लिया।

उसने भाटियो और सोलकियो से भी युद्ध किये। अत मे जब सीवाणा पर अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया तब तीडा युद्ध करता हुआ मारा गया।[३] तब कान्हडदे छाडावत गद्दी पर बैठा। सलखा[४] को राज्याधिकार से वचित कर दिया गया। इस कारण सलखा के पुत्र कान्हडदे के विरुद्ध हो गये। कुछ समय बाद माला सलखावत ने जालोर के खान के सहयोग से कान्हडदे को मरवा दिया

---

१ विगत० १, पृ० १५। पवारो से बाहडमेर लेने का वणन सही नही है, क्योकि उस समय बाहडमेर पर चौहानो का शासन था। ओझा जोधपुर०, १, प० १७०।

२ विगत०, १ प० १५, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३ प० २६ ३०। ख्यात० मे जाल्हण और छाडा के कार्यों के बारे मे कोई उल्लेख नही है। छाडा का सोनगरो से युद्ध होने सम्बधी घटना का उल्लेख दयाल० पृ० ६३ मे भी मिलता है। परन्तु उक्त वणन सही प्रतीत नही होता क्योकि तब भीनमाल पर तो मुसलमानो का अधिकार था। ओझा जोधपुर०, १, प० १७६।

३ विगत०, १, पृ० १५, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २३ २४। ख्यात० के अनुसार तीडा महेवा मे गुजरात के सुलतान से हुए युद्ध मे मारा गया था। विगत० के कथन का जोधपुर ख्यात० (प० २३), और ख्यात० (वणशूर) (प० १५ क) मे और ख्यात० का कथन दयाल० (१ प० ८६) से दुहराए गये है। परतु विगत० और ख्यात० दोनो के कथन ऐतिहासिक सत्य नही हैं। ओझा जोधपुर०, १, पृ० १७६-७६।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान) (२, प० २८० ८१) मे सलखा के पुत्र होने सम्बधी शकुन और योगी से सुपारी प्राप्त करने (३, पृ० २६ २७) की घटना का और सलखा का गुजरात के सुलतान द्वारा बदी बनाये जाने (३, प० २४) के सारे विवरण सबथा काल्पनिक ही हैं। ओझा जोधपुर०, १, प० १८५।

और वह स्वय महेवा की गद्दी पर बैठा।[1] रावल माला (मल्लीनाथ) ने सीवाणा पर अधिकार कर अपने भाई जेतमाल को वह क्षेत्र दे दिया था।[2]

रावल माला ने महेवा पर शासन किया और अपने भाई वीरम सलखावत को भाईबट मे ५-७ गाव दे दिये थे। वीरम ने अपनी जागीर मे रहते हुए अपनी शक्ति का विस्तार किया और शीघ्र ही उस सारे क्षेत्र मे वीरता के लिए विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। तब रावल माला उससे ईर्ष्या करने लगा। देपाल जोइया २०० गाडी नमक लेकर आया और महेवा मे ठहरा था। माला उसका सामान लूट लेना चाहता था। परन्तु वीरम के सरक्षण से देपाल बच गया।[3] इसी समय वीरम ने गुजरात के सौदागरो के घोडे, जो कि आगरा जा रहे थे, लूट लिये। इस पर गुजरात के शासक ने महेवा के विरुद्ध आक्रमण के लिये महाबली खाँ के नेतृत्व मे १२ हजार सैनिक भेज दिये और माला को सदेश भेजा कि वीरम को महेवा से निकाल दिया जाय, अन्यथा युद्ध के लिए तैयार रहे। वीरम महाबली खाँ का सामना करने मे असमर्थ रहा[4] और भागकर बीकानेर क्षेत्र मे चला गया। वहाँ देपाल ने उसको शरण दी और गाँव वडनेर उसको प्रदान कर दिया। वहाँ रहते वीरम ने अपनी सैनिक शक्ति बढाई और जोइयो की भूमि पर अधिकार करने के लिये उनके क्षेत्र मे लूटमार करनी प्रारम्भ कर दी जिससे

---

१ विगत०, पृ० १५ १६ जोधपुर ख्यात०, १, प० २४, ख्यात० (वणशूर), प० १५ क। ख्यात० मे भि न विवरण है, जिसके अनुसार माला ने दिल्ली के बादशाह से मिलकर महेवा का पट्टा प्राप्त कर लिया था, तथापि वह महेवा पर अधिकार नही कर पाया। कान्हडदे के मरने के बाद उसका पुत्र त्रिभुवनसी गद्दी पर बैठा। जिसे बाद मे छन से मरवा कर माला महेवा का शासक बना। ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २८२-८४। ख्यात० मे माडू के सुलतान और दिल्ली के बादशाह से माला का युद्ध और कुवर जगमाल का विवाह और हेमा से मनमुटाव सम्बन्धी विवरण दिया गया है। ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २८५ ९८। ओझा (जोधपुर०, १, प० १९२) के अनुसार 'नैणसी का उक्त वणन भी काल्पनिक ही है'।

२ विगत०, १, प० १६, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० २८४, ख्यात० (वणशूर), प० १५ ख।

३ विगत०, १, पृ० १६ १७ ख्यात० (वणशूर), प० १५ ख १६ क। ख्यात० के अनुसार दला जोइया की स्त्री का माला अपहरण करना चाहता था (ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० २९९ ३००)।

४ विगत० १, प० १८। ख्यात० मे उक्त घटना का उल्लेख नही है। ख्यात० के अनुसार माला के पुत्रो के साथ हुए मनमुटाव के कारण ही दला (देपाल के स्थान दला नाम दिया गया है) सवप्रथम जैसलमेर गया, वहाँ से नागोर लौट आया। वहाँ भी अधिक समय नही ठहर सका और जागलू गया। अत मे जोइयावाटी मे जोइया दला के पास पहुँचा। ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३०० ३०४।

परिणामत अत मे दोनो के मध्य युद्ध हुआ। उसी युद्ध मे वीरम वीरगति को प्राप्त हुआ।[1]

वीरम के मारे जाने पर उसकी पत्नी मागलियाणी अपने लडके चूण्डा को लेकर गाव कालाऊ पहुँच गयी और वहा मजदूर के रूप मे रहने लगी। चूण्डा गाय के बछडे चराने का काय करने लगा था। कितने ही दिन बीत गये। एक दिन बछडे चराते हुए चूण्डा को नीद आ गयी। उसी समय चारण आल्हा रोहडिया उस माग से निकला और सोय हुए चूण्डा के सिर पर साप को छाया करते हुए दखा। चारण आल्हा शकुनी था। अत सोचा कि उक्त व्यक्ति एक दिन अवश्य शासक बनेगा। अत वह चूण्डा के पास पहुँचा और उससे और उसकी मा से पूछताछ कर हकीकत का पता लगाया। वस्तुस्थिति ज्ञात होने पर आल्हा चारण चूण्डा का रावल माला के पास ले गया। रावल माला ने चूण्डा को अपनी सेवा मे रख लिया। रावल माला की सेवा मे रहते हुए चूण्डा ने चावण्डा देवी की सेवा की और देवी न प्रसन्न होकर उसे धनप्राप्ति की तदबीर सुझाई और उसे गढपति बनाने का आश्वासन भी दिया।[2]

इस समय मण्डोवर नागोर के सुलतानो के अधिकार मे था और मुगल ऐबक वहाँ का अधिकारी था। उसन सभी राजपूतो को आदेश दिया कि प्रति गॉव पाँच गाडी घास घोडो के लिये दुग मे भेजे। राजपूतो ने अपने प्रमुख इदा राणा टाहा के साथ मिलकर ऐबक से बातचात की और हिस्सा, मुकाता और नकद देना चाहा, परन्तु ऐबक ने उनकी एक न सुनी। तब तो सभी राजपूतो ने मिलकर मण्डोवर पर अधिकार करने की योजना बनायी। पाच सौ गाडी घास की तैयार की और प्रत्येक गाडी मे सशस्त्र राजपूनो को छिपाकर रक्खा गया। यो राजपूत गुप्त रूप से मण्डोवर दुर्ग मे पहुच गये और मुगलो को मार भगा कर राणा टाहा ने मण्डोवर पर अधिकार कर लिया।

मण्डोवर पर अधिकार करने के पश्चात् ईंदो (पडिहारो) ने विचार

---

१ विगत०, १, प० १६ २०, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ३०० ३०४, अन्य ख्यातो मे भी वीरम का वतात लगभग एकसा ही मिलता है (जोधपुर ख्यात०, १, प० २६ २७ ख्यात० (वणशूर), प० १५ ख-१६ ख मुदियाड० प० ६-११)। देवली लेख से यह तो प्रमाणित हो जाता है कि वीरम की मत्यु जोइयो के साथ हुई लडाई मे हुई थी। ओझा जोधपुर०, १, प० १६६।

२ विगत० १, प० २० २३। ख्यात० के अनुसार साप सम्बधी घटना कालाऊ पहुँचने के पूव हुई थी। मागलियाणी तो सती हो गयी थी और उसके निर्देशानुसार धाय चूण्डा को आल्हा चारण के पास ले गयी थी। ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ३०४ ३०५। विगत० और ख्यात० में चूण्डा का आल्हा चारण के पास जाने और देवी दशन सम्बधी वृतात काल्पनिक ही प्रतीत होता है।

किया कि तत्कालीन मारवाड के एक ओर नागोर का मुस्लिम शासक, दूसरी ओर मेवाड का राणा और तीसरी ओर दिल्ली के सुलतान है। अत अधिक समय तक मण्डोवर पर अधिकार नही रह पायेगा। तब सबने विचार कर निणय लिया कि इस समय राठोड शक्तिशाली है वे इसकी सुरक्षा कर सकते है। अत उन्होने रावल माला के भतीजे चूण्डा को लाकर गद्दी पर बैठा दिया।

चूण्डा ने मण्डोवर का शासक बनने के बाद राज्य की व्यवस्था की ओर ध्यान दिया। जिन गावो पर जिन राजपूतो का अधिकार था, वे उनको जागीर मे प्रदान कर दिये। निजन गावो को पुन बसाया और वहा के उपजाऊ गावो को उसने अपने ही आधीन रखा। इस प्रकार धीरे धीरे सम्पूण भूमि पर राज्याधिकार जमाकर मारवाड मे राठोड राज्य की स्थापना की, और उसने मण्डोवर को अपनी राजधानी बनाया। कुछ समय पश्चात् चूण्डा ने नागोर पर भी आधिपत्य जमा लिया। चूण्डा की मृत्यु नागोर मे १३७१-७२ ई० मे सलीम खा के साथ युद्ध मे हुई थी।[1] राव चूण्डा के मरणोपरान्त उसके छोट पुत्र राव कान्हा ने मण्डोवर पर अधिकार कर लिया, क्योकि चूण्डा ने अपनी प्रिय रानी के पुत्र कान्हा को ही अपना उत्तराधिकारी बनाया था। तब चूण्डा का ज्येष्ठ पुत्र रिणमल राज्याधिकार छोडकर राणा मोकल के पास मेवाड चला गया था।[2]

कान्हा के बाद उसका बडा भाई सत्ता शासक बना, सत्ता के छोटे भाई रिणधीर व पुत्र नरबद मे मनमुटाव होने पर रिणधीर ने रिणमल को उकसाया जिसके फलस्वरूप रिणमल ने राणा की मदद से मण्डोवर पर आक्रमण कर दिया।

---

१ विगत०, १, प० २० २५, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ३०४ ३०५, ३०६ १० जोधपुर ख्यात० १, प० २८ ३२, ख्यात० (वणशूर) प० १६ ख १७ क, ख्यात वशावली (ग्रथ ७४), प० २८ क ३० ख।

२ विगत०, १, प० २५-२६, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ३१२ १३। ख्यात० के अनुसार रिणमल राणा लाखा के समय मे मेवाड गया था और यही कथन सही है। ओझा जोधपुर०, १, पृ० २२७। ख्यात० मे ही एक अन्य स्थान पर लिखा है कि चूण्डा के मरने के बाद रिणधीर ने सत्ता को टीका कर दिया और रिणमल राणा मोकल के पास मेवाड चला गया। इसी प्रकार ख्यात० मे पिता के आदेश से राज्याधिकार छोडकर रिणमल का सोजत जाना और चूण्डा के मरने के बाद पनिहारियो के व्यग सुनकर पुन नागोर पर आक्रमण कर नागोर रहना आदि भिन्न भिन्न विवरण दिये गये है। (२ प० ३१३, ३१५-१६)। दोनो ही कथन मान्य नही हैं।

राव सत्ता बिना युद्ध किये ही भाग गया[1] परन्तु उसके पुत्र नरबद ने सामना किया। नरबद बदी बना लिया गया।[2] मण्डोवर पर रिणमल का अधिकार हो गया। तब राव रिणमल मण्डोवर और राणा द्वारा उसे प्रदत्त जागीर का उपभोग करने लगा।[3]

राव रिणमल प्राय राणा मोकल के पास ही रहता था। जब गागरोन के अचलदास खीची पर माण्डू के बादशाह ने आक्रमण किया था तब राणा के लिए अपने दामाद अचलदास की सहायता करना अनिवाय हो गया। अत राणा ने अचलदास की सहायता के लिए सैनिक तैयारी प्रारम्भ की और राव रिणमल से भी कहा कि वह भी मण्डोवर जाकर अपनी सेना लेकर आ जावे। राव रिणमल मारवाड चला गया था। इधर खातण से उत्पन्न पुत्र चाचा और मेरा ने राणा को मारने की योजना बनायी और उन्होने राणा मोकल पर अचानक आक्रमण कर दिया। आक्रमण के कुछ ही समय पूर्व उक्त योजना का पता चलने पर राणा ने पुत्र कुम्भा को वहाँ मे निकालकर चित्तौड भेज दिया और स्वय लडता हुआ काम आया।[4]

चित्तौड पहुँचकर कुम्भा ने अपनी सहायता के लिए रिणमल के पास अपने आदमी भेजे। राव रिणमल ने चाचा-मेरा को मारकर कुम्भा को चित्तौड की गद्दी पर बैठाया, जिससे कुम्भा के दरबार मे रिणमल का प्रभाव बढने लगा। इससे अप्रसन्न होकर सीसोदियो ने राव रिणमल के विरुद्ध कुम्भा के कान भरने प्रारम्भ कर दिये। रिणमल के प्रभाव को कम करने के लिए चूण्डा लखावत सीसोदिया और महपा पवार को भी राणा ने चित्तौड बुलाकर एक रात्रि मे सोये हुए

---

१ विगत०, १, पृ० २६ २७। ख्यात० (प्रतिष्ठान) के अनुसार सत्ता अधा था। अत रिणमल ने उसे गढ मे रहने दिया था। (२, प० ३३६ ३७) अन्य स्थान पर उल्लेख है कि सत्ता भागकर बाद मे मेवाड चला गया था। (३, प० १३७)। इसी प्रकार एक स्थान पर रिणमल और सत्ता के मध्य युद्ध मे राणा मोकल को रिणमल का सहयोगी और नागोरी खाँ को सत्ता का सहयोगी होना लिखा है। राणा मोकल और नागोरी खा दोनो युद्ध मैदान से भाग निकले और युद्ध अनिर्णीत ही रहा। यदि उक्त कथन सही होता तो नैणसी विगत० मे उसका उल्लेख अवश्य करता। (ओझा जोधपुर०, १, पृ० २१६) ने भी उक्त कथन को अमान्य ही किया है।

२ नरबद सत्तावत की मगेतर से नरसिंह सीधल ने विवाह कर लिया था, अत नरबद सत्तावत द्वारा उसको लाने सम्बन्धी और नरबद द्वारा राणा कुभा को अपनी आख निकालकर देने सम्बन्धी वतात ख्यात० मे दिये गये हैं। (३, प० १४० ४८, १४६ ५०)।

३ विगत०, १, पृ० २६ २७, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० १३० ३३, १४१।

४ विगत०, १, पृ० २८ २६, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १३४ ३५।

रिणमल को मरवा डाला ।[1]

राव रिणमल के मारे जाने पर उसका पुत्र जोधा वहा से भाग निकला। राणा की सेना ने उसका पीछा किया, परन्तु कुछेक स्थानो पर लडता-भिडता अन्त मे जोधा सकुशल मण्डोवर पहुँच गया ।[2]

राव जोधा मण्डोवर से अपने सैनिको को लेकर बीकानेर की तरफ चला गया और काहुनी मे डेरा किया। यही पर अपने पिता रिणमल का क्रियाकम किया। इधर राणा कुम्भा ने मण्डोवर पर अधिकार करने के लिये सेना भेजी, जिसने वहाँ पहुँचकर मण्डोवर पर अधिकार कर लिया । सब जगह राणा के थाने बैठा दिये गये। जोधा के विपत्ति का समय प्रारम्भ हो गया। काहुनी से अपने सैनिको को लेकर जोधा समय समय पर धावा करता रहा, परन्तु कोई सफलता नही मिली । १२ वर्ष तक मारवाड पर मेवाड का अधिकार बना रहा ।[3]

धीरे-धीरे अपने साथियो की सख्या मे वृद्धि कर जोधा मण्डोवर पर पुन अधिकार करने का आयोजन करने लगा । राव जोधा ने सेत्रावे जाकर रावत लूणा के १४० घोडे प्राप्त कर लिये । तब उसने रात्रि मे मण्डोवर पर अचानक आक्रमण कर राणा के सैनिको को पराजित किया और यो मण्डोवर पर पुन अधिकार कर लिया। मण्डोवर के बाद जोधा ने चोकडी और कोसाणे मे नियुक्त राणा के थाणो पर आक्रमण कर वहा से भी राणा के सैनिको को भगा दिया। तदनन्तर राव जोधा ने सोजत पर कूच किया और अपने भाई काधल रिणमलोत को मेडता की तरफ भेजा। राव जोधा सोजत पर अधिकार कर गाव धगले जा पहुँचा । राठोड काधल ने मेडता की तरफ भेरूदा तक राणा की

---

१ विगत०, प० २९ ३०, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ३३७ ४२, ३, प० १३६ ४०, १, प० १६ १७। ख्यात० मे चाचा मेरा का मरने सवधी दो भिन्न वृतात हैं, प्रथम—रिणमल को मोकल की हत्या की सूचना मिलते ही चाचा मेरा को मारने की प्रतिज्ञा लेकर मेवाड की ओर रवाना हुआ। ५०० सशस्त्र सैनिको के साथ पई का पहाड घेर लिया। परन्तु छ मास तक सफलता नही मिली । अत मे चाचा मेरा द्वारा निकाले हुए एक मेर को अपने पक्ष में कर चाचा-मेरा को मारने मे सफलता प्राप्त की। (ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ३३७ ३९) । दूसरे के अनुसार एक भील जिसके पिता को रिणमल ने मरवा दिया था। अत वह चाचा मेरा की सहायता कर रहा था। एक दिन वह भील घर पर नही था, तब उस भील के घर पर रिणमल पहुँच गया। घर आये शत्रु को मेहमान मानकर भील के पुत्रो ने उसे क्षमा कर उसकी सहायता करना स्वीकार कर लिया। उनके सहयोग मे रिणमल चाचा मेरा को मारने मे सफल हुआ (ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० १३६ ३८) ।

२ विगत०, १, प० ३० ३१, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० १४०, २, ३४२ ।

३ विगत०, १, प० ३१ ३२, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ५, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ४० ४४। ओझा जोधपुर०, १, पृ० २३६ ३७ ।

सेना का पीछा किया। तदनन्तर राव जोधा सोजत लौट गया। राठोड काधल को भी सोजत ही बुला लिया।[१] काधल से वैर लेने के लिये जोधा का हिसार के सारग खाँ से युद्ध का वणन और राव जोधा द्वारा द्रोणापुर पर आक्रमण तथा उस पर अधिकार सम्बन्धी वणन भी ख्यात० मे दिया है।[२]

इस प्रकार राव जोधा ने मारवाड पर से राणा के अधिकार को समाप्त कर वहाँ राठोड राज्य की स्थायी स्थापना की।

३ मारवाड के राठोड और उनके पडोसी राज्य

नैणसी ने अपने ग्रथो मे प्रसगानुसार उनके पडोसी राज्यो के साथ मारवाड के राठोड शासको के सम्ब धो की भी यथेष्ट जानकारी दे दी है, जो मारवाड की बाह्य नीति के साथ ही उन सम्बन्धित पडोसी राज्यो के इतिहास पर भी पर्याप्त प्रकाश डालती है। अत मारवाड राज्य की बाह्य नीति की चर्चा के सदभ मे उसके पडोसी राज्यो के साथ सम्बन्धो का सक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

मेवाड—मारवाड के राव चूण्डा के मरणोपरान्त उसका ज्येष्ठ और उत्तराधिकारी पुत्र रिणमल अपने पिता की इच्छानुसार छोटे भाई कान्हा को गद्दी पर बिठा अपने भाणेज राणा मोकल के पास मेवाड चला गया। बाद मे उसी के भाई सत्ता के पुत्र नरबद और भतीजे रणधीर चूण्डावत मे मनमुटाव हो गया। रणधीर रिणमल के पास चला गया और रिणमल को मण्डोवर पर आक्रमण करने के लिये उकसाया। रिणमल ने महाराणा मोकल की सहायता से मण्डोवर पर अधिकार कर लिया।[३]

उन्ही दिनो राणा मोकल की स्वीकृति से चाचा-मेरा ने पइ के पहाड पर अपने मकान बनवाये थे। रिणमल को इसका पता चलने पर उसने राणा को सचेत किया कि इससे तो पइ क्षेत्र से राणा का अधिकार समाप्त हो जावेगा।

---

१ विगत०, १, प० ३४ ३५, जोधपुर ख्यात०, १, प० ४०-४४ बाकीदास, प० ७२, ओझा (जोधपुर०, १, प० २३९) के अनुसार राव जोधा ने पहले चोकडी और कोसाणा पर अधिकार करने के बाद मण्डोवर पर अधिकार किया। ओझा० का आधार जोधपुर राज्य की ख्यात है जो नैणसी की विगत० के बाद मे लिखी गयी थी। अत विगत० का कथन अधिक मा य है। मेवाड के विरुद्ध जोधा की चढाई, राणा का भयभीत हो दोनो ओर के एक एक साम त का आपसी युद्ध और उसके निणय को स्वीकार कर जोधा को मारवाड देना सम्ब धी वतात ख्यात० मे दिया है। ख्यात० (प्रतिष्ठान) ३, प० ८ १२।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० २१ २२, १५८ ६६।

३ विगत०, १ प० २६ २७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० १२९। पर तु ख्यात० (प्रतिष्ठान), २ पृ० ३३१ मे एक अ य स्थान पर राणा रिणमल के ...वाड जाने का उल्लेख किया है और वह ही सही है।

इस पर राणा ने चाचा-मेरा की वह जागीर समाप्त कर दी और उनके महल गिरवा दिये, जिससे चाचा-मेरा राणा से अप्रसन्न हो गये। इसी प्रकार एक वृक्ष सम्बन्धी पूछताछ को लेकर राणा मोकल के प्रति चाचा मेरा का रोष और अधिक बढ गया। अत बागोर के डेरे पर उन्होने राणा मोकल की हत्या कर दी।[1]

रिणमल उस समय नागोर मे था और वही पर उसे राणा मोकल के मारे जाने की सूचना मिली। भाणेज की इस प्रकार हत्या हो जाने पर वह आग-बबूला हो उठा और मोकल के उत्तराधिकारी पुत्र कुम्भा की सहायता के लिये वह तत्काल चित्तौड के लिये रवाना हुआ। चाचा मरा को मारकर उसने कुभा को चित्तौड की गद्दी पर बैठाया।

रिणमल की सहायता से ही राणा कुम्भा सिंहासनारूढ हुआ था, अत उसका प्रभाव बढता गया और तब रिणमल के आदेश का सबको पालन करना पडता था। हुकूमत मे रिणमल के बढते हुए प्रभाव को देखकर सीसोदिया सरदार उसके विरुद्ध हो गये और उसके विरुद्ध राणा कुम्भा के कान भरन लगे, जिसके फलस्वरूप राणा कुम्भा ने रिणमल को धोखे से मरवा डाला।[2]

इस बात का पता चलते ही जोधा जान बचाकर चित्तौड से भाग निकला। कुम्भा की सेना ने सामेश्वर के घाटे तक जोधा का पीछा किया। परन्तु छुटपुट लडाइयो मे सफल होता हुआ जोधा सकुशल मण्डोवर पहुँच गया।[3] राणा कुम्भा का सामना करने मे स्वय को असमथ समझकर मण्डोवर छोडकर अपने सनिको आदि के साथ उत्तर मे जागलू क्षेत्र मे काहुनी चला गया। तब इधर राणा कुम्भा की सेनाओ ने मण्डोवर पर अधिकार कर लिया और मारवाड क्षेत्र मे स्थान-स्थान पर अपने थाणे बैठा दिये।[4] काहुनी मे रहते जोधा अपनी सैनिक शक्ति बढाने और मण्डोवर को पुन अपने अधिकार मे करने के लिये प्रयत्न करता रहा था। अपनी शक्ति का विस्तार कर अन्त मे मण्डोवर पर आक्रमण कर जोधा ने राणा कुम्भा की सेना को वहा से मार भगाया और मण्डोवर पर अधिकार कर लिया।[5] मण्डोवर पर पुन अधिकार करने का राणा कुम्भा का प्रयत्न असफल ही रहा, और अत मे समझौता कर लिया गया।[6]

विगत० मे जोधा के बाद मालदेव के राज्यारूढ होने तक के मेवाड-मारवाड

---

१ विगत०, १, पृ० २७ २८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १३४ ३५।
२ विगत०, १, पृ० २९ ३० ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३३७ ४२, ३, पृ० १३६ ४०।
३ विगत०, १, पृ० ३० ३१।
४ विगत०, १, पृ० ३१ ३२।
५ विगत०, १, पृ० ३३ ३५।
६ विगत०, १, पृ० ३५ ३६।

सबधो पर कोई प्रकाश नही पडता है। राव मालदेव अपनी साली और झाला जेता की बेटी स्वरूपदे की बहन से विवाह करना चाहता था जिसे झाला जेता ने स्वीकार नही किया और उक्त कन्या का विवाह मेवाड के महाराणा उदयसिंह के साथ कर दिया, जिससे मालदेव महाराणा उदयसिंह के विरुद्ध हो गया और उसने सम्पूर्ण गोडवाड मे अपने थाने बैठा दिये थे।[१] साथ ही इसी कारण जब रविवार, जनवरी २४, १५५७ ई० को हरमाडा मे हाजी खाँ और राणा उदयसिंह के मध्य युद्ध हुआ उस समय राव मालदेव ने राणा के विरुद्ध हाजी खा की सहायताथ अपनी सेना भेजी थी।[२]

राव मालदेव की मृत्यु शनिवार, नवम्बर ७, १५६२ ई० को हुई थी। उस समय उसकी भटियाणी राणी उमादे मेवाड मे केलवा मे थी और तब वह वही नवम्बर १०, १५६२ ई० को सती हुई थी।[३]

राव चन्द्रसेन के समय मे मेवाड के साथ उसके सम्बन्ध पुन मधुर हो गये थे, और शुक्रवार, दिसम्बर ६, १५६६ ई० को राव चन्द्रसेन ने अपनी कन्या करमेतीबाई का विवाह राणा उदयसिंह के साथ कर दिया।[४]

अकबर के समय मे मेवाड मुगल सघष प्रारम्भ हुआ, जो १६०७-८ ई० मे भी चल रहा था। उस समय राणा के कई व्यक्ति मारवाड मे शरण लेने लगे थे। अत जहागीर ने सोजत को जब्त कर लिया था, परन्तु बाद मे फिर वापस दे दिया गया।[५]

१६१३ इ० राजा सूरसिंह के प्रधान भाटी गोविन्ददास के आधीन सैनिको तथा राणा की सेना के मध्य नाडोल के मोरचे पर युद्ध हुआ। जिसमे मारवाड की सेना विजयी रही।[६]

जैसलमेर—राव रायपाल के समय से ही मारवाड-जैसलमेर के मध्य मन-मुटाव प्रारम्भ हो गया था। रावरायपाल ने भाटी मागा को चारण बनाकर अपना

---

१ विगत०, १, पृ० ४७ ४८।

२ विगत०, १ प० ६० ६५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ६० ६२। ख्यात० के अनुसार मालदेव ने हाजी खाँ पर आक्रमण किया तब राणा उदयसिंह ने हाजी खा की सहायता की थी। उस सहायता के बदले मे राणा ने हाजी खा से रगराय पातर की माग की जिसे उसने अस्वीकार कर दिया जिससे तब राणा ने हाजी खा पर आक्रमण कर दिया।

३ विगत०, १, प० ५४ जोधपुर ख्यात०, १, प० ८० ख्यात वशावली, (ग्रन्थ स० ७४) प० ८६ क।

४ विगत०, १, पृ० ६६ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ६१।

५ विगत०, १, पृ० ६६।

६ विगत०, १, पृ० १०३४।

बारहठ भी बना लिया था।[१] इसी कारण राव रायपाल के पुत्र मोहण का विवाह जैसलमेर के शासक ने अपने कामदार (ओसवाल) की कन्या के साथ कर दिया,[२] परन्तु नैणसी के ग्रथो मे इसका कोई उल्लेख नही मिलता है।

पुन राव चूण्डा के समय जैसलमेर के भाटियो से दुश्मनी हो गयी। अत राव केलण ने सुलतान सलीम खाँ के साथ चूण्डा पर आक्रमण कर दिया। इसी युद्ध मे चूण्डा स० १४२८ (१,७१ ७२ ई) मे मारा गया।[३]

राव जोधा का विवाह राव वैरीसाल चाचावत की पुत्री पूरा के साथ हुआ था, जिसके दो पुत्र करमसी और रायपाल हुए थे।[४]

सन् १५३६-३७ ई० मे राव मालदेव ने जैसलमेर के रावल लूणकरण की पुत्री उमादे भटियाणी के साथ विवाह किया था। उक्त राणी राव मालदेव से रूठ गयी थी। उसके कोई सतान नही होने से उसने मालदेव के ज्येष्ठ पुत्र राम को गोद ले लिया था। राव मालदेव द्वारा राम को देशनिकाला दिये जाने पर वह भी राम के साथ मेवाड मे केलवे चली गयी और अपना शेष जीवन उसने वही व्यतीत किया। शनिवार, नवम्बर ७, १५६२ ई० मे राव मालदेव के मरने की सूचना मिलते ही नवम्बर १०, १५६२ ई० के दिन वह वही सती हो गयी।[५] राव मालदेव की एक पुत्री सजना का विवाह जैसलमेर के रावल हरराज से हुआ था।[६]

शेरशाह के हाथो मारवाड की सेना की पराजय के बाद जोधपुर पर भी सूर सुलतानो का अधिकार हो गया था। उसका अत हो जाने पर लगभग तीन वर्ष बाद मालदेव जो तब तक अन्यत्र ही था, वापस जोधपुर आ गया।[७] तदनन्तर उसकी आक्रामक नीति पुन प्रारम्भ हो गयी थी जिससे सन् १५५० ई० मे फलोधी और बाहडमेर को लेकर जैसलमेर से छेडछाड प्रारम्भ हो गयी और अक्तूबर,

---

१ विगत०, १, प० १५, जोधपुर ख्यात०, १, प० २०।

२ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २१।

३ विगत०, १, प० २६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३१५, ८४, जोधपुर ख्यात०, १ पृ० ३२ उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० १२ क १३ ख।

४ विगत०, १, प० ४०, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ४७ उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० १६ क।

५ विगत०, १, पृ० ४७ ५५ उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००) प० १६ क, प० २४ क, ख्यात वशावली (ग्रन्थ स० ७४), प० ८६ क जोधपुर ख्यात०, १, प० ८०, ख्यात० (वणशूर), प० २७ क।

६ विगत०, १, पृ० ५२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ६२, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ८१।

७ विगत०, १, प० ५६ ५८, ६२ जोधपुर ख्यात०, १, प० ७१, ७४।

१५५२ ई० मे राव मालदेव ने जैसलमेर पर आक्रमण करने के लिये सेना भेजी ।[१]

मोटा राजा उदयसिह और बीकूपुर के राव डूगरसी दुर्जनसालोत के मध्य बाहर से आने वाले घोडो के समूह पर दाण (कर) को लेकर मनमुटाव हो गया था। भाटियो और मोटा राजा उदयसिह दोनो ही आपसी समझौता करना चाहते थे एव इस काय के लिये अपने व्यक्ति भाटियो के पास भेजे थे। परन्तु भाटियो की सैनिक सख्या कम देखकर मोटा राजा ने भाटियो पर दबाव डालना प्रारम्भ किया। वह भाटियो के साथ युद्ध छेडने का बहाना बनाना चाहता था, परन्तु भाटी उसकी हर बात कबूल कर युद्ध का अवसर टालते रहे। परन्तु अधिक समय तक युद्ध टाला नही जा सका और अत मे १५७० ई० मे डूगरसी और मोटा राजा उदयसिह के मध्य युद्ध हुआ। इस युद्ध मे जैसलमेर के रावल हरराज ने राव डूगरसी की सहायता की थी।[२] मोटा राजा उदयसिह पराजित होकर फलोधी लौट आया। उसके बाद उसन कभी भाटियो के विरुद्ध पुन कोई अभियान नही छेडा। नैणसी के अनुसार मोटा राजा उदयसिह ने जैसलमेर के रावल लूणकरण की पौत्री और सूरजमल की पुत्री से विवाह किया था।[३]

राव चद्रसेन ने पोहकरण जैसलमेर के रावल हरराज को गिरवी के तौर पर दी थी।[४] तब से पोहकरण पर भाटियो का अधिकार हो गया था। राजा सूरसिह को पोहकरण शाही मनसब मे मिला हुआ था, परन्तु सूरसिह का उस पर अधिकार नही हुआ था।[५]

अक्तूबर, १६५० ई० मे राजा जसवन्तसिह ने पोहकरण पर अपना अधिकार कर लिया।[६] शाहजहा के शाहजादो मे जब उत्तराधिकार युद्ध चल रहा था, तब अपने अनुकूल अवसर देखकर भाटियो ने पोहकरण को माच २६, १६५९ ई० को घेर लिया। इस पर राजा जसवन्तसिह ने भाटियो के विरुद्ध सेना भेजी। उक्त युद्ध अभियान मे नैणसी स्वय था। अत नैणसी ने विस्तार से इसका विवरण दिया है।[७]

बीकानेर—राव जोधा ने अपने पुत्र बीका को बीकानेर-जागलू प्रदान किया

---

१ विगत०, २, पृ० ४५ १, पृ० ६३ ६४ जोधपुर ख्यात०, १, प० ७४।

२ विगत०, १, प० ८४-८८।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ९० जोधपुर ख्यात०, १, प० १०३।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ९७।

५ विगत०, १, पृ० ९४। वैवाहिक सम्बधो के कारण ही सूरसिह ने जैसलमेर के साथ मनमुटाव करना उचित नही समझा।

६ विगत०, १, पृ० १२७ २, प० ३०५, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० १०५ ८।

७ विगत०, १, पृ० १३७ ४४।

था ।[1] और तब बीकानेर राज्य की स्थापना हुई।[2] यो जोधपुर राजघराने के वशज होने के कारण बाद मे भी आपसी सम्बन्ध ठीक ही रहे होगे, परन्तु प्रारम्भ से ही वहाँ के शासक बीकानेर राज्य को सवथा स्वतत्र राज्य के रूप मे ही विकसित करते रहे थे। अत जब राव मालदेव ने राज्य विस्तार की नीति अपनायी,[3] तब उसने बीकानेर को भी मारवाड राज्य के आधीन एक अध-स्वतन्त्र राज्य मानकर उसे भी अपने आधीन एक जागीर ही के रूप मे परिणत करने की योजना क्रियान्वित की। इसी कारण राव मालदेव और बीकानेर के राठोड राज्य के मध्य सघर्ष प्रारम्भ हो गया। १५४३ ई० मे राव मालदेव ने बीकानेर पर अधिकार कर लिया था।[4] तब इस युद्ध मे मारे गये बीकानेर के राव जैतसी का पुत्र कल्याणमल बदला लेने के लिए शेरशाह को राव मालदेव के विरुद्ध चढा लाया था।[5] तब सुमेल के युद्ध मे मालदेव की पराजय के बाद बीकानेर पर राव कल्याणमल का अधिकार हो गया था। पुन कई वर्षो बाद जब रविवार, जनवरी २४, १५५७ ई० को राणा उदयसिंह और हाजी खाँ के मध्य युद्ध हुआ तो मालदेव ने हाजी खा की सहायतार्थ सेना भेजी और राव कल्याणमल ने राणा का साथ दिया था।[6]

आम्बेर—१६वी सदी के प्रारम्भिक युगो से ही ढूढाड क्षेत्र मे कछवाहो का आम्बेर राज्य धीरे-धीरे अपनी शक्ति और राज्य-क्षेत्र बढाने लगा था। मुगलो के साथ उनके सम्बन्ध होने के बाद उसका महत्त्व सहसा बहुत बढ गया। अत राव मालदेव ने भगवन्तदास भारमलोत को अपनी पुत्री ब्याही थी। बाद मे राव चन्द्रसेन, मोटा राजा उदयसिंह और राजा सूरसिंह ने अपनी कन्याओ के विवाह आम्बेर के नरेशो के साथ किये थे।[7] इसके अतिरिक्त राजा आसकरण

---

१ विगत०, १, प० ३६। ख्यात० (प्रतिष्ठान), (३, प० १६-२२) मे बीकानेर की स्थापना सम्बन्धी वतात, जोधा द्वारा साहरण जाट की सहायता (३, पृ० १३ १५) सम्बन्धी वृतात दिया है।

२ विगत०, १, प० ४२। ख्यात० (प्रतिष्ठान), (३, प० १६१) के अनुसार सवत १५२६ मे बीका कोडमदेसर मे गद्दी पर बठा था।

३ विगत०, १, प० ४४। राव जैतसिंह की स्मारक छत्री लेख के अनुसार उसकी मृत्यु फरवरी २६ १५४२ ई० (ओझा बीकानेर०, १, प० १३६ पा० टि०) को हुई थी। अत राव जैतसिंह की मत्यु के बाद मालदेव का बीकानेर पर अधिकार हुआ था।

४ विगत०, १, प० ४४, ५६। 'कमचन्द्रवशोत्कीतनक' काव्यम्' के अनुसार जैतसिंह ने अपने मत्री नगराज को शेरशाह के पास भेजा था। (ओझा बीकानेर०, १, प० १३३ ३४)।

५ विगत०, १, पृ० ५६।

६ विगत०, १, प० ६०।

७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २६७, २६८-६६, ३०१, ओझा जोधपुर०, १, पृ० ३२६, ३५१, १६४।

और उसके पुत्र तथा आम्बेर घराने के अन्य वशजो के साथ भी अपनी पुत्रियो का विवाह किया और उनकी कन्याओ के साथ भी विवाह किये।[1] यो दोनो राज्यो के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित होने के कारण ही दोनो राज्यो के बीच निरन्तर मधुर सम्बन्ध बने रहे।

विगत० के अनुसार आम्बेर के शासक मिर्जा राजा जयसिह और जोधपुर के राजा जसवन्तसिह के मधुर सम्बन्ध थे। धरमाट के युद्ध मे पराजित होकर जसवन्तसिह जोधपुर चला गया था, तब राजा जयसिह कछवाहा उससे भेंट करने गया था।[2] औरगजेब और शुजा के मध्य युद्ध हुआ उस समय भी जसवन्तसिह औरगजेब का साथ छोडकर निकल भागा था, तब मार्ग मे राजा जयसिह ने उससे भेंट की थी।[3] उसके बाद भी दाराशिकोह की अजमेर पर चढाई के समय राजा जसवन्तसिह को पुन औरगजेब के पक्ष मे करने के लिये उसे फरमान भेजा, राजा जयसिह ने मध्यस्थता की और तत्सम्बन्धी पत्र जसवन्तसिह को भेजे।[4] बाद मे औरगजेब ने उन्हे फरमान भेजकर सात्वना दी तथा बाद मे गुजरात के सूबे की सूबेदारी दी गयी तदनन्तर कुछ समय बाद जसवन्तसिह से भेंट भी की।[5]

सिरोही—मारवाड की दक्षिण पश्चिम सीमा पर स्थित होने के कारण सिरोही राज्य के देवडा राजघराने का मारवाड के राठोड राज्य के साथ सपक होना अवश्यभावी था। राव गागा की पुत्री का विवाह सिरोही के राव रायसिह के साथ हुआ था।[6] राव चन्द्रसेन और मुगल सेना के मध्य सोमवार, जून ३०, १५७८ ई० को सवराड मे जो युद्ध हुआ था, उसमे सिरोही का शासक बीजा देवडा अपने सत्रह साथियो सहित चन्द्रसेन की तरफ से युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था।[7]

बाद मे जब सिरोही का आधा राज्य अकबर ने जगमाल उदयसिहोत सीसो

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २९८, ३००, ३०१, ३०३, ३१५, ३१९, ३२३ विगत०, १, पृ० ९२, ओझा जोधपुर० १, पृ० ३२९, जयपुर वशावली०, पृ० २८, ३०।

२ विगत०, १, पृ० १३०।

३ विगत०, १, पृ० १३५।

४ विगत०, १, पृ० १३६।

५ विगत०, १, पृ० १३७ वही०, पृ० ३८ ४०।

६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १२७, ओझा जोधपुर०, १, पृ० २८३, ओझा० सिरोही० पृ० २०७।

७ विगत०, १, पृ० ७३। चन्द्रसेन की पुत्री का विवाह बीजा देवडा से हुआ था (ओझा जोधपुर०, १, पृ० ३५१)।

दिया को दे दिया तब शाही आदेश पर रायसिंह चन्द्रसेनोत सिरोही के राव सुरताण के विरुद्ध जगमाल की सहायतार्थ सिरोही गया। रायसिंह ने जगमाल का आधिपत्य जमवा दिया। किन्तु जगमाल आबू पर भी अधिकार करना चाहता था, अत तब मार्ग मे दताणी के डेरे पर राव सुरताण ने अचानक आक्रमण कर दिया। उस युद्ध मे रायसिंह चन्द्रसेनोत गुरुवार, अक्तूबर १७, १५८३ ई० को सिरोही मे मारा गया था।[1] मोटा राजा उदयसिंह ने रायसिंह चन्द्रसेनोत का बदला लेने के लिए सिरोही पर आक्रमण किया और धोखे से देवडा पत्ता सावतसिहोत और अन्य को मार डाला।[2] उक्त घटना मार्च, १५८८ ई० की है। बाद मे यदा-कदा छुटपुट घटनाएँ होती रही। अतत गुजरात जाते समय राजा जसवतसिह ने १६५९ ई० मे सिरोही के राव अखैराजा की पुत्री आनन्दकुँवर से विवाह किया था।[3]

४ मारवाड के राठोड और मुगल सम्राट, मारवाड राज्य की निरन्तर बदलती सीमाएँ

नैणसी की ख्यात० मे मारवाड के इतिहास सम्बन्धी वार्ताएँ मेडता के घेरे के समय मे सन् १५५४ ई० मे जयमल के हाथो मालदेव की पराजय के साथ ही समाप्त हो जाती है। परन्तु विगत० मे मालदेव का बाकी रहा अन्य वृतात भी क्रमबद्ध सवत तिथि आदि के साथ विस्तार के साथ दिया है। पुन मालदेव के देहात के बाद मारवाड पर मुगलो का दबाव बढा और अतत मारवाड मुगल साम्राज्य के आधीन हो गया। इस सब का ब्यौरेवार तिथि, माह, सवत् समेत विवरण विगत० मे दिया गया है।

राव मालदेव के मरणोपरान्त मारवाड मे उत्तराधिकार के लिये सघष प्रारभ हो गया। जिसने मुगल बादशाहो के मारवाड मे हस्तक्षेप का माग प्रशस्त कर दिया।[4]

सवप्रथम हसनकुली के नेतृत्व मे मुगल सेना ने मई, १५६४ ई० मे जोधपुर पर आक्रमण किया। राम को सोजत देकर समझौता हो गया, परन्तु मुगल आक्रमण जोधपुर पर प्रारभ हो गये। और दिसम्बर ३, १५६५ ई० मे

---

१ विगत०, १, पृ० ७८, ७९ ८० ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १५३, ओझा० सिरोही०, पृ० २२९ ३१।

२ विगत०, १, प० ८९, १०१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १५१ ५३।

३ विगत०, १, प० १३७ ३८, जोधपुर ख्यात०, १, प० २५८।

४ विगत०, १, प० ६७ ६८।

मुगलो ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया,[1] परन्तु चन्द्रसेन ने जीवन-भर मुगलो का विरोध किया ।[2]

जोधपुर पर मुगल आधिपत्य हो जाने के बाद भी जाधपुर राज्य अथवा जोधपुर के राठोड राजाओ सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण उल्लेख ही फारसी आधार-ग्रथो मे मिलते है, परन्तु ये अधिकाश उक्त राजाओ को जोधपुर का टीका दिये जाने, उनके मनसब मे वृद्धि, शाही सेवा मे उनकी नियुक्तियो और उनके देहात जैसी बातो के ही होते है। जोधपुर राज्य की आतरिक बातो तथा अन्य बातो सम्बन्धी विवरणो के लिए विगत० के वृतात कही अधिक ब्योरेवार और प्रामाणिक भी है। यो जोधपुर राज्य और वहा के शासको के सदर्भ मे विगत० वस्तुत महत्त्वपूण प्राथमिक आधार ग्रथ है।

चन्द्रसेन के भाई, उदयसिंह ने, जो बाद मे मोटा राजा के नाम से विख्यात हुआ, नवम्बर, १५७० ई० मे मुगल बादशाह अकबर की आधीनता स्वीकार कर ली थी।[3] तब उदयसिंह को ग्वालियर क्षेत्र का समावली (अब पीछोर तहसील मे) जागीर मे दिया था।[4] अतत परन्तु रविवार, अगस्त ४, १५८३ ई० को मोटा राजा जोधपुर प्राप्त करने मे सफल हो गया। अकबर ने मोटा राजा को १०००/८०० का मनसब देकर जोधपुर का परगना प्रदान किया, परन्तु तब आसोप और बीलाडा तफे परगना जोधपुर मे सम्मिलित नही थे।[5] इसी वर्ष (१५८३ ई०) नवाब खानखाना ने सोजत भी मोटा राजा को प्रदान कर दी थी।[6] मोटा राजा को सातलमेर (पोहकरण) भी शाही जागीर मे मिला था, परन्तु उस पर उसका अधिकार नही हो सका था।[7]

---

१ विगत०, १, प० ६७ ६८। जोधपुर ख्यात० (१, पृ० ८६ ८७) का तत्सम्बन्धी विवरण विगत० के ही समान है पर तु इसे ओझा (जोधपुर०, १, प० ३३४ ३७) ने 'अकबरनामा' के विवरण की तुलना में अविश्वसनीय माना है क्योकि जोधपुर पर अधिकार होने का वत्तात सन १५६३ ई० मे होना लिखा है। सो क्या विगत० और जोधपुर ख्यात० में जोधपुर पर आक्रमण सम्बन्धी सवतो मे दो वष की भूल हो गयी है ? यह प्रश्न विचारणीय है।

२ विगत०, १, पृ० ६६, ७०, ७३, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ८६-९०, फुटकर ख्यात (ग्रन्थ ६) प० २७ ख २६ ख, उदेभाण० (ग्रन्थ स० १००), प० २५ ख-२६ ख।

३ विगत०, १, पृ० ८७। ख्यात० मे उल्लेख नही है।

४ विगत०, १, पृ० ७७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १६४, २, पृ० २३३, २४१, अहिल्या० पृ० २१।

५ विगत०, १, पृ० ७६-७७, फुटकर ख्यात० (ग्रन्थ सं० ६) प० ३१ क।

६ विगत०, १, पृ० ७७।

७ विगत०, १, पृ० ७७।

मोटा राजा को निम्नलिखित परगने जागीर मे मिले थे—

१ जोधपुर वार्षिक आय रु० १,५३,६७५ ।

२ सीवाणा वार्षिक आय रु० ३७,५०० ।

३ सोजत वार्षिक आय रु० १,२५,००० ।[1]

मोटा राजा उदयसिंह के मरने के पश्चात् सूरसिंह गद्दी पर बैठा । राजा सूरसिंह को सिंहासनारूढ होने के वक्त जोधपुर, सीवाणा और सोजत[2] जागीर मे मिले थे ।[3] मई ३०, १६०५ ई० को अकबर ने सूरसिंह को आधा मेडता और जैतारण दिया था ।[4] साचोर सवत् १६७४ (१६१७-१८ ई०) मे मिला और सवत् १६७५ (१६१८-१६ ई०) मे पुन तगीर कर लिया गया ।[5] सवत् १६७२ (१६१५-१६ ई०) मे परगना फलोधी मिला । सातलमेर (पोहकरण) भी जागीर मे था, परन्तु सूरसिंह का उस पर अधिकार नही था ।[6]

मगलवार, सितम्बर ७, १६१६ ई० को सूरसिंह की मृत्यु हो गयी, तब राजा गजसिंह को शाही मनसब मे जोधपुर, जैतारण, सोजत और सीवाणा जागीर मे मिले थे ।[7] राज्यारूढ के वक्त गजसिंह का मनसब ३०००/२००० था और जागीर मे जोधपुर १६ तफे से, सोजत, जैतारण, सीवाणा और सातलमेर—पोहकरण मिले थे, परन्तु सातलमेर—पोहकरण पर उसका भी अधिकार नही हो पाया था ।[8]

तदनन्तर अप्रैल, १६२१ ई० मे परगना जालोर और अगस्त, १६२२ ई० मे गजसिंह को साचोर खुरम से प्राप्त हुए । १६२२ ई० मे फलोधी बादशाह जहाँगीर ने और शनिवार, अगस्त ६, १६२३ ई० मे मेडता परवेज ने उसे दिये । मेडता तब शाही जागीर मे नही मिला था सो १६३५ ई० मे ही उसे शाही जागीर मे मिला ।[9] अप्रैल, १६२१ ई० मे गजसिंह के मनसब मे १०००/१००० की वृद्धि की और जालार दिया ।[10] नवाब मोहब्बत खा की सिफारिश पर गजसिंह के मनसब मे १०००/१००० की वृद्धि की और फलोधी दिया गया ।[11]

---

१ विगत०, १, पृ० ८३ ।

२ सोजत परगना सूरसिंह को नवम्बर, १६०८ ई० मे मिला था । विगत०, १, पृ० ६६ ।

३ विगत०, १, पृ० ६३ ।

४ विगत०, १, प० ६७ ।

५ विगत०, १, प० ६४ ।

६ विगत०, १, प० ६४ ।

७ विगत० १, प० ६५ ।

८ विगत०, १, प० १०५ ।

६ विगत०, १, प० १०५-६, १०७, १०८, १०६ ।

१० विगत०, १, पृ० १०७ ।

११ विगत०, १, पृ० १०८ ।

राजा गजसिंह के मरणोपरान्त जसवतसिंह सिंहासनारूढ हुआ। शुक्रवार, मई २५, १६३८ ई० को बादशाह शाहजहाँ ने जसवतसिंह को टीका प्रदान किया।[१] गद्दी पर बैठने के समय ४०००/४००० का मनसब और मारवाड के परगना जोधपुर, सीवाणा, मेडता, सोजत, फलोधी और सातलमेर (पोहकरण) दिये गये थे और जालोर और साचोर तगीर कर लिये गये।[२] जनवरी, १६३९ ई० मे महाराजा जसवतसिंह के मनसब मे १०००/१००० की वृद्धि हुई और जैतारण जागीर मे मिला।[३] शनिवार, जनवरी ४, १६४० ई० को महाराजा जसवतसिंह के मनसब मे १०००/१००० की पुन वृद्धि कर जैतारण परगना प्रदान किया।[४] अक्तूबर, १६५० ई० मे महाराजा जसवतसिंह ने परगना पोहकरण पर अधिकार कर लिया था।[५] मई जून, १६५६ ई० को परगना जालोर मिला था।[६] शनिवार, नवम्बर ४, १६५५ ई० को परगना बधनोर दिया गया था। उक्त परगने पर महाराजा जसवतसिंह का मई, १६५८ ई० तक अधिकार रहा था।[७] गुरुवार, जुलाई २९, १६५८ ई० को महाराजा से मेडता तगीर कर रायसिंह अमरसिंहोत को दिया गया था।[८]

धरमाट के युद्ध के पूव दिसम्बर १७, १६५७ ई० को राजा जसवतसिंह का मनसब ७०००/७००० का था और मारवाड के जोधपुर, मेडता, सोजत, जैतारण सीवाणा, फलोधी, पोहकरण, जालोर, गजसिंहपुरा, नागोर की पटी और बधनोर आदि परगने उसके आधीन थे।[९] अगस्त, १६५८ ई० के पूव इनमे से नागोर की पटी भी तगीर कर दी गयी थी।[१०]

फरवरी, १६६४ ई० मे महाराजा जसवतसिंह के पास मारवाड के परगना जोधपुर, मेडता, जैतारण, सोजत, जालोर, सीवाणा, फलोधी और गजसिंहपुरा परगने थे।[११]

---

१ विगत०, १, पृ० १२३।
२ विगत०, १, पृ० १२४।
३ विगत०, १, पृ० १२४।
४ विगत०, १, पृ० १२५।
५ विगत०, १, पृ० १२७।
६ विगत०, १, पृ० १२७, १२९।
७ विगत०, १, पृ० १२८।
८ विगत०, १, पृ० १३०।
९ विगत०, १, पृ० १३१, १३३।
१० विगत०, १, पृ० १३२।
११ विगत०, १, पृ० १५१, १५४ ५५।

५ मारवाड के राठोड राजघराने की स्वाधीन प्रशाखाएँ

मारवाड मे राठोड राज्य की स्थापना के बाद उस राजघराने के कुछ वशजो ने अपने आधीन क्षेत्रो मे सवथा स्वाधीन राज्यो की स्थापना की थी उनका भी नैणसी के ग्रथो मे यत्र तत्र कुछ वर्णन मिलता है ।

राव जोधा ने अपने पुत्र वरसिंह और दूदा को मेडता प्रदान किया था ।[१] तब दूदा[२] ने मेडता को एक स्वतत्र राज्य बना दिया था । दूदा की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र वीरमदे गद्दी पर बैठा था । राव गागा तक मेडता और जोधपुर राज्यो के मध्य सम्बन्ध मधुर रहे थे, परन्तु महत्त्वाकाक्षी राव मालदेव मेडता की स्वतत्रता समाप्त करना चाहता था । अत दोनो मे सघष प्रारभ हो गया ।[३] मालदेव ने १५६६ वि० (१५४३ ई०) मे मेडता पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया । तब मेडता का शासक राव वीरमदे शेरशाह सूर के पास पहुँचा और उसको मालदेव के विरुद्ध चढा लाया । गिररी-सुमेल मे शेरशाह और मालदेव की सेना के मध्य युद्ध हुआ । उसमे मालदेव की सेना पराजित हो गयी । अत उस समय मेडता पर राव मालदेव का अधिकार अधिक समय तक नही रह पाया ।[४] शेरशाह के सहयोग से वीरमदे ने पुन मेडता पर अधिकार

---

१ विगत०, १, पृ० ३६ २, पृ० ३७ ।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), (३, प० ३८ ४०) मे दूदा द्वारा मेघा नरसिंहदासोत को मारने सम्बन्धी वतात ही दिया है ।

३ ख्यात० के अनुसार एक हाथी को लेकर वीरमदेव और मालदेव के मध्य मनमुटाव मालदेव के राजगद्दी पर बैठने से पहले ही प्रारभ हो गया था । अत गद्दी पर बैठने के बाद मालदेव ने मेडता पर आक्रमण कर दिया । (ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ६३-६५) ।

४ विगत०, १, पृ० ४३, ५६, ५८, १०३ ख्यात (प्रतिष्ठान), ३, प० ६५ १०२ । नैणसी के अनुसार वीरमदेव मलारणा के थाणेदार और रणथभोर के किलेदार के माध्यम से शेरशाह से मिला था (ख्यात० (प्रतिष्ठान) ३, प० ६६) । ख्यात० मे यह भी लिखा है कि वीरमदेव ने बीस बीस हजार रुपये जैता और कूपा के डेरे भेजकर कहलाया कि इनकी सिरोही की तलवारें और कबलें भेज दें और उधर मालदेव के पास सदेश भेजा की उक्त दोनो सामन्त शेरशाह से मिल गये हैं । वीरमदेव की उक्त युक्ति से मालदेव के मन मे मारवाड के उसके सरदारो के प्रति सदेह उत्पन्न हो गया और वह बिना युद्ध किये ही वहाँ से चला गया । प्रात काल राव के सरदारो ने युद्ध किया । (३, प० ६६ १०१) तारीख ई शेरशाही के अनुसार शेरशाह ने अपने नाम (शेरशाह) लिखे गये मालदेव के सरदारो के पत्र इस आशय के मालदेव के वकील के डेरे के पास डलवा दिये कि 'बादशाह को चिन्तित होने और सदेह करने की आवश्यकता नही । युद्ध के समय हम मालदेव को पकडकर आपके सुपुर्द कर देंगे ।' (अम्बष्ठ, सरवानी, प० ६५५ ५६) जोधपुर ख्यात० (१, प० ७१) मे मालदेव के मन मे सदेह पैदा करने का श्रेय वीरम को दिया, यद्यपि घटना नैणसी से भिन्न दी है ।

कर लिया ।

फरवरी, १५४४ ई० मे वीरमदे की मृत्यु हो गयी तब मेडता का शासक उसका पुत्र जयमल बना । मालदेव ने जयमल के साथ भी लडाई प्रारभ कर दी । बुधवार, माच २१, १५५४ ई० को मालदेव ने अपनी सेना के साथ मेडता को घेर लिया । परन्तु इस समय मालदेव को पराजित होकर लौटना पडा ।[१] इस पराजय का बदला लेने के लिए मालदेव ने पुन फरवरी १०, १५५७ ई० को मेडता पर अधिकार कर लिया,[२] और इसके साथ ही मेडता की स्वाधीनता समाप्त हो गयी ।

राव जोधा ने अपने एक अन्य पुत्र बीका को जागलू-बीकानेर दिया था । बीका ने अपने नाम से बीकानेर राज्य की स्थापना की ।[३] मालदेव के साथ मे हुए बीकानेर के राव कल्याणमल के सघष के सदभ मे विगत० मे अवश्य कुछ उल्लेख हैं । राव मालदेव ने बीकानेर पर आक्रमण कर राव कल्याणमल को पराजित कर शुक्रवार, मार्च २, १५४३ ई० को बीकानेर पर अधिकार कर लिया था ।[४] राव कल्याणमल अपनी खोई हुई सत्ता को पुन प्राप्त करने के लिए शेरशाह के पास सहसराम पहुँचा और उसके सहयोग से एक वष बाद ही १५४४ ई० मे पुन बीकानेर पर अधिकार कर लिया और तदनन्तर बीका राठोड के वशजो के आधीन स्वतत्र बीकानेर राज्य और उस राठोड राजघराने की उक्त स्वाधीन प्रशाखा यथावत् चलती ही रही ।[५]

इसके बाद के विगत० मे यत्र तत्र बीकानेर के शासको के जो उल्लेख हैं वे जोधपुर राज्य के सदर्भ मे ही दे दिये गये हैं ।

बीकानेर राज्य अथवा वहाँ के राजघराने सम्बन्धी कोई क्रमबद्ध विशेष वृताल ख्यात० मे नही हैं । उसमे केवल राव लूणकरण सम्बन्धी कथानक लिखे हैं । किशनगढ राज्य के शासको के सम्बन्धी उल्लेख भी विगत० मे यत्र तत्र हैं । इसी प्रकार मोटा राजा उदयसिंह के प्रपौत्र रतनसिंह का सदर्भित उल्लेख भी विगत० मे है, क्योकि सन् १६५६ ई० मे महाराजा जसवतसिंह को जालोर का

---

१ विगत०, १, पृ० ५९, ६९, ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ११५ २२ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ७४ ७५ ।

२ विगत०, १, पृ० ६५ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ७६ । नैणसी की ख्यात० मे जोधपुर के इतिहास सम्बन्धी विवरण यही समाप्त हो जाता है । इसके बाद की घटनाओ का उल्लेख केवल विगत० मे है ।

३ विगत०, १, पृ० ३९ ।

४ विगत०, १, पृ० ४४ ।

५ विगत०, १, पृ० ५६ ।

वह परगना दिया गया। वह परगना तब तक शाही मनसब मे रतनसिंह के अधिकार मे था। परन्तु उसके शाहजहाँ से निवेदन करने पर अनुपजाऊ क्षेत्र होने के कारण जालोर के स्थान पर उसे मई, १६५६ ई० मे मालवा का रतलाम परगना प्राप्त हो गया और उसने रतलाम के प्रथम राज्य की स्थापना की।[1]

1 विगत०, 1, पृ० 126।

अध्याय ' ७

नैणसी और अन्य राजपूत राज्यो अथवा खाँपो के इतिहास

मारवाड-जोधपुर के अतिरिक्त अन्य राज्यो के इतिहास के बारे मे ख्यात० मे ही वणन मिलता है।

१ मेवाड के गुहिलोत और उनके पडोसी अन्य गुहिलोत राज्य

नणसी की ख्यात० मे मेवाड के गुहिलोतो का विस्तृत वणन मिलता है। नैणसी ने गुहिलोतो की २४ शाखाओ का वणन दिया है।[१] इसके साथ ही इसमे प्रमुख शाखाओ के नामकरण की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे उल्लेख है। तदनन्तर मेवाड के स्वामियो के पूवजो की पीढियाँ दी है।[२]

नैणसी के अनुसार सीसोदिया पहले गुहिलोत कहलाते थे। सीसोदा गाव मे बहुत समय तक रहने के कारण ये सीसोदिया कहलाये थे।[३]

नैणसी ने रावल बापा गुहदत्त के पूव पीढियाँ दी, तदनन्तर रावल बापा द्वारा हरीत ऋषि की सेवा और चित्तौड पर अधिकार का वणन दिया है।[४] यह सारा वणन तब मान्य दतकथाओ पर ही आधारित है। नैणसी ने रावल खुमाण और रावल आलू से सम्बन्धित तब प्रचलित कवित्त दिये है। तदनन्तर रावल आलू से कण तक की पीढियाँ दी गयी है।[५] रावल कण से ही गुहिलोतो की एक अन्य राणा शाखा प्रारम्भ हुई।

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८८ ८९।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८, ९, १०।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३ ४, ७, ११ १२

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४ ५।

रावल कर्ण के दो पुत्रो से रावल और राणा शाखाओ के उद्भव आदि की जो वार्ता दी है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि राणा शाखा का तब से ही चित्तौड पर आधिपत्य हो गया था, जो ठीक नही है। रावल शाखा का वश-वृक्ष और विवरण यहा से ही गलत हो गया है। अलाउद्दीन के चित्तौड के प्रथम साके का विवरण भी बहुत ही असम्बद्ध और भ्रातिपूण है। पद्मिनी सम्बन्धी तब प्रचलित मान्यताओ को दुहराया गया है। यह सारा विवरण विश्वसनीय नही है।

नैणसी ने उक्त राणा शाखा की पीढिया राणा राजसिंह तक की दी है।[१] नैणसी ने राणा हमीर से राणा मोकल तक का अति सक्षिप्त उल्लेख किया है।[२] राणा लाखा की राठोड कन्या हसकुमारी से विवाह और चूण्डा की राज-गद्दी त्याग की बात लिखी है, जो साधारणतया मान्य कथानक से कुछ भिन्न है। अत लाखा के बाद मोकल चित्तौड की राजगद्दी पर बैठा। मोकल की हत्या हो जाने पर कुम्भा को गद्दी पर बैठाया। कुम्भा ने ही कुम्भलमेर बसाया था। कुभा राव रिणमल की सहायता से ही मेवाड का शासक बना, परन्तु शासन मे रिणमल का प्रभाव अधिक बढ जाने से सीसोदियो से उसका विरोध उत्पन्न हो गया और अतत रिणमल की हत्या करवा दी। जोधा भाग निकला। तब कुछ समय तक मण्डोवर पर भी राणा कुभा का ही आधिपत्य रहा।[३] राणा कुभा की ऊदा ने हत्या कर दी और स्वय राजगद्दी पर बैठा। किन्तु मेवाड के सब ही उमराव विरोधी हो गये और उन्होने रायमल को शासक बनाया। नैणसी ने राणा रायमल के पुत्रो का वणन दिया है।[४] उसी सदभ मे नैणसी ने सोलकी राव सुरताण हरराजोत की बात लिखकर जयमल की मारे जाने की घटना भी वर्णित कर दी है।[५]

नैणसी की ख्यात० मे राणा सागा का कुछ अधिक उल्लेख मिलता है। राणा रायमल के पश्चात् सागा गद्दी पर बैठा था। राणा सागा का माण्डू के सुलतान से दो बार युद्ध हुआ और बादशाह बाबर से खानवा का युद्ध हुआ। सागा का बाधवगढ से युद्ध का वर्णन केवल नैणसी मे ही मिलता है। नैणसी के अनुसार राणाओ मे सर्वाधिक शक्तिशाली शासक सागा ही था।[६]

ख्यात० मे राणा रतनसिंह और विक्रमादित्य का वणन अति सक्षिप्त ही

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ५ ६, १३-१४, १५।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० १५ १६।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १६ १७।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ५१, १७-१८।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० २८१ ८३।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १९ २०।

मिलता है। विक्रमादित्य के समय मे १५३५ ई० मे चित्तौड पर सुलतान बहादुर-शाह ने आक्रमण किया था और राणी कर्मवती ने जौहर किया।[1] राणा विक्रमादित्य के बाद सागा का पुत्र उदयसिंह मेवाड का शासक बना था। उदयसिंह का जीवन भी विपत्तियो मे ही बीता था। चित्तौड पर पुन अधिकार करने के लिए उसे बनबीर से युद्ध करना पडा था। चित्तौड की भौगोलिक स्थिति के कारण बारबार उस पर आक्रमण तथा घेरे होते थे एव पश्चिम मे पहाडो से घिरे गिरवा क्षेत्र मे उदयसिंह ने नया नगर बसाया जो उसके नाम पर 'उदयपुर' कहलाया, तथा अमरसिंह के साथ मुगलो की सधि हो जाने के बाद मेवाड की राजधानी बन गया।[2] पुन अकबर के आक्रमण के कारण उदयसिंह को चित्तौड छोडना पडा था।[3] ख्यात० मे राणा उदयसिंह के पुत्रो का वणन विस्तार से मिलता है।[4] मेवाड के इतिहास के सदर्भ मे नैणसी ने सीसोदियो की दो प्रमुख खापो—चूण्डावतो और सकतावतो—के प्रारभिक वश-वृक्ष सविस्तार से दिये हैं[5], जो सशोधको के लिए बहुत ही उपयोगी है।

राणा उदयसिंह के बाद मेवाड का शासक राणा प्रताप बना था। कुँवर मानसिंह और प्रताप के मध्य हुए हल्दीघाटी युद्ध के बारे मे भी उल्लेख मिलता है। नैणसी ने राणा प्रताप के पुत्रो का विस्तार से उल्लेख किया है।[6]

प्रताप के बाद मेवाड की गद्दी पर अमरसिंह बैठा था। अमरसिंह ने जहागीर से सन्धि कर ली, और तब पाँच हजारी मनसब दिया गया, जो वस्तुत अमरसिंह के उत्तराधिकारी राजकुमार कर्णसिंह के ही नाम पर जारी हुआ था।[7] मनसब की जागीर मे मिले परगनो का वणन दिया गया है। यो नैणसी के वर्णन से राणा अमरसिंह और जहाँगीर के सम्बन्धो पर प्रकाश पडता है। नैणसी ने राणा अमरसिंह के पुत्रो का भी विस्तृत विवरण दिया है।[8]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४९ ५०, अकबरनामा०, १, पृ० ३०१ मीरात ई सिकदरी, (अ० अ०), पृ० १८५ ८८ तबकात०, ३, पृ० ३६९ ७२। चारण आसीये गिरधर की कही जो बात नैणसी ने यहाँ उद्धत की है, वही कुछ परिवर्तित रूप मे बही० (पृ० ११८) मे भी मिलती है।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० ३२ ३४ ४८।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २० २१।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० २१ २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० ६६ ७० २६-२८।

६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २८ २९, ४८।

७ वीरविनोद, २, पृ० २३९-४१ पर तत्सम्बधी फरमान और उसका हिदी अनुवाद उद्धत है।

८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २९ ३१, ४८-४९।

नैणसी मे राणा करण और राणा जगतसिह का विवरण बहुत ही कम मिलता है। राणा राजसिंह के ६००० जात, ६००० सवार मनसव और उसे प्राप्त जागीर का वणन दिया है।[१]

मेवाड के अतिरिक्त ख्यात० मे डूगरपुर और बासवाडा के गुहिलोत राज्यो का भी इतिहास प्राप्त होता है। नैणसी ने तत्कालीन डूगरपुर राज्य की सीमा का वणन दिया है और इसके साथ ही डूगरपुर राज्य की स्थापना और डूगरपुर के शासको की वशावली प्रारभ से रावल उदयसिंह तक दी है।[२] इसमे वस्तुत रावल पूजा के बाद के नाम बाद मे ही जोडे गये हैं।

इसी प्रकार नैणसी ने बाँसवाडा के गुहिलोतो का भी वणन दिया है। उसने बासवाडा राज्य की तत्कालीन सीमाओ का उल्लेख किया है। पूव मे यह बाँसवाडा राज्य डूगरपुर राज्य का ही अग था। रावल उदयसिंह के द्वितीय पुत्र जगमाल ने ही बाँसवाडा राज्य की स्थापना की। नैणसी ने बाँसवाडा के शासको की वशावली भी दी है। साथ ही रावल मानसिंह और रावल उग्रसेन का कुछ विशेष विवरण दिया है।[३]

मेवाड का अन्य पडोसी गुहिलोत राज्य देवलिया था। मुहणोत नैणसी की ख्यात मे ग्यासपुर-देवलिया मे गुहिलोत राज्य की स्थापना का वणन मिलता है। बीका ने देवलिया की स्थापना की थी।[४] स्थापना के बाद देवलिया राज्य के विस्तार का भी ब्यौरेवार विवरण दिया गया है।[५] इसके अनिरिक्त नैणसी के ममय देवलिया की सीमा का वर्णन है।[६] ख्यात० मे देवलिया के स्वामी रावत भाणा, रावत सिंध, रावत जसवत और अत मे शाहजहाँ-औरगजेब के समकालीन रावत हरीसिह का वणन है।[७]

अत म नैणसी ने चन्द्रसिंह भुवनसीयोत के वशजो, चन्द्रावत सीसोदियो, द्वारा स्थापित राज्य का उसकी स्थापना से लेकर अतत मुगल साम्राज्य के आधिपत्य मे राव अमरसिंह हरिसिंहोत चन्द्रावत के राज्यारोहण का भी विवरण दिया है।[८]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३०, ३१, ५२ ५३, वीरविनोद, २, पृ० ४२५-३१ पर मूल फरमान और हिंदी अनुवाद दिया गया है।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ७७ ८७।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० ८८, ८७, ७३ ७७।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० ९० ९३।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ९३ ९४।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ९४।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ९४ ९७।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २३९-४९।

२ बूदी और सिरोही के चौहान राजवश अन्य चौहान खाँपे

ख्यात० मे चौहानो की चौबीस शाखाओ का उल्लेख किया गया है । हाडो की प्रारभिक पीढियो की सूची दी गयी है । नैणसी के अनुसार चौहानो की चौबीस शाखाओ मे से एक शाखा नाडोल के राव लाखण के वशजो की है, जो हाडा कहलाई और हाडा विजयपालोत के पौत्र देवा बाघा ने बूदी राज्य तथा वहाँ के हाडा राजघराने की स्थापना की है।[1] बूदी मे पहले मीणे रहते थे । हाडा देवा बाघावत ने बूदी मीणो से हस्तगत कर ली । यो बूदी मे हाडा चौहान राज्य की स्थापना की।[2] स्थापना के बाद नैणसी ने राव नारायणदास का सक्षिप्त उल्लेख किया है । नारायणदास का पुत्र सूरजमल था । हाडा सूरजमल और मेवाड के महाराणा रतनसिह के मध्य हुए मनमुटाव और झगडे का विस्तृत वणन दिया गया है ।[3]

सूरजमल के मारे जाने के बाद बूदी की गद्दी पर सूरताण बैठा । परन्तु वह कुलक्षणा था । अत वह अधिक समय तक नही रह पाया ।[4] राणा उदयसिंह ने बूदी का टीका राव सुजन को दे दिया । राणा उदयसिह ने रणथम्भोर की किलेदारी भी सुर्जन को दे रखी थी । चित्तौड पर अधिकार करने के बाद अकबर ने रणथम्भोर पर आक्रमण कर दिया । राजा भगवन्तदास के माध्यम से अकबर से बातचीत और सधि कर माच २४, १५६९ ई० को राव सुर्जन शाही सेवा मे उपस्थित हो गया था ।[5] उपरोक्त बातो का वणन ख्यात० मे मिलता है । सुजन द्वारा शाही सेवा स्वीकार करने के बाद उसके पुत्र दूदा और भोज के पारस्परिक सघर्षों आदि पर भी नैणसी ने पूरा प्रकाश डाला है ।[6]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ९७ । नैणसी द्वारा दी गयी बूदी के हाडा राजघराने की पूवपीढियो की पूण पुष्टि स० १४४६ वि० (१३८९ ९० ई०) के उस शिलालेख से होती है, जिसका अग्रेजी अनुवाद टाड ने राजस्थान (आ० स०, ३, प० १८०२ १८०४) मे दिया है । ओझा ने (उदयपुर०, १, पृ० २४० पा० टि०) भी नैणसी द्वारा दिये गये वशानुक्रम को मान्य किया है ।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ९७ १०० नैणसी मे देवा द्वारा बूदी लेने सम्ब धी तीन भि न भिन्न वृतात दिये हैं ।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १०२ ९ ।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान) पृ० १०९ १० ।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ११०, १११ १२ । यह बात उल्लेखनीय है कि टाड (राजस्थान० आ० स०, ३, प० १४८१ ८३) ने इस अवसर पर की गयी जिस मुगल-हाडा सधि का उल्लेख कर उसकी दस शर्तों तथा अकबर की ओर से दिये आश्वासनो आदि की विस्तत चर्चा की है, और जिनको हाडाओ के इतिवत्तो मे बलपूवक दुहराया जाता है, उनका कोई उल्लेख नैणसी मे कही भी नही है ।

६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २६६ ७२ ।

ख्यात० मे बूदी नगर की तत्कालीन वस्तुस्थिति का उल्लेख है। राव भावसिंह की जागीर के परगने और गाँवो का उल्लेख, बूदी के पास हाडोती के परगनो, बूदी और कोटा से अन्य प्रमुख नगरो की दूरी का वणन, मऊ के निकट के गाँवो का वणन, परगने मऊ के प्रमुख गावो आदि का विवरण दिया गया है। मऊ परगने की प्रमुख फसलो, प्रत्येक का राजकीय लगान, वहाँ निवास करने वाली विशिष्ट जातियो और हाडोती मे बहने वाली नदियो का उल्लेख है।[1] बूदी राज्य के प्रमुख सरदारो और उनकी जागीर आदि का भी नैणसी ने उल्लेख किया है।[2]

बूदी के हाडा चौहान राजवश के सदभ मे बूदी के राव राजा रत्नसिंह सरबलदराय के दूसरे पुत्र माधोसिंह द्वारा सस्थापित कोटा के स्वतत्र हाडा राज्य का उल्लेख करते हुए माधोसिंह के उत्तराधिकारी पुत्र मुकुन्दसिंह हाडा का उल्लेख करते हुए कोटा और गागरोन मे उसके बनाये राजमहलो की भी चर्चा की है।[3]

तब राजस्थान मे चौहानो की दूसरी महत्त्वपूण देवडा शाखा के सिरोही राज्य का इतिहास भी नैणसी ने अपनी ख्यात० मे सम्मिलित किया है। उस राज्य का भौगोलिक विवरण लिखते हुए सिरोही राज्य के अन्तगत आने वाले गाँवो की विस्तत सूची दी गयी है।[4] तब मान्य स्थापना को दुहराते हुए नैणसी ने भी लिखा है कि चौहानो की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से हुई। वशिष्ठ ऋषि ने राक्षसो का विनाश करने के लिए जिन चार क्षत्रियो को उत्पन्न किया उनमे एक चौहान है।[5] परन्तु अधिकाश चौहान नाडोल के स्वामी लक्ष्मण के वशज है। सिरोही के देवडा भी उसी के वशज है।[6] ख्यात० मे चौहानो द्वारा आबू पर अधिकार करने सम्बन्धी वृतात दिया है।[7] स० १२१६ माघ बदि १ को बीजड का पुत्र तेजसिंह चौहान आबू की राजगद्दी पर बैठा। उसका विवाह मेहरा की बहन के साथ हुआ था। नणसी ने आबू के सम्बन्ध मे तेजसिंह और मेहरा का सवाद दिया है।[8]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ११३-१७।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १ पृ० ११७ ११८।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ११४-१५।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १७३ ८०।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० १३४।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १३४।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १३४, १८० ८३।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १८३।

ख्यात० मे सिरोही के स्वामियो की पीढी की सूची दी गयी है।[१] नैणसी ने इस राजवश के 'देवडा' नामकरण का जो कारण दिया है वह विश्वसनीय नही है, और नाडोल और जालोर के राजाओ और सिरोही राजवश के प्रारभिक पूवजो के जो नाम नैणसी ने दिये है, वे भी न तो पूरे हैं और न उनका क्रम सही है। उसकी इस ख्यात० मे दिये गये पूववर्ती सब ही सवत् गलत है। बडवो की पोथियो के आधार पर लिखा गया, यह प्रारभिक विवरण विश्वसनीय नही है। तत्कालीन शिलालेखो के आधार पर अब उन शासको के क्रम को ठीक कर विभिन्न शासको आदि के सवतो का सही निर्धारण भी सभव हो सका है।[२] तदनन्तर नैणसी ने राव जगमाल और उसके वशजो की जानकारी मे राव रायसिंह का विवरण दिया है। भीनमाल पर आक्रमण के समय बिहारियो के सैनिको द्वारा चलाये गये तीर से उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी इच्छानुसार पुत्र को शासक न बनाकर भाई दूदा को बनाया।[३] परन्तु दूदा ने उदयसिह को ही शासक मानकर राज्य की देखभाल की और मरने के पूव राव रायसिंह के पुत्र उदयसिंह को ही गद्दी पर बैठाने की इच्छा व्यक्त की।[४] उदयसिह गद्दी पर बैठने के एक वष बाद ही मर गया और दूदा का पुत्र मानसिह सिरोही का शासक बना।[५] मानसिह ने कोलियो का दमन कर शाति स्थापित की। राव उदयसिह की गभवती स्त्री की हत्या कर दी। पवार पचायण को विष दिलवाकर मार डाला। अत उसके भतीजे कल्ला ने राव मानसिंह की हत्या कर दी।[६]

राव मानसिंह के आदेशानुसार तब सिरोही की गद्दी पर सुरताण बैठा। उस समय राज्य मे बीजा का प्रभाव, राव सुरताण के उत्तराधिकार सबधी सघर्ष के सदभ मे राव द्वारा बीजा का दमन, राव सुरताण का शाही सेवक बनना, राणा उदयसिह के पुत्र जगमाल को आधा सिरोही मिलना, जगमाल और सुरताण के मध्य सघष और शाही सेना का जगमाल की सहायता करना, कार्तिक सुदि ११, १६४० (अक्तूबर १७, १५८३ ई०) को दताणी के युद्ध मे जगमाल का मारा जाना, मोटा राजा द्वारा सिरोही पर आक्रमण, राणा प्रताप की पुत्री का विवाह राव सुरताण के साथ आदि बातो का विवरण ख्यात० मे दिया गया है।[७]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १३५ ३६।
२ दूगड० १ पृ० ११९-२० पा० टि०, १२३ पा० टि०।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १३६ ३७।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १३७।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १३७ ४०।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १४१।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १४२ ५३।

राव सुरताण आश्विन बदि ६, १६६७ (सितम्बर १,१६१० ई०) को मरा था। तब उसका पुत्र राजसिह गद्दी पर बैठा। राव राजसिह को भी उत्तराधिकार का सघर्ष करना पडा था। राज्य के दावेदारो को समथन देने वाले देवडा पृथ्वीराज का दमन कुँवर गजसिह (जोधपुर) की सहायता से किया। परन्तु अवसर पाकर पृथ्वीराज ने राजसिह की हत्या कर दी। तब सरदारो ने उसके शिशुपुत्र अखैराज को गद्दी पर बैठाया। अखैराज के समय मे पृथ्वीराज की विद्रोही गतिविधि रही और उसकी हत्या के बाद उसके पुत्र चादा का सवत्र प्रभाव था, जिसका भी ख्यात० मे विवरण दिया गया है। यो ख्यात० मे सवत् १७२१ (१६६४-६५ ई०) तक का सिरोही का इतिहास मिलता है, जब अखैराज के बडे पुत्र, उदयसिह को मार डाला गया था।[१]

नैणसी ने राव लाखा और डूगरोत देवडा चौहानो की पूरी वशावलिया दी है। इसके साथ किसी ने कोई उल्लेखनीय काय किये थे तो उनके भी उल्लेख किये गये है।[२] इसी प्रकार डूगर देवडा और चीबा की वशावली दी है।[३]

तदनन्तर नैणसी ने नाडोल के राव लक्ष्मण के प्रतापी वशज आसराव के छोटे बेटे आल्हण के उन वशजो का भी विवरण सविस्तार दिया है जिन्होने आगे चलकर जालोर (स्वणगिरि) और साचोर (सत्यपुर) पर अपना आधिपत्य स्थापित कर महत्त्वपूर्ण बने और इस प्रकार चौहानो की चौबीस शाखाओ मे से उनसे क्रमश सोनगरा तथा साचोरा खाँपो का उद्भव हुआ।

ईसा की १२वी सदी के मध्य मे जालोर और सीवाणा पर पवार कुतपाल और पवार बीरनारायण का शासन था। आसराव के पौत्र और आल्हण के छोटे बेटे कीर्तिपाल अथवा कीतू ने ही वहा के इन पवार शासको को पराजित कर जालोर और सीवाणा पर अधिकार किया। कीतू के बाद जालोर के सोनगरा शासको की पीढी दी है। जालोर के रावल कान्हडदेव का विस्तार से उल्लेख किया गया है। उसका दो बार सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी से युद्ध का उल्लेख है। युद्ध के कारणो मे शिवलिग, सोमनाथ के पुजारी और शाहजादी का वीरमदेव पर आसक्त होना आदि लोक-कथा का भी समावेश है। कान्हडदेव की पराजय के साथ ही जालोर से सोनगरो का अधिकार समाप्त हो गया था। तदनन्तर वे जागीरदारो के रूप मे रहने लगे तथा मुगल काल मे भी प्रभावशील रहे एव उनका भी उल्लेख ख्यात० मे है।[४]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १५३ ५७।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १५८ ६१।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १६२ ६८, १६८-६९।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २०२ २६।

उधर साचोर पर दहिया राजपूतो का आधिपत्य था। जालोर के विजेता कीतू के ही छोटे भाई चौहान विजयसिंह ने दहियो को पराजित कर साचोर पर अधिकार कर लिया। तब उसके वशज साचोरा कहलाये। नैणसी ने विजयसिंह के पूव की पीढी और विजयसिह के बाद विशेषत तब सुविख्यात साचोरा वरजाग के वशजो की विस्तृत वशावली दी है। उसमे कौन साचोर का अधिकारी हुआ, कौन किसी राजा का जागीरदार बना, उसे कौन सा गाव पट्टे मे मिला, कौन कहा किस युद्ध आदि मे मारा गया आदि प्रमुख व्यक्तियो का सक्षिप्त उल्लेख कर दिया गया है।[1]

राजस्थान और मालवा मे चौहानो की कई और भी छोटी मोटी शाखाएँ महत्त्वपूण रही हैं जिनका कालान्तर मे प्रभाव और अधिकार-क्षेत्र घटा ही है। परन्तु उनके ऐतिहासिक महत्त्व के कारण नैणसी ने अपनी ख्यात० मे उन उल्लेखनीय शाखाओ का भी विवरण दिया है। नाडोल के आसराव के सबसे छोटे लडके सोहड के पुत्र मुधा की सन्तान की भी जानकारी दी है, जो बागड प्रदेश मे बस जाने के कारण बागडिया चौहान कहलाये।[2]

बोडा भी चौहानो की एक शाखा है। ये भी नाडोल के शासक राव लक्ष्मण के वशज और सोनगरा चौहानो के आदिपुरुष कीतू के पौत्र भाखरसी के पुत्र, बोडा के वशज होन के कारण बोडा चौहान कहलाये। उनका वतन जालोर परगन का गाव सैणा था। नैणसी ने अपनी ख्यात० मे सैणा का सिरोही से जालोर परगने मे सम्मिलित होन और मारवाड के राजा सूरसिह के साथ वैवाहिक सबध आदि का विवरण दिया है। बाद मे जब जालोर परगने के साथ ही, सैणा के ताल्लुक के गाव भी राव महेशदास के आधीन हो गये तब महेशदास के उत्तराधिकारी शासक रतनसिंह ने कल्याण बोडा को मारकर सैणा को भी अपने अधिकार मे ले लिया। तब बचे-खुचे बोडा चौहान बिखर गये।[3]

चौहानो की एक शाखा कापलिया चौहान कहलाई। साचोर परगने के कापला गाव के निवासी महेवा के राव मल्लिनाथ के साथ हुए झगडे मे कुभा कापलिया की मृत्यु के बाद सपत्ति के बँटवारे सबधी वृतात दिया गया है।[4]

खीची भी चौहानो की दूर दूर तक फैली हुई बहुत ही महत्त्वपूण प्रभावशाली शाखा रही है। ये भी राव लक्ष्मण के ही वशज है। नैणसी ने खीची कहलाने वाले माणकराव के वशजो सबधी वृतात दिया है। अजमेर के पृथ्वीराज चौहान

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २२६ ४४।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ११६-२१।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २४५।
४ ख्यात० (प्रतिष्टान), १, पृ० २४८।

(द्वितीय) की राणी सुखदे के गुदलराव से प्रेम सबधी वृत्तात, गुदलराव का मालवा के उत्तर-पश्चिमी गागारोन-सारगपुर के प्रमुख क्षेत्र पर अधिकार, कोटा के निकट गाव सुरसेन मे आना, खीची का डेरा आर उसके पुत्र धारु के स्वण मुद्राएँ प्राप्त करने सबधी कथा और वही खीचीवाडे की स्थापना करना और अन्त मे मुगलो के साथ खीचियो के सबधो आदि के विवरण है।[1]

मोहिल भी चौहानो की शाखा है। मोहिल के वशज मोहिल चौहान कहलाये। नैणसी ने मोहिल के पूव की पीढिया दी है। मोहिल ने छापर-द्रोणपुर पर अधिकार किया तब से यह क्षेत्र मोहिलवाटी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। छापर-द्रोणपुर नामकरण सबधी और वतमान दशा और डाहलिया और बागडिया का युद्ध और अन्त मे बागडियो को पराजित कर मोहिल द्वारा अधिकार सबधी विवरण दिया गया है। मोहिल से अजीतसिह तक की पीढी दी हुई है। अजीत मोहिल और जोधपुर के राव जोधा के मध्य कौटुम्बिक सवध होते हुए मोहिलो को अपने आधीन बनाने को लकर उनक साथ राठोडो का वैर बँधने और तदनन्तर हुए सघष वृत्तात, राव जोधा का मोहिल राणा वैरसल और नरबद से सघष और अतत जोधा द्वारा छापर-द्रोणपुर पर अधिकार कर लेने सबधी विस्तृत विवरण दिये हैं।[2]

नैणसी के अनुसार कायमखानी भी चौहानो की शाखा थी। ये दरेरा के निवासी चौहान थे। हिसार के फौजदार सैय्यद नासिर ने दरेरा को लूटा और एक चौहान बालक को प्राप्त कर उसका पालन-पोषण किया। नासिर की मृत्यु के बाद वह बालक सुल्तान बहलोल लोदी को नजर कर दिया गया। तब सुल्तान बहलोल लोदी ने उस बालक का नाम क्याम खाँ रखा और उसी के वशज कायमखानी चौहान कहलाये। बाद मे क्याम खा ने झूजनू को बसाया था। झूजनू अकबर के समय मे राठोड माण्डण को जागीर मे मिला आदि विवरण दिया गया है।[3]

रणथभोर के हमीर चौहान के वशज ने गुजरात पहुँचकर वहा पावागढ क्षेत्र पर अधिकार किया तथा अपने स्वतत्र राज्य की स्थापना की थी। उसी वशक्रम मे रावल जयसिह हुआ जो पताई रावल के नाम से प्रसिद्ध था। उसके समय मे गुजरात के सुल्तान महमूद बेगडा ने आक्रमण कर उसे जीत लिया था। पावागढ के इस साके की भी बात नैणसी ने दी है।[4]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २५० ५७।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १५३ ७२।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २७३ ७५।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २५ २६

३ इतर अग्निवशी राजपूत राजघराने

नैणसी ने इतर अग्निवशी राजपूत राजघराने सोलकी, पडिहार और परमारो का भी विवरण अपनी ख्यात० मे लिखा है ।

सोलकियो की विभिन्न शाखाओ की सूची, सोलकियो की वशावली आदि नारायण से मूलराज तक की दी गयी है । टोडा के सोलकी राजा के पाटण आने और उसके पुत्र मूलराज द्वारा पाटण पर अधिकार करने सम्बन्धी कथा का वर्णन, मूलराज द्वारा लाखा (फूलाणी) को मारने सबधी वृत्तात और सिद्धराव सोलकी द्वारा रुद्रमाल का मन्दिर बनवाने सबधी कहानी का विवरण दिया गया है। सवत १७१७ भाद्रपाद बदि ७ को मुहणोत नैणसी स्वय का डेरा सिद्धपुर मे हुआ था । तब उसने वहाँ से प्राप्त जानकारी के आधार पर सिद्धपुर का विवरण दिया है । इसके अतिरिक्त मूलराज ने भीमदेव तक के राजाओ के शासनकाल का भी इतिवृत्त लिखा है। वाघेला सोलकी बीर धवल ने सवत १२५३ वि० मे भीमदेव से गुजरात छीन ली थी। नैणमी ने गुजरात के विभिन्न वाघेला सोलकी राजाओ के शासनकाल नथा अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा उनसे गुजरात छीन लेने और तब वहाँ अपने अधिकारी उमरावो को नियुक्त करने, अलाउद्दीन के उत्तराधिकारी कुतुबुद्दीन के समय मे वही की प्रजा से १८ प्रकार के कर वसूल करने तथा अकबर द्वारा गुजरात पर अधिकार करने तक का सक्षिप्त विवरण दिया है। इसके अतिरिक्त वाघेले द्वारा बधवगढ पर अधिकार करने सम्बन्धी वृत्तात है । सोलकियो का मेवाड मे आने और देसूरी पर उसके १४० गाव पट्टे मे प्राप्त करने के वृत्तात के साथ ही उनकी वशावली भी दी है ।

इसी प्रकार खेंराड के सोलकियो की मुगलकालीन स्थिति, माडलगढ से अन्य प्रमुख नगरो की दूरी आदि, टोडा के सोलकियो की वशावली, राव सुरताण द्वारा टोडा छोडकर राणा रायमल की सेवा मे जाना और वहा राणा रायमल के राजकुमार जयमल के साथ सुरताण के युद्ध, जयमल का मारा जाना आदि का विवरण, और नैणवे के निवासी नाथावत सोलकियो के क्रमश बूदी और बाद मे मुगल सेवा मे जाने सबधी इतिवृत्त भी दिये है ।[1]

नैणसी की ख्यात० मे पडिहारो की विभिन्न शाखाओ तथा उसके काल मे उनमे से प्रत्येक के निवास आदि का उल्लेख किया गया है । सिखरा पडिहार का भूत से मुकाबला सबधी कथा, एक सिह को मार डालने पर ऊदा उगमणावत और सिघलो के मध्य हुए वैर और आपसी झगडो का विवरण है। मेला

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ६०, २५८ ८५ ।

सेपटा के मारे जाने के बाद ही यह वैर समाप्त हुआ था। नैणसी की ख्यात० के अनुसार स० ११०० वि० मे नाहरराव पडिहार ने मडोवर बसाया।[१]

नैणसी की ख्यात० के अनुसार परमार भी अग्निवशी हैं और उनकी कुल-देवी सचियाय है।[२] नैणसी ने परमारो की ३६ शाखाओ का उल्लेख किया है।[३] साथ ही दो अलग अलग वशावलिया दी हैं, परन्तु उनमे दिये नाम एक-दूसरे से पूरी तरह असम्बद्ध और विभिन्न क्षेत्रीय तथा विभिन्न कालीन ही है। मालवा अथवा राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक परमार राजवशो का कोई क्रमबद्ध विवरण नैणसी ने नही दिया है। परतु पश्चात्कालीन शतियो मे मुख्यतया मारवाड या जागलू क्षेत्र मे तब प्रभावी साखला परमारो की वार्ताएँ ही दी है।[४] परमारो की साखला शाखा की उत्पत्ति सबधी वृतात दिया है और वैरमी का रूणवाय मे बसना और रूणकोट के निर्माण का उल्लेख है।[५] इसके बाद नैणसी ने रूण के साखलो की पीढियो की सूची दी है, साथ ही व्यक्तियो के विशिष्ट काय अथवा किसी विशिष्ट घटना का उल्लेख भी कर दिया है।[६] तदनन्तर साखला परमारो द्वारा जागलू पर अधिकार करने और उनकी गति-विधिया तथा उनकी पीढियाँ दी हैं।[७] नापा साखला राव जोधा के पास जाकर बीका जोधावत को जागलू ले आया और यो जागलू पर राठोडो का अधिकार हो गया और तदनन्तर साखले उनके सेवक बन गये।[८]

सोढा भी परमारो की पैंतीस शाखाओ मे से एक है। सोढा दुर्जनशाल उमरकोट का शासक हुआ था। नैणसी ने सोढा की पीढी—सोढा से राणा ईश्वरदास तक की दी है। उसमे व्यक्ति विशेष से सबधित विशिष्ट घटनाओ का भी उल्लेख कर दिया है।[९] इसी प्रकार पारकर के सोढा की वशावली

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ८६ ९० ३, प० २५० ६५, २८। पडिहारो प्रतिहारो का यह विवरण मूलत तब मालानी आदि क्षेत्र मे बस कर वहा शासन कर रहे राठोड राजाओ और उनसे सम्बधित इदा परिहारो आदि की दतकथाओ आदि पर हो निर्धारित है। मण्डोवर के एतिहासिक पडिहार राजाओ सबधी कोई ख्यात नैणसी को नही प्राप्त हुई जान पडती है।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३३६, ३, प० १७५।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ८९।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, प० ३३६ ३७, ३, प० १७५ ७६।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३३८ ३९।

६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३३९ ४३।

७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ३४४ ५३।

८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ३५३ ५४।

९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ३५५ ६२।

धरणी बराह से लूणा तक की दी है। साथ ही पारकर की भौगोलिक परिस्थितियो की जानकारी, वहाँ की मुख्य पैदावार और पारकर की सीमाओ का विवरण भी दिया गया है।[१] भायल भी परमारो की एक शाखा है। नैणसी ने सजन भायल को महाऋषि से जोडा है। अलाउद्दीन के समकालीन इस सजन भायल के बाद विस्तृत वशावली दी जिसमे व्यक्ति विशेष से सबधित विशिष्ठ घटनाओ का उल्लेख भी कर दिया गया है।[२]

४ कछवाहे और उनकी विभिन्न खाँपे

नैणसी ने अपनी ख्यात० मे आम्बेर के कछवाहो के बारे मे तीन अलग-अलग वशावलिया दी है। प्रथम मे आदि नारायण से राजा जयसिंह तक पीढियो की सूची दी गयी है। साथ ही राजा भारमल से राजा जयसिंह तक उनके पुत्रो के नाम भी दिये गये है।[३] दूसरी मे आदि से राजा पूज तक की सूची और साथ ही राजा हरचद, श्री रामचन्द्र जी, राजा ढोला, राजा सुमित्र, राजा सौढ, राजा काकिल, राजा मलैसी, राजा वीजलदे, कल्याणदे, कुतल, जुणसी, उदेकरण और वणवीर के बारे मे सक्षिप्त विवरण और पुत्रो का नामोल्लेख किया गया है।[४] तीसरी के अनुसार श्री रामचद्र के कुस हुआ उससे उसके वशज कछवाहे कहलाये और राजा सोढल नरवर छोड ढूढाड आया। राजा सोढल से राजा जयसिंह तक की पीढी तथा विशिष्ट घटनाओ का उल्लेख तथा राजा भारमल से राजा जयसिंह तक के राजाओ का सक्षिप्त परिचय दिया गया है।[५] इसके अतिरिक्त राजा पथ्वीराज का ईश्वर भक्ति सबधी वृतात दिया है।[६] तीसरी वशावली मे राजाओ के पुत्रो आदि से जो विभिन्न खापें निकली उनका भी उल्लेख किया गया है। नैणसी ने राजा पृथ्वीराज के सब ही पुत्रो और वशजो की पूरी वशावलिया दी है और उनमे विशिष्ट व्यक्तियो के सम्बन्ध मे टिप्पणिया भी जोड दी है, जिनमे यदा-कदा सवत् भी दे दिये हैं। कछवाहो की नरूका और शेखावत शाखाओ की भी पूरी वशावलिया दी गयी हैं। इन सब ही विभिन्न खाँपो के उल्लेख के साथ ही साथ कुछ विशिष्ट जागीरदारो की जागीर, उनके वैवाहिक सम्बन्ध, उनकी विभिन्न राज्यो के शासको, मुगल बादशाहो और मुगल मनसबदारो के आधीन सेवा, उनके द्वारा किसी युद्ध मे भाग लेना, युद्ध

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३६३ ६५।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १६३ २०१।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २८७ ६१।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २६१ ६५।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २६५ ६७, २६८ ६६।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २८६।

मे घायल होना अथवा मारे जाने और वे किसी शासक अथवा जागीरदार और बादशाहो के पक्ष मे लडकर मारे गये आदि का भी यथास्थान विवरण दिया गया है। इससे कछवाहा खाँपो के इतिहास के साथ-साथ जागीरदारी व्यवस्था, वैवाहिक सबधो पर भी प्रकाश पडता है।[१] यह बात उल्लेखनीय है कि आम्बेर के राजाओ की सूची मे भारमल के पुत्र और मानसिंह के पिता भगवतदास का ही नाम है।[२] भगवतदास के छोटे भाई भगवानदास को भी 'राजा' की उपाधि थी और वह भी अकबर का प्रतिष्ठित मनसबदार था। अत आवश्यक जानकर उसका भी उल्लेख नैणसी ने किया, परन्तु भ्रातिवश 'आम्बेर टीकाई' लिख दिया[३], जिससे पश्चात्कालीन इतिहासकारो मे भ्राति बढ गयी थी।

५ जैसलमेर के भाटी और उनके पडोसी क्षेत्र

मुहणोत नैणसी की ख्यात० मे जैसलमेर के भाटियो के बारे मे बहुत विस्तृत ब्यौरेवार जानकारी दी गयी है। ख्यात० मे जैसलमेर की भौगोलिक स्थिति, जैसलमेर की सीमाएँ, खडाल क्षेत्र के गाँवो के नाम, वहा की मुख्य पैदावार, जैसलमेर से अन्य प्रमुख नगरो की दूरी, जैसलमेर राज्य की आय के साधन और कर आदि का ब्यौरेवार विस्तृत विवरण है।[४] नैणसी ने भाटियो की दो वशावलिया भी दी है। प्रथम मे आदि से रावल मनोहरदास तक[५] दूसरी मे जैसल से रावल सबलसिंह तक का विवरण दिया गया है।[६] इसमे जैसलमेर के रावल और अन्य प्रमुख व्यक्तियो के सम्बन्ध मे भी सक्षिप्त जानकारी और विशिष्ट घटना का उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त नैणसी की ख्यात० मे भाटी, वछराव मझमराव, मगलराव, केहर, तणु, विजयराव चुडालो, मध, वछु, दुसाल, विजयराव लाजो और भोजदे के नामोल्लेखो के सिवाय उनमे से प्रत्येक से सम्बन्धित विशिष्ट घटना का विवरण और उनके पुत्रो की नामावलिया आदि दी गयी हैं।[७] रावल जैसल से सबलसिंह तक के जैसलमेर के शासको का सक्षिप्त विवरण दिया है।[८] इसके साथ ही इन सब ही शासको के पुत्रो आदि की वशावलिया भी दी गयी है, जिसमे विशेष

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २६८ ३३२।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २६५।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २६७।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २ प० ३ ६, १२।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ६ ११।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ६२ ६३।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० १५ ३४।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान) २, प० ३५ ६२, ६४ १०८।

कर १७वी सदी के जागीरदारो सम्बन्धी विशिष्ट घटनाओ का उल्लेख भी कर दिया गया है। नैणसी की ख्यात० मे जैसलमेर के केलणोत भाटियो की राव केलण से १७२२ वि० तक की विस्तृत वशावली दी गयी है। राव केलण के अधिकार मे विकुपुर, पूगल, वैरसलपुर, मोटासर और हापासर था। केलण के मरने के बाद उसके आधिपत्य का क्षेत्र उसके वशजो मे बँट गया था। इस प्रकार केलणोत शाखा के भाटियो का अधिकार विकुपुर, पूगल और वैरसलपुर पर बना रहा था। पूगल के राव केलण से राव सुदर्शन तक, विकुपुर के दुजनसाल से जैतसी तक और वैरसलपुर के रावत खीवा से कर्णसिह तक का विवरण इस ख्यात० मे मिलता है। इसके अतिरिक्त केलणोत भाटियो की वशावली दी गयी है। साथ ही उस शाखा के विशिष्ट व्यक्तियो की जागीरो, गावो, किस शासक का जागीरदार अथवा सेवक रहा इसकी जानकारिया, किस युद्ध मे वह मारा गया आदि सब ही मुख्य बातो अथवा विशिष्ट घटनाओ का उल्लेख है।[1] इसके अतिरिक्त जेसा और रूपसिहोत भाटियो की शाखा का भी विस्तृत विवरण दिया है।[2] इस प्रकार १६वी और १७वी सदी मे केलणोत एव अन्य भाटियो के कार्यों तथा उनकी जागीर व्यवस्था पर पूरा-पूरा प्रकाश पडता है। नैणसी ने केलणोत भाटियो की विभिन्न शाखाओ का भी विवरण दिया है। नैणसी की ख्यात० मे पूगल, विकुपुर, वैरसलपुर और खारवारे के भाटियो की सूचिया दी है। नैणसी की ख्यात० मे दिये गये विवरण के सदर्भ मे देखने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि उक्त सूचियो मे पूगल के राव सुदशन, विकुपुर के राव जैतसी और वैरसलपुर के राव कर्णसिह के बाद के नाम पश्चात्कालीन प्रतिलिपिकर्ता द्वारा ही जोडे गये है।[3] इसी प्रकार जैसलमेर के रावल की एक अस्पष्ट सी वशावली भी दी गयी है।[4] नैणसी की आज सुलभ ख्यात० मे 'सिरगोता री पीढी' शीषक से अनेकानेक ठिकाणो अथवा विशिष्ट जागीरो के सरदारो की पीढियाँ दी गयी है।[5] परन्तु इनके सम्बन्ध मे यह कहना सभव नही है कि इन नामावलियो मे कितने नामो को नैणसी ने अपनी ख्यात० मे सम्मिलित किया था या नही, और कोई नामावलिया तब उसने सकलित करवाई हो तो उनमे कितने नाम बाद मे प्रतिलिपिकारो ने जोड दिये थे क्योकि अधिकाश ठिकाणो की वशावलिया सुलभ नही है।

नैणसी ने खडाल के गावो की सूची तथा राजस्व आदि की जानकारी

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ११२-५२

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० १५२-२०१।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ३६ ३७।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ३३ ३५।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २२३-३४।

बिठलदास से प्राप्त की थी। इसी प्रकार स० १७०० माघ बदि ९ को मुहता लखा से विभिन्न साधनो से जैसलमेर राज्य की आय और जैसलमेर के सीमात गाव आदि का विवरण प्राप्त किया था। अत इनकी प्रामाणिकता मे सदेह नही है। नैणसी ने जैसलमेर के प्राचीन राजनैतिक इतिहास का विवरण चारण, भाटो की जानकारी के आधार पर तथा प्रचलित दतकथाओ अथवा वार्ताओ के आधार पर दिया है। अत ओझा० (दूगड०) के अनुसार रावल जैसल से सबलसिंह तक के ४५४ वष के काल मे २३ राजा हुए अर्थात प्रत्येक के राज्य समय का औसत १९.७४ वष आता है सो ठीक है। परन्तु राव भाटी से रावल जैसल के समय तक के ५३७ वष के काल मे कुल १३ राजा होने की जो बात कही जाती है वह विश्वास के योग्य नही।[1] रावल मूलराज से पूव के शासको की प्रामाणिक सूची निर्धारित कर सकने या उनके शासनकाल सबधी जाच के लिये कोई प्राचीन शिलालेख आदि किसी भी प्रकार की कोई सभावित सामग्री उपलब्ध नही है। अत नैणसी मे वर्णित जैसलमेर के भाटियो का स० १४०० के पूर्व का इतिहास सदिग्ध मान लेने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए।[2]

६ अपर राजपूत वश अथवा राजघराने

राजस्थान मे भी राजपूतो की इन विशिष्ट खाँपो के अतिरिक्त कई एक सुमान्य राजपूत राजवश थे, जिनके अपने कई स्वतत्र राज्य राजस्थान से बाहर तब विद्यमान थे। उनमे से विशेष उल्लेखनीय झाला राजवश था, जिसकी उपेक्षा नही की जा सकी। अत नैणसी ने झाला राजपूतो का विवरण दिया है, जिनका मूल स्थान हलवद था। अत नैणसी ने हलवद के मकवाणा झाला राजवश आदि का पर्याप्त विवरण दिया है। हलवद दुग, हलवद क्षत्र की मुख्य फसलें, १७१९ वि० मे हलवद नगर की जनसख्या, हलवद नगर से अन्य प्रमुख नगरा की दूरी आदि का विवरण, और उसी राजवश की बाकानेर शाखा का भी विवरण दिया है। सौराष्ट्र प्राय द्वीप मे तब सुज्ञात झालावाड क्षेत्र के परगनो का विवरण दिया है। नैणसी० मे हलवद के स्वामी मानसिंह और उसके पुत्र रायसिह का भी विवरण है, क्योकि जब झाला रायसिंह और उसके साले जसा जाडेचा मे मनमुटाव के परिणामस्वरूप युद्ध हुआ उसके दूरगामी परिणाम हुए थे जिनका विवरण दिया है।[3] हलवद से ही आकर झाला मेवाड मे निवास

---

1 दूगड०, २ प० ४४५।

२ दूगड०, २, प० ४३९ ४२, ४४३।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २५८ ६१ २५६ ५७, २४४ ५५।

करने लगे। नैणसी ने मेवाड मे आने के पूव की झाला की पीढियाँ दी है तथा मेवाड के झाला घराने की वशावली दी है। इसमे विशिष्ट व्यक्तियो के सबध मे सक्षिप्त जानकारी दी है।[1] मेवाड मे आने के पूव की पीढियो को छोड-कर नैणसी द्वारा दिया गया मेवाड के झाला घराने का वणन विश्वसनीय ही है।

ईसा की १६वी सदी के अन्तिम युगो से ही ओरछा के बुदेला राज्य तथा वहाँ के राजाओ का महत्त्व बढने लगा था। जहाँगीर के समय मे बुदेला राजा बीरसिहदेव का प्रभाव और महत्त्व बढ गया था। अत नैणसी ने बुदेलो का भी सक्षिप्त विवरण दिया है। ओरक्षा के शासक राजा वीरसिंहदेवबुदेला के आधि-पत्य के परगने, प्रत्येक परगने के गाँवो की सख्या और प्रत्येक परगने की वार्षिक आय तथा उस राज्य के विभिन्न दुर्गों का विवरण दिया है। उक्त विवरण नैणसी ने स० १७१० वि० (१६५३-५४ ई०) मे दतिया के बुदेला शुभकर्ण के सेवक चक्रसेन से प्राप्त कर लिखे थे। उस समय शुभकर्ण बुदेला महाराजा जसवत-सिह की सेवा मे था। तदनन्तर ही वह औरगजेब के पास दक्षिण चला गया होगा। अत यह प्रामाणिक ही है।[2] नैणसी ने बुदेलो की दो अलग अलग वशा-वलियाँ दी है। प्रथम मे जो वीरसिंहदेव के राजकवि आचाय केशवदास कृत कविप्रिया के आधार पर लिखी है जो राजा बीरू गहरवाड से किसोरशाह[3] तक है और दूसरी मे राजा बीरू से राजा पहाडसिंह तक की सूची दी गयी है। दोनो मे बीरू के बाद राजा नागदे अथवा नानगदे के पूर्व के नामो मे साम्य नही है, परन्तु राजा नागदे से राजा अर्जुनदे तक समानता है, उसके बाद दूसरी मे मलूखा (मलखान) का नाम अधिक है। तदनन्तर आगे प्रथम मे मधुकरशाह के ग्यारह पुत्रो का नामोल्लेख तथा दूसरी मे वीरसिंह के पुत्र और पौत्रो तथा रुद्रप्रताप के ही अन्य वशज तब सुविख्यात चपतराय के वशज का भी उल्लेख किया गया है।[4] इसके अतिरिक्त वीरसिंहदेव और जुगराज का कुछ सक्षिप्त मे विवरण दिया है। अन्य प्रमाणो[5] से जाँचने पर नैणसी का दिया गया यह विवरण प्रामा-

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६२ ६५।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १२७ २८, १३० भीमसेन, तारीख०, पृ० ११, १७।

३ कविप्रिया० (छद ५ से ४१) मे भारतशाह तक के नाम हैं। भारतशाह के उत्तरा धिकारी पुत्र देवीशाह (देवीसिंह) और उसी के पौत्र किशोरशाह नैणसी के समकालीन थे एव ये नाम नैणसी ने ही जोडे हैं। इसी प्रकार भारतशाह के पौत्र जगतमणि जो महाराजा जसवतसिह की सेवा मे रहा था, तथा उसके पिता किशोरशाह के नाम नैणसी ने निजी जानकारी से जोडे होगे। ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १२८ ३०।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १३०-३१।

५ वशावली०, पृ० १४ गजेटियर (ओरछा०), पृ० १३ ३१। बुदेलखण्ड० (परिशिष्ट), पृ० ३८३-८६, ३९२।

णिक ही प्रतीत होता है ।

नैणसी ने भुज नवानगर के स्वामी जाडेचा राजवश का भी विवरण दिया है । नैणसी ने प्रचलित गीतो व यश वणन के आधार पर इनको यदुवशी लिखा है ।[1] नैणसी ने जाडेचो की गाहरियो से तमाइची तक की पीढियाँ दी है । भुज के स्वामी रायधण के पुत्र भीम द्वारा कच्छ की भूमि पर योगी गरीजनाथ की कृपा से आधिपत्य जमाने सबधी वृतात दिया है ।[2] भीम के वशजो का भुजनगर पर अधिकार रहा । नैणसी ने भीम से खगार (दूसरा) तक भुज के रावो की पीढियाँ दी है ।[3] नैणसी ने लाखा की बात मे लिखा है कि किलाकोट (कथकोट) मे हाला और रायधण दो भाई थे, जिनके वशज हाला और रायधण कहलाये । साथ ही रायधणिये राव और हाला जाम कहलाने लगे । भीम के समय मे घोघो ने हालो को अपने पक्ष मे करना चाहा, परन्तु असमर्थ रहा । बारह या चौदह पीढी बाद हालो मे जाम लाखा और रायधणियो मे हमीर हुए । हमीर लाखा के यहाँ मिलने गया था, वही लाखा के पुत्र ने हमीर की धोखे से हत्या कर दी । तब हमीर के पुत्र खगार और लाखा के पुत्र रावल के साथ वैर प्रारभ हो गया,[4] इन दोनो के मध्य हुए झगडे का विवरण दिया गया है । नवा नगर के जाम की पीढिया जाम लाखा से तमाइची तक दी है ।[5] ख्यात० मे केलाकोट के व्यापारियो द्वारा मत्र द्वारा वर्षा बद करवा देना और उससे प्रजा का भूखो मरना, जाडेचा फूल को इस बात का पता लगने पर वर्षा पुन प्रारभ करवाना, अत्यधिक वर्षा से घायल होने पर खेरडी गाव के जमला अदोर की

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २०६ बाम्बे गजेटियर०, ५, पृ० ५७-५८, १३२-३४ ।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २०६ १४ । यह वितरण अलौकिक पूण काल्पनिक दत कथाओ पर ही आधारित है ।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २०६ १५ । इसमे प्रथम सूची अस्पष्टतया काल्पनिक ही प्रतीत होती है । दूसरी सूची ऐतिहासिकता पूण होते हुए भी शासको के क्रम मे भ्रातिया है । भुज राजघराने की मान्य वशावली के लिए देखें बाम्बे गजेटियर०, ५, पृ० १३३ ३७, २५४ ।

४ यह सारा विवरण मूलत ऐतिहासिक ही है, यद्यपि इसमे यत्र तत्र दी गयी पीढियो की सख्या अत्युक्तिपूण ही है । कथाकोट (किलाकोट) भद्रेसर से ५४ मील उत्तर पूव मे है और वह बाद मे देदावशीय हाला के वशजो के अधिकार मे आ गया । तदनतर सन् १५३७ ई० बाद वे कच्छ छोडकर सौराष्ट्र चले गये और वहा नवानगर बसाया । सौराष्ट्र का उत्तर पश्चिम भाग हालार वशीयो के अधिकार मे आ जाने के कारण ही वह क्षेत्र 'हालार' कहलाने लगा । बाम्बे गजेटियर०, ५, पृ० २२४-२५, २१४, १३४ १३६, २४५, ८, ५६६, ५७६ ।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २२४, ये पीढिया और विवरण ऐतिहासिक है । बाम्बे गजेटियर०, ५, पृ० १३५ ३६ ८, ५६६ ७३ ।

कुमारी कन्या द्वारा उसे अपने साथ सुला होश मे लाना तथा उसी कन्या से लाखा का जन्म होने सबधी वृतात दिया है। लाखा का अपने पिता के पास जाना, फूल की राणी का लाखा पर आसक्त होना और लाखा द्वारा उसकी माग को ठुकराने पर देश निकाला तथा फूल के मरने के बाद गद्दी पर बैठना, उसकी सोढी राणी द्वारा मनबोलिया डोम के साथ रतिरग मनाना, आदि रोमाचक वृतात दिया गया है।[१] उक्त सारा विवरण ऐतिहासिक कम और तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक दशा पर अच्छा प्रकाश डालता है। इसी प्रकार नैणसी ने सिंध के जाम ऊनड (सम्मा) द्वारा कवि सावल सुध्र को आठ करोड पसाव के रूप मे राज्य कवि को प्रदान कर स्वय समुद्र के बेट (द्वीप) मे चला जाने की बात लिखी है।[२] जाम सत्ता का अमी खाँ आजम खा से युद्ध और जाम सत्ता के गीत का उल्लेख किया है।[३]

नैणसी ने सरवाहिया जादव वश[४] का भी विवरण दिया है। गिरनार के स्वामी राव मण्डलीक द्वारा नागही गाव के चारण रक्खा के बछेरे प्राप्त करने का प्रयत्न तथा अन्त मे उसकी पुत्रवधू पद्मिनी पर आसक्त हो उसे प्राप्त करने नागही पहुँचना, पद्मिनी देवी रूप थी अत उसके द्वारा मण्डलीक को श्राप देना जिससे दुग पर महमूद बेगडा का अधिकार होना, मण्डलीक को मुसलमान बनाना सबधी वृतात दिया है।[५] महमूद बेगडा के मरने के बाद गिरनार पर पठानो का अधिकार रहा था। अकबर की सेना ने अमी (अमीर) खाँ गोरी को पराजित कर गिरनार पर अधिकार किया। उक्त विवरण पूर्ण रूप से ऐतिहासिक है।[६] साथ ही सरवाहिया जेसा की वीरता सबधी वृतात दिया गया है।[७]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० २२५ ३५।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० २३६ ३९।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान) २, प० २४० ४३ बाम्बे गजेटियर०, ५, प० ५६७ ६९।

४ ये सरवाहिया यादव वस्तुत सौराष्ट्र मे राजपूतो की प्रमुख खाप 'चूडासमा' की ही एक शाखा है। ये सब ही 'चूडासमा' मूलत सम्मा वशीय चूडा के ही वशज हैं, जो सम्मा वशीय जाडेचा कुल के आदि पुरुष 'जाडा' का भाई था। ये दोनो ही वश सिंध से कच्छ और बाद मे सौराष्ट्र मे जा पहुँचे थे। रणछोडजी कृत 'तारीख इ सौराष्ट्र' दूगड० २, प० २५०-५४ पा० टि० बाम्बे गजेटियर० ८, पृ० ४८९ ९०, ५६५ ६६, ९, प० १२४, १२५, १२६।

५ मण्डलीक को चारण नागबाई की पुत्रवधू द्वारा श्राप दिये जाने की इसी कथा को प्राय चारणो द्वारा कहा जाता रहा है, रणछोडजी ने तारीख इ सौराष्ट्र मे भी दी है। बाम्बे गजेटियर०, ८, प० ४९९ ५०० मीरात इ-सिकदरी, (अ० अ०) प० ५२ ५८,५९।

६ दूगड०, २, पृ० २५० ५१, २५२ पा० टि० १ और २, बाम्बे गजेटियर०, ८, पृ० ५००-५०१, मीरात इ सिक दरी (अ० अ०), प० १११, ११४, २७०, २८५, ३१३, ३१४, ३२५-२६।

७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २०६-२०८, इस प्रकार की घटनाओ के उल्लेख फारसी ग्रथो मे नही मिलते ह।

अध्याय ८

नैणसी के ग्रन्थो मे ऐतिहासिक भूगोल

इतिहास और भूगोल का सदैव से अकाट्य पारस्परिक सम्बन्ध रहा है। देश-प्रदेश, क्षेत्र या राज्य का प्राकृतिक प्रतिवेश वहाँ के जनजीवन, तथा समाज के सब ही पहलुओ को प्रभावित करता है। उन्ही से वहा की राजनीति का स्वरूप बनता है, परम्पराए स्थापित होती है, आर्थिक विकास या अभाव आदि सब ही प्रकार की गतिविधियाँ निर्धारित होती हैं। सामाजिक और सास्कृतिक परिस्थितिया वहाँ के निवासियो के मानवीय चिन्तन और आध्यात्मिक, भौतिक व धार्मिक दृष्टिकोणो को दिशा देते है और शासकीय व्यवस्था और प्रशासनिक सगठन की रूपरेखा को ही बहुत-कुछ निर्धारित करते हैं। यही कारण है कि इतिहास सम्बन्धी निरन्तर उठने वाले कब, क्यो, कैसे और किसने विषयक अधिकाश प्रश्नो और अनबूझ उलझनो का सही हल निकालने के लिए वहाँ के भूगोल और उससे सम्बन्धित सब ही प्रभावो, परिणामो आदि को जानने बूझने का प्रयत्न करना पडता है।

किन्तु इतिहास की घटनाओ, उनके परिणामो, प्रभावो आदि के फलस्वरूप वहा का मानवीय भूगोल जो स्वरूप लेता है, जिस प्रकार वह परिवर्तित होता रहा है, वह सब इतिहास की ही देन होती है। अत जिस प्रकार किसी भी क्षेत्र के इतिहास पर अनुसधान करने वाले को उस क्षेत्र तथा पास-पडोस या सम्बन्धित प्रदेशो के भूगोल तथा वहा के प्राकृतिक प्रतिवेश आदि को पूरी तरह समझना-बूझना पडता है, उसी तरह उस क्षेत्र के इतिहासकार के लिए और विशेषतया वहाँ की विस्तृत विवरणिका प्रस्तुत करने वाले के लिए यह अत्यावश्यक हो जाता है कि वह सम्बन्धित क्षेत्रो अथवा क्षेत्र विशेष के मानवीय भूगोल की ओर भी ध्यान देवें।

नैणसी ने जहाँ अपनी ख्यात० मे अनेको राजघरानो द्वारा स्थापित राज्यो के इतिहास लिखे, वही उसने अपनी विगत० मे जोधपुर राज्य के आधीन मारवाड के परगनो के क्रमबद्ध इतिहास के साथ ही उनके बारे मे विस्तृत विवरणिका भी लिखकर तैयार की थी। जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है नैणसी

को इतिहास बोध की ही तरह भूगोल बोध भी पूरा था। अत अपने इन दोनो ग्रन्थो मे उसने यथाशक्य अथवा आवश्यकतानुसार मानवीय भूगोल की ओर भी पूरा-पूरा ध्यान दिया है। अत इतिहासकार नैणसी सम्बन्धी इस अध्ययन मे उसके इतिहास-लेख के इस पक्ष विशेष की भी देखभाल अनिवाय हो जाती है। परन्तु उन दोनो ग्रन्थो के लेखन मे नैणसी का उद्देश्य और दृष्टिकोण सवथा भिन्न थे, एव इस स-दभ मे प्रत्येक का विवेचन अलग-अलग करना ही समीचीन जान पडता है।

१ परगना री विगत

जैसा कि अध्याय-५ मे ही लिखा जा चुका है कि विगत० मे स० १७१५ (१६५८ ई०) से १७१६ (१६६२ ई०) तक का तब जोधपुर राज्य के आधीन मारवाड के प्रत्येक परगने का पचवर्षीय विस्तृत वृत्तान्त दिया गया है। अपने इन ब्यौरेवार विवरणो मे नैणसी ने प्रत्येक परगने के राजनैतिक और आर्थिक महत्त्व के वृत्तान्त तो दिये ही है, साथ ही सब ही विषयक भौगोलिक विवरण भी विस्तृत रूप मे दिये गये है। अब उनके विभिन्न पहलुओ की चर्चा की जाती है।

(क) परगने और उनके अन्तर्विभाग—उनका प्राकृतिक भूगोल

नैणसी ने अपनी विगत० मे जोधपुर राज्य के आधीन मारवाड के कुल सात परगनो—जोधपुर, सोजत, जैतारण, फलोधी, मेडता, सिवाणा और पोहकरण का ही विस्तृत विवरण दिया है। यो तो मई, १६५८ ई० मे जब मुहणोत नणसी जोधपुर राज्य का देश दीवान नियुक्त किया गया, तब मारवाड का आठवा जालोर परगना भी महाराजा जसवन्तसिह के आधीन था[1], परन्तु तब भी 'जालोर परगने की विगत' नैणसी ने अपनी इस 'मारवाड रा परगना री विगत' मे सम्मिलित नही की थी। यह परगना कैसे छूट गया, इस सम्बन्ध मे कही कोई उल्लेख नही मिलता है कि इस प्रश्न का सन्तोषजनक हल मिल सके। मारवाड का नौवा परगना साचोर महाराजा जसवन्तसिह को स० १७२१ वि० की उन्हाली (सन् १६६४ ई० के अन्तिम महीनो) मे ही मिला था, एव उस परगने की विगत तैयार करवाने आदि का नैणसी को समय ही नही मिल पाया था।[2]

नैणसी ने अपनी विगत० मे यथास्थान मारवाड के प्रत्येक परगने की सीमाओ का सुस्पष्ट विवरण दिया है। पडोस के परगने, राज्य आदि की सीमा

---

१ विगत०, १, पृ० १२६, बही०, प० ३, ५।
२ बही०, पृ० ३ विगत०, २, पृ० ३६१।

उस परगने विशेष के किस-किस गाव से लगती है इमकी ब्यौरेवार पूरी सूची दी है जिसके आधार पर प्रत्येक परगने की सीमाओ का रेखाकन सहज सुलभ हो गया है।[1] अब उन क्षेत्रो से सम्बन्धित 'सेन्सस आफ इण्डिया' की 'डिस्ट्रिक्ट सेसस हैण्डबुक' की जिल्दो के द्वारा उन सब ही तत्कालीन गावो की पहचान कर नैणसी कालीन परगनो या उनके अन्तर्विभागो के सुनिश्चित् मानचित्र बनाये जा सकते है।

जैतारण और मेडता पर तो राव मालदेव के समय मे ही मुगल आधिपत्य हो गया था।[2] राव चन्द्रसेन के जोधपुर की राजगद्दी पर बैठने के बाद जोधपुर, सोजत, फलोधी और सिवाणा परगनो पर भी मुगल आधिपत्य हो गया।[3] पोहकरण परगना अवश्य ही दूसरे के हाथो मे रहा और मुगल बादशाहो द्वारा दिये जाने पर भी कोई मुगल मनसबदार सन् १६५० ई० से पहले उस पर अधिकार नही कर पाया था। तब महाराजा जसवन्तसिह ने ही पोहकरण पर अधिकार किया।[4] मारवाड के इन अधिकाश परगनो पर ईसा की १६वी शती के सातवें दशक या उसके बाद से ही मुगल आधिपत्य हो गया था। अत अकबर के शासनकाल मे जब मुगल शासन-व्यवस्था को सुव्यवस्थित बनाया जाने लगा तब मारवाड क्षेत्र को भी उसी ढांचे मे ढालने का प्रयत्न कर जोधपुर सरकार के अन्तगत अधिकाश परगनो (महलो) को रखा गया। यही नही, वहा की राजस्व व्यवस्था को भी यथासम्भव मुगल प्रणाली के साथ समन्वित करने का प्रयत्न किया गया था।[5] इसी के फलस्वरूप विगत० मे कुछ परगनो के विवरणो मे उनके 'अमल दस्तूर' का उल्लेख मिलता है।[6]

आईन० के अनुसार जोधपुर सरकार को २२ महलो या परगनो मे विभक्त किया गया था। पोहकरण जैसे दो तीन परगनो को अन्य सरकारो मे गिन लिया गया है। परन्तु ऐसा जान पडता है कि परगनो का यह विभाजन स्थायी नही हो पाया, और जब उस क्षेत्र पर क्रमश जोधपुर के शासको का अधिकार होने लगा तब आईन० मे अकित यहाँ के परगनो का विभाजन स्वत ही परिवर्तित होता गया। यही कारण है कि राजा सूरसिह, गजसिह और महाराजा जसवन्तसिह के शासनकाल मे उन्हें दिये गये परगने तथा उनकी रेख सम्बन्धी

---

१ विगत० १ प० ३७२ ८२, ३९५, ५५५ ५७ २, प० ९, ३२ ३६, ९८ १०६, २७८ ८० ३२० २२।

२ विगत०, १, प० ४९५ २, प० ६३।

३ विगत०, १, प० ६७ ६८, ३८९ २, पृ० ६, २१९।

४ विगत०, २, प० २९६ ९८।

५ आईन० (अ० अ०), २, (द्वितीय), प० २८१ ८२, १०९ ११।

६ विगत०, २, पृ० ८८ ९३, ३३४।

उल्लेख आईन० के विभाजनो से सवथा भिन्न ही थे। यही नही तब इन शासको की जागीर आदि के जो हिसाब लेखा या तालिका शाही दरबार मे बनते थे, वे भी उसी पश्चात्कालीन परगना-विभाजन के ही आधार पर बनाये जाते थे।[1]

यो निर्धारित इन परगनो मे से मेडता और जोधपुर परगने बहुत बडे थे, अत उन परगनो को कइ एक अन्तर्विभागो मे विभक्त कर दिया गया था जो टप्पा अर्थात् तफा कहलाते थे। मेडता परगने मे हवेली समेत कुल नौ तफे थे।[2] अकबर के शासनकाल मे जोधपुर परगने पर जब मुगल आधिपत्य था, तब मुगल साम्राज्य की शासन-व्यवस्था के साथ उक्त परगने को भी सुव्यवस्थित किया गया और उस समय जोधपुर परगने को कुल १४ तफो मे विभक्त किया गया था।[3] शाही कागज-पत्रो मे तफो की यही सख्या आगे भी लिखी जाती रही। परन्तु मुगल व्यवस्था के अन्तर्गत किये गये विभाजन मे जोधपुर हवेली तफा कुल मिलाकर ५०५ गावो का था। जोधपुर राज्य-शासन के स्थापित हो जाने के बाद शासकीय सुविधा और सुव्यवस्था की दृष्टि से यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि इस हवेली को कइ-एक तफो मे विभक्त कर दिया जावे। अत पूव निर्धारित हवेली तफे को छ तफो मे विभक्त कर दिया गया। इसी प्रकार शाही कागज-पत्रो मे पाली और रोहट के तफे साथ ही गिने जाते थे, उन्हें भी जोधपुर राज्य के अन्तगत अलग-अलग लिखा जाने लगा। यो तदनन्तर जोधपुर परगने के आधीन तफो की सख्या कुल मिलाकर २० हो गयी।[4] नैणसी ने अपनी विगत० मे जोधपुर और मेडता परगनो के गावो का विवरण क्रमश २० तथा ६ तफो के अन्तगत ही दिया है। अन्य परगनो को तफो मे विभक्त नही किया था एव उनके विवरणो मे ऐसे कोई तफो का कोइ उल्लेख नही है।

परगनो के विवरण लिखते समय नैणसी ने सामूहिक रूप से प्रत्येक परगने के प्राकृतिक भूगोल की जानकारी नही लिखी है। नगरो, कस्बो और गावो का विवरण लिखते समय अवश्य ही उसने वहा के प्राकृतिक भूगोल की जानकारी दी है। उन सब उल्लेखो को सकलित कर प्रत्येक परगने की और उन सबकी सम्मिलित जानकारी से उस सारे मारवाड प्रदेश के प्राकृतिक भूगोल का विवरण तैयार किया जा सकता है।

---

१ विगत०, १, प० १०५ १०६, १२४ २५, १३१-३२, १३३ ३४, १४५-४६, १५०-५६, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० १२२, १५२-५५, १६६ ६८, बही०, प० ३-५।

२ विगत०, २, पृ० ७८।

३ विगत०, १, प० १६४ ६५।

४ विगत०, १, पृ० १६४ ६५, २०३ २०४।

(ख) नगर, कस्बे और ग्राम उनके स्थल और वहा की जीवन परिस्थितियाँ

नैणसी ने विगत० मे मारवाड के सात परगनो के जो विवरण प्रस्तुत किये है, वे विवरणिकाओ (डिस्ट्रिक्ट गजेटियर) से कही अधिक विस्तृत और ब्यौरेवार है। इन विवरणिकाओ मे जहा केवल प्रमुख नगरो, कस्बो अथवा विशिष्ट महत्त्व वाले स्थलो की ही जानकारी दी जाती है वहा इस विगत० मे परगनो क प्रत्येक गाव सम्बन्धी जानकारी और बहुविध आधार-सामग्री प्रस्तुत की गयी है।

नैणसी ने विगत० मे जोधपुर के अतिरिक्त सोजत, जैतारण, फलोधी, मेडता, सिवाणा और पोहकरण आदि सभी प्रमुख नगरो का विस्तृत विवरण दिया है। उसने सवप्रथम इस बात का उल्लेख किया है कि उस नगर या कस्बे की स्थापना कब, कैसे और किसने की थी, और उस क्षेत्र की पूर्ववर्ती स्थिति का भी कुछ दिग्दशन कराया है। यो यह लिखकर कि जोधपुर नगर का पूववर्ती, 'आदि शहर मडोवर थो', उसकी जानकारी दी है। वह स्वय लिखता है कि जैतारण का 'सवत १५२५ नवो सहर बसीयो'।[१] तदनन्तर नैणसी ने बताया है कि नगर का नामकरण कैसे हुआ। जैसे परगनो मेडतो आद सहर छै, राजा मानधाता रो बसायो, यू सको कहै छै। केहीक दिन यू पण सुणीयो थो। एक बार कान्हडदे रो अमल हुवो छै। तठा पछै घणा दिन आ ठौड षाली सुनी रही छै। पछ राव जोधा बेटा बरसिघ दूदो (ने) कहो—'म्हे थानुं मेडतो दा छा, थे जाय बसौ।'[२] इसी प्रकार सोजत के सम्बन्ध मे लिखा मिलता है कि—'शास्त्रो मे इसका नाम शुद्धदन्ती मिलता है। प्राचीन काल मे त्रम्बावती नगरी कही जाती थी। राजा त्रम्बसेन यही राज्य करता था। उसके सोजत नामक लडकी से ही इसका नामकरण सोजत हुआ।'[३]

नैणसी ने अपने काल मे इन मुख्य नगरो या कस्बो की जो स्थिति थी उसका विस्तृत ब्यौरेवार वणन किया है। राज्य के मुख्य केन्द्र 'जोधपुर नगर' से अन्य परगना केन्द्रो की भौगोलिक स्थिति और दूरी देकर उसको स्पष्ट किया है। वह नगर जिस स्थान पर बसा हुआ था उसकी जानकारी दी गयी है और यदि वहा कोई गढ या किला था तो उसका भी विवरण दे दिया है तथा आस-पास

---

१ विगत०, १, प० १, ४६३ ('प्राचीन शहर मण्डोवर था' स० १५२५ वि० नया शहर बसा)।

२ विगत०, १, पृ० ३७ (सभी ऐसा कहते हैं कि राजा मानधाता द्वारा बसाया परगना मेडता प्राचीन शहर है। किसी दिन ऐसा भी सुना था एक बार कान्हडदे का अधिकार हुआ था। उसके बाद बहुत दिनो तक यह स्थान निजन ही रहा बाद में राव जोधा ने अपने पुत्रो बरसिंह और दूदा से कहा कि हम मेडता तुमको देते हैं, तुम वहाँ जाकर बसो)।

३ विगत०, १, प० ३८३ ८४।

कही नदी नाला हुआ तो उसका भी उल्लेख कर दिया गया है।

'फलोधी री हकीकत' के अन्तगत वहा के दुग का वर्णन लिखा है कि कोट की हाथ २३८ लम्बाई और १२२ चौडाई है। और १६ बुरज है जिनकी बुरज फिरणी (चौडाई व्यास) हाथ ६, और ऊँचाई हाथ २१ है। मीठ पानी की एक बावडी और एक तालाब है।[1]

इसी प्रकार 'सोजत शहर की बात' मे लिखा है कि सोजत का छोटा सा दुर्ग छोटी-सी पहाडी पर बना हुआ है। थोडे-से ही मकान उसमे है। राजा गजसिंह के समय मे एक नया घर फिर बनाया गया था। यहा पर वीरमदे बाघावत का स्थान है जहाँ पूजा होती है। घोडो को बाँधने की घुडशाला है। घरो के बाहर दरबार लगने का चौतरा है। एक ही प्रोल है। गढ के नीचे तुर्कों का बनाया हुआ एक परकोटा है। जहा पर राजकीय घोडे बाधे जाते हैं। परकोटा की प्रोल के ऊपर दीवानखाना है। नगर समतल मैदान मे बसा हुआ है।[2] यही नही, तब सोजत मे जितने तालाब थे उन सबका विवरण दिया गया है।[3] शहर के पास से होकर निकली सुकडी नदी का भी उल्लेख करते हुए उसके पानी के बारे मे लिखा है कि 'कही पानी भलभला है और कही मीठा है।' उस नदी पर लगे अरहटो की सख्या भी दे दी है।[4]

इसी प्रकार नैणसी ने विगत० मे सातो परगनो के प्रत्येक गाव का विस्तृत विवरण दिया है। उसने गावो की भौगोलिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला है। परगना केन्द्र नगर से गावो की दूरी, खेतो की किस्म, सिंचाई के साधन, गाँव की प्रमुख फसले, नदी, नाले और तालाबो का विवरण दिया है। उदाहरणार्थ— 'खारीयो नीबा रौ सोझत था कोस ३ रीतहड मे। जाट सीरवी, बाणीया, रजपूत बसै। खेत कवला, बाजरी, मोठ, मूग, बण हुवै। ऊनाली ढीबडा ठा १० तथा १२ हुव, मीठा। सीव घणी हलवा २००। नीब रा भाखर रा बाहला घणा सीव मे आवै। रा० सागा सूजावत रौ उतन छै। डोहली गॉव मे घणी छै। जोड बीघा २००।[5]

'महैव-कोस ४ रीतरह दूण उत्तर रे साधै। जाट बाणीया, मुलतानी बसै। बसी गाव मे छै। धरती हलवा २५०। जवार, बाजरी हुवै। नन्दवाणा बोहरा रहै छै। अरट २, चाच ५ मोटा, ढीबडी १, लूण रा आगर ५। जोड सखरो।

---

१ विगत०, २, पृ० ८।
२ विगत०, १, पृ० ३९०-९१।
३ विगत०, १, पृ० ३९२-९३।
४ विगत०, १, पृ० ३९३ ९४।
५ विगत०, १, पृ० ४२७।

गाडा २०० री ठाँड । तलाब ३, मास ८ तथा १० पाणी रहै। बेरा तलाव मे छै। बाहला २ हायता नै चावडीयाक दिसी छै। नीब था नजीक छै।[१]

(ग) मानव भूगोल और आर्थिक विवरण

नैणसी ने अपनी विगत० मे जहाँ नगरो, कस्बो गाँवो के इतिहास, वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियो, वहा की नदियो और तालाबो, मैदानो अथवा टेकरियो पर बने कोट-किलो आदि का विवरण दिया है, वही उसने उन नगरो, कस्बो और गाँवो तक मे बसने वाले जनसाधारण की ओर भी पूरा-पूरा ध्यान दिया है। कौन लोग कहा रहते थे, कैसे रहते थे, और उन बस्तियो के सामाजिक वातावरण तथा जातिगत सरचना की भी उपेक्षा नही की है। इस प्रकार वहाँ के समाज तथा जातीय जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पडता है।

सन १६६४ ई० के अन्तिम महीनो मे जोधपुर शहर की बसावट कैसी थी, कहा-कहाँ विभिन्न हाट बाजार थे, विभिन्न जातियो अथवा धधो वाले कैसे-कहा रहते थे, जिनके जातीय नामो पर उन गलियो का नामकरण हो गया था, आदि का ब्यौरा दिया गया है और समूचे जोधपुर शहर के विभिन्न नगर-द्वारो या सुज्ञात स्थलो के बीच की दूरियाँ भी दे दी गयी है जिससे शहर की रूपरेखा स्पष्ट हो जाती है।[२] इसी प्रकार सोजत कस्बे की बस्ती और शहर की हकीकत भी सविस्तार दी गयी है। वहाँ के मन्दिरो की सख्याएँ दी है जिनसे ज्ञात होता है कि सोजत मे जैन धर्मावलम्बियो की सख्या पर्याप्त ही नही थी किन्तु साथ ही उनकी आर्थिक स्थिति भी विशेष सुदृढ थी कि वहाँ कोई ८ जैन देवालय थे। वहा हिन्दू मन्दिरो की सख्या भी ८ ही थी जिसमे से ३ ठाकुरद्वारा अथवा वैष्णव मन्दिर थे और ३ शैव मन्दिर थे।[३] इसी प्रकार आगे अन्य परगनो के केंद्रीय नगरो-कस्बो, जैतारण, फलोधी, मेडता, सिवाणा और पोहकरण मे भी निवास करने वाली जातियो का विवरण दिया गया है। इन सब ही नगरो मे राजपूतो, महाजनो, ब्राह्मणो और कायस्थो के अतिरिक्त दर्जी, स्वर्णकार, नाई, ठठेरा, सूत्रधार, कुम्हार, सिलावट, धोबी, जुलाहा, माली, तेली, कलाल, छीपा, लुहार, मोची, भडभूजा, पीजारा, ढेढ सरगरा, डूम आदि व्यवसायिक जातियाँ निवास करती थी।[४] यो व्यवसायिक दृष्टि से ये सब ही बस्तियाँ आत्मनिभर होती थी। सभी आवश्यक वस्तुओ का प्रत्येक नगर मे वहा ही उत्पादन होता था।

---

१ विगत०, १, पृ० ४५७।

२ विगत०, १, पृ० १८६ ८६।

३ विगत०, १, पृ० ३६० ६२।

४ विगत०, १, पृ० ४६७, २, पृ० ६, ८३-८६, २२३-२४, ३१०-११।

इसके अलावा बाजीगर और नृत्य करने वाली जातिया भी इन नगरो मे निवास करती थी, जो विभिन्न खेलो द्वारा लोगो का मनोरजन किया करती थी। प्राय सब ही नगरो मे वेश्याएँ भी निवास करती थी।[1] पाली, गुदोच और आसोप मे भी सभी पवन जाति निवास करती थी।[2]

नैणसी ने गावो का विवरण लिखते समय भी वहा के जनसाधारण की ओर भी पूरा ध्यान दिया है। जो जो गाव उस समय वीरान थे, उनका भी स्पष्ट उल्लेख कर दिया है। तथा उन सूने खेडो माजरो (छोटी बस्तियो) पर लगने वाली रेख की रकम भी लिख दी है। प्रत्येक गाव मे बसने वाली प्रमुख जातियो का उल्लेख उस गाव सम्बन्धी वर्णन मे ही नही किया है, परन्तु वहा बसने वाली एक या अनेक जातियो के आधार पर उनका वर्गीकरण कर प्रत्येक परगने मे उनकी अलग-अलग सूचिया भी प्रस्तुत की गयी हैं। गावो के इन सब ही विवरणो को देखने से यह ज्ञात होता है कि मारवाड के इन गावो मे बसने वाली जातियो मे अधिकतर राजपूत, ब्राह्मण, महाजन, जाट, विश्नोई, पटेल, और घाची ही प्रमुख थी। परगना जोधपुर के २१५ गावो मे केवल जाट, ३० गावो ने केवल विश्नोई, ३७ गाँवो मे केवल पालीवाल (ब्राह्मण) ४७ गावो मे केवल पटेल और १६७ गाँवो मे केवल राजपूत निवास करते थे।[3] जोधपुर, मेडता और सोजत के गाँवो मे सर्वाधिक जाट जाति के लोग निवास करते थे। फलोधी के गाँवो मे सर्वाधिक विश्नोई निवास करते थे।[4] सातो परगनो के प्राय सब ही गाँवो मे माली, सीरवी, घाची, ओड, कलाल, रेबारी, खाती, स्वर्णकार, खारोल और बोहरा जाति के लोगो की सख्या नगण्य ही थी। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि मारवाड के अधिकाश और विशेषतया छोटे गाव आत्मनिभर नही थे। और उन्हे अपनी नित्यप्रति की आवश्यकताओ के लिए भी पास के नगर या कस्बे जाना पडता था। जोधपुर और मेडता मे तो आधे से अधिक ऐसे छोटे गॉव थे जहाँ कुएँ नही होने के कारण अथवा कुओ का पानी खारा होने के कारण पीने का पानी भी निकट के गाव से लाना पडता था। अथवा निकटस्थ नदी और तालाब के पानी का उपयोग किया जाता था।

मारवाड के लगभग सभी परगनो मे गेहूँ, बाजरा, ज्वार, चना, मूग,

---

१ विगत०, १, प० ३६६, ४३७, २, प० ६, ८६।

२ विगत० १, पृ० २६२, २७२, ३५०।

३ विगत०, १, प० १६० ६५, 'पटेल' जाति जिसे पीटल' या 'कलबी' भी कहते हैं, जो एक विशेष काश्तकार जाति है, जो कुनबी' अथवा 'पाटीदार' नामो से भी सुज्ञात है। जातिया, प० ३२ ३३।

४ विगत०, १, पृ० १६० ६५ २ प० १० ११। प्रत्येक गाव मे बसने वाली जातियो के उल्लेखो पर भी यह निष्कष आधारित है।

मोठ, तिल, कपास और जौ की फसलें होती थी। परन्तु परगना जोधपुर और मेडता की गेहूँ और चना, जैतारण, सीवाणा और फलोधी की बाजरा, ज्वार और मोठ और सोजत की ज्वार, बाजरा, मोठ और तिल प्रमुख फसलें थी। विगत० के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मारवाड मे वर्षा की कमी और सिंचाई के साधनो की न्यूनता के कारण ही वहा की मुख्य फसले ज्वार, बाजरा मूग और मोठ थी। जिन जिन गाँवो मे कुएँ आदि सिचाई के साधन थे वहा गेहूँ की फसल लेते थे। गेहूँ और चना की सेवज फसले भी कही कही पैदा होती थी।

सामान्य जनता मुख्य खाद्य के रूप मे ज्वार और बाजरा तथा दालो मे मूग और मोठ का ही उपयोग करती थी। गेहूँ तो तब धनी और उच्च-मध्यम वर्ग के लोगो का ही भोज्य रहा होगा। अधिकाश परगनो मे तिल की खेती होती थी। अत तिल का तेल ही उपयोग किया जाता होगा। इसके अतिरिक्त परगना जोधपुर और सोजत मे सरसो की फसल भी होती थी।

मारवाड के सब ही गाँवो मे खेती ही वहा का मुख्य व्यवसाय था। अधिकतर गावो मे कही भी कोई छोटे हस्त शिल्प व्यवसाय नही थे, जो सब ही मुख्यत प्राय परगना केन्द्र नगरो और कस्बो मे ही केन्द्रित थे। अत गाव के लोगो को खेती के उपकरणो से लेकर अन्य सब ही आवश्यक वस्तुओ के लिए नगरो पर निर्भर रहना पडता था। नगर से गाव की दूरी के कारण और आवागमन के साधनो के अभाव मे आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त करने मे गाव के लोगो को तब अनेक असुविधा और कठिनाइयो का सामना करना पडता रहा होगा। इसी समस्या का कुछ समाधान तब मारवाड मे समय समय पर यत्र-तत्र लगने वाले हाटो से होता था। सुज्ञात निश्चित दिन पर बडे गावो मे लगे बाजार मे पहुँचकर लोग आवश्यक वस्तुएँ खरीद लेते थे।

राजपूत समाज के साथ चारण जाति का बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। तब मारवाड के राज दरबार मे ही नही प्रमुख राजपूत सरदारो की हवेलियो मे भी चारणो का सम्मान स्वागत किया जाता था और उन्हे वे सासण मे गाँव या छोटी-बडी जागीरें भी प्रदान करते थे। इसी परम्परा मे भाट-दमौदी आदि की गणना होती थी। जो जातीय और सामाजिक दृष्टि से भिन्न होते हुए भी अपने यजमानो की वशावलियाँ और कीर्तिगाथा को सुरक्षित रखने मे ही सदा प्रयत्नशील रहते थे। सासण मे चारणो-भाटो को दिये गये गावो के विगत० मे जो विवरण है उनसे भी तत्कालीन समाज के इस विशिष्ट पहलू पर विशेष प्रकाश पडता है।

इसी प्रकार सासण मे ब्राह्मणो को भी गाव दिये जाते थे। ये ब्राह्मण उन विशिष्ट वर्गों के होते थे जो या तो अपने यजमानो के घरानो की पुरोहिताई

करते थे अथवा उनके गुरु होते थे। सासण मे गाँव जोगियो को भी दिये जाने के उल्लेख मिलते है।[१] राजस्थान मे लोक-देवताओ का विशेष महत्त्व रहा है, अत उन्हे अथवा उनके भोपो (पुजारी) को भी सासण मे गाँव दिये गये थे, जो नैणसी के समय तक उन्ही परम्पराओ मे यथावत् चले आ रहे थे।[२]

मारवाड के राठोड राजघराने की ही नही मारवाड के सारे राठोड राजपूतो की आराध्या देवी राठासण अथवा नागणेची की पूजा करने वालो को भी सासण मे गाव दिये जाना[३] सवथा स्वाभाविक ही था। तत्कालीन समाज की मान्यताओ तथा आस्थाओ मे व्यक्त होने वाली मानवीय अनुभूतियो और भावनाओ की जो जानकारी मिलती है वह कई दृष्टियो से महत्त्वपूण है।

२ नैणसी की ख्यात० उसका सीमित क्षेत्र

देश-दीवान बनने से बहुत पहले ही नैणसी ने अपनी इस ख्यात० के लिये आवश्यक जानकारी और आधार-सामग्री एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया था। क्योकि तब से ही वह राजपूतो की सब ही प्रमुख जातियो और खापो का इतिहास लिखना चाहता था। विगत० लिखने की योजना बन जाने के बाद उसने मारवाड सम्बन्धी लेखन काय को समुचित रूपेण उन दोनो मे विभक्त कर दिया था। परन्तु अन्य राजपूत जातियो के सन्दभ मे उसकी पूव योजना मे कोई परिवतन नही किया गया। अत अपनी इस ख्यात० मे नैणसी ने उन राजपूत जातियो, उनकी खापो और सम्बन्धित राजघरानो के इतिहास के साथ ही सर्दभित राज्यो के भूगोल की ओर भी बहुत-कुछ ध्यान दिया है।

परन्तु विगत० मे वर्णित मारवाड के परगनो के ब्यौरेवार विस्तृत भौगोलिक विवेचन की तुलना मे ख्यात० मे दिये गये विभिन्न राज्यो की यह भौगोलिक जानकारी अपेक्षाकृत बहुत ही सीमित और सक्षिप्त ही थी। उस राज्य विशेष के इतिहास को ठीक तरह से समझ सकने के लिये अत्यावश्यक भौगोलिक जानकारी देते हुए वहा की प्राकृतिक परिस्थितियो और विशिष्टताओ का वृतात लिख देना ही नैणसी को अभीष्ट था। अत वहाँ के शासकीय अन्तर्विभागो अथवा गावो आदि की ओर उसने कोई ध्यान नही दिया। यो निर्धारित सीमित लक्ष्य को ही ख्यात० मे यथासम्भव पूरा करने की नैणसी ने तदनुरूप उसकी योजना बनाई थी, अत उसी परिप्रेक्ष्य मे ख्यात० मे दिये गये भौगोलिक विवरणो की जाच की जानी चाहिए।

---

१ विगत०, १ पृ० ४८६, ५५२।

२ विगत०, २, पृ० २९ ३०, ३४९।

३ विगत०, १, पृ० ३०४ ५।

(क) सम्बन्धित राज्य क्षेत्रो की विस्तृत जानकारी

मुहणोत नैणसी की ख्यात० मे मेवाड, डूगरपुर, बासवाडा, देवलिया (प्रतापगढ), बूदी, सिरोही, ओरछा और जैसलमेर राज्यो केआकार-प्रकार आदि की विस्तृत भौगोलिक जानकारी दी है। आम्बेर राज्य की भी जानकारी दी है जो अति सक्षिप्त है।

नैणसी ने मेवाड राज्य की तत्कालीन सीमाओ का उल्लेख कर उनके अन्तगत स्थित प्रमुख नगरो की सूची दी है।[१] मुगल मनसब मे राणा अमरसिह और राजसिंह को प्राप्त जागीर के परगनो के नाम और उनकी रेख के आक द दिये है।[२] मेवाड के प्रमुख क्षेत्रो के नामकरण और वहा की भौगोलिक परि-स्थितियो का विवरण भी ख्यात० मे दिया है। उदयपुर के आस-पास १० मील तक का क्षेत्र 'गिरवा' कहलाता था।[३] इस प्रकार झाडोल, सलूम्बर, सेमारी और चावण्ड चारो क्षेत्रो मे प्रत्येक के आधीन ५६-५६ गाव थे। अत ये क्षेत्र चार छप्पन कहलाता था।[४]

ख्यात० मे मेवाड के पहाडो, विभिन्न उल्लेखनीय घाटियो, रास्तो और नदियो[५] का विवरण मिलता है। पहाडो के विवरणो मे उनमे और उनके आस-पास निवास करने वाली आदिवासी जातियो का भी उल्लेख किया गया है।[६] सारी प्रमुख घाटियो मे होकर गुजरने वाले रास्तो की उदयपुर नगर से दूरियाँ भी दी गयी हैं। जैसे देबारी की घाटी नगर से तीन कोस, घाणेराव का घाटा उदयपुर से कोस १९ वायव्य कोण मे कुम्भलमेरू के पास है।[७] मेवाड के दोनो केन्द्र स्थलो, उदयपुर और चित्तौड से आस-पास के अन्य प्रमुख नगरो की दूरी का विवरण भी दिया है। 'उदयपुर से चित्तौड २९ कोस, सोजत ४० कोस, मन्दसौर ५२ कोस और बूदी का गढ रणथम्भोर ४० कोस, नीमच १५ कोस आदि।[८]

ख्यात० मे डूगरपुर और बासवाडा राज्यो की सीमाओ का विवरण दिया गया है।[९] साथ ही इन राज्यो की सीमाओ मे बहने वाली नदियो और उनके बहने

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३८ ३९।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २८, ४८ ४९, ५२ ५३।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० ३६, ३२।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३६ ३७।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४५, ४७।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३५, ३६।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३७ ३८।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४०-४६।
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८६-८७, ८८।

की दिशा और माग मे पडने वाले स्थानो के नाम दिये है।[१] इसके अतिरिक्त देवलिया (प्रतापगढ) राज्य की सीमाओ का विवरण सक्षेप मे दिया गया है।[२] उस राज्य की जाखम और जाजावली नदियो का वृतात तथा उनके हानिकारक जल का उल्लेख किया गया है।[३] ख्यात० मे देवलिया क्षेत्र की प्रमुख फसलो और वहाँ पाये जाने वाले फलदार वृक्षो के नाम भी दिये है।[४]

ख्यात० मे बूदी की भौगोलिक स्थिति का विस्तृत विवरण दिया गया है। बूदी नगर का वृनात और बूदी से विभिन्न प्रमुख नगरो की दूरी की जानकारी दी गयी है। बूदी राज्य के आधीन गाँवो की सख्या और विभिन्न परगनो के आधीन गावो की सख्या भी दी गयी है। कुछ ही युगो पहले नव-स्थापित कोटा राज्य की स्थापना और बूदी राज्य के साथ उसके सभावित सम्बन्धो आदि का सकेत कर कोटा राज्य की भी कुछ जानकारी दी है।[५] मऊ नगर की तत्कालीन स्थिति पर प्रकाश डाला है। वहा की जमीन की किस्म, और निवास करने वाली रैय्यत का विवरण दिया गया है। मऊ के निकट के नगरो की जानकारी दी गयी है।[६] उसी सन्दभ मे गागरोन कस्बे और वहा के गागरोन गढ का विस्तृत वणन लिखा है। गागरोन के पूववर्ती शासक खीची घराने के वशज खीचियो के तब आधीन मऊ क्षेत्र की भी पर्याप्त जानकारी दी गयी है।[७]

सिरोही राज्य के सम्ब ध मे नैणसी ने जानकारी ब्यौरेवार दी है। प्राकृतिक व अन्य आधारो पर शासकीय विभाजनो का स्पष्ट उल्लेख कर सिरोही राज्य के परगनो के आधीन गावो की सख्या और गावो की नामावली दी गयी है। साथ ही सिरोही राज्य के सोलकियो तथा सब ही प्रकार के सासण गावो की सूचियाँ भी दी गयी है।[८] आम्बेर और ओरछा राज्यो सम्बन्धी जानकारी सक्षेप मे दी गयी है। आम्बेर राज्य के आम्बेर, अमृतसर (साभर), चाटस, द्यौसा और मौजाबाद आदि परगनो के आधीन गाँवो की सख्या दी गयी है।[९] इसी प्रकार ओरछा राज्य के आधीन सब ही परगनो के गावो की सख्या तथा प्रत्येक परगने

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८६ ८७ ८८।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ९४, ९५-९६।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ९४।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ९३, ९४।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ११३, १११, ११४-१५।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ प० ११३ १४, ११५ १६।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ११५ १६, २५६।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १७३ ८०।
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २८७।

की आमदनी के आँकडे, और ओरछा नगर से प्रत्येक परगना केन्द्र-नगर की दूरी की जानकारी दी गयी है।[१]

ख्यात० मे जैसलमेर राज्य के खडाले के आधीन गाँवो की सूची दी गयी है। वहाँ के तालाबो तथा प्रमुख फसलो का विवरण दिया गया है।[२] राणा चापा के बाद जसलमेर के रावल द्वारा राज्य विस्तार कर जैसलमेर के आधीन किये गये गाँवो की सूची दी गयी है।[३]

(ख) विभिन्न राज्यो आदि की राजनैतिक सीमाओ सम्बन्धी निर्देश

ख्यात० मे उदयपुर, डूगरपुर, बाँसवाडा, देवलिया (प्रतापगढ), बूदी, सिरोही, ओरछा आदि राज्यो की राजनैतिक सीमाओ सम्बन्धी पर्याप्त सुस्पष्ट जानकारी मिलती है। उसी के आधार पर उन राज्यो की तत्कालीन राजनैतिक सीमाओ का प्रामाणिक रूप से सही निर्धारण किया जा सकता है।

१६१५ ई० मे राणा अमरसिंह द्वारा मुगल आधीनता स्वीकार करने के बाद शाही मनसब मे उसे प्राप्त जागीर का विवरण ख्यात० मे दिया गया है। साथ ही कौन सा परगना कब तागीर कर लिया गया उसका भी उसमे उल्लेख है।[४] इसी प्रकार १६५८ ई० मे मुगल बादशाह औरगजेब की ओर से महाराणा राजसिंह को दी गयी जागीर की पूरी पूरी जानकारी दी गयी है, उसे प्रदान किये गये परगनो की सूची के साथ शाही कागजो म दर्ज उनकी रेख आदि के पूरे आँकडे दिये है।[५] यो इस विवरण से महाराणा अमरसिंह से महाराणा राजसिंह तक के सब ही महाराणाओ के काल की मेवाड की राजनैतिक सीमाओ को निश्चित-रूपेण जाना जा सकता है। १६५८ ई० मे डूगरपुर, बासवाडा और देवलिया (प्रतापगढ) के तीनो राज्यो को औरगजेब ने महाराणा राजसिंह की जागीर मे दे दिया था। मेवाड राज्य की सीमा वायव्य कोण मे उत्तर से बाईं तरफ मारवाड राज्य की सीमा से मिलती थी। उसके बाद अजमेर सरकार के आधीन खालसा के या अन्य परगने पडते थे। पूर्वी दिशा से लेकर दक्षिण तक मे बूदी, रामपुरा, देवलिया राज्य पडते थे। दक्षिण मे इनसे लगा हुआ मालवा सूबे के मन्दसौर सरकार का इलाका था, दक्षिण और नैऋत्य दिशाओ मे बाँसवाडा और डूगरपुर के राज्य पडते थे। डूंगरपुर से उत्तर मे ईडर का राठोड राज्य

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १२७ २८।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ४, ५।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ६।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २६, ४८ ४६।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ५२ ५३, वीर विनोद०, २, पृ० ४२५ ३१।

पडता था। उधर गाँव छाली पूतली तक मेवाड की सीमा थी।[1]

ख्यात० मे डूँगरपुर, बाँसवाडा और देवलिया की तत्कालीन राजनैतिक सीमाओ का विवरण सक्षेप मे ही दिया है। तब डूगरपुर राज्य के अधिकार मे १७५० गाव थे और डूगरपुर राज्य उदयपुर की तरफ सोम नदी तक, ईडर की ओर गाँव पुजूरी तक और बासवाडा की तरफ माही नदी तक फैला हुआ था।[2] इसी प्रकार प्रारम्भ मे बासवाडा के अधिकार मे भी केवल १७५० गाँव ही थे, परन्तु १६६२ ई० तक बासवाडा के शासको ने पास-पडोस की बहुत-कुछ भूमि को अपने राज्य मे मिला लिया था, यो सिरोही के भीलो के और देवडो के १४० गावो पर, खल महीडो के १२ गाँवो पर, मगरा महीडो के १२ गाँवो पर बासवाडा राज्य का अधिकार हो गया। बाँसवाडा की सीमा डूगरपुर से पश्चिम की तरफ देवलिया से मिली हुई थी।[3] देवलिया (प्रतापगढ) राज्य क्षेत्र मे कुल ७०० गाँव थे और देवलिया की सीमा मन्दसौर, रतलाम, ब्लोर, जीहरण, धरियावद परगनो और बासवाडा राज्य से मिलती थी।[4]

ख्यात० मे सिरोही, बूदी और कोटा आदि चौहान राज्यो की सीमा सम्बन्धी सीधे निर्देश तो नही मिलते हैं। परन्तु उन राज्यो के तब आधीन रहे परगनो अथवा गावो की सूची मिलती है जिसके आधार पर सीमा का निर्धारण किया जा सकता है। ख्यात० मे १६५७-५८ ई० मे सिरोही राज्य के अधिकार क्षेत्र के परगनो तथा गाँवो की सूचियाँ दी गयी है जो तत्कालीन सिरोही राज्य की सीमा को स्पष्टतया निर्धारित करती है।[5] बूदी के शासक राव भावसिंह के अधिकार मे परगना बूदी, खटखड, पाटण और गौडो की लाखेरी थे।[6] कोटा राज्य के आधीन खेरावद, पलायता, सागोद, घाटी और गागरोन आदि परगने थे।[7]

इसी प्रकार ओरछा के शासक वीरसिंहदेव बुदेला के अधिकार मे जगहर, भाडेर, एलच, राठ, खटोला, पबई, पाडवारी, धमाणि, दमोह, सीलवनी, गढ पाहराद, चोकीगढ, उदयपुर कछउबा, करहर, दिहायलो, खुटहर, बेडछा, दभोवा, गोओद, लारगपुर और चौरागढ आदि परगने थे।[8] इस विवरण से

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३८-३९।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८६।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८८।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ९३-९४, ९५ ९६।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० १७३ ८०।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ११३।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० ११४ १५।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० १२७ २८।

बुदेला राज्य का तत्कालीन आकार-प्रकार भी सवथा स्पष्ट हो जाता है, और उसका सीमाकन भी सुगमता से किया जा सकता है।

(ग) प्राकृतिक रूप-रेखाएँ और आर्थिक परिस्थितिया

ख्यात० मे नैणसी ने राजस्थान के कई एक राज्यो के आधीन क्षेत्रो की प्राकृतिक रूप-रेखाओ का सविस्तार विवरण लिखा है, जिससे उन क्षेत्रो की तत्कालीन परिस्थितियो की, विशेषतया तब वहा के जगलो आदि की, पूरी जानकारी मिलती है। उस काल मे मुसलमान आक्रमणकारी युद्धो के अवसर पर इन दुरूह पहाडा और वहा के सघन-जगल बहुत सहायक होते थे। मेवाड राज्य की प्राकृतिक परिस्थितियो का तो विशद विवरण दिया गया है। उदयपुर नगर के निकट ही छोटा-सा माच्छला मगरा है तथा वायव्य पश्चिम दिशा मे सिसारमा का पहाड है।[1] राणा उदयसिंह द्वारा निर्मित उदयसागर के चारो ओर भी पहाड है।[2] उदयपुर से १० मील पर स्थित एकलिग मदिर भी चारो ओर पहाडो से घिरा हुआ है।[3]

जीलवाडा और रीछोड के मध्य अमजमाल का पवत है, जिसकी लम्बाई १० मील है। केलवा और बाघोर के आगे घाटा गाँव के निकट भोरड का मगरा है, जो उत्तर से दक्षिण तक १० मील लम्बा है। उदयपुर से ३५ मील पर समीचा गाव है और उसके आगे १४ मील लम्बा मछावला मेरू है। मछावला के बाद क्रमश बरवाडा, घासेर और पिण्डर झाप पवत है। घासेर और पिण्डर झाप के बीच झासनाला है तथा उससे आगे खमण का पहाड है जिसकी लम्बाई उत्तर-दक्षिण ४ मील है। उसके बाद ईसवाल का मगरा है। यह पवत गिरवा के पहाडो से जा लगा है। घाणेराव से ५ मील पर कुभलमेर पवत है जो ३० मील के क्षेत्र मे फैला हुआ है। सादडी, राणपुर और सेवाडी तक इसका फैलाव है। सेवाडी के आगे राहग का पहाड है जिसकी लम्बाई ३२ मील और चौडाई ३० मील है। उसके आस-पास २५ गॉव बसते थे। वह सिरोही के सरणुवा पहाड से जा लगा है। कुहाडिया नाले के दाहिनी ओर जरगा का पहाड है। उसके एक ओर केलवाडा और दक्षिण मे रोहिडा गॉव है, रोहिडा से १४ मील आगे तक नाहेसर और भाडेर के पहाड है।[4]

ईडर की ओर गगादास की सादडी के पहाड हैं। छाली-पूतली और दरोल-

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३२-३३।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३४।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३४।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४०-४२।

करोल के पहाड ईडर से १४ मील पर है। डूगरपुर और देवगदाधर के बीच जवास के पहाड है।[1]

छप्पन, चावण्ड, जवास और जावर के बीच तथा उदयपुर से ३४ मील पर पीपलदडी और सीरोड के पहाड हैं। धरियावद के पश्चिम मे मेवल के मगरे है। बाठरडा और सलूम्बर के मध्य भी बडे पहाड है। उदयपुर से १० मील पश्चिम की ओर सिगडिया नामक बडा पहाड है। उदयपुर से ६ मील उत्तर मे धार का पहाड है।[2] कोठारिया से ५० मील पूव चित्तौड और चित्तौड से २ मील पर अखण के बडे पहाड हैं।[3]

यो ख्यात० मे अरावली पर्वत श्रेणियो का विस्तृत विवरण दिया है। इस समय मे जब आधुनिक मानचित्रो जैसे कोई चित्रण सुलभ नही थे, इस समूचे क्षेत्र का यह विस्तत ब्यौरेवार विवरण लिखकर नैणसी ने इस बात को स्पष्टतया प्रमाणित कर दिया है कि इस समूचे क्षेत्र के प्राकृतिक भूगोल की नैणसी को कितनी विशद और सूक्ष्मतम जानकारी थी। यही नही उसने ख्यात० मे पहाडो की तत्कालीन स्थिति, वहा निवास करने वाली जातियो तथा पहाडो के आस-पास बसने वाले गाँवो तथा वहा की मुख्य फसलो आदि का भी बहुत-कुछ उल्लेख किया है। इसी से ज्ञात होता है कि तब इन पहाडी क्षेत्रो मे घना जगल था। आम आदि पेडो का सवत्र बाहुल्य था। वहाँ अधिकतर भील-जाति के लोग ही निवास करते थे और गेहूँ, चावल और चना ही वहाँ की मुख्य फसलें थी।[4]

ख्यात० मे अरावली पर्वत श्रेणियो की जानकारी के अतिरिक्त पहाडी क्षेत्र की प्रमुख दुर्गम घाटियो का भी विवरण दिया गया है। उदयपुर से ६ मील पर देबारी की घाटी थी और १४ मील पर केवडा की नाल। उदयपुर से ८ मील दक्षिण मे और चावण्ड के पहाडी मार्ग के पूव और आग्नेय कोण के बीच जावर की नाल थी। मुगल आक्रमणो के समय मे मेवाड के शासक इस क्षेत्र मे ही आश्रय लेते थे। उदयपुर से ६ मील ईशान कोण मे खमणोर का घाटा था। मारवाड की ओर जाने के लिये सायरा के घाटे मे होकर गुजरना पडता था। मानपुरा का घाटा सारण के उत्तर मे है।[5]

ख्यात० मे तत्कालीन मेवाड के दोनो प्रमुख तालाबो का भी विवरण दिया

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४३।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४३।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४४।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४० ४४।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० ३५-३६।

है। पीछोला तालाब का निर्माण राणा लाखा के शासनकाल मे किसी बनजारे ने करवाया था। इसी तालाब की पाल पर राणा उदयसिंह ने अपने महल बनवाये थे। माछला और सिसारमा पहाडो का पानी इस तालाब मे आता है। इस तालाब से तब सिंचाई भी होती थी। नगर के लोग भी पीने के लिए इसी के पानी को काम मे लेते थे।[१] उस क्षेत्र के दूसरे तालाब उदयसागर का निर्माण राणा उदयसिंह ने १५६३-६४ ई० मे करवाया था। यह उदयपुर से ६ मील पूर्व मे है। इसमे गोघूदा और कुभलमेर के पहाडो का पानी आता है। इन्ही पहाडो से बेडच नदी भी निकलती है जो उदयसागर मे जा मिलती है। इस तालाब की पाल १००० फीट लम्बी और ५०० फीट चौडी है तथा १४० फीट ऊँची है। महाराणा जगतसिंह ने यहा महल बनवाये थे।[२]

मेवाड के पहाडो से निकलने वाली तथा मेवाड क्षेत्र मे होकर बहने वाली प्रमुख नदियो का भी उल्लेख ख्यात० मे किया गया है। गोघूदा और कुभलमेर के पहाडो से बेडच नदी निकलती है।[३] बरवाड और जरगा के पहाडो से बर और बनास नदियो का उद्गम है।[४] देवलिया के पहाडो से जाखम और जाजावली नदियाँ निकलती हैं।[५] भैसरोड के पास होकर चम्बल नदी निकलती है।[६] माही नदी बाँसवाडा से ६ मील पूव मे तथा डूगरपुर से २० मील पर बहती है। माही नदी माडू के पहाडो से निकलती है।[७]

ख्यात० मे बूदी राज्य की प्राकृतिक रूप-रेखाओ का भी सक्षिप्त विवरण ही है। बूदी नगर पहाड से सटा हुआ बसा है। राजमहल पहाड के ढाल पर बने हुए हैं, जहाँ पानी का पूणतया अभाव था एव नीचे पहाड से लगे हुए बूदी शहर से ही पानी लाते है। इस पहाड पर वृक्ष बहुत थे और तलेटी मे पर्याप्त पानी था।[८] इसी प्रकार हाडोती क्षेत्र का मऊ नगर भी एक छोटी-सी पहाडी पर बसा हुआ था। आगे की ओर के ७०० गाँव तो समभूमि मे थे और पीछे की तरफ के ७४० गाव पहाडो व वृक्षो से घिरे हुए थे।[९] पुन बूदी से ६० मील और कोटा से २० मील दूरी पर स्थित गागरोन का विशाल दुर्ग भी पर्वत

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३४, ३२-३३।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३४, ३५।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० ३५।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४१, ४७।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६४।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४५।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८६, ८७।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ११३।
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ११३ १४।

पर ही बना हुआ है। कालीसिंध नदी इसी दुग के पीछे की ओर बहती है।[1] ख्यात० मे हाडोती क्षेत्र मे बहने वाली चम्बल, कालीसिंध, पार और पूडण नदियो का उल्लेख है।[2]

ख्यात० से तत्कालीन राजस्थान के राज्यो, परगनो आदि की आर्थिक परिस्थितियो की भी थोडी बहुत जानकारी मिलती है। मेवाड राज्य की आय का प्रमुख साधन भोग (लगान) ही था। मेवाड मे गेहूँ, चना, मक्का, उडद और चावल मुख्य फसले थी।[3] पहाडी क्षेत्र मे गेहूँ, चना और चावल मुख्य रूप से पैदा होते थे।[4] इन विभिन्न फसलो की पैदावार का तीसरा हिस्सा भोग (लगान) के रूप मे राज्य को देना पडता था। साथ ही अन्य लागे भी देनी पडती थी, जिसके कारण पदावार का लगभग ५०% भाग राज्य के खजाने मे पहुँच जाता था। अत निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सामान्य रैय्यत की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नही थी।[5]

देवलिया (प्रतापगढ) राज्य की मुख्य फसले गेहूँ, उडद, चावल, गन्ना आदि थी। आम और महुवा भी तब वहा बहुतायत से थे।[6]

ख्यात० मे जैसलमेर राज्य के आय के स्रोतो की जानकारी दी गयी है। जैसलमेर राज्य की प्रजा से सामान्यतया खरीफ की फसल पर पैदावार का चौथा और रबी की फसल पर पैदावार का पाचवा हिस्सा भोग (लगान) के रूप मे लिया जाता था। ब्राह्मणो से उपज का पाँचवा भाग ही लिया जाता था।[7] इसके अतिरिक्त 'माल रो बाब' (माल पर कर) कस्बे के व्यापारियो से लिया जाता था।[8]

इसके अनिरिक्त दीवाली होली के मागलिक त्यौहारो पर गुड के नाम से भेट ली जाती थी, क्योकि अन्यत्र सेवारत राजपूत मुसलमान सब ही तब अपने इस देश मे आते थे। जैसलमेर राज्य की सीमा मे होकर गुजरने वाले सब ही प्रकार के माल पर 'दाण तुलावट' (तुलाई पर सायर महसूल) वसूल किया जाता था। यो उस राह से रेशम, मजीठ, घी, खारक-छुहारा, नारियल, रुई,

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ११५।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ११६-१७।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४६।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४२, ४३।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठाम), १, पृ० ३६।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६४।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ८।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ७। कस्बा के महाजनो से प्रति घर ८ दुगाणी ली जाती थी।

मोम, फिटकडी, लाख से रगी हुई लोवडियाँ (ऊनी वस्त्र) और किराना से लदे हुए ऊँट, घोडे गुजरत थे, जिन पर यह सायर महसूल लिया जाता था। यदि उनका कोई माल उस राज्य-क्षेत्र मे बिक जाता था, तो उसके वजन के आधार पर अलग कर लिया जाता था।[1]

ख्यात० मे साचोर परगन की तत्कालीन आर्थिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है। साचोर नगर मे पानी की कमी थी। दुग मे एक ही कुआँ था, जिसमे भी पानी नही था। नगर मे एक बावडी थी, उसका पानी क्षारयुक्त था, फिर भी अधिकाश लोग इसी बावडी का पानी पीते थे। राव बल्लू ने नगर से २ मील दूर एक कुआ खुदवाया था। अत नगर के सम्पन्न लोग वाहनो पर लादकर उस कुएँ का पानी लाते थे। फिर भी नगर मे सभी जातियाँ निवास करती थी।[2]

माचोर नगर ही नही पूरे परगने मे भी पानी की कमी थी। साचोर का परगना निजल और एकफसली ही था। अत बाजरा, मोठ, मूग, तिल और कपास ही मुख्य फसलें थी। रबी की फसल तो नाम-मात्र की ही होती थी। २८ गावो मे कुल २०० कुएँ थे जिनसे और लूणी नदी की रेल से कुछ गेहूँ और चना सेंवज हो जाते थे।[3]

(घ) मानव भूगोल, राजनैतिक और आर्थिक कारणो से उसके बदलते प्रतिमान

नैणसी की ख्यात० मे प्रसगवश दी गयी जानकारियो से कई एक सम्बन्धित क्षेत्रो के मानव-भूगोल की भी विस्तृत जानकारी मिलती है। नैणसी के समय उदयपुर नगर की जनसख्या तब लगभग १,००,०००[4] रही होगी। इनमे से २००० घर महाजनो के, १५०० घर ब्राह्मणो के, ५०० घर कायस्थो (पचोली-भटनागर) के, ६० घर भोजग के, ५०० घर भीलो के, ५००० घर मोहिलवाडिय लोगो के, १५०० घर राजपूतो के और ९००० घर पवन जातीय लोगो के थे।[5]

इसी प्रकार ख्यात० मे साचोर नगर मे निवास करने वाली जातियो की भी जानकारी दी गयी है। साचोर मे महाजन (ओसवाल, श्रीमाल), ब्राह्मण (श्रीमाली), राजपूत, सकना (तुक), दर्जी, मोची, तेली, स्वणकार, पीजारा, सूत्रधार, छीपा, धोबी, कुम्हार, रगरेज, भोजग, माली, लुहार, गन्धव, ढेढ और

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २ पृ० ७८।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २२७ २९।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २२८।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३३ पर कुल २०,००० घरो का उल्लेख है। प्रति घर औसत ५ व्यक्ति के अनुमान से ही यह जनसख्या निर्धारित की गयी है।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३३-३४।

भील जातियाँ निवास करती थी। यो व्यवसायिक दृष्टि से साचोर नगर आत्म-निर्भर था।[1]

ख्यात० मे दिये गये विवरणो से इस बात की भी जानकारी मिलती है कि किसी क्षेत्र विशेष मे प्रारभ मे कौन-सी जातियाँ निवास करती थी तथा उस पर किस जाति विशेष अथवा राजपूत जाति की विशिष्ट शाखा का अधिकार रहा था। कालान्तर मे किस जाति अथवा राजपूतो की किस खाप ने उस क्षेत्र पर अधिकार किया आदि की भी जानकारी मिलती है, यद्यपि उस क्षेत्र विशेष पर अधिकार करने आदि की तिथि या सवत नही दिये गये है।

ख्यात० मे वर्णित है कि गुहिल और सीसोदिया राजवश का मेवाड मे प्रभुत्व स्थापित हो जाने के बाद भी राणा उदयसिह के समय तक गिरवा क्षेत्र मे देवडा (चौहान) और छप्पन क्षेत्र मे छप्पनिया राठोडो का प्रभाव था। राणा उदयसिह ने उदयपुर नगर बसाने के बाद इन दोनो शाखाओ का दमन करना प्रारम्भ किया। महाराणा प्रताप के समय तक इनका पूरी तरह दमन कर दिया जा चुका था। अत इस क्षेत्र से देवडा और छप्पनिया राठोडो की शाखा के अधिकाश लोगो को अन्यत्र भाग जाना पडा और इस क्षेत्र पर सीसोदियो का पूर्ण एकाधिपत्य स्थापित हो गया।[2]

वागड (डूगपुरर-बाँसवाडा) पर पहले भीलो का अधिकार था। रावल समरसी (सामतसिह)[3] ने चौरासीमल को मारकर वागड पर अधिकार कर लिया था। तदनन्तर इस क्षेत्र मे गुहिल वशीय शाखा का प्रभुत्व और प्रसार हो गया।[4] इसी प्रकार देवलिया (प्रतापगढ़) पर मेरो का अधिकार था। सर्वप्रथम राणा मोकल के पुत्र खीवा ने तेजमाल की सादडी पर अधिकार किया था। मोकल की मृत्यु के बाद महाराणा कुम्भा और खीवा के मध्य मनमुटाव प्रारम्भ हो गया और खीवा विद्रोही हो गया। खीवा की मृत्यु के बाद उसके पुत्र सूरजमल का भी महाराणा से विरोध रहा। सूरजमल की मृत्यु के बाद उसके पौत्र बाघ ने मेवाड को सहयोग दिया और मेवाड पक्ष से बहादुरशाह के विरुद्ध लडता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था। अत तदनन्तर उसके पुत्र रायसिह को कुछ गाँव मेवाड की ओर से जागीर मे मिले थे। इसी रायसिह के पुत्र बीका ने

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २२८ २६।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३२, ३६।

३ ओझा (डूगरपुर०, पृ० ३८-३६,३५) के अनुसार वागड राज्य का वास्तविक सस्थापक मेवाड के शासक क्षेमसिह का ज्येष्ठ पुत्र सामतसिह था और उसका ११८६ ई० के पूव वागड पर अधिकार हो गया था। नैणसी द्वारा ख्यात० (प्रतिष्ठान, १, प० ७६-८२) मे दिये गये नाम 'रावल समरसी' का ओझा (डूगरपुर०, पृ० ३६) ने सही पाठ 'समरसी' (सामतसिह) माना है।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ७६ ८३।

मेरो को मारकर देवलिया पर अधिकार कर स्वतन्त्र देवलिया (प्रतापगढ) राज्य की स्थापना की।[1]

बूदी मे तब मीणा जाति के लोग रहते थे। उस समय बागा का पुत्र देवा हाडा भैसरोड मे था। वही से आक्रमण कर उसने मीणो को पराजित कर बूदी पर अधिकार किया और यो बूदी पर हाडा चौहानो के राज्य की स्थापना हुई।[2]

खेड पर भी पहले गुहिलो का शासन था और वहा गुहिल राजा प्रतापसी राज्य करता था। राव आस्थान ने पाली पर अधिकार जमाने के बाद खेड के शासक प्रतापसी को धोखे से मारकर खेड पर भी आधिपत्य जमा लिया। तब गुहिल खेड छोडकर पहले बरियाहेडा और जैसलमेर गये। कुछ समय जैसलमेर रहने के बाद अन्त मे वे सोरठ चले गये।[3]

इसी प्रकार नैणसी ने अपनी ख्यात० मे यत्र-तत्र अनेको आदिम जातियो तथा विभिन्न राजपूतो के समय समय पर स्थानातरण और वहा राजपूतो की अन्य खॉपो के आधिपत्य का उल्लेख किया है, जिससे राजस्थान प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रो के बदलते हुए मानव-भूगोल की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है जिसके फलस्वरूप क्षेत्रीय इतिहास मे अनेको उल्लेखनीय नये मोड आये थे। रूण और जागलू के साखला परमारो[4] विभिन्न क्षेत्रो के सोलकी घरानो[5], खीची चौहानो[6] तथा मोहिल चौहानो[7] आदि के जो ऐतिहासिक विवरण नैणसी ने दिये है वे इस दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

ख्यात० मे वर्णित काल मे अधिकतर राज्य क्षेत्रो मे भी पूर्वकाल से रह रहे आदि निवासियो सम्बन्धी मानव-भूगोल मे भी अनेको महत्त्वपूण बहुत से फेरफार हुए थे, जिनकी भी प्रामाणिक जानकारी नैणसी ने अपनी इस ख्यात० मे सहज रूप से अनेको प्रसगो मे यत्र-तत्र दी है। जैसे डूगरपुर गलियाकोट आदि क्षेत्रो के भूमियो और भीलो से छीनकर वहा सामतसी का बागड राज्य स्थापित करना[8], मेवाड राज्य के अन्तर्गत मेवल क्षेत्र और उसी के पास ही कामडल क्षत्र के मेरो का वहॉ से निकालकर उनके स्थान पर महाराणा राजसिंह का अनेक

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ९० ९३।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ९७-१०१।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३३४-३५, २, प० २७६ ७९।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ३३७ ३९, ३४४ ५०, ३५३-५४।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २६२ ६३, ५३, १३२, २८० ८३।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २५०-५३, २५५-५६।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १५३ ६६, १६० ६६।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८१ ८५।

खापो के सीसोदिया राजपूतो को उनकी बसी समेत बसाना[1], देवलिया परगने मे स्थित मेरो के राज्य पर देवलिया के राव बीका का आधिपत्य और वहाँ अपने नये स्वाधीन राज्य की स्थापना करना[2], और बूदी क्षेत्र मे मीणो के आधिपत्य को समाप्त कर हाडा देवा का वहाँ अपना राज्य स्थापित करना ।[3]

इस सारे विवेचन से यह सर्वथा स्पष्ट है कि नैणसी के ग्रन्थो मे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यो मे विभिन्न राज्य क्षेत्रो के बदलते हुए मानव-भूगोल का बहुत ही सटीक स्पष्ट चित्रण मिलता है । उन ग्रन्थो मे दी गयी अनेकानेक ऐतिहासिक घटनाओ के विवरणो से नैणसी मे विद्यमान मानवीय भावनाएँ और उसकी सहृदयता भी स्पष्ट हो जाती है ।

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४५-४६ ।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६३-६४ ।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६७-१०० ।

अध्याय ६

नैणसी और राजपूती राज-तन्त्र

१ विभिन्न राजपूत राजवश और उनकी खाँपे, उनके पारस्परिक सम्बन्ध

राजस्थान के प्राय सब ही प्रमुख राजवशो की कालातर मे अनेकानेक खाँपो का उद्भव हुआ, उनका विस्तार बढता गया, जिससे उनमे से अधिकाश का कम-ज्यादा भू-भाग पर अधिकार होने से राज्य विशेष की अथवा क्षेत्रीय राजनीति आदि मे उनका प्रभाव स्पष्ट हो जाता था। अत मध्यकालीन राजपूत राज तन्त्र मे इन विभिन्न खाँपो का अपना विशेष महत्त्व था, जिससे उनके पारस्परिक सम्बन्धो का अध्ययन अत्यावश्यक हो जाता है। नैणसी के ग्रथो मे प्राप्य विवरणो से राजस्थान के इन विभिन्न राजपूत राजवश, उनकी खापो और उनके पारस्परिक सम्बन्धो पर प्रकाश पडता है।

मेवाड मे गुहिलोतो का शासन था। इसी गुहिलोत राजवश से रावल और राणा शाखाओ का क्रमश उदय हुआ। प्रारम्भ मे रावल रतनसिह के शासनकाल मे १३०३ ई० के चित्तौड के प्रथम साके तक चित्तौड पर रावल शाखा का राज्य रहा और सन् १३३६ ई० मे या उसके बाद चित्तौड पर राणा हमीर का आधिपत्य हो जाने के बाद राणा शाखा (जो सीसोदिया कहलाये) के राज्य की चित्तौड मे स्थापना हुई। गुहिलो की रावल और राणा शाखाओ के पारस्परिक कौटुम्बिक सम्बन्धो को स्पष्ट करने के लिए नैणसी ने तब ज्ञात उनकी पूर्वापर वशावलियाँ दी है।[1]

चित्तौड मे तब तक शासन कर रही रावल शाखा का राजघराना चित्तौड के प्रथम साके के समय हुए युद्धो मे पूरा मर खुटा था, जिससे राणा शाखा के पराक्रमी नवयुवा वीर हमीर ने क्रमश अपनी शक्ति निर्बाध बढाई और उपयुक्त अवसर से लाभ उठाकर चित्तौड पर अधिकार कर लिया। यो उसने मेवाड के शासको के रूप मे चित्तौड पर गुहिलो की राणा शाखा का आधिपत्य स्थापित

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १२ १५।

कर सीसोदिया राजवश की स्थापना की, जो आगे कोई छ शताब्दी तक मेवाड पर शासन करती रही।

परन्तु चित्तौड के पदच्युत शासक रावल समरसी (सामतसी) ने डूगरपुर-बासवाडा क्षेत्र मे वागड राज्य की स्थापना की और इस प्रकार मेवाड के रावल राजवश की इस अलग आहाडा खाप का उदय हुआ। सन् १५२७ ई० मे रावल उदयसिंह की मृत्यु के बाद वागड राज्य दो अलग राज्यो—डूगरपुर आर वासवाडा मे विभक्त हो गया। इन दोनो राज्यो पर आहाडा खाप का ही राज्य था। यद्यपि एक अलग राज्य वागड की स्थापना हो गयी, परन्तु यहा के शासक अपने-आपको मेवाड का सेवक ही मानते थे।[१] मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद अवश्य ही इन दोनो राज्यो के शासको ने मुगल सेवा स्वीकार कर ली थी। नैणसी ने इन दोनो आहाडा राजघरानो के विशेष वृत्त नही दिये है, परन्तु जो बात उसने चौहान रावत मान सावलदासोत की लिखी है,[२] उससे यह स्पष्ट है कि इन दोनो आहाडा राजघरानो मे और उनके साथ मेवाड के सीसोदिया घरान के साथ आपसी सम्बन्ध अच्छे थे और आवश्यक होने पर एक-दूसरे की सहायता भी करते रहते थे।

परन्तु मेवाड के सीसोदिया राजघरान के पश्चात्कालीन वशजो के सम्बन्ध राज्यारूढ राणाओ से सदैव सौहादपूण नही होते थे, जिससे मेवाड के राजघरान मे बारबार गह कलह उठ खडा होता था, जो मेवाड की शक्ति और प्रतिष्ठा के लिए हानिकारक ही प्रमाणित होता था। राणा मोकल का छोटा बेटा खीवा राणा मोकल के जीवनकाल मे सादडी मे जाकर रहने लगा था। राणा कुभा के शासन काल मे ही उसने स्वतन्त्र होने का प्रयत्न किया। फलस्वरूप कुभा और खीवा के मध्य निरन्तर सघष चलता रहा था।[३] राणा रायमल के सम्य खीवा के पुत्र सूरजमल ने भी राणा से निरन्तर द्वेष रखा और राणा के क्षेत्र पर अधिकार बनाये रखा था। साथ ही उसने स्वतन्त्र शासक के रूप मे अपने अधिकार वाले क्षेत्र मे से चारणो को सासण मे गाँव देना भी प्रारभ कर दिया था। सूरजमल का भी मेवाड के महाराणा से निरन्तर सघष चलता रहा था।[४] अन्त मे सूरजमल के पुत्र बीका न मेवाड के साथ मधुर सम्बन्ध कायम किये और हाडी राणी कमवती के सहयोग से जागीर प्राप्त कर ली।[५] बीका ने ही देवलिया पर अधिकार जमाया। रावत हरिसिंह के पूव तक देवलिया के स्वामी

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ७०।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ७४-७८।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ६१।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ६१ ६२।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ६१-६२।

राणा की ही आधीनता मे रहते थे ।[१] रावत हरिसिंह शाही मनसबदार हो गया और उसके साथ ही तब तक निरन्तर चली आ रही मेवाड के राणा की आधीनता समाप्त हो गयी ।[२]

मेवाड के सीसोदिया राजवश की ही एक शाखा चन्द्रावत है, जिसने मालवा-मेवाड के सधि क्षेत्र मे सवथा अलग रामपुरा राज्य की स्थापना की । सीसोदे के राणा राहप से कोई छ सात पीढी बाद हुए राणा भुवनसी के पुत्र चादा के वशज ही चन्द्रावत कहलाते है । कालान्तर मे जब राणा राजवश चित्तौड मे राज्यारूढ होकर मेवाड पर राज्य करने लगा तब मेवाड के तत्कालीन राणा, सभवत खेता के समय मे चन्द्रावतो को आतरी क्षेत्र जागीर के रूप मे दिया था । ईसा की १५वी सदी के प्रारम्भ मे शिवा चद्रावत ने अपनी शक्ति बढाई और मालवा के सुलतानो का प्रश्रय पाकर वह स्वतत्र भौमिया के रूप मे रहने लगे । राव शिवा चन्द्रावत के वशज राव रायमल को राणा कुभा ने दबाकर पुन सेवा स्वीकार करने को बाध्य किया ।[३] चित्तौड के तीसरे साके के समय रामपुरा पर मुगल सेना ने अधिकार कर लिया तब राव दुर्गा को पुन मेवाड से अलग होकर मुगल सम्राट् अकबर का मनसबदार बनना पडा और चन्द्रावत खाँप के आधीन रामपुरा पुन एक स्वतत्र राज्य बन गया ।[४]

मारवाड के राठोड राजवश की दो ही प्रमुख खापो का नैणसी के ग्रन्थो मे कुछ उल्लेख मिलता है । राव जोधा के पुत्र बीका से बीकावत खाप का प्रचलन हुआ और वरसिंह-दूदा से मेडतिया ।[५]

राव जोधा ने अपने पुत्र बीका को जागलु क्षेत्र दिया था । यहीं पर उसने अपने नाम से बीकानेर का निर्माण कर स्वतत्र राज्य की स्थापना की थी ।[६] इस प्रकार मालदेव के पूर्व तक बीका के वशज बीकानेर पर और दूदा के वशज मेडता पर स्वतत्र रूप से शासन करते रहे थे । यद्यपि तब भी जोधपुर के शासक से इन दोनो राज्यो के साथ यदा-कदा छोटे-मोटे बखेडे होते रहते थे, परन्तु उनमे उत्कट आपसी विरोध तब ही उठा, जब राव मालदेव ने इन दोनो खापो की स्वतत्र सत्ता को समाप्त करना चाहा । अत उसने दो बार मेडता[७]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० ९२ ९७ ।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० ९७ ।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २४७ ४८, ओझा० उदयपुर, २, पृ० १०६३ ।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २४८ ४९, अकबरनामा (अ० अ०), २, पृ० ४६५, ३ पृ० ५१८, आईन० (अ० अ०), १, पृ० ४५९, जहाँगीर०, पृ० ५६ ५७ ।

५ विगत०, १, पृ० ३८ ।

६ विगत०, १, पृ० ३९ दयाल०, २, पृ० १ ३३ ।

७ विगत० १, पृ० ४३, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ६८, ७६ ।

पर आक्रमण कर, उस पर अधिकार कर लिया और इसी प्रकार बीकानेर पर भी आक्रमण[1] कर उसे परास्त किया, परन्तु मेडता के राव वीरमदेव और बीकानेर के राव कल्याणमल ने शेरशाह के सहयोग से पुन अपने-अपने क्षेत्रो पर अधिकार कर लिया ।[2]

मालदेव और बीकानेर मे विरोध तब भी चलता रहा, परन्तु कोई सीधी टक्कर नही हुई । परन्तु राव मालदेव ने बुधवार, मार्च २१, १५५४ ई० (वैशाख वदि २, १६१० वि०) को मेडता पर पुन आक्रमण किया, परन्तु उसे पराजित होकर लौटना पडा ।[3] अन्त मे बुधवार, जनवरी २७, १५५७ ई० को मेडता पर अन्तिम बार आक्रमण कर राव मालदेव ने मेडतियो के स्वतत्र राज्य का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया ।[4]

मालदेव की मृत्यु और राजस्थान पर मुगल आधिपत्य हो जाने के बाद परिस्थितियाँ ही पूरी तरह से बदल गयी । मेडतियो के स्वतत्र राज्य की पुन स्थापना नही हुई और बीकानेर से सीधे सघष की सभावनाएँ भी नही रह गयी थी ।

नैणसी ने अपनी ख्यात० मे आम्बेर के कछवाहो की विस्तृत वशावलिया दी हैं जिनमे उन कछवाहो की दो अन्य उल्लेखनीय खाँपो, नरूको और शेखावतो की तत्कालीन पूरी पीढिया दी है[5] परन्तु उन सबका अलग अलग विस्तृत ब्यौरा नही दिया है कि उनके आपसी सम्बन्धो आदि की स्पष्ट जानकारी मिल सके ।

इस प्रकार नैणसी ने ख्यात० मे भाटियो की सब ही शाखाओ की सक्षिप्त जानकारी और उन सब विभिन्न खापो की विस्तत वशावलिया दी है ।[6] उन वशावलियो के साथ दी गयी टिप्पणियो से उन व्यक्तियो के व्यक्तिगत सम्बन्धो और सदर्भित समकालीन इतिहास की कुछ जानकारी अवश्य मिलती है । परन्तु उन खापो के साथ जैसलमेर राजवश के आपसी सम्बन्धो की पर्याप्त जानकारी नही मिलती है कि उनके आधार पर तत्सम्बन्धी कोई सुस्पष्ट स्थापनाएँ की जा सके ।

---

१ विगत० १, प० ४४ राठोडा री ख्यात (ग्रथ स० ७२) प० ६६ ख, जोधपुर ख्यात०, १, प० ६६ ।

२ विगत० १ प० ५६, जोधपुर ख्यात०, १, प० ७२, ७६ ७७ ।

३ विगत०, २, प० ६५ ।

४ विगत०, १, प० ६०, ६५, २, प० ५८, ६०, जोधपुर ख्यात०, १, प० ७६ ।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २६६, ३१३ ३२ ।

६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ३१-३४, ७६, ७७ ७८, ७६ ८२, ८८ ६१, १११, ११२-५२, १५३-६५, १६६ २०१ ।

२ शासकत्व सम्बन्धी राजपूती मान्यताएँ तथा उत्तराधिकार विषयक राजपूत सहिता

प्राचीन काल मे राज्य-शासन तत्र के अनेक प्रकार प्रचलित थे। काशी-प्रसाद जायसवाल ने अपने सुविख्यात ग्रन्थ 'हिन्दू राज्य तत्र' मे प्राचीन भारत मे हि दू शासन-प्रणालियो के तत्कालीन अनेकानेक स्वरूपो का विवरण लिखा है[1] जिनमे से 'जनतत्रीय (अर्थात् प्रजातत्रीय) शासन' भी विशेषरूपेण उल्लेख-नीय है जिसकी चर्चा पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' मे 'जनपद' कहे जाने वाले 'गण' या 'सघ' के अन्तर्गत की है।[2] पर तु कालान्तर मे तो राजाओ द्वारा शासित 'राज्य शासन' ही एकमात्र 'राज्य-तन्त्र' रह गया था, जिसमे काल-क्रम मे सारे अधिकार राजा मे ही अधिकाधिक केन्द्रित होते गये, जिससे राजा स्वच्छन्द हो गये। उनकी सत्ता की सीमाएँ अधिकतर उनकी निजी मनोवृत्ति, भावनाओ तथा परिस्थितियो को देखते हुए स्वय द्वारा व्यवहृत बन्धनो पर ही निभर रहती थी। तब 'एक तत्र शासन होते हुए भी राजा परोपकारी और प्रजाहितैषी था।'

किन्तु जब मध्यकाल मे भारत अनेक छोटे-बडे राज्यो मे विभक्त हो गया, तब निरन्तर पारस्परिक युद्ध होने लगे। गौरीशकर ओझा के अनुसार तब तो 'राजा शनै -शनै अधिक स्वतन्त्र और उच्छ खल होते गये। देश के शासन की ओर उनका अधिक ध्यान न रहा। प्रजा की आवाज की सुनवायी कम हाने लगी।'[3] यही नही, राज्य शासन मे सेना तथा उसके सचालक सरदारो और जागीरदारो का महत्त्व और बोलबाला बढता गया, और राजा के साथ ही राज्य मे सरदारो और जागीरदारो की शक्ति बढ गयी और वे राज्यादेशो की उपेक्षा करने अथवा राजकीय मामलो मे अधिकाधिक हस्तक्षेप भी करने लगे। काला-न्तर मे जब राजस्थान पर मुगल आधिपत्य स्थापित हो गया तब राजस्थान के राज तन्त्र मे मुगल सम्राटो या उनके अधिकारियो का हस्तक्षेप अनेक रूप मे सामने आने लगा।

इसी पृष्ठभूमि मे नैणसी कालीन राजस्थान की शासन-व्यवस्था आदि की चर्चा की जानी चाहिए। पुन राजस्थान मे तब सवत्र राजपूत राजा राज्य कर रहे थे, एव इस सदभ मे यह सारा विवेचन उन्ही के राज्यतत्र पर ही केन्द्रित करना अनिवाय हो जाता है।

---

१ हिन्दू राज्य तन्त्र, जायसवाल कृत, दसवा प्रकरण, १६२७।

२ हिन्दू राज्य तन्त्र, जायसवाल कृत, अध्याय ४६, इण्डिया एज नोन टु पाणिनि, वासुदेवशरण अग्रवाल कृत, अध्याय ७, परिच्छेद ५-६, १६५३।

३ मध्यकालीन भारतीय सस्कृति गौरीशकर ओझा कृत, पृ० १५२, १६१, १६२८ ई०।

नैणसी के ग्रन्थो मे शासकत्व सम्बन्धी राजपूत मान्यताओ के बारे मे कोई सीधी निश्चित जानकारी नही मिलती है। मेवाड के शासक को एकलिंगजी (ईश्वर) का प्रतिनिधि माना जाता था। मारवाड मे पाली के ब्राह्मणो ने राठोडो को अपनी रक्षाथ आमन्त्रित किया था और बाद मे राठोडो ने मारवाड मे शक्ति के आधार पर राठोड राज्य की स्थापना की थी। इसी प्रकार अन्य बूदी, आम्बेर और जसलमेर आदि पर भी विभिन्न राजवशो ने शक्ति के आधार पर ही राज्य की स्थापना की थी।

राजपूत राज्यो मे उत्तराधिकार विषयक कोई लिखित या सुनिश्चित् सहिता नही थी, सैद्धान्तिक मान्यताएँ ही थी। जिसमे भी परिस्थितियो के अनुसार हेर फेर हो ही जाते थे। उत्तराधिकार विषयक साधारण तथा प्रचलित परम्पराएँ निम्नानुसार कही जा सकती थी।

शासक की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र ही गद्दी पर बैठता था।[1]

अपने पिता के जीवन काल मे ही यदि ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु हो जाती तो उस मृत ज्येष्ठ पुत्र का पुत्र (अर्थात् शासक का पौत्र) गद्दी पर बैठता था। रामपुरा के राव चादा के उत्तराधिकारी पुत्र नगजी की अपने पिता के जीवनकाल मे ही मृत्यु हो गयी, तब नगजी का पुत्र दूदा उत्तराधिकारी बना था।[2]

यदि ज्येष्ठ पुत्र की अपने पिता के जीवनकाल मे ही नि सन्तान मृत्यु हो जाती तो शासक ज्येष्ठ पुत्र के बाद से छोटे भाई को उत्तराधिकारी बनाता था। मेवाड के महाराणा साँगा के उत्तराधिकारी पुत्र भोजराज की अपने पिता के जीवनकाल मे ही नि सतान मृत्यु हो जाने पर उसका छोटा भाई रतनसिह उत्तराधिकारी बना था।[3]

यदि शासक के मरने के समय उसकी पत्नी गभवती हो तो उसकी मत्युपरान्त जन्मे उसके पुत्र को ही उत्तराधिकारी बनाया जाता था।[4] परन्तु इस स्थिति मे प्राय अनेको झझटें होती और षड्यन्त्र-प्रपच होने लगते थे।

यदि शासक की नि सन्तान मृत्यु हो जाती तो उसका छोटा भाई उत्तराधिकारी बनता था। मेवाड के महाराणा रतनसिह की नि सन्तान मृत्यु हो जाने पर उसका छोटा भाई विक्रमादित्य उत्तराधिकारी बना था।[5]

इसी प्रकार उत्तराधिकार-अधिकार ज्येष्ठता के आधार पर उसी घराने के

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १५३, २, प० १०, ३३३, विगत०, १, पृ० ३९, शाहजहाँ०, प० १५०।

२ ख्यात० ३, प० २४८ ४९।

३ ख्यात० १, प० १९, २०,२१, ओझा उदयपुर०, पृ० ३५८, ३५९।

४ ख्यात० १, प० १४१।

५ ख्यात० १, प० २०, १०९।

निकटतम वशज को ही उत्तराधिकारी माना जाता था, परन्तु कई परिस्थितियो मे उत्तराधिकार की इस परम्परा का उल्लघन भी होता था, जैसे—

यदि शासक समझता कि उसका ज्येष्ठ पुत्र योग्य नही है और राज्य की सुरक्षा नही कर पावेगा तो अपने छोटे पुत्र को भी उत्तराधिकारी बना देता था, और ज्येष्ठ पुत्र को जीवन यापन के लिए समुचित जागीर प्रदान कर दी जाती थी।[1]

यदि शासक किसी कारणवश अपने ज्येष्ठ और उत्तराधिकारी पुत्र से सन्तुष्ट नही होता था, तो वह किसी भी अन्य पुत्र को उत्तराधिकारी बना दता था।

पर तु जो राजपूत शासक मुगल मनसबदार हो गये थे उन्हे अपने उत्तराधिकार विषयक मामलो मे तत्कालीन मुगल बादशाह से मान्यता भी प्राप्त करनी पडती थी। पुन यदि कोई शासक अपन ज्येष्ठ पुत्र के अतिरिक्त अन्य किसी पुत्र, भाई अथवा भाई के पुत्र को उत्तराधिकारी बनाना चाहता तो उसे अपने सामन्तो के समक्ष उसकी घोषणा कर उनकी स्वीकृति प्राप्त करनी पडती थी, कि बाद मे उसके निणय के विरोध मे सामन्त नही उठ खडे हो।[2]

राजपूत राज्यो मे प्राय वहा के प्रमुख जागीरदार विशिष्ट शक्तिशाली रहे हैं।[3] यद्यपि सामन्त प्राय शासक द्वारा मनोनीत उत्तराधिकारी को ही मान्य कर उसे शासक स्वीकार कर लेते थे। परन्तु यदि सामन्त चाहते तो शासक द्वारा मनोनीत उत्तराधिकारी को अस्वीकार कर शासक के ज्येष्ठ अथवा अन्य पुत्र को सिंहासनारूढ करवा सकते थे।[4] इसी प्रकार यदि नवसिंहासनारूढ शासक को राज्य की सुरक्षा और गरिमा के अनुकूल नही पाते तो उसे हटाकर उसके स्थान पर वश के निकटतम व्यक्ति को उत्तराधिकारी बना देते थे।[5] इस प्रकार सिंहासनारूढ होने के लिए राज्य के अधिकाश प्रभावशील शक्तिशाली सामन्तो की सहमति आवश्यक होती थी।

राजपूत राज्यो मे उत्तराधिकार के लिए राजकीय वश की ज्येष्ठता की परम्परा को ही अधिकतर मान्य किया जाता था, परन्तु विशेष परिस्थितियो मे उक्त नियम का कदाचित् पूर्णतया पालन नही किया जाता था। कभी कभी शासको अथवा सामन्तो की स्वाथपूण नीति के कारण परम्परागत नियमो का उल्लघन अवश्य हुआ है। प्रत्येक राज्य का उत्तराधिकार वही के राजवश तक

---

१ ख्यात०, १, पृ० १३ १४।
२ ख्यात०, १, पृ० १३७।
३ ख्यात०, २, पृ० १०४, ३८, १, प० १६२।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १८, ३, पृ० ८० ८१, जोधपुर ख्यात०, १, प० १४७ १८७।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ३७ १, प० ५१, ११०।

ही सीमित रखने के नियम का पूरी कडाई के साथ पालन किया जाता था। उस राज्य के सस्थापक के व्यक्ति को ही उत्तराधिकारी बनाया जा सकता था अन्य को नही। उदाहरणाथ—राव लाखा का वशज राव सुरताण सिरोही का शासक था। डूगरोत वश का बीजा देवडा उसे पदच्युत कर देने के बाद स्वय शासक बनना चाहता था। तब देवडा समरा ने उत्तर दिया कि अब तक राव लाखा के सन्तानो मे बीस व्यक्ति जीवित है। जब तक एक-दो वष का बालक भी उसके वश का ही तब तक तुम्हारी क्या मजाल जो तू गद्दी पर बैठे।[1] इसी तरह जब बासवाडा का रावल मानसिह नि सन्तान मर गया, तब समय का लाभ उठाकर चौहान मानसिह बासवाडा का शासक बन बैठा, तब रावल सहसमल ने कहा—'बाँसवाडा के स्वामी होने वाले तुम कौन व्यक्ति होते हो ?' इसी प्रकार बासवाडा के अन्य सामन्तो ने उसे कहा कि 'हम बाँसवाडा के स्वामी कभी नही रहे। हम तो बासवाडा की रक्षा करने वाले है।' अत अन्तत बासवाडा राज्य के सस्थापक जगमाल के बडे लडके किशनसिह के पौत्र उग्रसेन को बासवाडा की राजगद्दी पर बैठाया।[2]

मुगल शासको ने ज्येष्ठता के आधार पर राजपूत उत्तराधिकार की परम्परा के उल्लघन मे सहयोग दिया क्योकि जो भी राजपूत राजा मुगल मनसबदार बन गये थे, मुगल सम्राटो ने अनिवायरूपेण ज्येष्ठता के आधार पर उनके उत्तराधिकार क्रमनिर्धारण को कभी भी मान्य नही किया।

बूदी के राव सुजन का छोटा पुत्र भोज अपने पिता के जीवनकाल मे ही मुगल दरबार मे पहुँचने पर बादशाह का कृपापात्र बन गया, एव मुगल बादशाह अकबर ने भी भोज को बूदी का उत्तराधिकारी बना लिया। इससे दोनो भाइयो दूदा और भोज मे सघष प्रारम्भ हो गया था। दूदा के मरने के बाद ही भोज बूदी मे जा सका था।[3]

मोटा राजा उदयसिह की मृत्यु के बाद उसके छोटे पुत्र सूरसिह को अकबर ने जोधपुर का उत्तराधिकारी बनाया।[4] क्योकि सूरसिह पहले भी अकबर की सेवा मे रह चुका था और मोटा राजा भी यही चाहता था। उदयसिह के ज्येष्ठ पुत्र सकतसिह को 'राव' की उपाधि दी जा कर शाही मनसब और अलग जागीर दी गयी थी।[5] इसी प्रकार शाहजहा ने गजसिह के बडे पुत्र अमरसिह को अलग

१ ख्यात०, १, पृ० १४४ ४५।
२ ख्यात०, १, पृ० ७४।
३ विगत०, १, पृ० ११०-१२ २६६-७२, मा० उ०, (हिदी), १, पृ० ४४३।
४ विगत०, १, पृ० ९२ ९३, वीरविनोद, २, पृ० ८१७ रेऊ, मारवाड०, १, पृ० १८१।
५ विगत०, १, पृ० ११०-१२, २६६-७२ मा० उ०, (हिदी), १, पृ० ४४३।

मनसब दे दिया और छोटे पुत्र जसवतसिंह को जोधपुर का उत्तराधिकारी बनाया।[1]

यो वश परम्परागत नियम का जब कभी उल्लघन हुआ, तब उत्तराधिकारी के एक से अधिक प्रतिद्वन्द्वी हो जाते थे, जिससे राज्यो मे उत्तराधिकार युद्ध और दलबन्दी प्रारभ हो जाती जिसके कारण राज्य की शक्ति का ह्रास और आर्थिक स्थिति भी बिगड जाती थी।

३ राजपूत राज्यो का सामन्ती सगठन और उसमे राजपूतो से इतर जातियो का स्थान

मुहणोत नैणसी के ग्रन्थो मे १६वी सदी के पूर्व राजपूत राज्यो के सामन्ती सगठन के निश्चित स्वरूप पर कोई उल्लेखनीय प्रकाश नही पडता है। अत पूर्व के साम`ती सगठन के बारे मे सम्भावना ही व्यक्त की जा सकती है। राव मल्लीनाथ ने अपने अधिकार क्षेत्र का कुछ भाग भाई-बट के रूप मे अपने भाइयो मे बाट दिया था।[2] इसी प्रकार राव जोधा ने भी अधिकाश भू-भाग अपने पुत्रो और भाइयो मे बाँट दिया था।[3] पुन जोधा के समय मे उसके भाई-बेटो ने मिलकर कई एक ऐसे क्षेत्र जीते, जिन पर पहले पूववर्ती किसी भी राठोड शासक का कोई अधिकार नही था। ऐसे क्षेत्र जोधा न उन क्षेत्रो के विजेताओ के ही अधिकार मे रहने दिये।[4] यही व्यवस्था मेवाड और जैसलमेर मे भी प्रचलित थी।[5] पूगल के स्वामी राव केल्हण के पौत्र और चाचा के पुत्र रणधीर को भाईबट मे देरावर मिला था। इसी प्रकार राव वैरसल के पुत्र जागायत को भाई बट मे केहरोर मिला था। राव शेखा केल्हणोत भाटी के वशजो मे सारा क्षेत्र बँट गया था।[6] इससे यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि राजपूत शासक अपने अधिकार क्षेत्र का बहुत-कुछ भाग जागीर के रूप मे अपने भाइयो और पुत्रो मे बाट देते थे।[7] इसके बदले मे ये भाई और पुत्र भी राज्य की सेवा करते थे। इसके अतिरिक्त अन्य वशीय राजपूत और अन्य जातियो के लोगो को भी शासकीय सेवा के बदले मे जागीरे दी जाती थी। परन्तु तब प्राय यह सारी कायवाही

---

१ पादशाहनामा लाहोरी कृत, २, प० ६७ शाहजहा, प० १५०।

२ विगत०, १, पृ० १६।

३ विगत०, १, पृ० ३८-४०।

४ विगत०, १, पृ० ३९ ख्यात० (वणशूर), प० २४ क २४ ख।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १०२ १०४।

६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ११७, १२०, ११० ११, १२१, १२४।

७ जोधपुर ख्यात० (१, प० ६८) के अनुसार 'पहली धरती भाई बटे बठियोड़ी थी, सो पातसाही मालदे बणाई।

मौखिक आदेशो की ही होती थी। परन्तु राव मालदेव के शासनकाल मे इस सामन्ती शासन सगठन मे फरफार होने लगे और राज्य के केन्द्रीय शासन को अधिक सबल बनाने के प्रयत्न हुए। यही नही मालदेव के समय मे जागीरो के पट्टे देने की परम्परा भी प्रारम्भ हो गयी थी।[१]

नैणसी के ग्रथो मे सोलहवी और सत्रहवी सदी के राजपूत राज्यो के सामन्ती सगठन विषयक विस्तृत उल्लेख मिलते है। राव मालदेव के देहान्त के कुछ ही समय बाद जोधपुर पर मुगलो का आधिपत्य हो जाने के फलस्वरूप जोधपुर राज्य का अस्तित्व ही समाप्त हो गया था। यह स्थिति लगभग बीस वर्ष तक बनी रही। मोटा राजा उदयसिंह को जोधपुर दिये जाने पर ही इस राज्य की पुन स्थापना हुई। तब तक मुगल शासन की अधिकाश निम्नस्तरीय परम्पराएँ जोधपुर क्षेत्र मे भी लागू हो चुकी थी।[२] मुगल मनसबदार बन जाने के बाद मोटा राजा भी मुगल शासन-व्यवस्था से बहुत-कुछ परिचित हो चुका था, एव उसके तब नये सिरे से जोधपुर राज्य मे जो राज्य-शासन व्यवस्था स्थापित की, उसमे मुगल शासन का स्पष्ट प्रभाव झलकता है। इसी के फलस्वरूप तब तक भाई बट के स्थान पर पट्टा व्यवस्था ने निश्चित् रूप ग्रहण कर लिया था। तब सामन्तो और अन्य प्रशासकीय अधिकारियो को भी राज्य की सैनिक अथवा असैनिक सेवा के बदले मे राज्य की ओर से निश्चित् आय की जागीर का पट्टा प्रदान किया जाने लगा। पट्टे मे उल्लेखित गाव अथवा गाँवो का ही वह स्वामी होता था और उसको उसके बदले मे राज्य की सेवा करनी पडती थी। ये पट्टे वशानुगत नही होते थे। यह आवश्यक नही था कि पिता की मृत्यु के बाद पुत्र को भी उसी गाव या गावो का पट्टा दिया ही जावे, अथवा पिता के अधिकार मे रही जागीर की ही रेख की जागीर पुत्र को भी मिल जावे। यह सब राजा की इच्छा और परिस्थितियो पर निभर करता था।[३] सामान्यत राजा सामन्तो को जागीरें देने मे वशानुगत परम्परा को निभाता था। यो तो पिता के बाद पुत्र को भी जागीर का पट्टा मिलता रहता था।[४] नवीन पट्टा प्रदान करते समय पेशकश (भेट) नकद अथवा पशु (घोडे और ऊँट) अथवा दोनो ही पट्टादार की सामर्थ्यानुसार लिये जाते थे।[५]

---

१ विगत० (२, पृ० ६१) मे १५६० ई० मे मालदेव द्वारा राठोड जगमाल वीरमदेवोत को दिये गये पट्टे की प्रतिलिपि दी गयी है।

२ आईन० (अ० अ०), २, पृ० १०६।

३ देखिये बही०, पृ० १२५ २२७।

४ बही०, पृ०, १३१, १३५, १४६, १४६।

५ बही०, पृ० १५१, १५३, १६४, १७७, १७८, १७६, १८०, १८४, १६८, १६६, २०३।

पट्टा प्रदान करते समय प्रत्येक सामन्त के पट्टे मे सामन्त (पट्टादार) को सैनिक अथवा असैनिक किस प्रकार की सेवा करनी होगी, उसे पट्टे मे प्राप्त जागीर मे सिर्फ भू-राजस्व अथवा राजस्व (भू-राजस्व के अतिरिक्त माल, धासभारी, मेला, दाण आदि) का अधिकार होगा या नही, अपने जागीर क्षेत्र मे वह सासण दे सकेगा अथवा नही, उसे कितने घुडसवार शुतुर सवार (ओठी) अथवा सैनिको से राज्य की सेवा करनी होगी आदि बातो का स्पष्टीकरण भी कर दिया जाता था।[१] यो सामन्तो को राज्य की सेवा के बदले मे ही जागीर (पट्टा) दी जाती थी। परन्तु किसी कारण विशेष पर कुछ सामन्तो को राज्य की सेवा के बिना भी जागीर दी जाती थी।[२] राठोड जसकरण को महाराजा जसवतसिह ने १६६१ ई० मे जब वीचपुडी राहीण का पट्टा दिया था, तब वह बालक था अत तब उससे राज्य की सेवा नही ली गयी थी।[३] इसी प्रकार यदि साम त बहुत वृद्ध हो जाता था तो उसके स्थान पर उसके पुत्र को राज्य की सेवा करनी पडती थी।[४]

यदि कोई सामन्त अपने तब के पट्टे अथवा जागीर से सन्तुष्ट नही होता था तो वह सयत्न उसमे फेरबदल भी करवा सकता था।[५] इसी प्रकार यदि पट्टे की रेख उस जागीर की वास्तविक आय से बहुत अधिक होती तो सामन्त उस पट्टे मे उल्लिखित रेख मे कमी भी करवा सकता था।[६] कभी किसी सामन्त की रेख से कम जागीर दी जाती तो तलब राशि नकद दी जाती थी। साथ ही कभी-कभी जागीर प्रदान करने मे किसी कारणवश देरी होती थी तो उस सामन्त को जागीर मिलने तक नकद वेतन दिया जाता था।[७]

सामन्तो को राज्य की सीमाओ मे अथवा राज्य के बाहर भी आदेशानुसार सैनिक अथवा प्रशासनिक सेवा करनी पडती थी।[८] तब सैनिक सेवा ही महत्त्व-पूर्ण थी। अत पट्टे मे ही इस बात का भी उल्लेख रहता था कि कितने घुडसवारो अथवा शुतुर सवारो से राज्य (देश) मे अथवा राज्य के बाहर उसे

---

१ विगत०, २, पृ० २६५, ३३१-२, ३३३, ३३४, ३३७, ३३८ बही०, प० १३४, १८४, १६४, १६६, १६८, २०२, २२५, २२६, २२६, २३५।

२ बही०, पृ० २००।

३ बही०, पृ० १८४। इसी प्रकार के उल्लेख प० १८३ और १८७ पर भी हैं।

४ बही०, पृ० १६६, २११।

५ बही०, पृ० १६३, १६८।

६ बही०, पृ० १४४।

७ बही०, पृ० १७६, १८७, १६४, १३७। (बही०, प० १३७ पर 'रोजीनो ले छ' के स्थान पर सम्पादको ने भूल के कारण 'रोजी तोले छै' कर दिया है)।

८ बही०, पृ० १८८, २१५, २१६, २२२, २२३, २२५, २२६, २२७।

सेवा करनी होगी। कितनी रेख पर कितने घुडसवार अथवा शुतुर सवार रखने पडते थे, इन सम्बन्ध मे नैणसी के ग्रन्थो मे कही कोई स्पष्ट उल्लेख नही मिलते है। नैणसी के समकालीन ग्रन्थ बही० मे जो उल्लेख मिलते है, उनसे भी यही निष्कर्ष निकलता है कि तब रेख के आधार पर घुडसवार अथवा शुतुर सवार आदि के निर्धारण के सम्बन्ध मे कोई एक निश्चित् नियम नही था। उदाहरणाथ—४०,२०० रेख पर ५० घुडसवार, ५,००० रेख पर ६ घुड-सवार, १,४०० रेख पर २ घुडसवार, ६०० रेख पर १ घुडसवार, ३०० रेख पर १ घुडसवार, ७०० रेख पर ५ शुतुर सवार रखने के उल्लेख मिलते है।[1] अत यही कहा जा सकता है कि पट्टा देते समय ही सवारो की सख्या का निर्धारण शासक की इच्छानुसार कर दिया जाता था।

सामन्तो को प्राय ठाकुर ही कहा जाता था।[2] कुछ विशिष्ट सामन्तो को शासक की ओर से 'राव' अथवा 'रावत' की उपाधि दी जाती थी।[3] साथ ही उन्हे सिरो पाव आदि से भी सम्मानित किया जाता था।[4] प्राय जागीर का वितरण शासक अपने ही वश के लोगो मे करता था।[5] इसके साथ ही उनके साथ वैवाहिक सम्बन्धो अथवा अन्य कारणो से भी कुछेक अन्य वशीय राजपूतो को भी जागीरें (पट्टा) प्रदान की जाती थी।[6] भाटी राम पचायणोत राव चन्द्रसेन, जोधपुर, का श्वसुर था। अत राम के पुत्र सुरताँण को मेडता का गाँव राजोर पट्टे मे प्राप्त हुआ था। इसी प्रकार भाटी गोविन्ददास पचायणोत ने अपनी पुत्री सुजानदे का विवाह मारवाड के राजा सूरसिंह के साथ किया था। अतएव तदनन्तर गोविन्ददास का पुत्र जोगीदास जोधपुर चला गया और बीझ-वाडिया सहित चार गाँव उसे पट्टे मे प्राप्त हुए।[7] जागीर मे वृद्धि सामन्तो के शासक से सम्बन्ध, उनके वश और उनकी योग्यता पर भी निभर करती थी। राज्य दरबार मे विभिन्न सामन्तो के बैठने की निश्चित् व्यवस्था भी राजा सूर-सिंह के शासनकाल मे निर्धारित कर दी गयी थी। मारवाड मे दरबार के वक्त रिणमल के वशज दायी ओर और जोधा के वशज बायी ओर बैठते थे।[8]

---

१ बही०, प० १५२, २२५, २२६।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ६५, ८० २, प० १०६, ३, प० ८० ८१, विगत०, २, प० २६४, ३०२, ३०५।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २७, ६२, ६६।

४ बही०, पृ० १६६, २२१।

५ बही०, प० १२५-२११।

६ बही०, प० २११, २१३ २३०, २३४-३७।

७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ११६ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ६१, १४६।

८ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० १४० बही०, पृ० ७६।

मुगल काल मे अधिकाश राजपूत शासक मुगल मनसबदार हो गय थे । अत शासको को बादशाहो की सेवा म रहकर उनके आदशानुसार विभिन्न युद्धाभियानो मे जाना पडना था। साम त ही शासक की सैनिक शक्ति का आधार-स्तम्भ होते थ। अत उन्हे भी अपन शासक के साथ रहकर यत्र तत्र जाना पडता था।[१] अत ऐसी स्थिति मे जब भी कोई सामन्त अपनी जागीर मे जाना चाहता था तो उसे अपने शासक की स्वीकृति लेनी पडती थी। पूव स्वीकृति के बिना यदि कोई साम त अपनी जागीर मे चला जाता तो उसका पट्टा तागीर अथवा खालसा भी कर लिया जाता था।[२] इसी प्रकार शासक के आदेशानुसार यदि कोई सामन्त अपनी जागीर से गन्तव्य स्थान पर नही पहुँचता था तब भी उसकी जागीर को खालसे कर लिया जाता था।[३] साथ ही राज्य के शत्रु को कोई भी सामन्त अपनी जागीर मे सरक्षण नही दे सकता था। ऐसा करने पर तथा चोरो को सरक्षण देने पर भी उसकी जागीर जब्त कर ली जाती थी।[४]

यो पट्टादारी व्यवस्था के कारण सामन्तो को अपने स्वामी के प्रति पूणतया स्वामीभक्त रहते हुए अनुशासनबद्ध होना पडता था। तथापि कई एक कुछ राजवशीय ही नही कुछ अन्य बडे साम त भी बहुत शक्तिशाली होते थे। क्योकि उनकी सहमति से ही शासक राजगद्दी पर बैठने थे। अपने राज्यो के उत्तराधिकार मे ये सामन्त विशेष रूप से निर्णायक होते थे।[५] परन्तु मुगल मनसब प्राप्त राजपूत शासको के उत्तराधिकार का अन्तिम निर्णय मुगल बादशाह स्वय करता था। अत मुगल आधिपत्य स्थापना के बाद इस सदर्भ मे भी सामन्तो का महत्त्व और शक्ति बहुत कम हो गयी थी।

सामन्तो का सामूहिक सैन्य बल ही राज्य की सैनिक शक्ति का मूल आधार-स्तम्भ होता था। अपने शासक के विभिन्न युद्धाभियानो मे सहयोग देकर वे राज्य मे शान्ति-व्यवस्था बनाये रखने मे सहायक होते थे। पुन अपने शासक के सैनिक अधिकारियो के रूप मे मुगल साम्राज्य के विस्तार मे भी इनका उल्लेखनीय सहयोग होता था।

इस प्रकार यद्यपि प्राय सब ही राजपूत राज्यो के सामन्ती सगठन मे अधिकाश राजपूत होते थे, उसमे अन्य जातियो को भी पर्याप्त स्थान प्राप्त थे। मुहणोत नैणसी के ग्रन्थो मे ऐसे अनेको उल्लेख प्रसगानुसार प्राप्त होते थे। राजपूत

---

१ विगत०, १, प० १७६ ८२ २ प० ५७, ५८।
२ वही०, प० १३३, १६६, २१०।
३ वही०, प० १२७, १८६, १६२, १६६, २०८, २१७।
४ वही०, प० १६१, १६८।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ६३, ८७ ३, प० ८० ८१।

राज्यो के देश दीवान, बख्शी, परगना हाकिम, कानूनगो, वकील आदि विभिन्न प्रशासनिक पदो पर अनको ओसवाला, भण्डारी और सघवी आदि वैश्य वर्गीय, कायस्थ, ब्राह्मण और मुसलमान आदि जातियो के लोगो के भी कायरत होने के बहुत से उल्लेख मिलते है।

राजा सूरसिंह के समय मे भण्डारी माना और जोशी देवदत्त देश-दीवान के पद पर रहे थे।[1] महाराजा गजसिंह के समय मे ओसवाल जाति का मुहणोत जयमल जैसावत सर्वोच्च प्रशासकीय पद 'देश दीवान' तक पहुँच गया था।[2] उसका पुत्र नैणसी भी महाराजा जसवन्तसिंह के समय मे ही विभिन्न परगनो का हाकिम रहा और अन्त मे उसे 'देश-दीवान' पद प्राप्त हुआ था।[3] नैणसी का भाई सुन्दरदास को तन-दीवान[4] का पद मिला था, तथा नरसिंहदास और आसकरण तथा नैणसी का पुत्र करमसी परगना हाकिम के पदो पर रहे थे।[5] सघवी पृथ्वीमल रेवाडी का हाकिम नियुक्त हुआ था।[6]

महाराजा जसवन्तसिंह के समय मे पचोली केशरीसिंह को क्रमश बख्शी और 'देश दीवान' के पद पर नियुक्त किया गया था।[7] पचोली मनोहरदास वकील[8] के पद पर, पचोली नरसिंहदास[9] और करमचद[10] कानूनगो के पद पर और कई पचोली दफ्तरी[11] के पद पर थे। इसी प्रकार महाराजा जसवतसिंह के समय मे मीया फरासत[12] 'देश-दीवान' के पद (१६४५-१६४८, १६५०-१६५८ ई० तक) पर, ख्वाजा अगर[13] तन-दीवान के पद पर (मई १६४६ से मार्च १६४७ ई० तक) रहा था।

४ राजपूतो के सैनिक-व्यवस्था और उनकी युद्ध-प्रणाली

राजपूतो की सैन्य सगठन का आधार स्तम्भ राज्य के छोटे बडे सभी जागीर-

---

१ विगत० १, पृ० १०२ १०३।
२ देखिए अध्याय—२।
३ देखिये अध्याय—२।
४ विगत०, १, प० १२६, १५६ बही० प० २७ जोधपुर ख्यात०, १, प० २५५।
५ विगत०, १ पृ० १२८।
६ विगत०, १ प० १२६।
७ जोधपुर ख्यात०, १, प० २५४।
८ विगत०, १, पृ० १५३, १५८ बही० प० ३।
९ विगत०, १, पृ० १६४ २, प० ३५६।
१० विगत०, २, प० ८६-८७।
११ विगत०, १, पृ० १८३।
१२ विगत०, १, प० १२६, २, प० ६२ जोधपुर ख्यात०, १, पृ० २५५।
१३ जोधपुर ख्यात०, १, प० २५४।

दार (पटटादार) होते थे। प्रत्येक जागीरदार जागीर के बदले म निश्चित सख्या म सैनिक रखते थे और आवश्यकता पडने पर राज्य की सेवा करते थे।[1] जागीर के अनुसार ही जागीरदारो को घुडसवार और शुतुर सवार रखने होते थे।[2]

इसके अतिरिक्त प्रत्यक परगना म भी राज्य की ओर से निश्चित् सेना रखी जाती थी। उक्त सेना का मूल काय परगना म शान्ति और व्यवस्था बनाये रखना था, परन्तु आवश्यकता पडने पर सैनिक अभियान मे भी उक्त सेना का उपयोग किया जाता था।[3]

इसके अतिरिक्त शासक के सीधे नियन्त्रण मे राज्य की अपनी अलग सेना भी रहती थी। उक्त सना राज्य के केन्द्र स्थान पर ही रहती थी। राज्य की इस सेना मे घुडसवार, हस्ति सेना, शुतुर सवार अथात ओठी, तोपची और पैदल सेना होती थी। सेना के प्रत्येक विभाग का अध्यक्ष होता था जिसे दरोगा अथवा मुशरिफ कहा जाता था। सैन्य-व्यवस्था का सम्पूण दायित्व बख्शी पर होता था। केन्द्रीय स्थाई सेना को नकद भुगतान किया जाता था।[4]

राजपूत सेना के मुख्यत चार भाग हस्ती सेना, घुडसवार, बन्दूकची, तोपची और पैदल थे।[5] प्राय सवार और पैदल सैनिक ही अधिक होते थे।[6] प्राय हाथियो का प्रयोग दुग के द्वार तोडने के लिए किया जाता था।[7]

इसके अतिरिक्त रेगिस्तानी क्षेत्रो मे आक्रमण, सुरक्षा व सुदूर सदेश भेजने आदि के लिए ऊँट सवार सेना भी रखी जाती थी। बन्दूक और तोप का प्रयोग १५२६ ई० के बाद ही प्रारम्भ हुआ था।[8]

युद्ध मे स्वय की रक्षा के लिए कवच और ढाल का प्रयोग किया जाता था।[9] साथ ही युद्ध के लिए तलवार[10], भाला[11], कटार[12], बन्दूकें, तोपें और डागर जत्र[13]

---

१ विगत० १, प० १३८ ३९।
२ विगत० २, प० ३३१, ३३२, ३३३ ३३४ ३३७ वही०, प० १५०, १५२।
३ विगत०, १ प० १४१ १४२ १३९।
४ वही० प० ५२, ५३ ६६, ८१ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १ प० ४ १२० जोधपुर ख्यात० २, प० १४७ ख्यात वशावली० (ग्रथ ७४), प० ५६ क।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ४ ८ कवित स० ३ १८५, २ प० २५५ २५८ वही० प० ४१, ५४ ७४।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ४५ कवित रावल अलु सेहदरा रो'—५ ६ कवित स० ४ २ प० २५५।
७ ख्यात० (प्रनिष्ठान), १ प० १२०
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान) २, प० १३२, २४८ १, प० ६१।
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ४८ ६५।
१० ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ६५।
११ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २८२।
१२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० १०९।
१३ ख्यात० (प्रतिष्ठान) २, पृ० ४८।

तथा तीर लडने के प्रमुख शस्त्र थे। युद्धाभियान के समय छोटी छोटी सैनिक टुकडियो के अलग-अलग सेनापति होते थे, जिन्हे सरदार कहा जाता था।[१] पर तु शासक स्वय ही सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त करता था। सभी सरदारो को उसी की आज्ञा का पालन करना पडता था।[२] परन्तु राज्य की सेना मे अधिकतर राज्य के आधीन सरदारो की अपनी अपनी टुकडिया होती थी, जिनका नेतृत्व उस जागीर का प्रमुख रावत, ठाकुर या उसी द्वारा नियुक्त उसका भाई-बेटा या कोई अन्य प्रभावशील अधिकारी होता था। यो तो ये सारी टुकडिया मूलत राजा अथवा उसके द्वारा नियुक्त मुख्य सेनापति के नियन्त्रण मे रहती थी। परन्तु ये विभिन्न टुकडिया प्राय उनके सेना नायको द्वारा अपनी खापो के लोगो की होने के कारण, उनमे प्राय अत्यावश्यक पूण सगठित एकता का अभाव पाया जाता था।

राजपूत प्राय खुले मैदान मे ही युद्ध करने पर अधिक महत्त्व देते थे, क्योकि उनका अधिकाश युद्ध शौय प्रदशन के लिए हुआ करता था।[३] युद्ध जीतने के लिए अत्यावश्यक फौजी दावपेचो अथवा सैन्य विन्यास कला की प्राय उपेक्षा ही होती थी, जिसके कारण युद्धो मे शूरवीरतापूण भयकर मारकाट के बाद भी पराजय का ही सामना करना पडता। ऐसे युद्ध मे राजपूत सेना एक खुले मैदान मे आ जाती थी। युद्ध मैदान मे सेना को विभिन्न टुकडियो के रूप मे व्यवस्थित किया जाता था, जिन्हे 'अणी' कहा जाता था। प्रत्येक अणी का अलग से सेनापति होता था।[४] खुले मदान के युद्ध मे युद्ध प्रारम्भ करन के पूव ढोल बजवाकर विपक्ष को युद्ध के लिए चुनौती दी जाती थी[५], और तब युद्ध प्रारभ कर दिया जाता था।

भारत मे मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद जब राजपूत शासक तथा उनकी सेनाएँ मुगल शाही सेना मे सम्मिलित हो गये, तब उन्होने भी मुगल युद्ध-प्रणाली तथा युद्ध मे तोपो के समुचित प्रयोग को अपना लिया जिससे उनकी परम्परागत युद्ध प्रणाली मे कुछ बदलाव अवश्य आया था, परन्तु सर्वोपरि मुगल सेनानायक नही होने पर प्राय ये बदलाव कम ही देख पडते थे।

प्रबल मुगल आक्रमणो का निरन्तर सामना न कर सकने की स्थिति का सामना करने पर राजपूतो ने छापा-मार युद्ध-प्रणाली अपनाना प्रारम्भ कर दिया था। अपेक्षतया अपनी सैनिक शक्ति कमजोर होने पर खुले मैदान मे युद्ध

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६२, १०६-७।
२ वही० पृ० ४०।
३ ख्यात०, २, पृ० ५५।
४ विगत०, १, पृ० ६७ २, पृ० २६६।
५ ख्यात०, २ पृ० १३२।

कर शत्रु पक्ष पर विजय पाना कठिन होने की स्थिति मे शत्रु के आक्रमण के पूव ही शासक ससैन्य पहाडो पर सुरक्षित स्थानो मे चले जाते थे। पहाडो मे रहते हुए ही अवमर पाकर शत्रु सेना पर छापे मारते थे। ऐसा युद्ध महाराणा प्रताप और राव चन्द्रसेन ने प्रारम्भ किया था।[1]

यद्यपि नैणसी ने इसका कही उल्लेख नही किया है, यहाँ इसी सन्दर्भ मे यह सकेत कर देना असगत नही होगा कि हल्दी घाटी के युद्ध के बाद से ही महाराणा प्रताप ने सर्वक्षार नीति (स्कच् ड अथ पालिसी) अर्थात मेवाड के समूचे समतल क्षेत्र के साथ ही साथ मुगलो द्वारा अधिकृत पहाडो क्षत्रो को भी पूरी तरह उजाड देने तथा वहा कोई खेती-बाडी नही होने देने की नीति अपनायी। मेवाड मे होकर निकलने वाला व्यापार-माग भी बन्द हो गया क्योकि माल लुट जाने लगा।[2]

इसी प्रकार किले मे रहकर रक्षात्मक युद्ध भी करते थे। बाहरी आक्रमण के समय यदि शत्रु दल अधिक शक्तिशाली होता तो ऐसी स्थिति मे खुले मैदान मे युद्ध करना अहितकर समझकर दुग के द्वार बन्द कर लिये जाते थे। परन्तु प्राय शत्रुपक्ष का घेरा अधिक समय तक रहता था और ऐसी स्थिति मे जब दुर्ग मे रसद का अभाव हो जाता था तब दुग-द्वार खोलकर, लडकर मरने का निर्णय करना पडता था। दुर्ग मे रहते हुए शत्रु के घेरे को परेशान करने के लिए किले की दीवारो से शत्रुपक्ष पर पत्थर भी फेंके जाते थे।[3] परन्तु आक्रमणकारी को यह दिखाने के लिए कि दुग मे रसद की कमी नही है, ग्राम सुअर के दूध की खीर वनवाकर पत्तलो पर लगवाकर बाहर फेंक दी जाती थी, ताकि आक्रमणकारी यह समझकर कि उनके पास सामान की कमी नही है, घेरा उठा लेवे।[4]

इन रक्षात्मक युद्ध मे प्राय राजपूतो की पराजय ही होती थी, क्योकि दुर्ग का घेरा अधिक समय तक रहता था और रसद का अभाव हो जाता था। ऐसी परिस्थितियो मे दुग के प्रवेश द्वार खोलकर लड-मरने के अतिरिक्त और कोई रास्ता नही रह जाता था। तब ऐसे युद्ध के पूव दुग की राजपूत औरतें जौहर करती थी और दूसरे दिन दुग के द्वार खोलकर सभी सैनिक लडकर अपने प्राण न्यौछावर कर देते थे।[5]

रात्रि-ग्राक्रमण—राजपूतो की युद्ध प्रणाली मे आकस्मिक रात्रि-आक्रमण

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० २१, ४० ४६ विगत० १ पृ० ६९ ७०, ५३६।
२ महाराणा प्रताप० पृ० ३८।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ५६ ६० ७३।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ६१।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ६० ६१।

को यदा-कदा अपनाया जाता था। ऐसे युद्ध को 'राती बाहो' कहा जाता था[१] रात्रि आक्रमण करने के लिए समूची सेना काम मे नही ली जाती थी। युद्ध मे निपुण और साहसी सनिको की ही सेना रात्रि-आक्रमण के लिए तयार की जाती थी और उस चुनी हुई सेना के साथ सेनापति स्वय भी साथ रहकर रात्रि म अचानक शत्रु सेना पर आक्रमण करता था।[२]

५ राजपूतो की जातियो अथवा खाँपो मे पारस्परिक विद्वेष, और राजघरानो अथवा कुटुम्ब मे 'वैर' की परम्परा, उनके दुष्परिणाम और हानिकारक प्रभाव

मुहणोत नैणसी की ख्यात० मे राजपूतो की जातियो अथवा उनकी खापो मे पारस्परिक वैर भावना के सैकडो उदाहरण मिलते हैं, जिससे राजपूत चरित्र का पता चलता है। राजपूत स्वभाव से ही स्वाभिमानी ही नही, प्राय अह-कारी भी होता था और यो वह अन्य को स्वय से हीन ही समझता था। उनके पारस्परिक विद्वेष का मूल कारण यही होता था। मेवाड के महाराणा कुभा ने षड्यन्त्र से राव रिणमल को मरवा दिया तो सीसोदिया-राठोडो म वैर हो गया।[३] राणा क्षेत्रसिह के समय मे चित्तौड का एक चारण बारहठ थाहरू बूदी लालसिह के पास गया था। तब आपसी चर्चा के समय लालसिह ने राणा के लिए कोई अपशब्द का प्रयोग किया। इस पर उक्त चारण ने आत्महत्या कर ली। इस घटना को लेकर हाडा-सीसोदिया वैर प्रारम्भ हो गया था।[४] सिरोही के राव सुरताण के साथ हुए युद्ध मे राणा उदयसिह का पुत्र जगमाल मारा गया तो देवडा (चौहान)। सीसोदिया वैर प्रारम्भ हो गया। दाताणी के इसी युद्ध मे रायसिह चन्द्रसेनोत के भी काम आने से देवडा-राठोड वर भी प्रारम्भ हो गया, जिस कारण जोधपुर के शासको ने बारम्बार सिरोही पर आक्रमण किये।[५] भैरवदास जैसावत और सूरमालण के मध्य जागीर की सीमा विवाद लेकर हुए झगडे मे भैरवदास मारा गया, तो दोनो कुटुम्बो के मध्य वैर प्रारम्भ हो गया।[६] इस प्रकार ख्यात० और विगत० मे राजपूतो की वैर परम्परा के अनेको उदाहरण मिलते है।

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २८८।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २८८ ८६, ३, पृ० १७।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ८, ११।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० ५६, वही० पृ० ११६।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १ पृ० २२ २४ विगत०, १ पृ० ७८, जोधपुर ख्यात०, १, पृ० ६३-६५ १३६ ३८।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० १७८।

वैर के परिणाम—वैर परम्परा के कारण राजपूत राज्यो को ही नही राजपूत घरानो को भी भारी हानि उठानी पडी। एक बार वैर हो जाने के बाद जब तक उसे दोनो मिलकर समाप्त नही कर देते, निरन्तर मनमुटाव और झगडा चलता ही रहता था। इन आपसी युद्धो के कारण दोनो जातिया अथवा राज्य शक्तिहीन होते गये थे। मेवाड के महाराणा कुभा ने राव रिणमल को षड्यन्त्र से मरवा दिया जिसके कारण सीसोदिया-राठोड वैर प्रारम्भ हो गया था। उसी वैर का बदला लेने के लिए जोधा ने चित्तौड पर आक्रमण किया था।[1] जैसलमेर के राव राणगदे भाटी को राव चूण्डा ने मारा था। राव केल्हण ने गद्दी पर बैठकर कहा कि 'राव राणगदे के कोई पुत्र नही है, अत उसके वैर का बदला मैं लूगा।'[2] यो भाटी राठोड वैर प्रारम्भ हो गया।

इसी प्रकार राजनैनिक सूझ बूझ के कारण यदि कोई शासक वैर का बदला नही लेता था तो उसके सम्बन्धी उस शासक से नाराज होकर अन्य शासक अथवा मुगल बादशाह के पास चले जाते थे। इससे उस शासक और राज्य की शक्ति तो कम होती ही थी साथ ही उनकी कमजोरियाँ भी शत्रु शासक को ज्ञात हो जाती थी। महाराणा उदयसिह का पुत्र जगमाल सिरोही के राव सुरताण के साथ हुए युद्ध मे मारा गया था। वैर परम्परा के अनुसार जगमाल के सौतेले भाई मेवाड के तत्कालीन महाराणा प्रताप को सिरोही पर आक्रमण करना चाहिए था, परन्तु महाराणा ने राव सुरताण के साथ झगडा न कर उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया। इस पर क्रोधित होकर जगमाल का सगा भाई सगर मुगल बादशाह की सेवा मे चला गया था।[3]

हिसार के फौजदार सारग खा के साथ युद्ध मे काधल मारा गया था। तब उसके वैर का बदला लेने के लिए राव बीका ने सारग खा के विरुद्ध आक्रमण की तैयारी की और राव जोधा को भी सहायतार्थ आमन्त्रित किया तब जोधा ने कहा कि 'काधल का वैर मैं लूगा।'[4]

भैरवदास जैसावत को राव सूजा ने सोजत का गाँव धवल जागीर मे दिया था और सूरमालण के पास चोपडा का पट्टा था। दोनो के मध्य सीमा विवाद को लेकर झगडा हुआ जिसमे भैरवदास मारा गया। सूरमालण वहाँ से भागकर महाराणा के क्षेत्र मे चला गया, फिर भी बाद मे आनन्द जैसावत ने सूरमालण पर आक्रमण कर उसे मारा।[5]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ९ १०, ११।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ११४ १५।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० २३ २४।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २१।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० १७८।

दो राजघरानो, जातियो अथवा खाँपो और कुटुम्बो के मध्य प्रारम्भ वैर के परिणामस्वरूप दोनो पक्षो मे वैर समाप्ति के पूव तक युद्ध होता रहता था। वैर की समाप्ति वैर प्रारम्भ करने वाले व्यक्ति को मारकर की जाती थी अथवा कभी कभी बिना युद्ध किये ववाहिक सम्ब ध स्थापित कर भी वैर समाप्त कर दिया जाता था।[1] यदा-कदा राज्य का शासक अथवा उस खाप का प्रमुख भी मध्यस्थ बनकर वैर का निपटारा कर देता था जो तदनन्तर मान्य किया जाता रहता था। अपने पुत्र नरा सूजावत और पोहकरण के राव खीवा के बीच के वैर का जोधपुर के राव सूजा ने ही अन्त किया था।[2]

राजपूतो मे वैर की स्वाभाविक परम्परा के कारण दो जातियो, खापो और राजघरानो के मध्य स्थायी रूप से कटुता उत्पन्न हो जाती थी जिससे राजघरानो, जातियो, खापो और कुटुम्बो के मध्य वैर का बदला लेने के लिए आये दिन आपसी युद्ध और झगडे हुआ करते थे।

६ राजपूत राज्य तथा मुसलमानी सत्ताएँ उनके आपसी राजनतिक तथा सामाजिक सम्बन्ध

नैणसी के ग्रन्थो से अकबर के पूर्व मुसलमान सत्ताधारियो के साथ राजपूतो के वैवाहिक सम्बन्धो के बारे मे साकेतिक उल्लेख ही मिलता है। इसके पूर्व तक राजपूत शासक मुसलमानो को विदेशी आक्रमणकारी ही मानते थे और उनके साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए तैयार नही थे। अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड, जालोर और सिवाणा दुर्गों पर आक्रमण किये थे और तत्कालीन शासको न उसका पूरा विरोध के साथ मुकाबला किया था।[3] मुसलमानो की धर्मांधतापूर्ण कट्टरता और दोनो की अलगावपूण नीति के कारण भी दिल्ली के सुलतान राजपूत राज्यो पर स्थायी आधिपत्य नही कर पाये।

अकबर के पूव अजमेर के अधिकारी हाजी खा के साथ राव मालदेव का वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुआ था।[4] राव मालदेव ने राजनैतिक कारण से अपनी कन्या का विवाह हाजी खा के साथ किया था और यह प्रथम हिन्दू महिला थी

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० १८१ जोधपुर ख्यात० १, प० १३७ ३८।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३ प० १०३ १४, विगत०, २, प० २८२ ८३।
३ विगत०, १ प० १५ २ प० २१५ उदभाण० (ग्र थ १००), प० २४ ख।
४ विगत० १ (पृ० १५२) मे मालदेव की एक लडकी कनकावती का विवाह गुजरात के सुलतान महमूद (द्वितीय) के साथ होने का उल्लेख है जो उदेभाण० (ग्र थ १००) प० २४ ख मे भी मिलता है। परन्तु गुजरात के सुलतानो सम्ब धी फारसी इतिहास ग्र थो से इसकी पुष्टि नही होती है, एव विश्वसनीय नही जान पडती है।

जिसे मुस्लिम धम स्वीकार करने के लिए बाध्य नही किया गया था।[1] इसी परम्परा से लाभ उठाकर अकबर ने आम्बेर के राजा भारमल के प्रस्ताव का लाभ उठाकर भारमल की कन्या के साथ विवाह कर राजपूतो के साथ सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने की सुनिश्चित् परम्परा प्रारम्भ की थी।[2] इसके साथ ही आम्बेर की सप्रभुसत्ता समाप्त हो गयी थी। भारमल को आम्बेर राज्य प्राप्त हो गया और उसके पुत्र तथा पौत्र मुगल मनसबदार बन गये।[3] इसके साथ ही राजपूत राज्यो के इतिहास मे एक नवीन अध्याय प्रारम्भ हुआ। मेवाड को छोडकर शेष राजपूत राजा शाही मनसबदार बन गये और उनमे से अधिकाश ने मुगल बादशाहो के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लिए। तदनन्तर यद्यपि वे अपने राज्यो के स्वतन्त्र शासक बने रहे, परन्तु सर्वोपरिता मुगल बादशाहो की स्थापित हो गयी थी। इसी कारण मुगल बादशाह की अन्तिम स्वीकृति पर ही प्रत्येक नवीन शासक राज्यारूढ होता था।

तब तक राजपूत शासको मे वैर भाव तथा राज्य विस्तार के लिए निरन्तर आपस मे झगडे होते थे। परन्तु बादशाह की सर्वोपरिता स्थापित हो जाने के बाद राज्य विस्तार के लिए होने वाले झगडे समाप्त हो गये, क्योकि उनके राज्य की सीमा मे घटा-बढी मनसब मे प्राप्त जागीर के आधार पर मुगल सम्राट के आदेशानुसार ही होती थी।[4] तदनन्तर इन सब ही राज्यो की सैनिक शक्ति का उपयोग मुगल साम्राज्य के विस्तार मे किया जाने लगा। राजपूत राज्य मे शान्ति स्थापित हो जाने के कारण वहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था मे सुधार सभव हो सका था। राजा सूरसिह के समय मे जोधपुर में मुगल प्रशासन पद्धति को अपनाया गया।[5] इसी प्रकार आम्बेर की प्रशासनिक पद्धति भी मुगल साम्राज्य के ही ढाँचे पर निर्धारित की गयी थी।

मेवाड ने प्रारम्भ से ही मुगलो की आधीनता स्वीकार नही की और महाराणा उदयसिह के बाद महाराणा प्रताप और अमरसिह ने भी क्रमश मुगल शासको के साथ सघर्ष जारी रखा था। परन्तु अन्त मे १६१५ ई० मे अमरसिह

---

१ विगत०, १ पृ० ५२— रतनावती बाई का विवाह हाजीखा के साथ हुआ था। हाजी खाँ के मरने के बाद वह विपत्तिकाल मे चन्द्रसेन के पास रही। सवत १६४६ वि० मे मत्यु हुई। नागौर मे छत्री बनी हुई है।' यदि रतनावती को मुसलमान बना दिया गया होता तो हिन्दू परम्परानुसार उसकी दाहक्रिया नही होती और न उस स्थान पर बाद में छत्री बनायी जाती।

२ अकबरनामा०, २, प० २४०-४४, बदायूनी० २ पृ० ४५।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २९७।

४ विगत०, १, प० १२४, १२५ १२६, १२७ १२८ १३१, १३२, १३३ ३४।

५ जोधपुर ख्यात०, १, प० १४०।

ने जहाँगीर के साथ सन्धि कर ली और तब उसका उत्तराधिकारी पुत्र महाराज कुमार कर्णसिंह को मुगल मनसब दिया गया था।[1] इसी प्रकार जोधपुर के राव मालदेव और चन्द्रसेन ने मुसलमानी सत्ता के साथ सघष किया था। परन्तु राव उदयसिंह ने अकबर की आधीनता स्वीकार कर ली थी।[2]

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ प० ३०।

२ विगत०, १ पृ० ६३, ६८ ७३, ७६ ७७ जोधपुर ख्यात० १ प० ६७।

अध्याय १०

नैणसी के ग्रन्थो मे वर्णित मारवाड का प्रशासकीय सगठन और आर्थिक व्यवस्था

१ मारवाड का प्रशासकीय सगठन

मुहणोत नैणसी की विगत० और ख्यात० से मुगलकाल के पूव के मारवाड सगठन पर कोई स्पष्ट प्रकाश नही पडता है। मुहणोत नैणसी ने ख्यात० का सग्रह और विगत० की रचना सत्रहवी शताब्दी के मध्य मे ही की थी। अत उसके ग्रन्थो से नैणसी के समकालीन मारवाड के प्रशासकीय सगठन पर ही प्रकाश पडता है, और उसी का वणन यहा किया जा रहा है।

मुगल शाही मनसब स्वीकार करने के पूर्व मारवाड के शासक अपन राज्य मे पूर्ण रूप से स्वतन्त्र थे। राजा ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था। अपने राज्य का सर्वोच्च अधिशासक राजा स्वय ही होता था। राजा ही अपने राज्य का प्रधान सेनानायक, मुख्य न्यायाधीश और सर्वोच्च प्रशासक होता था। अपने राज्य-शासन के सब ही विभिन्न विभागो के उच्चाधिकारियो की नियुक्ति वही करता था। परन्तु मुगल मनसब स्वीकार कर लेने के बाद मारवाड के शासको को दोहरा काम करना पडता था। एक तरफ उसे मुगल बादशाहो की सेवा करनी पडती थी तो दूसरी तरफ वह अपने राज्य का भी सर्वोच्च अधिशासक था एव अपने राज्य के सन्दभ मे वह मुगल सम्राट् के प्रति जिम्मेदार ही नही था, किन्तु अपनी प्रजा के लिए तो वही सर्वोच्च अधिशासक बना रहा। फिर भी उसके पूव के अधिकारो मे कुछ कमी अवश्य आ गयी थी। सवमान्य प्राचीन परम्परानुसार उत्तराधिकारी होते हुए भी उस राज्य का शासक बनने के लिए मुगल सम्राट् की मान्यता आवश्यक होती थी। साथ ही आवश्यकता पडने पर मुगल बादशाह उसके राज्य के आन्तरिक प्रशासन मे भी यथेष्ट हस्तक्षेप करता था।

प्रधान[1]—मारवाड राज्य का 'प्रधान' राजा का मुख्य सलाहकार और सहायक होता था।[2] उसकी नियुक्ति राजा स्वय करता था।[3] परन्तु महाराजा जसवन्तसिंह जब गद्दी पर बैठा तब वह अवयस्क था, एव मारवाड राज्य की सुव्यवस्था यथावत बनाये रखने के लिए महाराजा गजसिंह के प्रधान राजसिंह खीवावत को शाहजहा ने ही उसी पद पर पुनर्नियुक्त किया था। उसकी मृत्यु के अनन्तर भी राठोड महेशदास और राठोड गोपालदास की नियुक्तियो मे भी शाहजहाँ का हाथ रहा, क्योकि तब भी जसवन्तसिंह की वय १६ वष की नही हुई थी।[4] अधिकाशत राजपूत जाति के ही सुप्रतिष्ठित व्यक्ति प्रधान पद पर नियुक्त किये जाते रहे।[5] मारवाड राज्य का जागीरदार (पट्टादार) भी प्रधान हो सकता था।[6] तब प्रधान पद का वेतन उसे अलग से दिया जाता था।[7] कभी-कभी प्रधान राजा का जागीरदार होने के साथ मुगल मनसबदार भी हो सकता था।[8] अत उसे अपने राजा की सेवा तो करनी ही पडती थी,

---

१ डा० निमलच द्र राय (जसव त०, प० ११७ परिशिष्ट ज', प० १७७)) ने प्रधान और दीवान के दोनो पदो को एक ही माना है जो सवथा गलत है। प्रधान और दीवान (देश दीवान) दोनो अलग अलग पद होते थे और दोनो के काय और कतव्यो मे भी अ तर था। स० १७०५ वि० मे भाटी पथ्वीराज गोवि दासोत को प्रधान पद पर और भाटी रुघनाथ सुरताणोत को देश दीवान पद पर नियुक्त किया था। पोथी० (ग्र थ १११), पृ० ४१२ क। मुहणोत नैणसी को देश दीवान पद से हटाने के बाद महाराजा जसवतसिंह ने १६६६ ई० मे राठोड आसकरण को प्रधान के पद पर और पचोली केशरीसिंह को देश दीवान के पद पर नियुक्त किया था। यह बात इससे भी स्पष्ट हो जाती है कि १६६६ ई० मे राठोड उदयसिंह देवीदासोत को पट्टा राठोड आसकरण और पचोली केशरीसिंह दोनो ने ही मिलकर दिया था। बाकी०, बात स० ३३६, प० ३२ जोधपुर ख्यात०, १ प० २५३ ५४ वही० प० १४१।

२ विगत० २, प० ४३, ४६ ५१, ७४ ७५, ७६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ६६ ७०।

३ विगत०, १, प० १२५।

४ जोधपुर ख्यात०, १, प० २५२ ५३ पाद०, २, प० १०५, २२६ राठोडा री ख्यात (ग्र थ ७२) प० ८८ क ८८ ख।

५ राजा जसवतसिंह के समय मे राठोड राजसिंह खीवावत राठोड महेशदास राठोड गोपालदास, भाटी पथ्वीराज मानावत राठोड आसकरण नींबावत, आदि प्रधान पद पर रहे थे। जोधपुर ख्यात०, २ प० २५२, २५३ विगत०, १,प० १२४, १२५ पोथी० (ग्र थ १११) प० ४१२ क।

६ जोधपुर ख्यात०, १, प० २५२ २५३ २, प० १४७।

७ राजा जसवतसिंह के प्रधान राठोड गोपालदास को प्रधान पद का वार्षिक वेतन रुपये ३३०० और मासिक वेतन रु० २७५ मिलता था। वही०, पृ० २२० २१।

८ जोपुधर ख्यात० १, प० २५२, २५३ ५४, पादशाह०, २ प० १०५, २२६।

इसके साथ ही उसे शाही सेवा भी करनी होती थी। इस प्रकार वह जागीरदार और मनसबदार होते हुए भी प्रधान का काय कर सकता था। यह भी आवश्यक नही था कि प्रधान पद से हटाने पर उसकी जागीर भी जब्त हो जावे।

प्रधान पद प्राप्त करने के लिए उस व्यक्ति मे ईमानदारी का गुण अनिवाय रूपेण होना आवश्यक होता था। साथ ही साथ उसमे राजनैतिक व कूटनीतिक ज्ञान, सैनिक और सेनापति के गुण भी आवश्यक थे। प्रधान अपने स्वामी की सेना का प्रमुख सेनापति भी होता था।[१]

प्रधान का काय मुख्यतया राजनैतिक होता था। राजनैतिक समझौतो सम्बन्धी काय भी उसे ही करने पडते थे।[२] प्रधान का मुगल दरबार से भी सीधा सम्बन्ध होता था। यदि मुगल साम्राज्य के खालसा क्षेत्र के किसी गाँव आदि को राज्य के किसी परगना मे सम्मिलित करना होता तो वह मुगल दरबार मे पत्र व्यवहार व कायवाही कर यह काम कराने का प्रयत्न करता था।[३] इसी प्रकार राजा के मनसब और जागीर की वृद्धि के लिए भी प्रधान निरन्तर प्रयत्न करता रहता था और इसके लिए वह शाही दरबार की सारी गतिविधियो पर हर समय नजर रखता था।[४] किसी राज्य से राजनतिक समझौते सम्बन्धी कायवाही या अनुबन्ध (परठ) भी प्रधान ही करता था।[५] राज परिवार से सम्बन्धित मामलो के काय भी प्रधान करता था। राजा गजसिह ने जब उत्तराधिकारी पुत्र अमरसिंह को राज्याधिकार से हटाने का निर्णय कर लिया, तब तत्सम्बन्धी निणय की सूचना उसने प्रधान राजसिंह खीवावत को भेजी थी। गजसिंह की इच्छानुसार राजसिंह ने अमरसिंह को लाहौर जाने के लिए कहा था।[६] इसके अतिरिक्त सारे राजकीय निर्माण काय भी प्रधान की देख रेख मे होते थे।[७] यदि कभी किसी देश दीवान और राजा मे मनमुटाव हो जाता तो उसे दूर कर आपसी समझौते के लिए मध्यस्थता प्रधान ही करता था।[८]

इस प्रकार प्रधान बडा सम्माननीय और बहुत ही उत्तरदायित्वपूण पद होता था। राजा भी उसका विशेष सम्मान करता था। नियुक्ति के अवसर पर

---

१ विगत० १ प० १०३ ४ ११०।
२ विगत० १, प० ४८, २, प० ४६ ७४ ७५।
३ विगत० १, प० ७८ १०६।
४ विगत०, १ प० १२४ २ प० ७५।
५ विगत० १ पृ० ८५ ८६ २, प० ४२ ५१, ५४ ५५ जोधपुर ख्यात० १, पृ० १७९-८०।
६ जोधपुर ख्यात०, १ प० १७८।
७ जोधपुर ख्यात०, १, प० १८५।
८ विगत० १ प० १०२।

राजा की ओर से प्रधान को घोडा और सिरोपाव दिया जाता था।[1] यद्यपि प्रधान राजा का बडा स्वामीभक्त और विश्वासपात्र होता था, फिर भी यदि कभी उस पर रिश्वत आदि का आरोप होता तो शासक उसे उक्त पद से हटा देता था। ऐसे अपराध के लिए कभी कभी उसका पट्टा भी खालसे कर लिया जाता था और उसके घर की तलाशी लेकर उसके सामान आदि को भी जब्त कर लिया जाता था।[2]

देश दीवान—राज्य म प्रधान के बाद सर्वाधिक महत्त्वपूण और सर्वोच्च प्रशासनिक पद 'देश-दीवान' का होता था, जिसे 'देश हाकिम' और 'दीवान' भी कहते थे।[3]

तन-दीवान—साम्राज्य की सेवाथ राजा को अधिकतर राज्य से बाहर रहना पडता था, अत 'तन-दीवान' की नियुक्ति की जाती थी। एव राज्य की प्रशासन व्यवस्था मे 'तन-दीवान' का भी महत्त्व था। उसकी नियुक्ति भी राजा स्वय ही करता था।[4] देश दीवान और तन दीवान दोनो के सहयोग से ही प्रशासन सुचारु रूप से चलता था।[5] महाराजा के साथ निरन्तर सेवा मे रहकर तन दीवान आदेशानुसार सब ही कार्यों सम्बन्धी आदेश सम्बन्धित अधिकारियो को सूचित कर उन्हे निपटाया करता था। इसी कारण विगत० मे सुन्दरदास को तन-दीवान के पद पर नियुक्त करने की जानकारी देते समय उसे 'हजूर री खिजमत सौपे जाने का स्पष्ट उल्लेख किया गया है।[6] नैणसी के समय मे उसका भाई सुन्दरदास ही तन-दीवान था।[7] नैणसी के ग्रन्थों[8] मे तन दीवान

---

१ जोधपर ख्यात०, २ प० १५०।

२ जोधपुर ख्यात०, २, प० १४६-५०।

३ इसके लिये देखिये अध्याय २ के अन्तगत देश दीवान, के रूप मे मुहणोत नैणसी के कतव्य और काय।

४ विगत० १ प० १३२ जोधपुर ख्यात० १, प० २५५, वही०, प० ४३।

५ विगत०, १ प० १३२।

६ विगत०, १ प० १३२ (राजा की सेवा)।

७ राजा जसवतसिंह के समय मे सुन्दरदास के पूव क्रमश खोजा सुदर, खोजा अगर और पचोली बलभद्र तन दीवान थे। १६५४ ई० मे बलभद्र के स्थान पर सुन्दरदास को तन दीवान पद पर नियुक्त किया गया था। दिसम्बर २४ १६६६ ई० को नैणसी के साथ उसे भी पदच्युत कर दिया गया और बाद मे नवम्बर २६ १६६७ ई० को दोनो को बदी बना लिया गया था। जोधपुर ख्यात० १, प० २५५, २५४ राठोडा री ख्यात० (ग्रथ ७२) प० ८८ ख, ८६ क, ८६ ख वही०, (पृ० २७) और विगत० ,१, प० १३२) के अनुसार सुदरदास को नैणसी के साथ ही मई १८, १६५८ ई० को तन दीवान नियुक्त किया गया था।

८ ख्यात० और विगत०।

के कार्यो पर रोई प्रकाश नही पडता है, परन्तु मुगल शासन व्यवस्था के अनुसार तन दीवान मुख्यतया वेतन सम्बन्धी काय करता था और जागीर का हिसाब भी रखता था।[१] तन दीवान राजा का अत्यधिक विश्वासपात्र होता था।[२]

वकील—राज्य के अधिकारियो मे वकील का पद भी महत्त्वपूर्ण होता था। अत राजा अपने स्वामीभक्त व्यक्ति को ही वकील पद पर नियुक्त करता था। राजा के दूत के रूप मे वकील मुगल दरबार मे रहता था। वह शाही दरबार मे चल रही सारी गतिविधियो पर सतर्कता से ध्यान रखता था। वह अपने शासक को कब-कब कितना मनसब प्राप्त हुआ, कब मनसब मे वृद्धि हुई आदि का ब्यौरा रखता था। अपने स्वामी को मनसब मे प्राप्त जागीर, परगनो आदि का विवरण और हिसाब समय समय पर मुगल कार्यालय से प्राप्त करता और मनसब का यह पूरा हिसाब अपने देश दीवान के पास भेजता था।[३] मनसब मे प्राप्त परगनो मे फरबदल करवाने का काम भी वकील ही करता था।[४] वह शाही दरबार मे राज्य के 'वाकियानवीस' का काम भी करता था। इस हैसियत से शाही दरबार के साम्राज्य सम्बन्धी सारे महत्त्वपूर्ण समाचारो के साथ ही वह ऐसे सभी समाचार राजा के पास भेजता था, जिनका उक्त राज्य से दूर का भी कोई सम्बन्ध हो सकता था। पुन अन्य राज्यो सम्बन्धी वे समाचार, जिनका उसके राज्य से थोडा-सा भी सम्बन्ध हो सकता था, अथवा जिनमे उसके स्वामी को कुछ भी दिलचस्पी हो सकती थी, उनको भी वह अवश्य ही सूचित करता था। वकील का यह पद पैतृक नही होता था, और वह स्थानान्तरित किया जा सकता था।

परगना-शासन—राज्य विभिन्न परगनो मे विभाजित था। अत परगना प्रशासन की महत्त्वपूर्ण इकाई था। गद्दी पर बैठने के समय महाराजा जसवन्तसिंह को मुगल बादशाह से मारवाड क्षेत्र के छ परगने—जोधपुर, मेडता, सोजत, सिवाणा, फलोधी और सातलमेर (पोहकरण) मिले थे।[५] १६३६ ई० मे मनसब की वृद्धि के साथ ही जैतारण परगना भी जागीर मे प्राप्त हो गया था।[६] सन् १६५६ ई० मे जालोर परगना भी उसे दे दिया गया था।[७] यो बढते-बढते

१ सरकार०, पृ० ३९ ४० (चौथा सस्करण, १९५२)।
२ विगत० १, पृ० १५६ जोधपुर ख्यात० १, पृ० २३७।
३ विगत० १, पृ० १२८, १४४ १५३, १५७, १५८ २ पृ० ९३।
४ विगत०, १, पृ० १२८।
५ विगत०, १, पृ० १२४। परन्तु इनमे से पोहकरण पर १६५० ई० मे ही अधिकार हो पाया था। विगत०, १, पृ० १२७।
६ विगत०, १, पृ० १२४।
७ विगत०, १, पृ० १२९।

सन् १६५८ ई० मे उसका मनसब सात हजारी जात-सात हजार सवार का हो गया, जिसमे पाच हजार सवार दो अस्पा से-अस्पा थे। तब उसकी जागीर मे कुल पन्द्रह परगने जोधपुर, मेडता, सोजत, जैतारण, सिवाणा, फलोधी, पोहकरण, जालोर, रेवाडी, गर्जसिंहपुरा, नारनोल, रोहतक, कैथल, मुहम, और अठगाँव हो गये।[1] इसमे से मारवाड क्षेत्र के ६ परगने—जोधपुर, मेडता, जैतारण, सोजत, पोहकरण (सातलमेर), जालोर, सिवाणा, फलोधी, और गर्जसिहपुरा थे। गुजरात की सूबेदारी मिलने पर जसवन्तसिंह को गुजरात के जो परगने मिले थे, वे गुजरात की सूबेदारी से स्थानान्तरित किये जाने पर खालसा किये जाकर उनके बदले मे हाँसी-हिसार आदि के परगने दिये गये थे। इस प्रकार इन अन्य क्षेत्रीय परगनो मे भी समय समय पर फेरबदल होती रहती थी, अधिकार मे बने रहे थे।[2] इसके अतिरिक्त गुजरात, हासी-हिसार पटी, नागोर और अन्य सूबो के भी कुछ परगने समय-समय पर अस्थायी रूप से जसवन्तसिह के अधिकार मे रहे थे।[3]

हाकिम—परगना का प्रमुख प्रशासनिक, सैनिक और राजस्व अधिकारी परगना हाकिम (दीवान) होता था।[4] परगना के अ य सब ही अधिकारी और कमचारी उसके आधीन होते थे।[5] देश दीवान की सलाह से राजा स्वय परगना हाकिम (दीवान) की नियुक्ति करता था। परगना मे शान्ति और व्यवस्था बनाये रखना वहाँ के परगना हाकिम का प्रमुख कर्त्तव्य और काय होता था। यदि परगना मे कोई विद्रोह होता या आस पास के अथवा सीमान्त क्षेत्र के लोग उपद्रव करते, तो उनका दमन करन का भार भी हाकिम पर ही होता था।[6] आवश्यकता पडने पर परगना हाकिम अपने परगना क्षेत्र के जागीरदारो से सैनिक सहायता भी प्राप्त करता था और पास-पडोस के अन्य परगनो से भी अतिरिक्त कुमक मँगवा लेता था।[7] यदि कोई परगना हाकिम परगना मे शान्ति व्यवस्था बनाये रखने मे असमथ होता तो उसे पदच्युत अथवा स्थानान्तरित कर दिया जाता था।[8] अत परगना हाकिम मे प्रशासनिक क्षमता

---

१ विगत० १, पृ० १३० १३१, १३३ ३४ वही०, पृ० ३१ ३२।

२ विगत० १, पृ० १४५ ४६, १४७ १५१ १५४ ५५।

३ विगत०, १, पृ० १२५, १२६-३०, १३२ १३६, १४६ १४७, १४८ ४६, १५१ ५३, १५५ ५६।

४ 'परगनो मु० जगनाथ र हवालै छै', 'मु० नैणसी रै हवालै फलोधी कीवी'। विगत०, १, पृ० ११६।

५ विगत० २, पृ० ३०६-८।

६ विगत०, १, पृ० ११८ १६, १२०-२३, १२६।

७ विगत०, १ पृ० १२० २१।

८ विगत०, १, पृ० ११८ १६।

के साथ ही सनिक और सेनापति की पूरी योग्यता होना भी आवश्यक थे। परगना मे राजस्व की वसूली का उत्तरदायित्व भी परगना हाकिम का होता था। परगना मे न्याय सम्ब धी काय भी वही करता था।[१] इस प्रकार परगना हाकिम सभी प्रकार के प्रशासनिक कार्यों की देखभाल करता था। उसकी सहायता के लिय थाणेदार, किलेदार और कानूनगो आदि अनक अधिकारी हाते थे।[२]

थाणेदार—परगना दुग मे या अन्य स्थान पर आवश्यकतानुसार थाणा (सैनिक चौकी) रखा जाता था, जिसकी व्यवस्था के लिए वहाँ शासक द्वारा थाणेदार नियुक्त किया जाता था। थाणे के प्रभारी को थाणेदार कहा जाना था। प्रत्येक थाणे मे एक थाणेदार होता था।[३] परन्तु क्षेत्र विशेष की स्थानी‌ा परिस्थितियो के अनुसार थाणो की सख्या मे वृद्धि भी की जाती थी। परगना फलोधी मे मुहता जगन्नाथ के समय दो थाणेदार थे।[४] थाणेदार अपनी सैनिक टुकडी का सेनापनि होता था। वह विभि‌न सैनिक अभियानो मे परगना हाकिम (दीवान) की सहायता करता था। साथ ही राजस्व के सग्रह, परगने मे शान्ति, कानून और व्यवस्था बनाये रखने मे हाकिम की सहायता करता था। दुग की सुरक्षा का दायित्व भी उसी पर होता था। नया क्षेत्र आधीन करने पर वहाँ अपने अधिकारो को सुदृढ करने के हेतु आवश्यक थाणे स्थापित किये जाते थे।[५] किसी पडोसी राज्य से बाहरी खतरे के समय भी सीमा पर सतकता के लिए विभिन्न थाणे (सैनिक चौकिया) रखे जाते थे।[६]

किलेदार—परगना के प्रत्येक किला, दुर्ग और गढ की सुरक्षा के लिए नियुक्त अधिकारी को किलेदार कहा जाता था। उसके पास दुग के प्रवेशद्वारो

---

१ विगत०, १, प० ३६०।

२ विगत० मे कुछ स्थानो पर फौजदार के उल्लेख मिलते है। पर‌तु उससे यह स्पष्ट सकेत नही मिलता कि परगने मे स्थायी रूप से फौजदार का कोई पद रहा हो। यह सकेत अवश्य मिलता है कि कि‌ही परगनो मे विशेष परिस्थितिवश सैनिक और प्रशासनिक सेवा हेतु यदा कदा फौजदार की कुछ काल के लिए नियुक्ति कर दी जाती थी। पर‌तु मारवाड मे शासक द्वारा ही नियुक्त ये फौजदार, मुगल सूबो मे नियुक्त फौजदार से विभि‌न होते थे। क्योंकि मुगल शासन व्यवस्थानुसार सूब के प्रादेशिक शासन मे फौजदार का अपना एक विशिष्ट स्थान होता था, जिसकी नियुक्ति आदि का अलग ही तरीका होता था, जो इन राजपूत राज्यो के सदम मे नही बरता जाता था।

३ विगत०, १, प० ४६, ६५, २, प० ७, ८।

४ विगत०, १, प० ११६

५ विगत०, १, प० ४८, ११६।

६ विगत०, १, प० ४८।

की चाबिया रहती थी। उसकी स्वीकृति के बिना कोई भी व्यक्ति दुर्ग मे प्रवेश नही कर सकता था। दुग या किले की सुरक्षा का पूण दायित्व किलेदार पर रहता था।[१] बाहरी आक्रमण के समय दुर्ग की रक्षा का पूरा भार किलेदार पर ही होता था। किलेदार की आधीनता मे एक सैनिक टुकडी रहती थी। पोहकरण मे १६५० ई० मे किलेदार रा० मनोहरदास जसवन्तोत के आधीन उसके अपने दस घुडसवार सैनिक थे।[२] किले मे स्थान-स्थान पर बुर्जें होती थी। जिनकी सुरक्षा और शत्रु के बाहरी आक्रमण पर नजर रखने के लिए वहा सैनिको की विशेष चौकियाँ रखी जाती थी।[३] वे सब चौकिया भी किलेदार के आधीन रहती थी। किलेदार के कार्यो सम्बन्धी नणसी के ग्र थो मे इसके अतिरिक्त कोई जानकारी नही मिलती है।

कानूनगो—परगना का अन्य महत्त्वपूण अधिकारी कानूनगो[४] होता था। राजस्व सम्बन्धी मामलो मे वह परगना दीवान का सहयोगी होता था। प्रत्येक परगना मे एक या अधिक कानूनगो होते थे।[५] कानूनगो का पद वशानुगत होता था।[६] राज्य की ओर से निर्धारित लाग बाग को न तो रैयत कम दे सके और न ही अधिकारी, जागीरदार उनसे ज्यादा ले सके इसीलिए कानूनगो की नियुक्ति की जाती थी। राज्य के आदेशो का क्रियान्वयन कानूनगो के माफत होता था और रैयत के शासकीय कार्यों का निपटारा भी कानूनगो के द्वारा होता था। यो कानूनगो राज्य और प्रजा के मध्य मध्यस्थ (वकील) का काय करता था। अत न तो राज्य के अधिकारी, जागीरदार प्रजा पर नयी लाग बाग लगा सकते थे और न ही रैयत निर्धारित लाग बाग देने मे आनाकानी कर सकती थी।[७] वही परगने सम्बन्धी विविध प्रकार की विस्तृत जानकारी रखता था।

उसके कार्यालय मे प्रत्येक गाँव के राजस्व सम्बन्धी सारा विवरण लिखा जाता था। जालोर परगने के कानूनगो घराने से प्राप्त 'जालोर परगना री

---

१ विगत०, १, पृ० ३०६।

२ विगत०, २, पृ० ३०६।

३ विगत०, २, पृ० ३०६, ३०७ द।

४ विगत०, २, पृ० ७७।

५ विगत०, २, पृ० ८६ ८८।

६ महेशदास दलपतोत राठोड ने गुरुवार, अगस्त ८, १६४४ ई० को मुहता तिलोकसी को कानूनगो का पद प्रदान किया था। उसके वशज स्वाधीनता प्राप्ति के बाद तक भी उक्त पद पर बने रहे थे। (परवाना स० १७०१ श्रावण सुदि १५, 'श्री रघुबीर लायब्रेरी', सीतामऊ, सग्रह)।

७ जोधपुर अपुरालेखीय बस्ता न० ५३ ग्रथाक न० ७, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।

विगत' विषयक दो बहियो[1] से स्पष्ट ज्ञात होता है कि कानूनगो के कार्यालय मे प्रत्येक गाव की परगना केन्द्र से दूरी, गाव की रेख, गाव की वार्षिक आय, गाव मे सिंचाई के साधन, गाव मे निवास करने वाली जानिया, सासण-भूमि आदि का पूण विवरण रखा जाता था। इसी कारण ग्रामो की सीमा सम्बन्धी अथवा अन्य किसी प्रकार के मामलो मे कानूनगो के पास की विगत की बहियो मे दज जानकारी का विशेष महत्त्व होता था। कानूनगो के कार्यालय मे परगने का कुल क्षेत्रफल पैदावार योग्य जमीन का रकबा, पहाड, जगल, नदी और नाला आदि के कुल रकबे की ब्यौरेवार जानकारी भी रहती थी।[2] कानूनगो का कार्यालय सहायक दफ्तरी (लिपिक) होता था। गाँव की सीमा विवाद को निपटाने का कार्य कानूनगो और दफ्तरी करते थे।[3]

इस प्रकार कानूनगो शासन और प्रजा दोनो के वकील का काय करता था। न राज्य के अधिकारी और जागीरदार रैयत से अधिक कर वसूल कर सकते थे और न ही रैयत वाजिब राशि देने का विरोध कर सकती थी।

परगना मे पोतदार[4] (कोषाध्यक्ष) होता था, जिसके नाम से पोतदारी कर भी वसूल किया जाता था। परगने मे चौधरी[5] सिकदार[6] आदि अन्य कमचारी भी होते थे जिनके उल्लेख तो नैणसी के ग्रन्थो मे अवश्य ही मिलने है, परन्तु उनके कत्तव्यो आदि की उनमे जानकारी नही है।

राज्य का प्रत्येक परगना प्रशासनिक सुविधा के लिए विभिन्न तफो (टप्पा) मे विभाजित था और प्रत्येक तफा के अन्तर्गत अनेक गाव होते थे।[7] परगना जोधपुर १६६२ ई० मे १६ तफो मे विभाजित था।[8] परगना मेडता मे कुल ६ तफे थे।[9] यो परगने मे तफो की सख्या कोई निश्चित् नही थी। इसी

---

१ पोलिटिकल ऐजेण्ट मेजर इ०सी० इम्पे ने १८७१ ई० मे जालोर के कानूनगो से बहिया मगवाई थी। 'चपरासी चुनीलाल ने जालोर मेल कानुगो री वेहीया मगाई'। जालोर विगत० (बडी) प० २ क।

२ विगत०, १, पृ० ७७, मारवाड मे भी कानूनगो मुगल परम्परा के अनुसार ही काय करता था। लैण्ड रेवेन्यू०, प० ८८ ८६।

३ जालोर विगत० (बडी), प० ७८ क ७८ ख।

४ विगत०, २, प० ६३।

५ जालोर विगत० (बडी), प १०० क।

६ विगत०, १, प० १६०, सवत १६६८ वि० मे जोधपुर में सोभा, मेडता मे कोका, सोजत मे मेघराज और सीवाणा मे जालब का भाई सिकदार थे। पोथी० (ग्रन्थ १११), प० ४१० ख।

७ विगत०, १, प० १६४, १६५, १६८,, २, पृ० ७८।

८ विगत०, १, प० १६४ ६५।

९ विगत०, २, प० ७८।

प्रकार से प्रत्येक तफे मे जो गाँव होते थे उनकी सख्या भी निश्चित् नही थी। क्षेत्रीय परिस्थितियो, शासकीय आवश्यकताओ, तथा जनसाधारण की सुविधाओ को ही ध्यान मे रखकर प्रत्येक तफे की सीमाएँ निर्धारित की जाती थी। यो हवेली (परगना जोधपुर) मे २६६ गाव तो तफा देछु मे केवल नौ गाव ही थे।[१] अत इससे स्पष्ट हो जाता है कि परगना मे तफो की सख्या और गावो की सख्या प्रशासनिक सुविधानुसार तथा अन्य कारणो को देखते हुए ही निश्चित की जाती थी। विगत० से पता चलता है कि प्रत्येक तफा मे एक या अधिक चौधरी होते थे।[२] और प्रत्येक गाव मे एक चौधरी होता था।[३] परन्तु तफा और गाव के अन्य किसी सावजनिक या शासकीय सेवक[४] का कोई उल्लेख प्राप्त नही होता है।

२ मारवाड की राजस्व व्यवस्था

मारवाड राज्य मे देश दीवान राजस्व का प्रमुख अधिकारी होता था और परगने मे वहाँ के परगना हाकिम के ही आधीन राजस्व व्यवस्था रहती थी। परगना हाकिम के सहयोग के लिए कानूनगो, पोतदार, चौधरी, कणवारी और दफ्तरी आदि अधिकारी और कमचारी होते थे। इन सबके कार्यों के बारे मे विस्तृत विवरण पूर्व मे दिया जा चुका है।

राजस्व व्यवस्था की दृष्टि से राज्य की भूमि तीन भागो मे बाट दी गयी थी। खालसा, जागीर और सासण।

खालसा भूमि—शासक अपने राज्य के क्षेत्र मे से अधिकाश भाग राज्य की उनकी सेवाओ के बदले मे जागीरदारो के वेतन के स्थान पर जागीर के रूप मे देता था।[५] कुछ क्षेत्र सासण मे दिया जाता था।[६] शेष भाग पर राज्य का सीधा

---

१ विगत०, १ प० १६४-६५।

२ विगत० १, प० २५६।

३ वही०, प० २७१।

४ मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक गाँव मे पटवारी होता था अत मारवाड मे भी गाव का अधिकारी पटवारी अवश्य होगा।

५ विगत०, २, प० २६५ ३३१-३२, ३३३ ३४, ३३७। परगना जैतारण के १२७ गाव मे से ८१ गाव जागीर मे थे, २६ गाँव खालसा मे और १८ गाव सासण मे थे। विगत०, १, पृ० ५०० १।

६ जसवतसिंह के समय मे परगना जोधपुर के ११६७ गाँवो मे से १४४, परगना साजत के २४४ मे से ३३ गाव, परगना जतारण के १२७ मे से १८ गाँव, परगना फलोधी के ६८ मे से ६ गाँव, परगना मेडता के ३८४ में से साढे पैंतालीस गाँव, परगना सीवाणा के १४४ मे से ३० गाँव और परगना पोहकरण के ८५ मे से १५ गाव सासण मे थे। विगत०, १, पृ० १८६, ४२४, ५०० १ २, पृ १२, २१३, २३०, ३१८ १६।

नियन्त्रण होता था।[1] उसे ही खालसा भूमि कहा जाता था। प्राय परगनो के केन्द्र नगर और ज्यादा पैदावार वाले गाव खालसा मे ही रखे जाते थे। यो सर्वाधिक आय वाले गाव या क्षेत्र राज्य के सीधे नियन्त्रण मे रखे जाते थे। खालसा गावो की जो भूमि किसान हाकते थे, उस भूमि के राजस्व की वसूली उनसे ही सीधे की जाती थी। इस सारी खालसा भूमि से राजस्व का सग्रह राजकीय सेवक करते थे और खालसा भूमि से प्राप्त होने वाली यह समूची आय राजकीय खजाने मे जमा होती थी।[2]

खालसा भूमि का क्षेत्रफल समय-समय पर और विभिन्न राजाओ के शासन-काल मे घटता बढता रहता था। मुगल मनसब स्वीकार करने के पूव राज्य पर साम तो (ठाकुरो) का प्रभाव अधिक था। अत तब खालसा भूमि अपेक्षाकृत कम ही थी। साथ ही खालसा भूमि का क्षेत्रफल तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियो, और राजाओ के चरित्र, प्रवृत्तियो आदि पर निभर करता था।

जागीर भूमि—मारवाड मे राठोड राज्य की स्थापना के समय से ही सामन्ती व्यवस्था प्रारम्भ हो गयी थी। सामन्तो के सहयोग से ही राजा अपने राज्य का विस्तार करता था तथा अपन राज्य की सुरक्षा की व्यवस्था भी करता था। उन सामन्तो को प्राय ठाकुर और सरदार कहा जाता था। सरदारो को उनकी सैनिक सेवा के बदले मे राज्य की ओर से जागीरें दी जाती थी। साम तो को दी गयी भूमि ही जागीर भूमि कहलाती थी। जागीर भूमि का वितरण तथा जागीर के आकार-प्रकार का निर्धारण उन राजपूत सामन्तो की सैनिक सेवाओ, उनके घराने के साथ राजा के सम्बन्धो आदि पर निर्भर करता था। जागीर अर्थात उसका पट्टा उन्हे देने के पूव प्राय जागीरदारो से पेशकश (भेट अथवा नजराने) के रूप मे नकद राशि और ऊँट, घोडे आदि भी लिये जाते थे। इसके अतिरिक्त जागीरदार की ओर से राज्य को कुछ अन्य कर 'खीचडो' आदि भी देने होते थे।

जागीरदार अपने जागीर क्षेत्र मे स्वाधीन ही होता था। साधारणतया शासक उसकी जागीर मे कोई हस्तक्षेप नही करता था। जागीरदार को अपने जागीर क्षेत्र से राजस्व सग्रह का पूरा अधिकार होता था। परन्तु उसके लिए यह आवश्यक था कि वह राज्य द्वारा निर्धारित नियमो और परम्पराओ का पालन करे।

सासण भूमि—राजा अथवा भू-स्वामी द्वारा दान मे दी गयी भूमि सासण कहलाती थी। शासक द्वारा समय समय पर अपने राज्याधिकार क्षेत्र मे से

---

१ विगत०, १, प० ५००-१।

२ विगत०, १, पृ० ५०१ २, ५१०, ५१४ ५१५।

चारण, भाट, ब्राह्मण (ज्योतिषी, पुरोहित आदि), पुजारी और जोगी आदि को जीविकोपाजन के लिए भूमि दान मे दी जाती थी। सासण भूमि राज्य की ओर से कर मुक्त होती थी। सासण भमि प्राप्तकर्त्ता को अपने क्षेत्र मे उसी प्रकार के अधिकार प्राप्त हो जाते थे जैसे एक जागीरदार को अपनी जागीर भूमि मे। सासण भूमि प्राप्तकर्त्ता को अपने क्षेत्र से राजस्व सग्रह करने का अधिकार प्राप्त होता था। सासण भूमि प्राप्तकर्त्ता अपनी भूमि रहन भी रख सकता था।[1] वह अपनी भूमि का कुछ भाग दहेज मे भी दे सकता था।[2] उत्तराधिकारियो मे सासण भूमि का बँटवारा भी होता था।[3]

राठोड राज्य की स्थापना के पूव मारवाड मे पडिहार राजवश का राज्य था। पडिहार राजवश ने भी अपने समय मे अनेक व्यक्तियो को भूमि सासण मे दी थी। राठोड राजवश की स्थापना और विशेष रूप से मध्यकाल मे इसका व्यवस्थित स्वरूप मिलता है। परन्तु मुगल बादशाहो की तरह मारवाड राज्य मे सासण भूमि दान के सम्बन्ध मे अलग से कोई विभाग नही था। शासक कब और किसको और कितनी सासण भूमि देगा, यह उसकी इच्छा और चरित्र पर निभर करता था। राजा के आदेश पर देश दीवान या परगना हाकिम सम्बन्धित व्यक्ति को सासण भूमि पर कब्जा दिलाता था।[4] शासक के अतिरिक्त अन्य किसी भी जागीरदार को सासण भूमि देन का अधिकार सामान्यतया नही होता था। अत शासक द्वारा जागीरदारो को प्रदत्त जागीर के पट्टे मे यह उल्लेख होता था कि वह अपनी जागीर मे गाव या खेत किसी को सासण दे सकेगा अथवा नही।[5] जिन जागीरदारो को सासण देने का अधिकार दिया जाता था, वे ही सासण दे सकते थे।[6] कुछ विशिष्ट जागीरदारो को ही अपनी जागीर से सासण भूमि देने का अधिकार प्राप्त था। मालदेव ने अखैराज रणधीरोत सोनगरा को पाली का पट्टा दिया था। अखैराज ने अपने जागीर काल मे पाली का गाव आकेलडी सासण मे दिया था। इसी प्रकार अखराज के पुत्र मान ने भी पाली का गाव रावलास सासण मे दिया था।[7] इससे स्पष्ट है कि अधिकार प्राप्त ही सासण देता था।[8] परन्तु जागीरदार की मृत्यु अथवा जागीर समाप्ति

१ विगत०, २, पृ० ११६।
२ विगत०, २, प० १८५।
३ विगत०, २, प० १०६, १३६, १८५, २७०, ३४६।
४ विगत०, २, पृ० ३५१।
५ वही०, प० ३०३।
६ विगत०, २, प० ५४७, ५५०, ५५१, ५५२।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १५५, १६५ विगत० १, प० २६७ ६८।
८ विगत०, २, प० ५५१-५२।

पर जागीरदारो से प्राप्त सासण भूमि का नवीनीकरण और स्थायीकरण प्राप्त करना पडता था।[1] परन्तु यदि किसी पट्टादार को सासण भूमि देन का अधिकार नही होता वह भी यदि किसी को सासण देना चाहता तो राजा से अर्ज कर दिलवा सकता था।[2] परन्तु यह राजा की इच्छा पर निर्भर करता था कि उसकी सिफारिश माने या नही।

विगत० के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि मारवाड मे चारणो और ब्राह्मणो को ही सर्वाधिक भूमि सासण मे दी गयी थी। इनमे भी प्रथम स्थान चारणो का था। प्राय चारणो को उनकी साहित्यिक सेवाओ के पुरस्कार मे सासण भूमि दी जाती थी। यो कवि[3] और साहित्यकारो को राज्याश्रय देने के लिए शासक की ओर से सासण भूमि दी जाती थी। यही नही, यदि कोई चारण अपने शासक के प्रति स्वामीभक्ति का परिचय देता तो उसको भी सासण मे गाव अथवा जमीन दी जाती थी। जब राव रिणमल चित्तौड मे मारा गया था और उसका दाह सस्कार नही होने दिया जा रहा था, तब चारण चादण खडिया ने जान की बाजी लगाकर राव रिणमल का मृत शरीर प्राप्त किया और दाह-सस्कार किया। इसी उपकार क बदले मे राव जोधा न उक्त चारण को चार गाव सासण मे दिये थे।[4]

ब्राह्मणो को शासक प्राय पुण्यार्थ ही सासण देता था। जब कोई राजा तीर्थयात्रा पर जाता तब तीर्थस्थल पर अपने अच्छे बुरे कर्मों का प्रायश्चित् करने के हेतु विभिन्न वस्तुएँ दान मे देता था। उस समय ब्राह्मणो को भूमि भी दान मे देता था।[5] सूर्य और चन्द्रग्रहण के अवसर पर ब्राह्मणो को गाव या खेत पुण्यार्थ दान मे दिये जाते थे।[6] कभी-कभी राजा अपने पुत्रजन्म की बधाई आने पर भी ब्राह्मणो को सासण भूमि देता था।[7] इसी प्रकार राज्य के धार्मिक कार्य करने वाले पुरोहित को भी राजा की ओर से सासण भूमि दी जाती थी।[8] सुप्रसिद्ध लोकदेवता के भोपा[9] (पुजारी) और देवी-देवताओ के पुजारियो को भी

---

१ विगत०, १, प० ४८८, ४८६।
२ विगत०, २, पृ० २७७।
३ विगत०, १, प ४८६। सभवत गाडण केशवदास को राजा गजसिंह ने 'गजगण रूपक' की रचना पर सोभडावास गाँव सासण मे दिया।
४ विगत०, १, पृ० ३६-३७।
५ विगत०, १, पृ० ३३४, ३३६-३७, ४७८, ४८६, ५४४।
६ विगत०, १, पृ० ४८२, ५४७।
७ विगत०, १, पृ० ४७६।
८ विगत०, १, पृ० २३८।
६ विगत०, १, पृ० २६०।

शासक सासण भूमि देता था ।[1] साथ ही मन्दिर को भी सासण भूमि अर्पित की जाती थी । यो साहित्यिक सेवा, मन्दिर व्यय और मन्दिर के पूजा और धार्मिक सेवा के लिए तथा तीथ यात्रा, सूय और चन्द्रग्रहण के अवसर पर चारणो, भाटो, ब्राह्मणो, पुजारियो, जोगियो और पीरजादो को शासक की ओर से सासण भूमि प्राप्त होती थी ।

विगत० मे दिये गये सासण गावो के विवरण से स्पष्ट पता चलता है कि सासण भूमि स्थायी रूप से दी जाती रही । परन्तु उसमे सासण भूमि पर अधिकार के लिए पटटा[2] और ताम्रपत्र[3] दोनो का उल्लेख आया है, जिनका अथ स्पष्ट कर देना भी आवश्यक प्रतीत होता है । पट्टा द्वारा दी गयी सासण भूमि के नवीनीकरण और स्थायीकरण की आवश्यकता हो सकती थी । शासक यदि ताम्रपत्र द्वारा कोई सासण भूमि देता था तो उसके लिए इनकी आवश्यकता नही होती थी ।

सासण भूमि को जब्त कर लेने के सम्बन्ध मे कोई निश्चित् नियम नही था । शासक की इच्छा ही सर्वोपरि होती थी । राव मालदेव और मोटा राजा उदयसिंह ने अनेक गाव जब्त कर लिये थे ।[4] परन्तु परम्परानुसार साधारणतया सासण भूमि जब्त नही की जाती थी । यह पुण्याथ दिया हुआ दान माना जाता था । अत ऐसी मान्यता थी कि उक्त भूमि को जब्त करने वाला नक का भागी बनता है । इसी प्रकार परम्परानुसार एक बार सासण दी हुई भूमि को पुन सासण मे नही दिया जाता था । परन्तु कभी-कभी कोई शासक पूव के शासको द्वारा दिये गये सासण को मान्य नही कर वही भूमि उसे ही अथवा किसी दूसरे को पुन सासण मे दे देता था ।[5] यदि सासण भूमि प्राप्तकर्त्ता नि सन्तान मर जाता तो वह भूमि उसके भाई अथवा भाई के पुत्रो के अधिकार मे रह सकती थी ।[6] परन्तु उक्त भूमि प्राप्तकर्त्ता के कोई वशज ही शेष नही रहता तो उक्तभूमि को खालसे कर ली जाती थी ।[7] कभी कभी शासक पूर्व के सासण प्राप्तकर्त्ता से भूमि छीनकर अन्य व्यक्ति को भी दे देता था ।[8] कभी कभी शासक किसी

---

१ विगत०, १, पृ० २६०, २६८, ३०४ ५, ३३५, ३३६ ।

२ विगत०, १, पृ० ४८१, ५४८ ।

३ विगत०, १, पृ० ४८१ ।

४ विगत०, १, पृ० ४७८, ४८०, ४८४ ।

५ विगत०, १, पृ० ३४६, ३५०, ४७८, ४८७, ४८८, ५४८, २, पृ० १३६, २७१, २७३, २७४ २७६ ।

६ विगत०, १, पृ० ४८३ ।

७ विगत०, १, पृ० २४३, ५२०, ५४६ ।

८ विगत०, २, पृ० १८५ ।

कारणवश कुछ समय के लिए मासण भूमि छीन लेना था और कुछ समय बाद उसी को पुन प्रदान कर देता था।[१] यदि साम्ण भूमि प्राप्तकर्त्ता आपस मे झगडते रहते तो राज्य द्वारा वह भूमि खालसे कर ली जाती थी।[२] यदि कोई पुजारी किसी व्यक्ति की हत्या कर देता तो उसको उक्त पद से हटा दिया जाता था और उसके अधिकार की सासण भूमि भी छीन ली जाती थी।[३]

यदि कोई सासण भूमि प्राप्तकर्त्ता प्राप्त भूमि म कोई फेरबदल करवाना चाहता तो शासक से निवेदन कर उक्त भूमि के बदले मे अन्य भूमि प्राप्त कर सकता था।[४]

भू-राजस्व निर्धारण की पद्धति—विगत० मे दिये गये विवरणो से ज्ञात होता है कि तब मारवाड मे भूमि का भूमि-कर निर्धारण की अनेक पद्धतियाँ प्रचलित थी, जिनका विवरण क्रमश दिया जाता है—

लाटा[५]—फसल के पूणतया तैयार हो जाने के बाद उसे काटकर एक निश्चित् स्थान पर एकत्रित कर लिया जाता था, और तब उसमे का भूसा और अनाज अलग-अलग कर लिया जाता था। तदनन्तर अनाज तोलकर राज्य का हिस्सा प्राप्त किया जाता था।

बटाई[६] इसके अनुसार तैयार अनाज को तोला नही जाता था। अनुमान के आधार पर अनाज के ढेर के बराबर के हिस्स कर दिये जाते थे, जिसमे से राज्य का हिस्सा ले लिया जाता था।

मुकाता—इसमे पैदावार के आधार पर भूमि-कर नही लिया जाता था। इसमे कृषक को जमीन या खेत देते समय उसकी पैदावार की सभावित राशि निश्चित् कर दी जाती थी। पोहकरण मे मुकाता के रूप मे प्रति ५० बीघा पर तीन अथवा साढे तीन रुपये लिये जाते थे।[७]

गूघरी—यह पद्धति मुकाता की तरह ही थी। अन्तर सिफ इतना ही था कि मुकाता मे भूमि-कर नकद लिया जाता था और इसमे अनाज के रूप मे लिया जाता था।[८]

जब्ती—कपास, अफीम, सब्जी, खरबूजा और काचरे आदि वाणिज्य फसलो

---

१ विगत०, २, पृ० २६६।
२ विगत०, २, पृ० २४३।
३ विगत०, १, प० ३३५।
४ विगत०, १, पृ० १०७, ४८८।
५ विगत०, १, प० ३६६ २ प० ९३ ३२७ जालोर विगत०, प० १३ ख।
६ विगत०, २ प० ८६, ६६। विगत० मे इस पद्धति को परिभाषित करने के लिए कोई उल्लेख नही मिलता है।
७, विगत०, २, प० ३२६, ३३०, ३३४, ३३५, ३३६, ३३६, ३४०।
८ विगत०, २ प० २४८, ३५५।

पर प्रति बीघा के हिसाब से भूमि-कर निश्चित् नकद रकम के रूप मे लिया जाता था।[१] पोहकरण मे इन फसलो का उपज का चौथाई हिस्सा कर के रूप मे लिया जाता था।[२]

भूमि कर मे प्राप्त अनाज को राज्य के परगना मुख्यालय तक पहुँचाने का दायित्व भी किसानो का ही माना जाता था। अत जो किसान अनाज आदि को स्वय मुख्यालय पहुँचा देता उससे कुछ भी वसूल नही किया जाता था। अन्यथा उस अनाज को पहुँचाने मे जो भी सरकारी व्यय हो सकता था वह भी किसानो से परगना मुख्यालय से गाव की दूरी के हिसाब से लिया जाता था। परगना मेडता मे मेडता से यदि कोई गाव चार कोस दूर था तो प्रति किसान आधी दुगाणी और दस कोस की दूरी पर प्रति किसान एक दुगाणी ली जाती थी।[३] साथ ही वहा के भू-राजस्व सग्रहकर्त्ता कणवारी अथवा कामदार का व्यय भी किसानो को ही वहन करना पडता था।[४]

३ अन्य राजकीय कर तथा राज्य की आमदनी के अतिरिक्त स्रोत

मुहणोत नैणसी के ग्रन्थो मे, मुख्यतया विगत० मे, मारवाड राज्य के कर तथा राजकीय आय के विभिन्न स्रोतो की ब्यौरेवार जानकारी मिलती है। अत यहा मूलत मारवाड के सम्बन्ध मे ही वर्णन दिया जा रहा है।

राजकीय कर—राज्य की आमदनी का मूल स्रोत भू-राजस्व ही था। इसी से राज्य को सर्वाधिक आय होती थी। भू-राजस्व कर को तब 'खेता रो भोग' भी कहा जाता था।[५]

भोग—विगत० मे सात परगनो का विवरण दिया गया है, उनमे से केवल दो परगनो मेडता और पोहकरण मे ही पैदावार पर शासन के हिस्से का उल्लेख मिलता है। भोग वष म दो बार खरीफ और रबी की फसल पर अलग-अलग वसूल किया जाता था।[६] पोहकरण मे खरीफ की फसल पर महाजनो से पैदावार का साढे चारवाँ अथवा पाँचवाँ हिस्सा और किसानो से पैदावार का चौथा अथवा साढे चारवाँ हिस्सा लिया जाता था। साथ ही प्रति मण पर छ अथवा सात सेर अनाज लिया जाता था।[७] ब्राह्मणो से उपज का पाँचवा हिस्सा और

---

१ विगत०, २, पृ० ९६, ९७।
२ विगत०, २, पृ० ३२६।
३ विगत०, २, पृ० ९२।
४ विगत०, २, पृ० ९०, ९१।
५ विगत०, २, पृ० ३२६।
६ विगत०, २, पृ० ८९, ९०, ३२६।
७ विगत०, २, पृ० ३२६।

प्रति मण पर सात सेर लिया जाता था ।[१] इसके अतिरिक्त सब्जी, तम्बाकू और प्याज आदि फसलो पर उपज का चौथा भाग लिया जाता था ।[२] परगना मेडता मे खरीफ की फसल की उपज का आधा भाग भोग के रूप मे लिया जाता था ।[३] परगना जालोर मे राजपूतो से पदावार का पाचवा हिस्सा और किसानो से चौथा हिस्सा लिया जाता था ।[४]

इसी प्रकार रबी की फसल पर परगना पोहकरण मे सिंचित फसल की उपज का तीसरा हिस्सा शेष सेंवज फसल (गेहूँ, चना, जव आदि) पर खरीफ की फसल के अनुसार ही राजकीय भाग लिया जाता था ।[५] मेडता मे भी सिंचित फसल की पैदावार का तीसरा हिस्सा तथा साथ मे प्रति मण पर डेढ सेर लिया जाता था, और सेंवज फसल का पाँचवा भाग भोग के रूप मे लिया जाता था ।[६]

खरीफ और रबी की फसल पर जिन फसलो की पैदावार का राजकीय हिस्सा नकद मे लिया जाता था उसे जब्ती कहा जाता था। मेडता मे खरीफ मे धान की फसलो (ज्वार बाजरा) की कडब का प्रति मण कडब पर भी एक दुगाणी राजकीय कर लिया जाता था। प्रति बीघा कपास पर रुपये १ १२, प्रति बीघा सब्जी[७] पर रुपये १ १२, प्रति बीघा काचरा पर रु० ० ३७ लिये जाते थे। रबी की फसल प्रति बीघा अफीम पर रु० २ ५० प्रति बीघा, खरबूजा पर रु० १ ०० और प्रति बीघा सब्जी पर रु० १ ३७ लिए जाते थे। साथ ही उक्त राशि को एकत्रित करने के व्यय की पूर्ति के लिए प्रति सौ रुपये पर रु० ५ ५० अतिरिक्त लिए जाते थे ।[८]

उपर्युक्त वर्णन से यह तो स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि सम्पूर्ण मारवाड राज्य मे लगान वसूली मे कही कोई समानता नही थी। साथ ही लगान वसूली मे भी जातीयता के आधार पर भेदभाव का बर्ताव किया जाता था। सामान्य रैयत की अपेक्षा राजपूतो और ब्राह्मणो से लगान कम लिया जाता था ।

दाण—यदि कोई बाहरी व्यापारी बाहर से घोडा आदि पशु लेकर जोधपुर राज्य या परगना सीमा मे प्रवेश करता था तो उससे लिया जाने वाला कर दाण कहलाता था। जो पशु वहाँ बेचा जाता था उस पर दाण कर के अतिरिक्त

---

१ विगत०, २, पृ० ३३५ ।
२ विगत० २, पृ० ३२६ ।
३ विगत०, २, पृ० ८६, ६६ ।
४ जालोर विगत० (बडी), पृ० ६८ क।
५ विगत०, २, पृ० ३२७।
६ विगत०, २, पृ० ६० ६७ ।
७ परगना सोजत मे प्रति बीघा सब्जी पर रु० ० ५० लिया जाता था। विगत०, १, पृ० ३६८ ।
८ विगत०, २, पृ० ६६-६७ ।

कुछ बिक्री कर (बिसवा) भी लगता था ।[1] परन्तु प्रति घोडा आदि पर कितनी राशि ली जाती थी इसका कोई उल्लेख नही मिलता है ।

इस प्रकार मारवाड राज्य के बाहर से आने वाली वस्तुओ पर भी दाण (चुगी) और बिसवा (बिक्री) कर लेते थे । यदि मारवाड राज्य मे निवास करने वाला व्यापारी अन्य राज्यो से वस्तुएँ लाकर अपने परगने मे बेचता तो उसे सिर्फ दाण ही लगता था । परन्तु यदि मारवाड राज्य से बाहर का व्यापारी मारवाड मे अपनी वस्तुएँ बेचता तो उसे दाण और बिसवा दोनो देना होता था ।[2] बाहर के व्यापारी पोहकरण मे वस्तुएँ बेचते थे, उनको इस प्रकार दाण और बिसवा देना पडता था—एक मण कपडे पर आठ दुगाणी लगता था, उसमे से चार दुगाणी दाण और चार दुगाणी बिसवा कर होता था । एक मण रेशमी वस्त्र पर बिसवा सहित १० फदीया लगते थे ।[3] गुजरात से आने वाली वस्तुओ पर कर की दरें वस्तु के प्रकार पर निभर रहती थी । जैसे दाँत, रेशम, कस्तूरी, कपूर आदि पर प्रति मण पर डेढ फीरोजी और आधी दुगाणी, ताम्बा, कासा, पीतल, शीशा, कथीर, गरी, नारियल, मिच, पीपल, मजीठ, हीग, सुखडी, तेल, मिश्री, गुली आदि पर प्रति मण पर ८ दुगाणी, शकर, सुत, सौठ, पीपल घी आदि पर प्रति मण पर साढे छ दुगाणी, गुड, तेल, (रुत) रुई, लोहा, लाख आदि पर प्रति मण पर साढे पाँच दुगाणी, जीरा, अजवाइन, सोवा, धनिया, बिराली हल्दी पर प्रति मण पर साढे तीन दुगाणी, मेथी, राई, सरसो, अलसी, तिल, मुज, साजी आदि पर प्रति मण पर साढे छ दुगाणी लगता था ।[4] इस प्रकार लगने वाले कर मे आधा दाण और आधा बिसवा होता था ।[5] विगत० से ही ज्ञात होता है कि 'दाण' का ही पर्यायवाची 'मापो' था ।[6]

सेरीणो—वस्तु विशेष के प्रति मण पर सेरो के हिसाब से लिया जाने वाला

---

१ विगत०, १, प० १६, ८४, २, प० ३०८, ३२३, ३२५ ।

२ विगत०, २, प० ३२५ ।

३ विगत०, २ प० ३२५ ।

४ विगत०, २ प० ३२५ २६ ।

५ जैसलमेर मे प्रति ऊँट रेशम के रु० ३५, रुई के रु० ५, मजीठ के रु० ५, मोम के रु० ६ घी के रु० ५, फिटकडी के रु० ४, छुहारा के रु० ५, लाख लोवडी के रु० ६, नारियल के रु० ५, और किराना के रु० ३ दाण के रूप मे लिए जाते थे । ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ७ ।

६ विगत०, १, पृ० १६७ २, पृ० ३२३, ३२४-२५ । डॉ० दशरथ शर्मा (राजपूत०, प० १४८) के अनुसार जागीर मे ही वस्तुओ के विक्रय पर लिया जाने वाला कर था और लालस० (३, प० ३७०) के अनुसार आयात या निर्यात की जाने वाली वस्तुओ पर लिया जाने वाला कर था ।

कर 'सेरीणो' कहलाता था। मारवाड मे ही एक परगने से दूसरे परगने मे ले जाकर व्यापार करने वाले मारवाडी व्यापारी की यह सेरीणो कर लगता था।

पोहकरण के व्यापारी मारवाड क्षेत्र से घी, तेल, रुई, कपास, धान, तिल अदि सभी वस्तुएँ लाते थे, जिन पर प्रति मण पर एक सेर कर के रूप मे लिया जाता था।[1]

घासमारी चराई—पशुओ पर लिया जाने वाला यह कर घासमारी-चराई कहलाता था। राजकीय (खालसा) पडत जमीन पर जो व्यक्ति अपने पशु चराता था और बिना पट्टा लिये अपनी झोपडी भी बना लेता था, उससे निम्नलिखित हिसाब से कर लिया जाता था—

१ गाय पर—५ दुगाणी।
१ भैंसा पर—१० दुगाणी।
१ बरठो[2] (भैंस) पर—४ दुगाणी।
१ झोटी (कम उम्र भैंस) पर—४ दुगाणी।
१ भेड, बकरी पर—१ दुगाणी, और
१ झूपी[3] पर—१५ दुगाणी।

इसके अनुसार घाममारी कर एकत्र किया जाता था। इसके साथ यो एकत्र किये गये कर की प्रत्येक रु० १०० की राशि पर साढे पाच रुपये खर्चं के भी

---

१ विगत०, २, प० ३२३, ३२५, ३, प० १३७। डा० घनश्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १६७३ ई०, प० ४७, और पालिटी० पृ० १०२ टि० ४२) ने सन १८६३ ई० की किसी विवरणिका के आधार पर लिखा है कि जागीरदार कृषको से पैदावार के प्रति मण पर छठा हिस्सा सेरीणो के रूप मे वसूल करता था किन्तु जागीरदार प्रति मण का सौवाँ भाग ही राज्य मे जमा कराता था। साथ ही इसी प्रकार के शब्द का उपयोग परगना पोहकरण के सदभ मे किया गया है जिसके अनुसार प्रति मण पर एक सेर की माग की गयी है। परन्तु डा० शर्मा ने सेरीणो का जो उपयुक्त स्वरूप दिया है वह सही नही है। विगत०, (२, प० ३२३) के अनुसार वस्तु विशेष के प्रति मण पर सेरो के हिसाब से लिया जाने वाला कर सेरीणो कहलाता था।

२ डा० घनश्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १६७३, प० ५८) वरेठ का अथ गाय का बछडा लिखा है जो सही नही है।

३ एक प्रकार का अलग कर जो बिना पट्टे की भूमि पर बने मकानो पर लगता था। डा० घनश्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १६७३, पृ० ४८ और पालिटी० पृ० १०५) ने झूपी का अथ ऊँट लिखा है जो सही नही है। विगत०, (२, प० ६१, ६८) मे ऊँट के लिए ऊट (नर), साड (मादा) का प्रयोग किया गया है। और समकालीन राजस्थानी ग्रन्थो (बही० और जालोर विगत०) मे भी ऊँट के अथ मे 'झूपी' का प्रयोग कही नही मिलता है। साथ ही मेडता मे पान चराई के रूप मे प्रति ऊँट, साड रु० १ ५० (६० दुगाणी) तथा जाट और बिस्नाइयो से रु० ० ५० (२० दुगाणी) लिया जाता था। विगत०, २, प० ६१, ६८।

वसूल किये जाते थे।[1]

पान चराई—खालसा भूमि के वृक्षादि के पत्ते चरने वाले ऊँट और सांड पर लिया जाने वाला यह कर था। मेडता मे साधारणतया प्रति ऊँट साड पर डेढ रुपया लिया जाता था। परन्तु जाट और बिस्नोई से प्रति नग आधा रुपया ही लिया जाता था।[2]

खीचडो—यह कर जागीरदारो के गावो से लिया जाता था। उस गाव की आर्थिक स्थिति के अनुसार प्रत्येक गाँव से रु० ५ से लेकर रु०१ तक लिये जाते थे। इस कर की दर के सम्बध मे कोई निश्चित् नियम नही था। मेडता परगना से इस कर के कुल रु० ६०० या ७०० प्राप्त होते थे।[3]

गूघरी—भोग के निर्धारण की यह एक पद्धति थी जिसका वणन पहले किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त खलिहान मे बटाई अथवा लाटा दे देने का काय पूरा हो जाने के समय अधिकारी को कुछ अनाज दिया जाता था उसे भी गूघरी कहा जाता था।[4]

---

१ विगत०, २ प० ८८। गजसिंह के समय मे रु० १००/ पर रु० १५ लिये जाते थे। गजसिंह ने स०१६६२ वि० मे ८ और बाद मे १७०८ वि० मे जसवन्तसिंह ने ३ रुपये कम कर दिये और यो देश-दीवान नैणसी के समय मे रु० ४ खच के और डेढ रुपया नकद लिया जाता था।

२ विगत०, २, पृ० ९१, ९४।

३ विगत०, २, प० ९१। डा० नारायणसिंह भाटी (विगत०, ३, प० १३०) के अनुसार यह मत्युभोज पर लिया जाने वाला कर था। डा० दशरथ शर्मा के अनुसार खीचडो मूलत सेना के भोजन की व्यवस्था के लिए राज्य द्वारा किसानो से लिया जाने वाला कर था। (राजपूत०, प० १४७)।

४ विगत० २, प० ८९, ९७। डॉ० घनश्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १९७३ ई०, प०४९ और पालिटी० प० १०३ टि० ४९) के अनुसार अधिकारियो के वहाँ निवास काल के समय प्रतिदिन होने वाला व्यय किसानो द्वारा दिया जाता था जिसे कि गूघरी कहा जाता था किन्तु यह मान्यता तत्कालीन समय के उल्लेखो को देखते हुए सही नही है। क्योकि यदि कामदार अथवा भू राजस्व सग्रह करने वाले अधिकारी को दिया जाने वाला खर्चा गूघरी कहलाता तब तो (विगत०, २ प०९३) मे उसका वैसा स्पष्ट उल्लेख अवश्य ही होता। परन्तु ऐसे खर्चे को तब पेटिया (विगत०, २, प० ९०) कहा जाता था और उससे राज्य की तो कोई आय नही होती थी, प्रत्युत विगत० (२, प० ९३) मे यह स्पष्ट उल्लेख है कि कामदार आदि को आटा, घी, दाणा देते थे, परन्तु उसे नकद कुछ भी नही दिया जाता था। डा० नारायणसिंह भाटी (विगत०, ३, प० १३१) के अनुसार गूघरी कुओ पर बँधे हुए रूप मे निश्चित माप मे लिया जाने वाला लगान और फसल में से (कर के तौर पर) लिया जाने वाला विशेष हिस्सा था। लालस (लालस०, १, पृ० ७५६) के अनुसार यह एक निश्चित लगान या कर था जो अनाज के रूप में कृषक भूमि के मालिक को देता है। इसके अनुसार जितना धान भूमि में बोया जाता है,

माल अथवा मिलणो—त्यौहारो पर व्यापारियो और किसानो से भेंट स्वरूप लिया जाने वाला कर 'माल' अथवा 'मिलणो' कहा जाता था। पोहकरण में महाजन व्यापारियो से वार्षिक कर के रूप मे प्रति व्यापारी से कुल १७ दुगाणी ली जाती थी।[1] उसमे से १२ दुगाणी होली-दीपावली की होती थी और ५ दुगाणी रक्षा बधन की ली जाती थी। अन्य लोगो और किसानो से उनकी स्थिति के अनुसार ले लेते थे। उनके लिये कोई निश्चित नियम नही था। इस प्रकार महाजन, कसरा, सुनार, भटियाँरा, जटिया, ढेढ, कलाल, मोची, तेली, माली, सीरवी आदि से त्यौहारो पर लिया जाने वाला कर माल कहलाता था।[2]

खरच भोग—भू राजस्व सग्रह पर होने वाले व्यय के निमित्त लिया जाने वाला कर था।[3] इसमे प्रति बडे गाँव से रु० १० और छोटे गाव रु० ५[4] बल[5] के, रु० ५ दवात पूजा के, रु० ५ कागज के, रु० ५ खरडा के, रु० ५ सुत अधोडी के, रु० १ फड उठावणी का और रु० १ पोतदारी[6] आदि के खरच भोग

उतना ही लगान के रूप में पुन दिया जाता है। डा० दशरथ शर्मा के अनुसार—गाव के कुओ के पानी का उपयोग करने वाले किसानो से लिये जाने वाले कर को ही गूघरी कहते थे और वह रकम उन कुओ की देखभाल करने वाले भोमियो को दी जाती थी। (राजपूत०, प० १४८)।

१ जैसलमेर में महाजनो से प्रति घर ८ दुगाणी ली जाती थी। ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ७।

२ विगत०, २, प० ३२६, १, प० ३६५ ६६, ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ७। डा० दशरथ शर्मा (राजपूत०, प० १४८) के अनुसार जब हाकिम का स्थानान्तरण होता अथवा नयी नियुक्ति होती उस समय नजराना के रूप में लिया जाने वाला कर था। साथ ही डा० दशरथ शर्मा ने मेलो और मिलनो दोनो को एक ही मान लिया है, वस्तुत मेला से होने वाली आय को मेलो कहा जाता था। डा० घनश्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १९७३, प० ४८ ४९ और पालिटी० पृ० १०३) के अनुसार यह प्रति घर एक रुपया हाकिम की भेंट स्वरूप दिया जाने वाला कर था।

३ विगत०, २, पृ० ८९।

४ मुहणोत नणसी के देश दीवान बनने के पूव बल कर के रूप म बडे गाव रु० २० तथा रु० २५ लिये जाते थे। १६५८ ई० मे नैणसी ने जसवन्तसिंह से निवेदन कर उक्त कर मे कमी करवाई थी। विगत०, २, प० ८९, ९०, ९१, ९२, ९३।

५ इसके लिए 'हुजदार री बल' का भी प्रयोग किया गया है। 'हुजदार' का शाब्दिक अथ 'प्रशासकीय उच्चाधिकारियो से है। (बही०, प० ३४, विगत०, १ पृ० ३९०) बल का शाब्दिक अथ सेना है। या हुजदार री बल का अथ होगा, परगने में भू राजस्व सग्रह और गाँवो की सुरक्षा के निमित्त जो सैनिक रखे जाते थे उनके खर्चे के लिए लिया जाने वाला कर'। अत डा० घनश्यामदत्त शर्मा ने अज्ञानवश 'हजुदार री' को 'हुजूर री' का ही पर्यायवाची मान कर (राजस्थान०, १९७३ पृ० ४७-४८) लिखा है कि 'राज्य की सेना के खर्चे के लिए लिया जाने वाला कर था' जो सवथा गलत ही है।

६ कोषाध्यक्ष के निमित्त लिया जाने वाला कर।

के रूप मे लिए जाते थे। इसके अतिरिक्त भू-राजस्व सग्रह की नकद राशि पर ४ प्रतिशत के हिसाब स खच कर के रूप मे लिया जाता था।[१] उक्त कर प्रति फसल अथवा वष मे दा बार लिया जाता था।[२]

कडब घास—कडब (जवार और बाजरा के डठलो) और घास पर लिया जाने वाला कर। प्रति मण कडब पर एक दुगाणी ली जाती थी।[३] कडबी भोग के सग्रह पर होने वाले व्यय के रूप मे प्रति रु० १०० पर रु० २ ५० लिया जाता था।

रसब[४]—सही रूप मे तत्कालीन अथ मे इसको परिभाषित करने के लिए नैणसी के ग्रन्थो तथा समकालीन अन्य राजस्थानी ऐतिहासिक ग्रन्थो मे कोई स्पष्टीकरण कही नही मिलता।

---

१ १६५१ ई० के पूव भू राजस्व सग्रह के खर्चे के लिए रु० १०० की राशि पर रु० ७ लिये जाते थे। १६५१ ई० मे राजा जसवतसिंह ने इसमे रु०३ की कमी कर दी। अत उक्त राशि के हिसाब से ली जाने लगी थी। विगत०, २, प० ८६, ६१, ६२।

२ विगत०, २, प० ६१ ६२, ६३।

३ विगत०, १, प० १५८, २, पृ० ८६। डा० दशरथ शर्मा के अनुसार (राजपूत०, प० १४७) जागीरदार को निजी उपयोग के लिये दिये गये कडब घास पर लगाया जाने वाला यह कर था पर तु प्राप्त विवरण मे इसकी सगति नही दीख पडती है। डा० धनश्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १६७३, प० ४६) के अनुसार प्रति मण पर रु० १ ५० लिया जाता था। जिसका आधार विगत० ही है, परन्तु विगत० मे ऐसा कही कोई उल्लेख नही है।

४ सही रूप 'रसद' ही है। राजस्थानी मे इसका प्रयुक्त रूप भेद रसत' ही विगत० में लिखा मिलता है। (विगत०, १, प० १५८, १५६, १६०, ३६६) डा० दशरथ शर्मा (राजपूत०, प० १४७) के अनुसार रसद का अथ भोजन सामग्री से है। यह सामग्री राजस्व सग्रह के लिये जाने वाले व्यक्ति के लिये ली जाती थी। डा० धनश्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १६७३, प० ४६ और पालिटी० प०१०३ टि० ५४) के अनुसार किसानो को खलिहान मे अनाज सग्रह के समय अधिकारियो को कर देना पडता था उसे रसद कहा जाता था। यह दवात पूजा के ५ दुगाणी, कागज पाठा के ५ दुगाणी, सुत अघोडी के ५ दुगाणी फड उठावणी और पोतदारी की एक एक दुगाणी, और खरडा की दो दुगाणी वसल की जाती थी। लेकिन यह कथन कदापि सही नही है, क्योकि ये सभी रकमें खरच भोग मे ली जाती थी, जिसका वणन पहले किया जा चुका है। डॉ० शर्मा ने उक्त कथन का आधार भी विगत० (२, प० ८६, ६२-६३) दिया है। पर तु विगत० में उक्त मदो का रसद में होने का कोई सकेत नही मिलता है। बलिक खलिहान मे गूघरी और कणवार की लाग देने का अवश्य उल्लेख मिलता है। (विगत०, २, प० ८६, ६६ ६७)। डा० नारायणसिंह भाटी (विगत०, ३, प० १३५) के अनुसार फौज की खुराक के लिये लिया जाने वाला लगान रसद कहलाता था। पर तु यह पश्चात्कालीन सीमित अथ यहाँ सवथा अनुपयुक्त है।

सिकदारी—सिकदार (विश्वस्त रक्षक) के निमित्त लिया जाने वाला कर था।[1]

भरोती—भरोती का अथ रसीद है।[2] अत स्पष्टतया चुकारे की पक्की रसीद देते समय प्रत्येक व्यक्ति से एक रुपया लिया जाता था।[3]

लिखावणी—लिखित हिसाब रखने के निमित्त लिया जाने वाला कर।[4]

साँढीया री गिणती—इसका शाब्दिक अथ ऊँटो साडियो की गणना से है।[5]

व्यवसायिक कर—मारवाड मे प्राय सब ही प्रकार के तत्कालीन विभिन्न व्यवसायो पर भी कर लिया जाता था। अनार और इमली का व्यवसाय करने वालो से, मालियो[6] से, सब्जी[7] पर, छीपा और पीजारो[8] से, भाभी[9] से, साबणगर[10] से, कलाल[11] से, खटीको[12] से, तेलियो[13] आदि से वार्षिक कर लिया जाता था।[14]

घुमालो[15] (**डुमालो**)—को परिभाषित करने के लिए नैणसी के ग्रन्थो और

---

१ विगत० १, प० १६०, ३९८। राजस्थान०, १९७३, पृ० ४६ के अनुसार उसे केवल खरीफ की फसल पर लगाया जाता था, परन्तु विगत० में ऐसा उल्लेख नही है।

२ राजपूत०, प० ४६।

३ विगत०, २, प० ९०, ९१, ९७। डा० नारायणसिंह भाटी (विगत०, ३, प० १३५) के अनुसार कर भरने के पश्चात् रसीद करते समय लिया जाने वाला कर भरोती कहलाता है।

४ विगत०, १, प० १५८, ४००, राजपूत०, पृ० १४७, विगत०, ३, पृ० १३५।

५ विगत०, १, प० १६०। साँड (ऊँटनी) का सही अथ ज्ञात नही होने से ही डा० घन श्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १९७३, पृ० ४६) ने इसे परगना सीवाणा में दुधारू गाय, भैंस और बकरी पर लिया जाने वाला कर लिख दिया जान पडता है।

६ माली मेंहदी और नीबू का व्यवसाय करते थे।

७ सब्जी पर प्रति बीघा रु० १ १२ और रु० ० ५० लिया जाता था।

८ वस्त्र रगने के लिए गुली (एक विशेष प्रकार का पौधा जिससे नीला रग प्राप्त होता था। लालस०, १, प० ७५२) की खेती छीपा और पीजारा कभी करते थे, तब से कुछ वसूली होती आ रही थी। छीपा रगाई में जो गुली काम में लेते थे उस पर उन्हें कर देना पडता था।

९ गाय बैल का चमडा रगने का काय करते थे।

१० साबुन बनाने का काय करते थे।

११ कलाल शराब की भट्टी निकालते थे जिसका कर होता था। विगत०, १, प० ३९८।

१२ खटीक मास बेचने और चमडा रगने का व्यवसाय करते थे। विगत०, १, प० ३९८।

१३ तेली तेल निकालने की घाणिया चलाते थे। सो उन घाणियो पर कर चुकाना पडता था।

१४ विगत०, १, प०३९७ ९८।

१५ डॉ० दशरथ शर्मा के (राजपूत०, पृ० १४७) अनुसार राजस्व सग्रहकर्त्ता को शाल वितरित करने के लिए लिया जाने वाला कर था। डा० ब्रजमोहन जावलिया के अनु सार जब्त भूमि से सग्रहीत राशि को घुमालो कहा जाता था और डॉ० नारायणसिंह

अन्य समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थो मे कोई उल्लेख नही मिलता है।

तलबानो[1]—सभवत राजस्व की बकाया राशि के सग्रह के लिए बुलाने भेजे जाने वाले व्यक्ति पर खच की पूर्ति के वास्ते लिया जाने वाला कर।

फरोही[2]—नैणसी के ग्रन्थो मे इसके अथ और स्वरूप के सम्बन्ध मे कोई सकेत नही मिलता है। परन्तु शब्दावली से ऐसा अनुमान होता है कि 'फरणो' (इधर उधर चलना या चक्कर लगाना) क्रिया से यह शब्द बना है। यो स्पष्टतया चरने वाले पशुओ से सम्बन्धित कर होगा।

कणवार—कृषको के खेतो की देख-रेख और सरक्षा करने वाले को कणवारी कहा जाता था, जिसका व्यय किसानो को वहन करना पडता था। कणवारी के निमित्त किसानो से लिया जाने वाला कर कणवार कहलाता था।[3]

अरहट माडली (मढली)[4]—नैणसी के ग्रन्थो मे इसके स्वरूप के बारे मे कोई उल्लेख नही मिलता है।

भाटी के अनुसार यह गाँव के लोगो से चौधरी वसूल करता था। (राजपूत०, प०१४७ पा० टि०)। डा० घनश्यामदत्त शर्मा (पालिटी०, प०१०३ पा० टि० ४६) के अनुसार यह गाव के प्रत्येक घर से परिवार की आर्थिक स्थिति के अनुसार नकद वसूल किया जाता था, जो स्पष्टतया नैणसी द्वारा अकित करके पश्चात्कालीन परिवर्तित स्वरूप का ही विवरण है।

१ विगत० १ प० १५८, ४००। डा० दशरथ शर्मा (राजपूत०, प० १४७) के अनुसार बुलावा के लिए लिया जाने वाला कर था।

२ विगत०, १, प० १५८ ३६६। डा० दशरथ शर्मा (राजपूत०, प० १४८) के अनुसार यह पान चराई की तरह ही था, और भूमि क्षेत्र में पशुओ की चराई पर लिया जाता था। लालस० (३ १), प० २७२३ भी इसी मत का समथन करता है। तथापि डा० घनश्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १६७३ ई०, प० ४६ और पालिटी०, प० १०३) के अनुसार किसानो को उनके खेतो की देख रेख और सुरक्षा करने वाले कणवारी को कर देना पडता था उसे ही फरोही कहा जाता था। परन्तु डा० घनश्यामदत्त शर्मा का यह कथन कदापि सही प्रतीत नही होता है। विगत० प० ३६६ ४००) मे परगना सोजत मे करो की जो सूची दी गयी है, उसमें फरोही औरकणवार दोनो का उल्लेखहै जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि फरोही और कणवार दोनो ही भिन्न भिन्न कर थे और किसानो द्वारा कणवारी को दिया जाने वाला कर कणवार कहलाता था। साथ ही यदि कणवारी को दी गयी इसअतिरिक्त लाग को यदि फरोही कहा जाता तो परगना मेडता (विगत०, २, प० ६०, ६२, ६३, ६४, ६५ ६६ ६७) में भी उसका उल्लेख अवश्य होता।

३ विगत०, १, प० ४००, २, प० ६०, ६१, ६३, ६५, ६६ ६७।

४ विगत०, १ १५६ ३६६। डा० दशरथ शर्मा (राजपूत०, प० १४८) और डॉ० घनश्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १६७३ ई०, पृ० ४६) के अनुसार सिंचाई के पानी के उपयोग के लिए दिया जाने वाला कर था। परन्तु दोनो ने ही अपने आधार के बारे में कोई सकेत नही दिया है। साथ ही परगना सोजत मे भी (विगत०, १, प० १५६,

घीग्राई[१]—इसकी दर अथवा स्वरूप के सम्बन्ध मे भी नैणसी अथवा अन्य समकालीन ग्रन्थो मे जानकारी नही मिलती है, यद्यपि उसके नाम से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इसका सम्बन्ध घी से ही है परन्तु इस कर की वसूली से होने वाली आय का उल्लेख केवल परगना सीवाणा के ही सदभ मे मिलता है। सोवण घास जो प्राय बाडमेर-सीवाणा क्षेत्र मे ही होती है। उस घास को चरने वाले पशुओ का घी आज भी श्रेष्ठ माना जाता है। सभवत इसी से यह कर तब सीवाणा परगना मे ही लागू रहा हो।

घोडा काबल[२]—इसके सही उद्देश्य के बारे मे भी नैणसी के और अन्य समकालीन ग्रन्थो मे स्पष्टीकरण नही मिलता है।

इन नियमित करो के अतिरिक्त राज्य की आय के निम्नलिखित अन्य साधनो की भी जानकारी नैणसी के ग्रन्थो मे मिलती है।

नमक—नमक से भी राज्य की आय होती थी। परगना सीवाणा, फलोधी और पोहकरण मे खारे पानी से नमक बनाया जाता था। नमक की पैदावार का आधा और एक तिहाई भाग कर के रूप मे लिया जाता था।[३]

---

३६६) अरहट माडली का उल्लेख मिलता है, वहा उसी परगने (विगत०, १, प० ३६७) मे चाच (एक प्रकार का साधारण कुआ) का भी उल्लेख मिलता है। यों परगना सोजत की वार्षिक आय मे चाच (कुआ) स होने वाली आय के आकडे देखने से उपरोक्त विद्वानो द्वारा दिये गये स्वरूप को मान्य करन में सदेह होता है। अरहट के साथ ही माढली' अथवा मडली' लिखा मिलता है। इनसे उलझन और भी बढ जाती है। लालस० (३-३ प० ३५२७) के अनुसार 'मढली' का अथ मडी दिया है। परन्तु उसको अरहट' मे जोड सकना किसी प्रकार सगत नही जान पडता।

१ विगत०, १, प० १६०। डा० दशरथ शर्मा (राजपूत० प०१४८) के अनुसार घी का एक गाव से दूसरे गाँव मे निर्यात करने पर और डा० घनश्यामदत्त शर्मा (राजस्थान०, १९७३ ई०, पृ० ४९ और पालिटी०, प० १०४) के अनुसार घी के व्यापार पर लिया जाने वाला कर था। लालस०, (१ प० ८१६) के अनुसार जागीरदार द्वारा घी की उत्पत्ति पर कुछ मात्रा मे घी लिया जाता था उसे घीग्राई कहा जाता था।

२ विगत० १, प० १५९। डा० दशरथ शर्मा (राजपूत०, प० १४८) के अनुसार राजकीय घोडो को कम्बल वितरण के लिये लिया जाता था। परन्तु सन् १९१५ ई० मे मेडता के तत्कालीन कानूनगो द्वारा मेडता का विवरण तयार किया गया था। उसमें लिखा है कि गावो की सुरक्षाथ जो घुडसवार (जमीयत) रखे जाते थे उन घोडो को बल गाव से मिलती थी। कई वर्षों बाद नकद राशि निश्चित कर दी गयी। सो पूव नाम तो 'घोडा की बल' है पर तु कई वर्षों से 'घोडा कामल' कहते हैं और उसी नाम से ही रकम जमा होती है। 'जोधपुर अपुरालेखीय बस्ता न० ५३ ग्रथाक ७, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।'

३ विगत०, २, प० ३६, ३०८।

मेला[1]—मेला से भी राज्य को आय होती थी । मेला क्षेत्र मे व्यापारी अपनी दुकाने लगाते थे, राज्य उनसे कर के रूप मे कुछ राशि लेता था ।[2]

ब्याज—ब्याज से भी राज्य को आय होती थी । कई व्यापारी लोगो को ऋण देने का धन्धा करते थे । ऋण के रूप मे दी गयी राशि पर ऋणदाता से ब्याज लिया जाता था । यदि मूल रकम से ब्याज की राशि दुगुनी हो जाती तो उस राशि का आठवाँ हिस्सा राज्य को देना पडता था ।[3]

विवाह—विवाह से भी राज्य को आय होती थी । विवाह के अवसर पर विवाह पक्ष को रु० ० ३७ देने होते थे ।[4]

घाणी—तेली घाणी से तेल निकालने का धन्धा करते थे । उनसे प्रति घाणी के रूप मे रु० १ ९४ लिए जाते थे ।[5]

तागीरात बल—यदि किसी जागीरदार का गॉव खालसे (जब्त) कर लिया जाता था, तब उस जागीरदार से तागीरात बल कर के रूप मे कुछ राशि ली जाती थी,[6] जो स्पष्टतया जब्ती के लिए भेजे गये शासकीय अधिकारी के साथ की सैनिक टुकडी के व्यय की रकम होगी । यह रकम उस जागीरदार से ही वसूल की जाती थी ।

पालेज दूध रा—जिस गाँव मे दूध देने वाले पशु होते थे, ऐसे प्रत्येक बडे गाव से रु० ६ और छोटे गाव की स्थिति के अनुसार लेते थे । अत यह दुधारू पशु पर लिया जाने वाला कर था ।[7]

---

१ डॉ० घनश्यामदत्त शर्मा (पॉलिटी०, प० १०७) ने विगत० के ही आधार पर 'मेला-मापा' शब्द का प्रयोग किया है परन्तु विगत० (१, पृ० १६७) में सवत १७१९ (१६६२ ई०) के ब्यौरे से स्पष्ट है कि 'मापो' और 'मेलो' दोनो ही भिन्न हैं । साथ ही विगत०, (१, पृ० १६१, २ प० ३०८, ३२४, ३५७) में अन्यत्र कही भी 'मेलो' के साथ 'मापो' का उल्लेख नही है ।

२ विगत०, १, प० १६७, २, पृ० ३०८, ३२३, ३२४, ३५७ ।

३ विगत०, २, पृ० ३२६ ।

४ विगत०, २, प० ९०, जालोर विगत० (बडी बही) प०१०४ क । जालोर में रु० ० ५३ देने होता था ।

५ विगत०, २, पृ० ९० ।

६ विगत०, २, प० ९१ । डा० दशरथ शर्मा के अनुसार जागीर मुक्त होने पर जागीरदार को नकद राशि दी जाती थी उसे तागीरात बल कहा जाता है । (राजपूत०, प० १४९) परन्तु यह परिभाषा सही नही है क्योकि विगत० मे यह रकम लेने की लिखी है, उसके दिये जाने के बारे में कही कोई सकेत भी नही है ।

७ विगत०, २, पृ०९१ । डॉ० नारायणसिंह भाटी (विगत०, ३, पृ० १३३) के अनुसार यह दूध पर नकद राशि में लिया जाने वाला कर और मुफ्त मे आये हुए जानवरो पर लिया जाने वाला कर था । परतु ये दोनो ही अथ युक्तियुक्त अथवा पूणतया सही नही

पेशकशी और नालबधी—जो भोमिये राज्य की कोई भी सेवा नही करते थे उनसे ही पेशकशी और नालबधी के रूप मे कुछ राशि ली जाती थी।[1] यो उर्युपक्त वणन से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि राज्य की आय के लिए अनेक प्रकार के राजकीय कर और अन्य साधन थे। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रैयत ही राज्य के इस सम्पूर्ण खर्चे का भार वहन करती थी। यदि तत्कालीन परिस्थितियो को दृष्टिगत रखकर विचार करें तो वास्तव मे जनता पर करो आदि का अत्यधिक भार था और विवश होकर सामान्य व्यक्ति निधनता मे ही जीवन बिता रहा था। यही कारण था कि महाराजा जसवतसिह के समय मे जब मुहणोत नैणसी देश-दीवान नियुक्त हुआ तब उसने जसवन्तसिह से निवेदन कर 'हुजदार री बल' की राशि प्रति बडे गाव रु० २० तथा २५ के स्थान पर बडे गाव रु० १० और छोटे गाँव रु० ५ करवाये। फिर भी सन् १६६१ और १६६२ ई० मे दो बार मेडता के जाट कर भार की शिकायत करने शाही दरबार मे पहुँचे थे।[2] परन्तु शाही दृष्टिकोण भी पूव के निर्धारित नियमो मे फेर-बदल करने के पक्ष मे नही था, अत उनको कोई लाभ नही हुआ।

हैं क्योकि यह सामूहिक रूपेण ग्राम से लिया जाता था, तथा किन्ही विशिष्ट जानवरो पर ही सीमित नही था।

१ विगत०, २, प० ३४० ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ६६।

२ विगत०, १, प० ६२-६३ ६४ ६५।

अध्याय ११

नैणसी के ग्रन्थो मे प्रतिबिम्बित मध्यकालीन राजपूत समाज

१ राजपूतो का जीवन-दर्शन

मध्यकालीन राजन्य वग, जिनमे से कई एक राजघराने पुरातन कालीन क्षत्रियो अथवा शासक घरानो से अपने वशो को जोडते थे, कालान्तर मे वे तथा उनके सारे सजातीय एक सुगठित शासक वर्गीय योद्धा जाति के रूप मे उभरे, जिनको तब दसवी शती के लगभग विभिन्न छत्तीस कुलो मे समाविष्ट कर लिया गया। हर्षोत्तर काल मे इनमे कई एक राजघरानो का भारत के विभिन्न भागो मे शासन स्थापित हो गया था, तथा भारतीय इतिहास मे उनका तब विशेष राजनैतिक और सामाजिक महत्त्व था। मुसलमानो ने जब भारत पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया तब इन्ही राजघरानो से पराजित होकर उत्तरी भारत के सिंधु-गगा के काठे के ही नही क्रमश अन्य क्षेत्रो के भी स्वाधीन राज्यो का अन्त हो गया तथा वहा के शासको के मूल घरानो का सवनाश हुआ। परन्तु इन विभिन्न राजवशो के वशजो ने अन्यत्र स्थानातरित होकर अनेको छोटे-बडे राज्य या जमीदारिया स्थापित की। प्राय उनमे से अधिकाश मुगलकाल मे 'राजपूत' कहलाने लगे। यो इस मुगलकालीन उनके नये वर्गीय नाम को ही लेकर अधिकाश आधुनिक इतिहासकार हर्षोत्तर काल को ही भारतीय इतिहास का 'राजपूत काल' कहते है जो काल-दोष ही नही है, परन्तु अनैतिहासिक स्थापना भी है।

परन्तु यह राजन्य वग तथा उन सब ही घरानो के सभी वशज अनेक शताब्दियो तक सघषरत रहे जिसके फलस्वरूप इस राजपूत जाति मे उसका एक अलग ही अनोखा जीवन-दशन तब मान्य हो गया था, जिसकी कई विशेषताओ को उसके अनन्य विरोधियो ने भी बहुत सराहा और जिनके अनेको उदाहरणो ने

टाड जैसे अनेको विदेशी लेखको और वीरो को मत्रमुग्ध कर दिया था। नैणसी की ख्यात० मे प्रसगवश इसी राजपूत जीवन-दशन के अनेको उल्लेख यत्र-तत्र मिलते है, जिनके आधार पर उसकी कुछ प्रमुख विशेषताओ ओर मान्यताओ की चर्चा की जा सकती है।

युद्ध ही राजपूत जातीय-जीवन का प्रमुख काम-धधा था, एव किसी प्रकार की सैनिक मेवा को ही सर्वोच्च महत्त्व और प्राथमिकता दी जाती थी। खेती-बाडी या अन्य उद्योग-धन्धो को सर्वथा हीन और त्याज्य ही समझा जाता था। यही कारण था कि बाल्यावस्था मे ही राजपूतो को घुडसवारी तथा अस्त्र-शस्त्रो सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाता था। तथा साहसिक कार्यो की ओर उन्हे प्रवृत्त किया जाता था। ऐसे होनहार नवयुवको की ख्याति उस क्षेत्र से भी बाहर दूर-दूर तक फैलने लगती थी।[१] राजपूत युवतिया तो ऐसे नवयुवको को वरने को अपना परम सौभाग्य माननी थी और उन नवयुवतियो के पिता उन्हे अपना जामाता बनाने को लालायित रहते थे।[२]

अतएव राजपूत मरने से कभी भी भय नही खाता था। वह मृत्यु को सहज स्वीकार करता था। तलवार आदि का घाव लगने पर किसी प्रकार का दुख-दद व्यक्त करना कायरता मानता था।[३] यह जानते हुए भी कि लडाई मे उम मृत्यु का सामना करना होगा, मा अपने पुत्र को प्रेरित करती थी कि शस्त्र बाधकर वह रणक्षेत्र मे जावे।[४] युद्ध के मैदान मे आगे रहना और वीरता से लडते हुए मारे जाना जीवन की चरम उपलब्धि मानी जाती थी।[५] अपनी वीरता पर ही उन्हे परम गव होता था। वे कूटनीति मे विश्वास नही करते थे, प्रत्युत उसे त्याज्य मानते थे। युद्ध मे आमने-सामने लडकर मर जाना कही अधिक अच्छा समझने थे।[६] यो वीर को ही सच्चा राजपूत माना जाना चाहिए इस सिद्धान्त मे वे विश्वास करते थे।[७] कुभा द्वारा हेमा को मारने का बीडा उठाने पर ठाकुरो ने व्यग्य किया था कि 'कुभा ननिहाल मे जाकर मैंढो पर कटार चलावेगा' अत हेमा को कटार से ही मारने के बाद कुभा ने कहा था, 'मालाणी के सरदारो को बता देना कि कुभा की कटार हेमा की छाती मे टूटी है, मैंढा पर नही'। यही नही, हेमा के बोल की चुनौती को स्वीकार कर कुभा ने हेमा को मारने के लिए अपने

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६२, २६४-६५।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६२।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २६८।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान) ३, पृ० २७१।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३२५ २६।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६६।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६१, २६२, २६६।

साथियो का सहयोग नही लिया। उसने स्वय ने ही वीरता का प्रदर्शन करते हुए और अपने पद की मर्यादा के अनुरूप उसने अनुभवी वयस्क हेमा को भी छोटा मानकर उसे ही पहला वार करने के लिए बाध्य किया था।[1]

किसी के भी सबल परन्तु अनुचित दबाव को राजपूत कदापि स्वीकार नही करता था। प्रत्युत उसका विरोध करने को तत्पर हो जाता था। वह हर प्रकार की चुनौती का सामना करने को सदैव तैयार रहता था। यही कारण था कि जब दूदा ने हमीर दहिया से एक लाख रुपये की माग की तब उसने सोचा कि अगर यह द्रव्य दे दूगा तो जाट-गूजर कहलाऊँगा और हाडौती मे बदनाम होऊँगा और नही देने पर मारा जाऊँगा।[2] इसी प्रकार जबरदस्ती माँगा गया अवैधानिक दण्ड चुकाना राजपूत जाति अपने सम्मान के विरुद्ध मानती थी, क्योकि जब भेड भी अपनी ऊन स्वेच्छापूर्वक किसी को काटने नही देती है—उसे तो नीचे गिराकर गुद्दी पर पॉव रखकर ही मूडा जा सकता है, तब राजपूत उससे भी गया बीता कैसे हो जाता।[3]

राजपूत अपने वचन के पक्के होते थे। एक बार हा करने पर ना कहना सवथा असम्भव था।[4] इसी प्रकार राजपूत स्वामीभक्त होते थे और स्वामी के वशजो के सन्दभ मे भी उसे यथासम्भव निबाहते थे।[5]

राजपूत वैर परम्परा को निबाहना अपना कतव्य मानते थे। उसको दूर करने के लिए वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करना ही एकमात्र सम्भावित उपाय हो सकता था।[6]

अपने सगोत्रीय सगे-सम्बन्धियो को छल से मारना राजपूत कदापि अच्छा नही मानते थे।[7] शरणार्थी की रक्षा करना और कुशलतापूवक उसे उसके घर पहुँचा देना वे अपना कतव्य समझते थे।[8]

धरती का उनकी दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्व था, और उसकी प्राप्ति के लिए सब ही प्रकार का छल-कपट करने को उद्यत रहते थे।[9] इसी प्रकार उन दिनो अच्छे घोड का विशेष महत्त्व था और कोई भी राजपूत अपने चढने का घोडा-

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० २६१, २६५ ६६।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २६६।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० २७१।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १८१।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० २७२। 'हम तेरे बाप के राजपूत हैं इसलिए तुझे नही मारते'।
६ देखिये अध्याय ६ वैर की परम्परा'।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० २६६।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २ प० २६६ ३००।
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १८१-८३, २४६।

घोडी सहज दे देने को तैयार नही होता था। घोडो को लेकर अनेक बार वैर बँधा और उसके भयकर परिणाम हुए।[१]

चारणो का राजपूतो के साथ बहुत निकट का सम्बन्ध था। वे उन्हे सम्मान-नीय और अवध्य मानते थे।[२] वे राजपूतो के सलाहकार और सहायक होते थे। उनकी ओर से युद्धो मे भाग लेते थे और काम आते थे।[३] वे राजपूतो की कीर्ति-गाथा पर काव्य-रचना कर उनकी कीर्ति का प्रसार करत थे।[४]

राजपूतो के उपर्युक्त जीवन-दशन के अनेको उदाहरण मिलते है, परन्तु यहा केवल कुछ विशिष्ट बातो की ही चर्चा की गयी है और उनके दृष्टान्तो के रूप मे कुछ का निर्देश पाद-टिप्पणियो मे किया गया है।

२ राजपूत समाज की उल्लेखनीय विशेषताएँ

नैणसी ने अपनी ख्यात० मे राजपूत राज्यो के मध्यकालीन इतिहास सम्बन्धी अनेकानेक घटनाओ का जो विवरण दिया है और तद्विषयक जो भी बातें उसमे सग्रहीत की हैं, उनसे तत्कालीन राजपूत समाज की बहुविध जानकारी सुलभ हो जाती है तथा उसकी अनेकानेक उल्लेखनीय विशेषताओ पर बहुत-कुछ प्रकाश पडता है। उनमे से कुछ प्रमुख सामाजिक मा यताओ तथा प्रचलित परम्पराओ का विवेचन किया जाता है।

राजपूत-विवाह—अन्य उच्च वर्णीय हिन्दुओ की ही तरह राजपूतो मे भी विवाह मूलत एक धार्मिक सस्कार ही माना जाता था, परन्तु अधिकतर युद्ध-रत रहने के साथ ही कालान्तर मे मुसलमानी आधिपत्य स्थापना का भी परोक्ष रूपेण प्रभाव पडा था। यो व्यवहार मे भी कई एक छोटी-मोटी विभिन्नतायें मान्य होती गयी थी, जिससे वैवाहिक सम्बन्धो को लेकर कई बातें सामने आती गयी। राजस्थान अथवा राजपूतो के इतिहास मे तत्सम्बन्धी विस्तृत विवरण मिलते है, परन्तु इस सन्दभ मे यहा जो जानकारी दी जा रही है वह मूलत नैणसी के ग्र थो से ही सकलित की गयी है।

हिन्दू सस्कारो मे विवाह एक महत्त्वपूण सस्कार है। इस सस्कार के द्वारा समाज स्त्री-पुरुषो के यौन सम्बन्धो को धार्मिक तथा सामाजिक मा यता प्रदान करता है। इस सस्कार के बिना स्त्री-पुरुषो का सहवास निषिद्ध और धमविरुद्ध माना जाता है।[५] यदि कोई स्त्री पाणिग्रहण सस्कार के बिना किसी पुरुष के साथ

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ प० २४८ ५०, २, पृ० २६०।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० २७०।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १५० ५१, १५२, १८१-८२, २, प० ६२ ६ ।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १७० ७१।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० २२७।

रहने लग जाती तो उच्च जातीय समाज मे निंदनीय समझा जाता था और उच्च समाज से उसे निष्कासित कर देते थे।[१] ये सब मान्यताएँ मध्यकालीन सामाजिक जीवन मे भी यथावत मिलती है। नैणसी की ख्यात० मे तत्कालीन हिन्दू विवाह सस्था के साथ-साथ तत्सम्बन्धी राजपूतो की मान्यताओ पर भी पूर्ण प्रकाश पडता है।

साधारणतया लडकी और लडके के माता-पिता ही विवाह सम्बन्ध तय करते थे।[२] कभी-कभी युवा ही किसी सम्बन्ध से स्वय सन्तुष्ट होकर उसके लिए अपने पिता को सहमत करवा लेता था।[३] विवाह सम्बन्ध तय करते समय वश, कुल और सामाजिक स्तर का पूरा ध्यान रखा जाता था।[४] विवाह के पूर्व लडकी का पिता लडके के गुण-दोषो की ओर भी पूरा ध्यान देता था। यदि लडके मे कोई अवगुण होता तो वह उससे अपनी लडकी का विवाह नही करता था, और ऐसी अस्वीकृति से आपसी विरोध और दुश्मनी भी हो जाती थी, जिसके भयकर दुष्परिणाम भुगतने पडते थे।[५] परन्तु राजनैतिक विवाहो मे स्तर आदि की ओर ध्यान नही दिया जाता था।[६] सामान्यत लूली-लँगडी आदि लडकियो का विवाह नही हो पाता था और यदि धोखे से किसी के साथ ऐसी लडकियो का विवाह हो जाता तो उनको पति की ओर से किसी प्रकार का सुख नही मिल पाता था। केवल अपवाद स्वरूप ही उसे कोई अपना लेता था। विवाह मे ऐसी ही बाधाए वर की थी। अन्ध को लडकी ब्याहने मे हिचक होती थी।[७] इसी प्रकार मूल नक्षत्र मे जन्मी लडकियो का विवाह भी नही हो पाता था। अनजाने मे हो सकता था। इस कारण इस नक्षत्र मे जन्मी लडकियो को जन्म समय या बाद मे मार दिया जाता था या फेंक देते थे।[८] सभी बातो को देखते हुए पना चलता है कि चारण, ब्राह्मण (पुरोहित), भाट आदि को भेजकर विवाह सम्बन्धी बातचीत की जाती थी।[९] प्रारम्भिक बातचीत होने के बाद वर पक्ष के पास नारियल[१०] भेजे जाते थे,

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ४१, २२७ २८।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३२४, ३, पृ० ७२।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३२४ २५।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १८१ ८२, २६४, २, पृ० २८६ ८७, ३, पृ० ४१।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २८६ ८७, २६२, ३, पृ० ८।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २५३, २६४, ३४६, ३, पृ० १४१ ४३।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १०३।
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १८१।
१० विगत० १ पृ० १२। ब्राह्मण द्वारा लाये गये नारियल को बिना किसी विशेष कारण के लौटा देने पर अपयश व लोकनिन्दा का भागी ही नही होना पडता था, परन्तु कई वार उत्कट वमनस्य का भी प्रारम्भ हो जाता था। विवाह प्रस्ताव का नारियल लाने

शुभ मुहूत के दिन ब्राह्मण वर के तिलक करता था और तब वर को नारियल अर्पित किया जाता था, जिसे टीका[1] रस्म कहा जाता था। यह रस्म[2] पूर्ण होने के बाद ही विवाह सम्बन्ध तय माना जाता था। तथा उस कन्या की वर के साथ सगाई (मँगनी) हो जाती थी। मँगनी[3] हो जाने के उपरान्त विवाह के लिए तिथि और समय निश्चित किया जाता है, जिसे लग्न कहा जाता है।[4] लग्न दिन के कुछ दिनो पूव पीमी हुई हल्दी मे तेल डालकर उसको दूल्हा-दुलहिन के शरीर पर तब भी मला जाता था जिसे तेल चढाना कहा जाता था। यह काय प्रारम्भ हो जाने के बाद विवाह तिथि स्थगित नही की जा सकती थी।[5]

लग्न के दिन दूल्हा बारात के साथ कन्या पक्ष के यहाँ आता था। कन्या पक्ष की ओर मे साम्हेला (अगवानी) किया जाता था।[6] उसके बाद बारात को जानीवासा मे ठहरा दिया जाता था।[7] तब कन्या पक्ष की ओर से बारातियो की मेहमानदारी की जाती थी। कन्या पक्ष की ओर से बारातियो के सुख-मुविधा आदि का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता था और उन्हें अच्छा से-अच्छा खानपान प्रस्तुत किया जाता था। राजपूतो मे मास, मदिरा के खानपान का बहुत प्रचलन था। अफीम और भाँग भी पर्याप्त मात्रा मे काम मे आती थी।[8] अत बारातियो के लिए प्रस्तुत की जाती थी। लग्न समय के पूव जानीवास से दूल्हा तोरण के लिए बुलाया जाता था।[9] दूल्हा और साथ के सब बाराती तोरण तक जाते थे। तोरणद्वार के अन्दर बारातियो का प्रवेश निषेध था। तोरण मारने की यह रस्म इस बात का प्रतीक थी कि वर ने कन्या पक्ष के गढ के तोरणद्वार को जीतकर ही विजयी के रूप मे उसमे प्रवेश किया है। तोरण की रस्म हो जाने पर वर को विवाह-मडप मे ले जाने के लिए जनानी ड्योढी पर ले जाते थे। जनानी डयोढी के अन्दर केवल दूल्हा ही जाता था। पर्दा-प्रथा के कारण अन्य बारातियो को

वाले ब्राह्मण को विदाई के समय वर पक्ष की ओर से अपनी इच्छा और सामर्थ्यानुसार द्रव्यादि दिया जाता था। ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ३२४ २५।

१ टीका मे वर को द्रव्य, घोडा आदि दिये जाते थे। ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० २८५।

२ सगाई (वाग्दान) कहते हैं।

३ जिस वर के साथ किसी कन्या की मँगनी हो जाती थी तब उस कन्या को उक्त वर की माँग कहा जाता है। उस समय किसी एक से मँगनी हो जाने के बाद उसी कन्या की मँगनी किसी दूसरे से भी कर देने पर युद्ध हो जाता था।

४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ७२, ३, प० ४१ १०४ विगत०, १, प० १२।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० ७५।

६ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, प० १८२, २, प० ४०, - प० ४५।

७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ८३।

८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ८३ १८२।

९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० १८२।

वहाँ नही जाने दिया जाता था ।[१] ड्योढी पर ही तब दूल्हा की आरती की जाती थी ।[२] इस समय दूल्हा के ललाट पर दही का तिलक किया जाता था ।[३] तदनन्तर ही दूल्हा को विवाह-मण्डप मे ले जाया जाता था[४] जो प्राय बाँसो और केलो के पत्तो से बनाया तथा सजाया जाता था ।[५]

उधर तब दुलहिन को भी नववस्त्रो और आभूषणो से सुसज्जित कर विवाह-मण्डप मे लाया जाता था ।[६] दोनो को साथ-साथ बैठाकर ब्राह्मण हथलेवा जोडता था और तब अग्नि की परिक्रमा दिलाकर पाणिग्रहण सस्कार सम्पन्न करवाता था ।[७]

इस सस्कार के तुरन्त बाद वधू के सगे-सम्बन्धी अपनी-अपनी इच्छानुसार कन्यादान करते थे । कन्यादान मे रुपये, आभूषण, पशु (पशुओ मे गाय का दान सवश्रेष्ठ माना जाता था), जमीन आदि देते थे। कन्यादान पाणिग्रहण सस्कार का अन्तिम चरण माना जाता था ।[८] विवाहोत्तर कन्या के पिता के यहा ही वर-वधू रात्रि मे सहवास करते थे और उसी दिन मुँहदिखाई की रस्म भी की जाती थी । दूसरे दिन साला कटारी[९] की रस्म की जाती थी । बारात कम-से-कम दो-चार दिन कन्या पक्ष के यहाँ ठहरती थी और इसी समयान्तर कन्या का पिता अपने सामर्थ्यानुसार हर तरह से सेवा करता था । इस विवाहोत्सव मे नाच-गाना भी होता था ।[१०] सभी रस्मे पूर्ण हो जाने के बाद कन्या का पिता दहेज देकर बारात को विदा कर देता था। दहेज मे धन-दौलत, आभूषण, दासियाँ, वस्त्र, पशु, आवश्यक वस्तुएँ, सेवक और जागीर अपने-अपने सामर्थ्यानुसार दी जाती थी ।[११] विदाई के पूर्व दूल्हा अपनी ओर से लाग-दापा की रस्म भी पूरी करता था। इसी रस्म के अनुसार विवाह से सम्बन्धित जितने सेवक होते थे उनको वर पक्ष की ओर से रुपये आदि दिये जाते थे ।[१२] न्याग बाटने की रस्म

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १८२ ।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० १४३ ।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० १२४ २५, १२७ ।
४ इसको सास आरती कहा जाता है ।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० २८७ ।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १८२ ।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, प० १८२ ८३ ।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान) ३ प० ६२ ।
९ साला कटारी मे नव विवाहित बहनोई का तरफ से साले को शस्त्र, द्रव्य अथवा भूमि आदि दिये जाते थे । विगत०, १, प० ४० ।
१० ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० २९५, ३१८, ३, पृ० ७५ ७६ ।
११ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० १२४, ३, प० २०२, २८२, विगत०, १, पृ० ८, ६९ ।
१२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २३२ ।

भी होती थी। त्याग बाँटने[१] के बाद ढोल बजवाया जाता था और तब बारात की विदाई होती थी।[२] वधू को साथ लेकर बारात वर पक्ष के अपने घर को वापस लौट जाती। उसके बाद वर-वधू के काकन-डोरडे खोले जाते थे।[३] विवाह मे ढाढी भी साथ होता था।[४] यह गायन करता था।

बहुपत्नी विवाह—जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, राजपूत समाज मे भी विवाह मूलत धार्मिक सस्कार था, परन्तु जब उत्तरी भारत के अधिकाश क्षेत्रो मे राजपूत राजघरानो का आधिपत्य स्थापित हो गया, तब राजपूत शासको और उनके आधीन सब ही स्तरो के राजपूत घरानो मे वैवाहिक सम्बन्धो के साथ राजनैतिक, सामरिक, सामाजिक अथवा व्यक्तिगत कारण भी जुड गये, जिससे राजपूत समाज मे बहुपत्नी विवाह प्रथा चल निकली।

राजपूत समाज के साधारण परिवारो मे सम्भवत आर्थिक कारणवश ही अधिकतर बहुपत्नी विवाह नही होता था। परन्तु धन-सम्पन्न राजपूत परिवारो, ठाकुरो, जागीरदारो और शासको मे बहुपत्नी विवाह का विशेष प्रचलन था।[५] किसी पुरुष के कितनी पत्नियाँ होगी, इसकी कोई सीमा नही होती थी।[६] बहु-पत्नी विवाह बुरा नहीं समझा जाता था, प्रत्युत अधिकाश उच्च स्तरीय व्यक्ति इसे मान-मर्यादा का द्योतक मानते थे।[७] परन्तु ऐसा भी उदाहरण मिलता है कि प्रथम पत्नी उसका विरोध करती थी।[८]

बहुविवाह के कारण—बहुपत्नी विवाह प्रथा के प्रचलन के कई एक ऐसे कारण थे, जिससे व्यक्तिगत, कौटुम्बिक या अन्य प्रकार के विरोधो के होते हुए भी मध्यकाल मे इसका बहुत अधिक प्रचलन हो गया था और यह एक साधारण-सी बात हो गयी थी। नैणसी के ग्रन्थो के अध्ययन से इस प्रथा के प्रचलन के कई एक कारण स्पष्ट होते है। एक राजा दूसरे राजा से पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करने अथवा सैनिक सहायता प्राप्त करने के लिए राजनैतिक विवाह करते थे। इसी प्रकार जागीरदार भी।[९] पुराने वैर-भाव समाप्त करने के लिए

---

१ रण चढण ककण बधण, पुत्र बधाई चाव।
तीन दिहाडा त्याग रा, कहा रक कहाँ राव॥
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ५४, ३२७।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ७३, २, प० ३१८।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २ प० ३२७।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ५४, २७६, २, प० ७५ ७६, १६०, २३४।
६ विगत०, १, पृ० ५५ ५६, ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ८१।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ३६ ४०।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० ३।
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० ३१२, ३, प० ८।

भी विवाह सम्बन्ध स्थापित किये जाते थे।[1] कई बार किसी युवा योद्धा की वीरता से प्रभावित होकर कई राजपूत उसके साथ विवाह सम्बन्ध स्थापित करने को समुत्सुक हो उठते थे।[2] सम्पन्नता के कारण अय्याशी की भावना जागरूक हो गयी और व्यक्तियो ने एक से अधिक पत्निया रखना प्रारम्भ कर दिया।[3]

बहुविवाह के दुष्परिणाम—जहा बहुपत्नी विवाह से अनेको बार राजनैतिक, कौटुम्बिक या व्यक्तिगत लाभ उठाये जाते थे, इसी प्रथा के फलस्वरूप अधिकतर सब ही प्रकार की अनेको ऐसी समस्याएँ या उलझनें उठ खडी होती थी कि अन्तत उनके विषम हानिकारक परिणाम होते थे, जिनके अनेको उल्लेख नैणसी के ग्रन्थो मे यत्र-तत्र पाये जाते है।

बहुविवाह के कारण पति अपनी पत्नी की इज्जत नही करता था, यदि किसी पत्नी ने उसकी आज्ञा के अनुसार चलने मे जरा-सी भी आना-कानी की या किसी कारणवश बाध्य होकर उसकी आज्ञा का उल्लघन किया तो पति उस पत्नी को बुरा-भला कहता, उसे पीटता भी था और यहाँ तक कि कभी-कभी तो कोई पति उसके सामने ही उसकी सौत (दूसरी पत्नी) को पलग पर ले लेता—जो स्थिति किसी भी स्त्री को स्वीकार्य नही हो सकती थी और वह उस पति को हमेशा के लिए छोडकर चले जाने का निश्चय कर लेती थी। बहुविवाह जन्य असन्तोष, विरोध तथा वैमनस्य के कारण पति को बहुविध हानि भी होती थी। इन्ही कारणो से कई बार दोनो पक्षो मे युद्ध भी ठन जाता था, जिससे दोनो ही पक्ष शक्तिहीन हो जाते थे।[4]

बहुविवाह के कारण पति अपनी पहले वाली पत्नियो को भूलकर सबसे बाद वाली या किसी अन्य एक रानी को ही प्यार करने लग जाता था। तब अन्य सब ही स-पत्नियाँ पति से मिल सकने वाले सब ही सुखो से वचित रह जाती थी।[5] कृपापात्र पत्नी के अतिरिक्त अन्य दुहागन हो जाती थी।[6]

कभी-कभी ऐसी सौत विशेष के कारण ही दूसरी स-पत्नियो के लडको की उपेक्षा होनी थी और उनके हितो पर आघात भी होता रहता था। सौतो के आपसी झगडे के कारण जो पति अपनी जिस पत्नी पर विशेष कृपा रखता था,

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ५९ ६०, १००, २०६, २, पृ० ३३६।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २०० ७।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २८६ ८८, ३, पृ० १९९ २००, विगत०, १, पृ० ४७ ४८।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १४४ ४८, २, पृ० ४१ ४२।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २६४ ६५।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १२४, २, पृ० २२८ २९।

उसका कहना मानकर अपने पुत्र का विवाह अन्धी लडकी से भी कर देता था।[१]

प्रिय रानी अथवा पत्नी के कहने पर कभी-कभी ज्येष्ठ एव उत्तराधिकारी पुत्र को भी देशनिकाला दे देता था।[२] अत उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर भयकर गृहकलह भी हो जाता था जो कई बार राज्य और ठिकाने तथा उनके घरानो के लिए घातक प्रमाणित होता था। यो उत्तराधिकार हेतु सघष प्रारम्भ हो जाना स्वाभाविक ही था।

ऐसे बहुविवाहो के कारण ही सौते अधिकाशनया किसी-न-किसी बात को लेकर आपस मे लडा करती थी और गृहकलह चलता रहता था। कोई पत्नी सम्पन्न परिवार की होती तो कोई गरीब। अत स्वाभाविक ही था कि धनी परिवार की पत्नी के पास आभूषण आदि अधिक होते और गरीब के पास कम, जिससे ईर्ष्या भावना बढती और स्त्रिया आपस मे लडती रहती। कभी-कभी ऐसा व्यक्तिगत झगडा न केवल पूरे घर मे फैल जाता, बल्कि दो विभिन्न राजपूत खापो का झगडा बन जाता था।[३]

यदि कभी किसी पत्नी के पिता पर बाह्य शत्रु आक्रमण करता तो विवाह के कारण ही उसके पति को भी कभी-कभी श्वसुर को सहयोग देना पडता था जिस से उसकी सैनिक शक्ति क्षीण होती थी। विभिन्न घरानो की पत्नियो के कारण भी अनेक बार उनके पति के लिए तब कई विचित्र उलझने खडी हो जाती थी जब उसके दो ससुरालो मे आपसी वैर हो जाता था।[४] अनेक बार विभिन्न घरानो मे ही नही विभिन्न राज्यो मे भी झगडा हो जाता था।[५]

बाल विवाह—विवाह के समय वर-वधू की क्या आयु होनी चाहिए यह चिरकाल से विवाद का विषय रहा है। यो तो वयस्क होने पर ही विवाह किया जाना समीचीन होता है, परन्तु अनेको कारणो से बाल विवाह भी होते आये है। मध्यकालीन राजस्थान मे राजपूतो मे भी बाल विवाह का बहुत अधिक प्रचलन था।[६] नैणसी मे उल्लेख मिलता है कि १२ वष की अवस्था के लडके का भी विवाह कर देते थे।[७] कन्या के रजस्वला हो जाने के बाद तो पिता को उसके विवाह की अत्यधिक चिन्ता होने लगती थी।[८] १० से १५ वष की अवस्था मे तो लडकियो

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३४६।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३१२ १३।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ६२ ६३।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० १२६ २८।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ४७ ४८।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ७५।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ७५।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८२ ८३।

का विवाह अवश्य ही कर दिया जाता था ।[1] इस प्रकार नाबालिग अवस्था मे ही लडकियो के विवाह हो जाते थे।

बाल विवाह प्रथा का प्रमुख कारण राजपूत घरानो की गरीबी होती थी।[2] इसी कारण व्यय बचाने हेतु अलग-अलग आयु के लडके-लडकियो का विवाह एक साथ कर दिया जाता था ।[3] ज्यादा पुत्रिया होने पर भी सबका (तीन-चार का भी) एक साथ विवाह कर दिया जाता था। यो आर्थिक कठिनाइयो से बाध्य होकर ही बाल विवाह होने लगे होगे ।[4]

सती प्रथा—राजपूत घरानो मे सती प्रथा कितनी पुरानी है यह कहना सम्भव नही है। मारवाड के राठाड राज्य के आदिसस्थापक की देवली पर सन् १२७३ ई० के लेख से यह स्पष्ट है कि वह देवली सीहा की सोलकिणी पत्नी पावती ने बनवायी थी ।[5] जिससे यह स्पष्ट है कि तब सीहा की पत्नी अपने पति के साथ सती नही हुई थी। परन्तु कालातर मे अवश्य ही सती प्रथा राजपूत समाज की एक उल्लेखनीय विशेषता ही नही गौरव और प्रतिष्ठा की भी बात बन गयी थी। अत जहा अकबर ने भी सती प्रथा को रोकने के प्रयत्न किये थे, वही जोधपुर के मोटा राजा उदयसिह का लाहौर मे देहान्त हो जाने पर जब उसकी चिता पर उसकी रानियाँ आदि सती हुईं तब उस दृश्य को देखने हेतु वह स्वय वहा गया था ।[6]

अत सती प्रथा सम्बन्धी अनेको उल्लेख नैणसी के ग्रन्थो मे मिलना स्वाभाविक ही है, उन्ही के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पति के मरणोपरात पत्नी भी अपने पति के साथ आग मे जल जाती थी। उसे ही सती कहा जाता था। प्राय पत्नी पति का मस्तक अपनी गोद मे लेकर चिता मे बैठती थी ।[7] कभी-कभी स्वय साथ मे न जलकर अपने शरीर का एक अग काटकर साथ मे जला देती थी और स्वय कुछ समय बाद जलती थी।[8] यदि कभी-कभी पति दूरस्थ स्थान पर मर जाता तो उसके मरने की सूचना आने पर पत्नी चिता मे जलकर सती होती थी।[9] परन्तु कोई भी स्त्री गर्भावस्था मे सती नही हो सकती थी,

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६७ ।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १८२ ।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १८२ ।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ८२ ८३ ।
५ इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, ४०, पृ० ३०१ ।
६ अकबरनामा० (अ० अ०), ३, पृ० ५६४ ६६, १०२७ २८ ।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० ११३ ।
८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३२८ ।
९ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २ ।

क्योकि वह स्वय चिता मे प्रवेश कर सकती थी, परन्तु अपने साथ किसी अन्य जीव की हत्या करने का उसे कोई अधिकार नही था। अतएव सन्तान के जन्म के कुछ दिन बाद ही सती हो सकती थी।[१] सती होने के पूव सम्पूण आभूषण उतार दिये जाते थे, और वे तब दान मे दे दिये जाते थे।[२]

सती प्रथा के पीछे पवित्र उद्देश्य था। स्त्री अपने को पुरुष की अर्धांगिनी समझती थी। वह सदासवदा के लिये पति के साथ रहना चाहती थी। उसकी धारणा थी कि वह जिस प्रकार इस लोक मे पति के साथ रह रही है उसी प्रकार सती होकर परलोक मे भी पति के साथ रहे। अत अधिक समय तक वह मृत पति से विलग नही रहना चाहती थी।[३] इसके उद्देश्य पर नैणसी की ख्यात० मे अच्छा उदाहरण उपलब्ध है। राव वीरमदेव के मारे जाने के बाद उसके अन्य साथी लोग उसकी पत्नी और पुत्र चूण्डा को लेकर भाग निकले। कुछ दूरी तय करने के बाद वीरम की पत्नी ने कहा, 'मुझे तो अपने पति से ही काम है। मेरा उससे अन्तर बढ रहा है। इसलिए सती होऊँगी।'[४] यो अपने पति के मरने के बाद पत्नी इसी उद्देश्य से सती होती थी, और तब तक वह प्रथा एक प्रतिष्ठादायक सामाजिक परम्परा बन चुकी थी, प्राय स्त्रियाँ स्वेच्छा से ही सती होती थी।[५] परन्तु ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जिसमे स्त्रियो को सती होने के लिए बाध्य किया जाता था।[६]

३ धार्मिक मान्यताएँ, अलौकिक मे श्रद्धा तथा सार्वजनिक अन्धविश्वास

भारत सदैव से धम प्रधान देश रहा है। परन्तु धार्मिक आस्था के साथ ही यहाँ नास्तिक हिन्दू भी रहे हैं। पुन विभिन्न क्षेत्रो या वर्गों के उपास्य देवी-

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० २, ३ पृ० ७६।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० २।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १ पृ० २६६ २, पृ० ३०४।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० ३०४।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २६६।
६ सती होने के लिए बलपूवक बाध्य करने के प्रयत्न का एक उदाहरण अबुल फजल ने 'अकबरनामा' मे दिया है। मोटा राजा उदयसिंह की पुत्री दमेती (दमयन्ती) कछवाहा जयमल रूपसीहोत को ब्याही गयी थी। मई, १५८३ ई० मे जयमल का चौसा मे देहान्त हो जाने पर जब यह सूचना आगरा पहुची तब दमेती के सती होने का आयोजन होने लगा। परन्तु दमेती उसके लिए तत्पर नही थी। अन्त मे स्वय अकबर ने आदेश देकर सती को रोक दिया। तदनन्तर दमेती वन्दावन मे ही रहने लगी जहाँ सन् १६२७ ई० मे उसका स्वगवास हुआ था। अकबरनामा० (अ० अ०), ३, पृ० ५९४ ९६, जोधपुर की ख्यात०, १, पृ० १०२।

देवता भी भिन्न होते थे। राजस्थान के शासको मे जहा राठोड शासको की कुल-देवी चक्रेश्वरी (नागणेची) थी[1] वहा मेवाड का महाराणा श्री एकलिगजी को ही राज्य प्रदान करने वाला मानता था।[2] इसी प्रकार सब ही विभिन्न राजपूत खाँपो की अपनी-अपनी उपास्य देवी होती थी। इसके अतिरिक्त अपनी-अपनी भावना और विश्वासो मे आस्थावैचित्र्य सवत्र विद्यमान था, जो तत्कालीन जीवन मे स्पष्ट पाये जाते रहे।

राजपूतो मे मृत्यु के बाद आत्मा के पुनर्जन्म मे पूण विश्वास था। अनेक कथाओ मे पिछले जन्म की कथाओ का उल्लेख मिलता है।[3] मृत्युपरान्त जीवन मे भी पति के साथ रहने की इच्छा से ही वीरागनाएँ सती होने को समुत्सुक रहती थी। युद्ध के पहले भी योद्धागण अगले जन्म मे पुन मिलने की बात सोचते और कहते थे।[4]

मुहणोत नैणसी के ग्रन्थो मे इतिहास के साथ ही तत्कालीन राजपूत समाज और जीवन की कई झाकिया देखने को मिलती है। अत उसके ग्र न्थो मे जो विवरण तथा उल्लेख मिलते है उनसे तत्कालीन धार्मिक मान्यताओ और विश्वासो पर पर्याप्त प्रकाश पडता है। हिन्दू बहुदेववादी रहे है। मूर्तिपूजा मे पूण विश्वास प्रगट होता है। विभिन्न देवी-देवताओ की मूर्तिया मन्दिर मे स्थापित की जाकर उनकी पूजा की व्यवस्था होती थी। इस समय तक पुजारी परम्परा सुदृढ रूपेण स्थापित हो चुकी थी। प्रत्येक मन्दिर का एक या अधिक पुजारी होते थे। मन्दिर मे स्थापित मूर्ति की पूजा आदि ही उनका मुख्य धार्मिक कतव्य होता था। उनकी जीविकोपाजन के लिए राज्य अथवा समाज की ओर से व्यवस्था की जाती थी। यद्यपि मुसलमानो द्वारा अनेक बार मन्दिरो को ध्वस किया जाता रहा,[5] फिर भी हिन्दुओ का मूर्तिपूजा मे अटूट विश्वास बना रहा।

देवी देवताओ की शक्ति सम्बन्धी मान्यतानुसार उन्हे विभिन्न श्रेणियो मे विभक्त किया जाता था। उदाहरणाथ—महादेवी से कुलदेवी निबल और कुलदेवी से क्षेत्रपाल निबल माना जाता था।[6] ग्रह, पशु, उरग आदि भी देवता स्वरूप माने जाते थे। सूय इच्छापूर्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाला देवता और युद्ध का देवता भी माना जाता था।[7] महाराणा प्रताप के भाई सगर

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ११, ३४, अभिलेख०, पृ० १०२।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ७, २२।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १५७।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २१५ १६, २२४।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २७७।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २६७, २७२।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १।

ने पुष्कर मे वाराह के मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया था।[1]

हिन्दू अवतारवाद मे पूणतया विश्वास करते थे। पुन अपने विश्वासानुसार विभिन्न देवी-देवताओ की साधना करते थे। मानव मे दैवी-शक्ति का प्रस्फुटन अथवा आवेश पर भी पूरा विश्वास था, जिससे जनसाधारण के लिए बलि हो जाने वाले अथवा उनकी रक्षाथ निरन्तर प्रयत्नशील रहने वाले नर-पुगवो को लोकदेवता के रूप मे प्रतिष्ठित कर दिया जाता था।[2] जो व्यक्ति विशेष मानव समाज के जनहित अथवा निर्बल और पूज्य के रक्षणाथ या अपने वचनो को निबाहने के लिए चमत्कारिक कार्य कर दिखाता हुआ अपने जीवन की बलि देता था, उसके मरणोपरान्त उसको देवता के रूप मे मान्य कर उसकी पूजा आरम्भ हो जाती थी। राजस्थान आदि क्षेत्रो मे रामदेव हरभू साखला और पाबू राठोड आदि कुछ व्यक्तियो की गणना बाद मे लोकदेवता के रूप मे की जाने लगी।[3] लोकदेवताओ के अतिरिक्त ऋषियो, जोगियो अथवा सत साधुओ मे भी हिन्दू जनता का विश्वास था। देवी-देवताओ के प्रमुख भक्त के रूप मे मानकर उनकी भी सेवा की जाती थी।[4] जो व्यक्ति कठोर तपस्या आदि नही कर सकते अर्थात साधारण गृहस्थी-जन भी ईश्वर के इन भक्तो की सेवा कर ईश्वर तक पहुँचने की कामना करते थे। इच्छापूर्ति के लिए देवी-देवताओ की, पीरो और लोकदेवताओ तक की मनौती ली जाकर वहा भेट, पूजा चढाई जाती थी। कही-कही पर पशु-बलि भी दी जाती थी।[5] यही नही, तदथ कई एक कँवल पूजा भी करते थे।[6] अथवा उसके स्थान पर सोने का सिर भेट मे चढाया जाता था।[7]

मुसलमानो के भारत आगमन और यहाँ उनके आधिपत्य की स्थापना के बाद भी हिन्दू यथावत् मूर्तिपूजक बने रहे थे। यो राजनैनिक दबाव, निजी स्वाथ अथवा परिस्थितियो की विवशता के कारण यदा-कदा उच्चवर्गीय और कई एक निम्नवर्गीय हिन्दुओ ने इस्लाम धम अगीकार किया। अपने व्यवसाय आदि के हेतु कई व्यवसाय वालो को भी विजेताओ और शासक वग का धम स्वीकार करना पडा। परन्तु उनकी मनोवृत्तिया तथा विचार-परम्परा अपरिवर्तित ही

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २४।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ३५० ५१, विगत०, २, प० २६।
३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ३४८, ३५० ५१, ३, प० ५८ ७६, विगत०, २, प० २६।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, प० २०, २३, २०६ ११, २१४, ३३०, ३, पृ० २६-२७।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, प० १७।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ३३६, २, प० १३, १७, २२।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ३३६।

रही, जिससे इस्लाम धर्मावलम्बियो मे भी आन्तरिक जातिवाद अनेक रूपो मे उभरा था। जैसे पीजारा, भडभूजा, नालबन्द, कुजडा, जुलाहा बणगर, लखारा, हलालपोर (मेहतर)।[१] पुन जहा से वे मूलत आये थे आदि के आधार पर भी 'मुलतानी', तुरक आदि वर्गों मे बट ही नही गये थे, समाज मे भी उसी नाम स जाने जाते थे।[२] प्रारम्भ से लेकर नैणसी के समय तक भी समय-समय पर मन्दिरो का ध्वस भी किया जाता रहा था। फिर भी हिन्दू विचारधारा यथावत् बनी रही। सदियो तक हिन्दू-मुस्लिम दोनो जातिया साथ-साथ रही इसी कारण काला तर मे दोनो धर्मों की कट्टरता कम होती गयी। हिन्दू धर्म मे भी जागृति आयी। परिणामस्वरूप दोनो जातियाँ एक-दूसरे के निकट आयी। एक-दूसरे को जाना पहिचाना। हिन्दू भी मुस्लिम सन्तो मे विश्वास करने लगे।[३] राजपूत शासको ने राजनैतिक आवश्यकता को समझकर मुस्लिम सूबेदारो और शासको के साथ वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किये।[४] यो प्रारम्भ मे हेय और घृणा की दृष्टि से देखी जाने वाली विदेशी जाति के प्रति भी हि दुओ मे विश्वास और सहानुभूतिपूण विचार उठने लगे थे।

तथापि कई एक धार्मिक मामलो मे हिन्दू मुसलमानो का उत्कट विरोध करते थे। यह एक कठोर सत्य हे। उदाहरणस्वरूप हिन्दू गाय को पूज्य मानते रहे है। अत मुसलमाना द्वारा की जाने वाली गौहत्या का हिन्दू तब भी यथा-शक्य विरोध करते थे।[५] पुन खान-पान आदि मे मुसलमानो के साथ पूरी छूत-छात बरती जाती थी। मुसलमान शासको अथवा मुगल सम्राटो के साथ राज-पूत राजघरानो की कन्याओ के विवाह तो अपवाद ही समझे जाने चाहिए। राजपूत के अन्य किन्ही स्तरो मे ऐसे वैवाहिक सम्बन्ध होने के कोई उल्लेख नही मिलते है। राजपूत समाज के भी सामान्यजन ऐसे वैवाहिक सम्बन्धो के तो विरोधी ही रहे थे।[६]

नैणसी के समय मे राजस्थान मे सवत्र प्राय सभी लोगो की अन्धविश्वासो मे पूण आस्था थी। वे जोगियो के चमत्कार,[७] ज्योतिषियो की भविष्यवाणी,[८]

१ विगत० १, पृ० ४६७, २, पृ० ८५, २२४, ३१० छीपा खत्री लिखा है।

२ विगत०, १, पृ० ४६७, २, पृ० ८५, २२४।

३ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३१८।

४ विगत०, १, पृ० ५२, २९८। मनभावती, मोटा राजा उदयसिंह, जोधपुर, की पुत्री थी और उसका विवाह जहागीर के साथ हुआ था। जोधपुर ख्यात०, १, पृ० १०३, अकबरनामा० (अ० अ०), ३, पृ० ८८०, जहागीर०, पृ० ३२।

५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), २, पृ० २०४।

६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २२१-२४।

७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), ३, पृ० २६ २७।

८ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० १८०।

मन्त्र-तन्त्र,[१] शकुनो और स्वप्नो मे बहुत विश्वास करते थे। उदाहरणार्थ—राजा सिद्धराव जब रात्रि मे सोने पर स्वप्न देखता है कि पृथ्वी स्त्री का रूप ग्रहण कर राजा के पास आती है और कहती है कि मुझे अच्छा गहना देना। राजा हमेशा यही स्वप्न देखता था। तब एक दिन राजा ने पण्डितो और स्वप्न पाठको से पूछा कि पृथ्वी स्त्री का रूप धारण कर गहना माँगती है। अत क्या करना चाहिए ? तब पण्डित ने कहा, 'पृथ्वी का गहना तो प्रासाद है। अत आप मन्दिर बनवाइये'।[२]

शकुन-शास्त्र मे तो बहुत अधिक विश्वास किया जाता था। युद्धाभियान मे हर समय शकुन-शास्त्री साथ रहते थे। यदि युद्धाभियान मार्ग मे अपशकुन हो जाता तो पुन अच्छे शकुन होने तक आगे नही बढा जाता था। ऐसे समय मे सामरिक-शास्त्र द्वारा इगित रणनीति या व्यूह-रचना की आवश्यकताओ की भी उपेक्षा की जाती थी।[३] इसी प्रकार प्रत्येक नवीन कार्य करने से पूर्व और किसी काम से बाहर जाने से पूर्व शकुन देखा जाता था।

असाधारण शक्ति या वर प्राप्त कई एक व्यक्तियो की पशु-पक्षियो की बोली समझ सकने की क्षमता पर भी पूरा विश्वास किया जाता था और उनकी कही बात या सुझाव को सदैव मान्य कर तदनुसार आगे कार्यवाही की जाती थी।[४]

इसी प्रकार पुराणो मे कही बातो को भी यथासभव आचरण मे क्रियान्वित कर पुण्य-लाभ करने को हर कोई प्रयत्नशील रहता था।[५]

जीवन मे अलौकिक घटनाओ पर पूरा विश्वास था, और यही कारण था कि अनेकानेक बातो मे भी उनका उल्लेख मिलता है। जैसे मृत व्यक्ति का स्वय मुँह फेर लेना या कही बात को सुनकर समझ लेना,[६] साँप का प्रतिदिन एक मोहर देना और साँप का मनुष्य की बोली बोलना आदि।[७]

४ हिन्दुओ के जातीय उत्सव और सार्वजनिक आमोद-प्रमोद के साधन

सत्रहवी शताब्दी मे राजस्थान मे जातीय उत्सव और आमोद-प्रमोद के साधनो का विशेष महत्त्व था। नैणसी के ग्रन्थो मे उल्लेखित उदाहरणो का यहाँ विवरण दिया जा रहा है। होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, दशहरा, देवझूलनी एका-

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २७२।
२ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० २७२।
३ विगत०, १, पृ० १२०।
४ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ६६।
५ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २३०।
६ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, पृ० २२४ २ पृ० ६१ ६३।
७ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २५४, २५५।

दशी और मकर सक्रान्ति, अक्षय तृतीया आदि प्रमुख त्यौहार थे।[1] होली फाल्गुन सुदि १५ (पूर्णिमा),[2] दीपावली कार्तिक बदि १५,[3] रक्षाबन्धन श्रावण सुदि १५,[4] अक्षय तृतीया वैशाख सुदि ३,[5] दशहरा आश्विन सुदि १० और चैत्र सुदि १०[6] को मनाया जाता था। होली, दीपावली ओर रक्षाबन्धन सावजनिक उत्सव थे। दशहरा राजपूतो का जातीय उत्सव था।[7] होली के दिन गेहर (डाडिया गेर) खेला जाता था[8] तथा इस अवसर पर सामूहिक रूप से एकत्रित होकर एक-दूसरे पर गुलाल आदि डालकर त्यौहार मनाते थे।[9] दीपावली के अवसर पर लोग जुआ भी खेलते थे।[10] होली, दीपावली और रक्षाबन्धन तीनो ही अवसरो पर रैयत को अपने शासको को निश्चित् रूप से कुछ राशि भेट देनी पडती थी।[11]

राजपूत शासको और जागीरदारो के आमोद-प्रमोद का प्रमुख साधन शिकार करना था।[12] सामान्यतया शेर का आखेट करने मे विशेष रुचि लेते थे। परन्तु सूअर की शिकार भी राजपूतो के लिए एक विशिष्ट आकषण होता था।[13] इसके अतिरिक्त चौपड[14] भी मनोरजन का प्रमुख साधन था। राजपूत और अन्य उच्च वशीय लोगो के लिए नाच-गान और वाद्य भी मनोरजन के साधन होते थे। ये लोग अपने मनोरजन के लिए वैश्याएँ और नतकिया रखते थे। अथवा प्रत्येक परगना केन्द्र नगर मे वैश्याएँ और नतकिया भी निवास करती थी।[15] डूम जाति भी गायन और वादन से लोगो का मनोरजन किया करते थे।[16] सावजनिक मनो-

---

१ विगत०, १, प० ४, ५ १३, ६४, १०१, १३७, १७०, १८५, २, प० ३०५, ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, प० २७२, २, प० २४।

२ विगत०, १, प० १३६, बही० प० ९३ आईन०, ३, प० ३५३ ५४।

३ विगत०, १ पृ० १०१, २, प० ३०५, आईन०, ३, प० ३५३ (यह वैश्यो का प्रमुख त्यौहार था)

४ विगत० १, प० ६४, आईन० ३, प० ३५१।

५ बही०, प० २६, ४२, आईन०, ३, प० ३५१।

६ विगत०, १, प० ८६, १३७, बही०, प० ३८, ९६।

७ आईन०, ३, प० ३५२।

८ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १, प० १४७।

९ विगत०, २, प० ४।

१० ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० २७२।

११ विगत०, २, प० ३२६।

१२ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १ प० ४०, २, प० २८१, २८५, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३, प० २६, विगत०, २, प० ३७, ६९, ७१, २१७।

१३ विगत०, १, प० ५।

१४ ख्यात०, (प्रतिष्ठान), २, प० ४६ ४७, २४४।

१५ विगत०, १, प० ३९१, ४९७, २ प० ९, ८६, ३१०।

१६ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, प० ८० ८१, विगत०, १, प० ३९१, ४९७, २, प० ९ ३११।

रजन के साधनो के बारे मे नैणसी के ग्रन्थो मे कोई विशेष उल्लेख नही मिलता है। विगत० मे नटखुट[1] जाति का उल्लेख मिलता है। जो तब भी यह जाति सावजनिक मनोरजन का साधन रही होगी। क्योकि राजस्थान के गाँवो मे अपने खेल-कूद तमाशे दिखाना ही इस जाति का जीविकोपाजन का प्रमुख साधन आज भी है। नाटक[2] भी सावजनिक मनोरजन के साधन थे।

१ विगत० १ पृ० ३६०।

२ ख्यात० (प्रतिष्ठान) १ पृ० ७७३।

अध्याय १२

उपसहार

इतिहासकार मुहणोत नैणसी ने अपने जीवन के साठ वष भी पूरे नही किये थे कि आत्मघात कर उसने अपने जीवन का अन्त कर दिया। दिसम्बर, १६६६ ई० मे राजकीय पद से पदच्युत कर दिये जाने के बाद तो उसका लेखन-काय लगभग बन्द ही हो गया था। उसके जीवन के पिछले पौने चार वष निष्क्रियता, कैद और शासकीय सख्तियो के त्रास मे ही बीते थे। नैणसी की विस्तृत ब्यौरेवार प्रामाणिक जीवनी पहले दी जा चुकी है, जिससे यह स्पष्ट है कि पदच्युत होने से पूव के कोई तेईस वर्षों मे और विशेषतया देश-दीवान (१६५८-१६६६ ई०) के पद पर के साढे आठ वष के कायकाल मे ही उसने अपने सुविख्यात ग्रन्थो की सामग्री एकत्र की थी अथवा उनको लिखकर तैयार किया था।

मानव जाति के अथवा राष्ट्र के इतिहास की ही तरह क्षेत्रीय और प्रादेशिक इतिहास भी अबाध परम्परा मे चलता जाता है। भूतकाल से ही वतमान का उद्‌भव होता है और वतमान भविष्य को दिशा देता है। अत नैणसी द्वारा रचित इतिहास-ग्रथो मे वर्णित इतिहास और उसको प्रस्तुत करने की इतिहासकार के आयोजन और शैली को भी ठीक तरह से समझ सकने मे सुविधा के हेतु ही पूव मे मारवाड के पूर्वकालीन इतिहास की ही नही, मारवाड मे क्षेत्रीय अथवा राज-घराने के इतिहास-लेखन की भी पूववर्ती परम्पराओ आदि की पृष्ठभूमि की विवेचना की जा चुकी है, क्योकि उनको समझे बिना इतिहास-लेखन मे नैणसी के योगदान तथा उसके इतिहास-ग्रथो का सही विश्लेषण और समुचित मूल्याकन सम्भव नही हो सकता था।

सुयोग्य प्रबुद्ध इतिहासकार के अनुरूप ही नैणसी का अपना विशिष्ट सुस्पष्ट इतिहास-दशन था, और एक दृढनिष्ठ समर्पित इतिहासकार की तत्परता, लगन और धैय के साथ नैणसी अपने इतिहास-ग्रथो की रचना मे बरसो तक लगा रहा, तथा बडी मेहनत से उसने अपनी अभिरुचि के अनुसार उन्हे लिखा था। स्वय

राजपूत नही होते हुए भी उसका घराना सदियो से मारवाड के राजघराने से सम्बद्ध/सेवारत था, जिससे तब विकसित हो रहे राजपूती तन्त्रो से सम्बद्ध ही नही था, परन्तु उसने स्वय भी उसमे योगदान भी दिया था, एव उसके ग्रन्थो मे उसकी जानकारी और झलक होना स्वाभाविक ही था।

राज्य-शासन से सम्बद्ध और उसमे उच्च पदो पर सेवारत होने के कारण भी उसे यदा-कदा युद्धो मे भाग लेना पडता था, तथापि स्वय जैन धर्मावलम्बी था, जिस कारण प्रारम्भ से ही उसमें मानवता और दयाधम विकसित होने लगे थे। अत अपने इतिहास-ग्रन्थो मे उसने राजघराना, उनके राज्यो, युद्धो आदि के साथ सम्बन्धित क्षेत्रो के जनसाधारण और उनकी समस्याओ तथा उनके जन-जीवन की भी यत्र-तत्र चर्चा की है। इन इतिहास-ग्रन्थो मे भी मानव-भूगोल और जनजीवन से सम्बद्ध आर्थिक मामलो पर भी उसने बहुत-कुछ नया प्रकाश डाला है।

यह सही है कि ख्यात० को वह उसका सही अन्तिम रूप नही दे पाया था, और विगत०कुछ युगो पहले तक अज्ञात ही रही है। परन्तु अब वे सुलभ हैं और उनका अध्ययन तथा उपयोग किया जाने लगा है। तब उनके बहुविध विवेचन के साथ ही उनका वास्तविक समालोचनात्मक मूल्याकन भी हो जाना चाहिए कि इतिहास के भावी सशोधक तथा इतिहासकार सही रूप मे उनका समुचित उपयोग कर सम्बन्धित इतिहास को समृद्ध और परिपूर्ण बना सकें।

१ नैणसी के ग्रन्थो का समालोचनात्मक मूल्याकन

नैणसी के इन दोनो ग्रन्थो का यह मूल्याकन दो अलग-अलग दष्टियो से किया जाना चाहिए। प्रथमत उनमे वर्णित इतिहास का ऐतिहासिक तथ्यो के रूप से महत्त्व, प्रामाणिकता और उसकी उपयोगिता, तथा दूसरे उनमे यत्र-तत्र प्रसगवश दी गयी स्फुट जानकारी अथवा अन्य विवेचनो द्वारा प्रस्तुत तथ्या की अन्य प्रकार की सम्बन्वित शोध या विवेचनो के सन्दम मे उपयोगिता। अत प्रत्येक ग्रन्थ के समालोचनात्मक मूल्याकन इन दोनो ही विभिन्न परिप्रेक्ष्यो मे अलग-अलग करना आवश्यक और उचित होगा।

(अ) इतिहास-ग्रन्थो के रूप मे

मुहणोत नैणसी के दोनो ही ग्रन्थ 'मारवाड रा परगना री विगत' और 'मुहता नैणसी री ख्यात' मूलत इतिहास-ग्रन्थ के ही रूप मे लिखे गये थे। मारवाड तथा अन्य राजपूत राज्यो के पूववर्ती इतिहास सम्बन्धी ऐसा विस्तत ग्रन्थ कोई और उस समय उपलब्ध नही था। 'उदेभाण चापावत री ख्यात' (कविराजा की ख्यात), 'जोधपुर हुकूमत री बही', 'जालोर परगना री विगत' आदि

इतिहास-विषयक सग्रह-ग्रन्थ नैणसी के समकालीन अथवा उसके तत्काल बाद मे लिखे गये थे, परन्तु ये सब ग्रथ अधिकाश रूप से मारवाड के राठोडो स सम्बन्धित ही जानकारी देने वाले हैं, अथवा क्षेत्र या काल की दृष्टि से सवथा सीमित या एकागीय ही है।

विगत० मुख्य रूप से इतिहास-ग्रन्थ है। इसमे मारवाड का प्रारम्भ से महा-राजा जसवन्तसिह के शासनकाल मे १६६४ ई० तक का राजनैतिक इतिहास दिया गया है। 'वात परगने जोधपुर री' मे मण्डोवर पर राठोडो के पूव के शासको का सक्षिप्त विवरण तथा राव सीहा से महाराजा जसवन्तसिह तक राठोडो का विस्तृत विवरण दिया है। साथ ही परगना सोजत, जैतारण, फलोधी, मेडता, सीवाणा और पोहकरण का भी क्षेत्रीय इतिहास दिया हे जो मारवाड राज्य के इतिहास का सागोपाग अध्ययन करने के लिए महत्त्वपूण है। जालोर और साचोर को छोडकर बाकी रहे समूचे मारवाड के इतिहास को प्रस्तुत करने का नैणसी ने यथाशक्य पूरा प्रयत्न किया है।

विगत० मे दिया गया राठोडो के पूव का मारवाड का इतिहास प्रामाणिकता से परे ही है। इसी प्रकार राठोडो का प्रारम्भिक इतिहास भी नैणसी ने तब प्रचलित अनैतिहासिक प्रवादो के ही आधार पर लिखा है। सीहा सेतरामोत की द्वारका यात्रा, मूलराज और लाखा फ्लाणी मे आपसी युद्ध और सीहा से सहायता प्राप्त करना आदि विवरण अनैतिहासिक और काल्पनिक ही है। परन्तु इनमे दिये गये विवरणो मे यत्र-तत्र वहा के इतिहास या ऐतिहासिक घटनावलियो के कुछ तथ्यो को खोजा जा सकता है जिनकी सहायता से मोटे तौर पर उस पूववर्ती इतिहास की रेखाएँ अकित की जा सकें। जैसे इन क्षेत्रो से सम्बन्धित प्रागैति-हासिक कालीन व्यक्तियो के प्रवाद या वहाँ पर पूववर्ती परमारो या प्रतिहारो के आधिपत्य के उल्लेख विचारणीय हैं। कुछ घरानो के शासको की नामावलिया या उस समय के विदेशी आक्रमणकारियो के उल्लेख भी मिलते है जिनके सही क्रम, काल आदि की खोज का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

सीहा की मृत्यु पाली जिले मे ही हुई थी। इसी के फलस्वरूप बाद मे पाली और आसपास के क्षेत्र पर सीहा के पुत्र आस्थान का प्रभाव स्थापित हो गया था। आस्थान ने ही खेड पर अधिकार किया था। परन्तु विगत० मे बाद के इतिहास सम्बन्धी अधिकाश विवरण अनैतिहासिक और कल्पनापूण ही है। उन परिवतनपूण शताब्दियो का सही इतिहास अस्पष्ट या अधिकतर अज्ञात ही था जिससे तत्कालीन इतिहास सम्बन्धी प्रचलित प्रवादो मे ऐतिहासिक भ्रान्तिया या भूलें बहुत है। जैसे आस्थान के पौत्र रायपाल द्वारा पँवारो से बाहडमेर लेना, छाडा का सोनगरो से युद्ध, तीडा द्वारा सोनगरो से भीनमाल लेना और सीवाणा पर अलाउद्दीन के आक्रमण के समय तीडा का युद्ध मे मारा जाना, वीरम की

मृत्यु के बाद चूण्डा का आल्हा चारण के पास जाने और देवी दर्शन सम्बन्धी विवरण मे कल्पना और अलौकिक का सम्मिश्रण ही ज्ञात होता है। इसी प्रकार राव जोधा के पूर्व के मारवाड का इतिहास, अनेक घटनाओ का विवरण तब प्रचलित अनैतिहासिक और काल्पनिक प्रवादो के आधार पर लिखा गया है। अत राव जोधा के पूर्व का जो ऐतिहासिक विवरण विगत० मे दिया गया है समकालीन प्रामाणिक ऐतिहासिक अन्य आधार सामग्री की सहायता से उसकी जाच करना नितान्त आवश्यक है।

राव जोधा के काल से लेकर आगे के ऐतिहासिक वृतान्त अधिकतर सही है, जिनकी प्रामाणिकता की अन्य ऐतिहासिक आधार-ग्रन्थो से भी पुष्टि की जा सकती है। विगत० मे राव जोधा द्वारा जोधपुर किले का निर्माण, राठोड राज्य की नयी राजधानी जोधपुर नगर की स्थापना और विस्तार, मारवाड के राठोड शासको द्वारा पूर्वकालीन मुस्लिम आक्रमणकारियो तथा पडोसी राज्यो के साथ सघर्ष, राव मालदेव का उत्कर्ष और अन्त, मोटा राजा उदयसिंह तथा बाद के शासको द्वारा मुगल शासको की आधीनता स्वीकार करना और उसके बाद मारवाड मे राजनैतिक शान्ति और प्रशासनिक सुधार आदि सम्बन्धी मारवाड के इतिहास का विस्तृत विवरण मिलता है।

विगत० मे वर्णित मारवाड राज्य के ऐतिहासिक इतिवृत्त मे सर्वप्रथम राव चूण्डा की मृत्युतिथि और सम्वत् दिया गया है। उसके बाद की अधिकाश महत्त्वपूर्ण घटनाओ के सम्वत् दिये है। राव गागा के शासनकाल के बाद तो नैणसी निरन्तर निश्चित तिथि, माह और सम्वत देता गया है और अनेको बार तो घटना के दिन का वार भी दिया है। यो चूण्डा के बाद का और विशेषकर राव गागा से लेकर बाद का सारा विवरण इतना तथ्यात्मक है कि वह फारसी मे लिखे विवरणो को कही अधिक स्पष्ट करता है या उनमे दी गयी तारीखो को ठीक कर उनकी पुष्टि करता है।

ख्यात० मे नैणसी ने विभिन्न राज्यो तथा राजपूत जातियो की अनेक खापो का इतिहास लिखा है। ख्यात० मे मेवाड मे गुहिलोत वश के आधिपत्य की स्थापना से लेकर महाराणा राजसिंह तक का सक्षिप्त इतिहास दिया गया है। मेवाड की प्रारम्भिक पीढियो और रावल रतनसिंह तक का जो सक्षिप्त इतिवृत्त दिया वह तब प्रचलित मान्य दन्त-कथाओ पर ही आधारित है एव विश्वसनीय नही है। ख्यात० मे राणा हमीर से राणा मोकल तक का विवरण अति सक्षिप्त है। सागा का वृत्तान्त कुछ अधिक विस्तार से दिया है। सागा का बाधवगढ से युद्ध का वर्णन केवल ख्यात० मे ही मिलता है जिसकी पुष्टि अब तक नही हो सकी है। साथ ही चूडावत-शक्तावत खापो की विस्तृत वशावलिया दी गयी है। अत मेवाड का इतिहास सक्षिप्त होते हुए भी बहुत महत्त्वपूर्ण और उपयोगी है।

ख्यात० मे मेवाड के अतिरिक्त डूगरपुर, बासवाडा, देवलिया (प्रतापगढ) और रामपुरा आदि गुहिलोत सीसोदिया राज्यो का भी सक्षिप्त इतिवृत्त दिया है। इन राज्यो के इतिहास मे भी १४वी शताब्दी के बाद की घटनाओ का विवरण ही अधिक विश्वसनीय है।

ख्यात० मे राजस्थान की प्रमुख चौहान राजवशीय खाँपो का विस्तृत विवरण दिया है। हाडा देवा द्वारा बूदी लेने सम्बन्धी तब प्रचलित तीन विभिन्न वृत्तान्त दिये ह। हाडा सूरजमल और महाराणा रतनसिंह के मध्य मनमुटाव और झगडे सम्बन्धी विवरण विस्तार से लिखा है। यह बात विचारणीय हे कि सुजन हाडा और मुगल बादशाह अकबर के मध्य हुई तथाकथित सन्धि का ख्यात० मे कोई उल्लेख नही है। सिरोही राज्य का भी विस्तृत विवरण दिया है। सिरोही पर चौहानो की देवडा शाखा का राज्य था। नैणसी ने इस राजवश के देवडा नामकरण का जो कारण दिया है वह स्पष्टतया कदापि विश्वसनीय नही है। साथ ही नाडोल, जालोर के शासको और सिरोही राजवश के प्रारम्भिक पूवजो की जो नामावलिया दी है वे अपूण है और उनमे कई क्रम भी सही नही है। यो प्रारम्भिक विवरण बडवो की पोथियो के आधार पर ही लिखे गये थे जो प्रामाणिक नही कहा जा सकता है, साथ ही इन विवरणो मे दिये गये प्राय सब ही पूववर्ती सवत् गलत है। जालोर के सोनगरा शासक कान्हडदेव का कुछ विस्तार से उल्लेख किया है। का्हडदेव और अलाउद्दीन खिलजी के मध्य हुए युद्ध के कारणो मे शिवलिग, सोमनाथ के पुजारी और शाहजादी का वीरमदेव पर आसक्त होने आदि का विवरण मूलत तब प्रचलित लोककथा का ही समावेश जान पडता है। ख्यात० मे कापलिया, बोडा, मोहिल, खीची आदि चौहानो की कई अन्य शाखाओ का भी विवरण दिया गया है जो अन्यत्र उपलब्ध नही होता है।

ख्यात० मे इतर अग्निवशी राजपूत राजघरानो सोलकी, पडिहार और परमारो के भी इतिवृत्त दिये है, परन्तु ये सारे विवरण सवथा सीमित और कुछ विशेष वृत्तो या किन्ही इनीगिनी खापो तक ही सीमित है। सोलकियो के विवरण मे मूलराज द्वारा पाटण पर अधिकार करने और सिद्धराज सोलकी द्वारा रुद्रमाल मन्दिर बनवाने सम्बन्धी कहानियो का भी समावेश कर दिया है। पडिहारो का भी अधिकाश विवरण दन्त-कथाओ पर ही आधारित है।

नैणसी ने ख्यात० मे आम्बेर के कछवाहा राजवश की प्रारम्भ से राजा जयसिंह तक तीन अलग-अलग वशावलिया दी हैं। साथ ही राजाओ के पुत्रो आदि से जो अनेक प्रमुख खाँपे निकली उनका भी विस्तार से उल्लेख किया है और कई जागीरदारो सम्बन्धी प्रमुख घटनाओ का उल्लेख भी कर दिया है। कछवाहा राजवश का अधिकाश प्रारम्भिक विवरण और पृथ्वीराज कछवाहा की द्वारका यात्रा सम्बन्धी वृत्तान्त अविश्वसनीय ही है। नैणसी ने राजा

भगवन्तदास के भाई राजा भगवानदास को 'आम्बेर टीकाई' लिखने मे भूल की है।[1]

ख्यात० मे नैणसी ने जैसलमेर के भाटियो के बारे मे बहुत विस्तृत ब्यौरे-वार जानकारी दी है। परन्तु ओझा का यह मत सही है कि 'भाटियो का स० १४०० के पूव का इतिहास सदिग्ध मान लेने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए।' तथापि नैणसी ने भाटियो की उपखापो की अलग-अलग जो लम्बी वशावलिया दी है और उनके साथ जो व्यक्तिगत टिप्पणिया जोड दी है, वे प्रामाणिक ही नही ऐतिहासिक दृष्टि से जानकारीपूण और विशेष उपयोगी भी है।

इस प्रकार ख्यात० मे नैणसी ने मेवाड, मारवाड, आम्बेर, जैसलमेर, बूँदी, सिरोही, डूगरपुर, बासवाडा, देवलिया (प्रतापगढ) आदि विभिन्न राज्यो के राजपूत राजवशो तथा उनकी विभिन्न खापो मे कई एक का सक्षिप्त और कुछ का विस्तृत इतिवृत्त दिया है। परन्तु १४वी शताब्दी के पूव के इतिहास की प्रामाणिकता सदिग्ध होने के कारण उसे यत्किंचित् भी मान्य करने से पहले उसका पूण परीक्षण करना अत्यावश्यक है। साथ ही बाद के विवरण मे भी अनेक स्थानो पर भ्रान्तिवश अथवा प्रामाणिक सामग्री के अभाव मे भूले हुई है। अत उनमे दी गयी जानकारी की भी अन्य मान्य प्रामाणिक स्रोतो से पुष्टि कर ली जानी चाहिए।

(ब) प्राथमिक महत्व की समकालीन आधार-सामग्री सग्रहो के रूप मे

मुहणोत नैणसी कृत विगत० और ख्यात० दोनो ही ग्रथो मे महत्त्वपूण समकालीन आधार-सामग्री बहुतायत से मिलती है। विगत० की रचना करने मे नैणसी का मूल उद्देश्य मारवाड के विभिन्न परगनो का महाराजा जसवतसिंह के काल तक का राजनैतिक इतिहास और राज्य-शासन विषयक जानकारी को समग्र रूप मे प्रस्तुत करने का ही रहा था। परन्तु उसके ऐसे राजकीय विवरणो मे अनेक स्थानो पर प्रसगवश मारवाड राज्य के विभिन्न अधिकारियो, उनके काय और कतव्य पर स्वत प्रकाश पडता गया है जिससे मारवाड की प्रशासकीय व्यवस्था की विस्तृत जानकारी उसमे मिलती है। इसी प्रकार नैणसी ने विगत० मे कई परगनो के 'अमल दस्तूर' का उल्लेख कर दिया जो राज्य की आय के स्रोतो पर प्रकाश डालते है। विगत० मे दिये गये गावो के विवरण मे गॉवो की रेख तथा उनसे होने वाली पिछली पचवर्षीय वास्तविक आय के आकडे दे दिये है। साथ ही गॉव मे पानी की व्यवस्था तथा सिंचाई के साधनो का भी उल्लेख कर दिया है। इससे मारवाड राज्य मे तत्कालीन कृषि-साधनो और वहाँ की

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० २६७।

आर्थिक स्थिति की जानकारी मिलती है।

१७वी शताब्दी के मारवाड की प्रशासकीय व्यवस्था और आर्थिक इतिहास के लिए विगत० मे अधिक प्राथमिक महत्त्व का कोई दूसरा समकालीन आधार-ग्रन्थ कही भी उपलब्ध नही है, और तदविषयक कोई अन्य सामग्री भी सुलभ नही है। इसके अतिरिक्त मानव-भूगोल, जागीर व्यवस्था और राज्य-व्यय अथवा परगनो की सीमा सम्बन्धी जानकारी के लिए भी यह ग्रन्थ कम महत्त्वपूर्ण नही है।

जैसा कि पूव मे ही लिखा जा चुका है कि ख्यात० मे विभिन्न राजपूत राज्यो तथा खापो का विस्तत इतिहास है। परन्तु उसमे से १४वी शताब्दी के बाद का ही इतिवृत्त अधिक प्रामाणिक और विश्वसनीय है। ख्यात० मे विभिन्न खापो की जो वशावलिया दी गयी है उनमे विशिष्ट व्यक्तियो से सम्बन्धित विशेष घटनाओ अथवा अ य महत्त्वपूण जानकारियो का भी साथ मे उल्लेख भी कर दिया गया है, जैमे किसको कब कौन-से गाव का पट्टा (जागीर) मिला, उसने उसे कब छोडा अथवा कब वह तागीर किया गया, गाँव की रेख क्या थी ? वह किमकी ओर से कब कौन-से युद्ध मे आहत हुआ या मारा गया आदि। इस प्रकार के दिये गये विवरणो से तत्कालीन राजपूत सामन्ती व्यवस्था पर पर्याप्त नया प्रकाश पडता है। इतिहास की कई एक अज्ञात घटनाओ की भी जानकारी मिलती है जो सम्बन्धित इतिहास की लुप्त कडियाँ जोडती है। ख्यात० मे विभि न शासको, जागीरदारो अथवा विशिष्ट व्यक्तियो से सम्बन्धित तब सवसाधारण मे सुज्ञात अनेक बातो का सग्रह है। उसमे प्रसगवश आये कई वीरो आदि के नामो से कई एक क्षेत्रीय या कौटुम्बिक इतिहासो की अज्ञात या विस्मृत कडियो को जोडने मे बहुत सहायता मिल सकेगी। यही नही, इमी प्रकार ख्यात० मे यत्र-तत्र विभिन्न युद्धो सम्बन्धी अथवा अन्य ऐतिहासिक घटनाओ आदि के अनेको उल्लेख मिलते है जिनसे तब विभिन्न राजघरानो के पारस्परिक सम्बन्धो अथवा तत्कालीन राजपूत सैन्य-व्यवस्था और युद्ध-प्रणाली की जानकारी मिलती है। ख्यात० मे वर्णित वृत्ता तो से राजपूत विवाहो की रस्मो, बहुपत्नी विवाह प्रथा, बाल विवाह और उनसे होने वाले दुष्परिणामो तथा सती प्रथा की विस्तृत जानकारी मिलती है। ख्यात० मे राजपूत 'वैर परम्परा' और उसके दुष्परिणामो के तो अनेक उदाहरण मिलते ही है। इसी प्रकार ख्यात० मे वर्णित बातो से प्रसगवश ही तत्कालीन राजस्थान के जनसाधारण मे व्याप्त अधविश्वासो, तब प्रचलित शकुन-शास्त्र, विभिन्न देवी-देवताओ मे विश्वास आदि हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओ की जानकारी मिलती है। राजपूतो के तत्कालीन जातीय और सामाजिक तन्त्र के साथ ही ख्यात० के विवरणो से उस काल के जनसाधारण के जनजीवन की भी पर्याप्त जानकारी मिलती है। आदिवासी शासक भी किस प्रकार समाज के ब्राह्मणो या वणिको के साथ ही निम्नस्तरीय शूद्र वर्ग के प्रति भी क्या अत्याचार करते थे

या किस प्रकार उनका शोषण करते थे, इसके भी कई उदाहरण मिलते हैं। ऐसे अवसरो पर तथा अन्य विपरीत परिस्थितियो मे भी यो प्रताडित या शोषित वग का साथ देकर राजपूत वीरो ने वहा अपना आधिपत्य स्थापित किया इसके भी अनेको उदाहरण मिलते हैं।

यो १४वी शताब्दी के बाद के राजस्थान अथवा यत्र-तत्र के कुछ अन्य क्षेत्रो या राजघरानो के राजनैतिक इतिहास और १७वी शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक इतिहास के लिए मुहणोत नैणसी की ख्यात० को प्राथमिक महत्त्व की समकालीन आधार-सामग्री का अनूठा सग्रह-ग्रन्थ मान लेने मे कोई भी आपत्ति नही होनी चाहिए। उपर्युक्त इतिहास की जानकारी देने वाला वतमान मे ऐसा कोई दूसरा तत्कालीन आधार-ग्रन्थ उपलब्ध नही है। इसके अतिरिक्त ख्यात० से १७वी शताब्दी कालीन राजपूतो की सामन्ती व्यवस्था, सैनिक सगठन, राजकीय तन्त्र और आर्थिक ढाँचे आदि की भी जानकारी मिलती है।

२ राजस्थान के पश्चात्कालीन इतिहास-लेखन पर नैणसी के ग्रन्थो का सम्भावित प्रभाव

मारवाड ही नही बल्कि राजस्थान मे क्रमबद्ध इतिहास लेखन की परम्परा मे मुहणोत नैणसी ही प्रथम इतिहासकार है। परन्तु नैणसी की ख्यात० सवप्रथम सन् १८४३ ई० के बाद ही अपने वतमान सुव्यवस्थित स्वरूप मे सुलभ हो सकी थी। विगत० की प्रतियाँ तब सहज सुलभ नही थी और नैणसी के इस ग्रन्थ विशेष की जानकारी भी सम्भवत तब बहुतो को नही थी। अत नैणसी के समकालीन या उसके बाद की डेढ-दो शताब्दियो के काल मे तो किन्ही इतिहासकारो पर नैणसी के ग्रन्थ-लेखन का सीधा कोई प्रभाव पडना सम्भव नही था।

परन्तु अकबर के शासनकाल मे जब अबुल फजल ने विभिन्न राजाओ आदि से उनके घरानो की वशावलिया और इतिवृत्तो की माँग की तब से ही राजस्थान मे वशावली लेखन अथवा सकलन आदि की परम्परा चल निकली थी। अत स्पष्टतया उसी परम्परा के अन्तर्गत ही १७वी सदी मे मारवाड या अन्य क्षेत्रो मे कई एक वशावलियाँ या सक्षिप्त ख्याते लिखी जाने लगी थी। नैणसी की ही समकालीन 'उदेभाण चापावत री ख्यात'[1] है। उक्त ख्यात मे मारवाड के राठोडो का सीहा से महाराजा जसवन्तसिंह के शासनकाल का १६५८ ई० तक का सक्षिप्त राजनैनिक इतिहास और राठोडो की विभिन्न खाँपो की १६७८ ई० तक की विस्तृत वशावलियाँ है। 'पीढियाँ फुटकर'[2] भी १७वी शताब्दी के मध्य की रचना

---

१ कविराजा सग्रह ग्रन्थ स० १००, ७५ और ७६।

२ कविराजा सग्रह ग्रन्थ स० २१७।

है। इसमे मेवाड के गुहिलोत-सीसोदिया, जैसलमेर के भाटियो, रामपुरा के चन्द्रावतो, हूलो और चीबा आदि की पीढियो का सक्षिप्त विवरण दिया गया है। इन ग्रन्थो की रचना मे नैणसी की कोई मूलगत प्रेरणा रही थी इसका निर्धारण सम्भव नही, क्योकि इस सम्बन्ध मे कोई उल्लेख या अन्य कोई प्रमाण नही मिलते है। परन्तु 'जालोर परगना री विगत' (छोटी और बडी बही) भी नैणसी के समकालीन इतिहास-ग्रन्थ ही नही है, किन्तु स्पष्टतया इनकी रचना तब नैणसी की प्रेरणा अथवा निर्देश से की गयी थी, यद्यपि उनको तब विगत० मे समाविष्ट नही किया गया था।

परन्तु पश्चात्कालीन कई एक ख्यातो आदि की हस्तलिखित प्रतिलिपियो आदि को देखने पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि मुहणोत नैणसी ने अपने कार्यालय मे ही मारवाड राज्य के कई एक अधिकारियो को भी इतिहास-लेखन और विशेषतया समकालीन इतिवृत्तो को लिखते रहने की प्रेरणा देकर इतिहास-लेखन की महत्त्वपूण परम्परा का शुभारम्भ कर दिया था। इसका एक अच्छा उदाहरण 'जोधपुर हुकूमत री बही' है जिसमे सग्रहीत विवरण और अन्य जानकारिया या सूचिया स्पष्टतया इसी परम्परा का एक सुफल थी। यो नैणसी के समय मे तथा उसके बाद मे चारण-भाट ही नही मारवाड राज्य मे सेवारत विभिन्न अधिकारियो ने भी ऐतिहासिक सामग्री सकलन का काय प्रारम्भ कर दिया था। यद्यपि 'भडारिया री पोथी'[१] की प्राप्य वतमान प्रति १८वी शताब्दी के मध्य मे लिखी हुई प्रतिलिपि है, परन्तु मूल ग्रन्थ की सामग्री का सकलन स्पष्टतया नैणसी का समकालीन ही है। इसका प्रमाण उसके इस उल्लेख से स्पष्ट हो जाता है कि 'वात दूजी बारट नरहरदास लखावत कही सो घणी जूनी पोथी भडारी अचलदासजी री माय सू अठे लिखी छै। मडलक री वात, सातल री वात, राव सुरताण री वात, सोनगरा कान्हडदे, वीरमदे री वात, महाराजा (जसवन्तसिह) री जागीर प्रगना रा दाम आद सगली ख्यात इण पोथी मे भण्डारी अचलदासजी री पोथी माय सू लिखी छै।'[२] इसी प्रकार सिरोही के विवरण के अन्तगत उसमे लिखा है कि 'इण ताछ राव सुरताण मूआ पूठी वैर भागो सो लूगी रा गता री बही मे साबत आ विगत छै। सवत् १७१६ आ ख्यात भण्डारी नरसिघदास दीवाण रे पोथी मे लिखाणी अचलदासजी रा दादा रै।'[३] इस पोथी मे वर्णित 'पारकर री वात'[४] और नैणसी की ख्यात० मे वर्णित 'वात पारकर

---

१ कविराजा सग्रह ग्रन्थ स० ७८।
२ भण्डारियाँ री पोथी (ग्रन्थ सख्या ७८), प० २६ ख।
३ भण्डारियाँ री पोथी (ग्रन्थ सख्या ७८), प० ७२ ख।
४ भण्डारियाँ री पोथी (ग्रन्थ सख्या ७८), प० ३६ क।

-री"[1] का सम्पूर्ण विवरण एक-सा है। साथ ही भण्डारिया री पोथी मे तो लिखने का आधार भी दिया है। अत यह स्पष्ट है कि भण्डारी नरसिंहदास १७१९ वि० (१६६२ ई०) तक मारवाड राज्य ही नही बल्कि सिरोही और जालोर के चौहानो तथा पँवारो से सम्बन्धित ऐतिहासिक सामग्री का सकलन करता रहा था। यो जसवन्तसिंह के शासनकाल मे इतिहास-लेखन और ऐतिहासिक सामग्री-सग्रह का बहुत काय हुआ था।

महाराजा जसवन्तसिंह की मृत्यु के बाद मारवाड मे दीघकालीन अशान्ति फैल गयी। अत उस काल मे लेखन-काय अवरुद्ध होना स्वाभाविक ही था। पुन अजीतसिह का जोधपुर पर अधिकार हो जाने के बाद ही मारवाड मे इतिहास-लेखन के प्रमाण मिलते है जो स्पष्टतया नैणसी के इतिहास-लेखन का प्रभाव कहा जा सकना है। 'गुरा मोतीचन्द री पोथी'[2] की रचना सवत् १७६५ वि० (१७०८ ई०) अथवा उसके कुछ समय पूव हुई थी। इस ग्रन्थ मे राव सीहा स अजीतसिह (१७०८ ई०) तक का राठोडो का इतिहास दिया गया है।

जैमा कि पहले ही कहा गया है कि नैणसी के ग्रन्थो का मारवाड की इतिहास-लेखन परम्परा पर सीधा प्रभाव नही पडा था, परन्तु परोक्ष रूप से उसकी यह परम्परा बराबर चलती ही गयी। 'जोधपुर राज्य की ख्यात' तथा 'मुदियाड री ख्यात' जैसे बृहत् ग्रन्थो का वतमान स्वरूप मुख्यतया १९वी सदी का ही है, परन्तु यह मानने मे कोई हिचक नही होनी चाहिए कि पश्चात्कालीन तथा सीधे तौर से नैणसी के ग्रन्थो से सवथा असम्बद्ध होते हुए भी इन ग्रन्थो की रचना नैणसी द्वारा १७वी शताब्दी मे प्रारम्भ की गयी परम्परा का ही पश्चात्कालीन विकसित रूप है।

३ नैणसी के ग्रन्थो के पुनरुद्धार तथा प्रकाशन का राजस्थान के आधुनिक इतिहास-लेखन मे महत्त्व और उस पर उनका प्रभाव

मुहणोत नैणसी के प्रथम ग्रन्थ 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' की पूण प्रतिलिपि सवप्रथम सन् १८४३ ई० मे ही सुलभ हुई, जिसे बीकानेर के महाराजा रतनसिंह के छोटे भाई लक्ष्मणसिंह के आदेशानुसार वीठू पना ने लिखकर तैयार की थी और उसने इस महत्त्वपूण ख्यात० का पुनरुद्धार किया था। यह ख्यात० राजस्थान के प्रथम सुविख्यात कनल जेम्स टाड को सुलभ नही हो सकी थी। ओझा ने स्वय लिखा है कि 'कनल जेम्स टाड के समय तक इस पुस्तक की प्रसिद्धि नही हुई। यदि उसको यह पुस्तक मिल जानी, तो उसका 'राजस्थान' दूसरे ही रूप मे लिखा

---

१ ख्यात० (प्रतिष्ठान), १, पृ० ३६३-६५।

२ कविराजा सग्रह ग्र थ स० १११, पृ० ४०५ क ४१६ ख, १२० क १३४ क।

जाता।'[1] नैणसी की रयात० की वीठू पना द्वारा लिखी गयी यह प्रतिलिपि तैयार होने के कोई आठ वष बाद ही १८५१ ई० मे बीकानेर मे दयालदास ने 'दयालदास री ख्यात' (बीकानेर के राठोडो का इतिहास) की रचना की थी। अत दयालदास ने तब अपनी ख्यात लिखते समय नैणसी की ख्यात० का अवश्य ही उपयोग किया होगा।[2]

बीकानेर मे १८४३ ई० मे वीठू पना द्वारा तैयार की गयी 'मुहणोत नैणसी री ख्यान' की एक प्रति १९वी सदी के अतिम युगो मे उदयपुर राज्य मे भी पहुँची थी। उसी प्रति का उपयोग कविराजा श्यामलदास ने 'वीर विनोद' की रचना करते समय किया था। जिसका उल्लेख 'वीर विनोद' की कई पादटिप्पणियो मे मिलता है।[3]

जब 'वीर विनोद' लिखा जा रहा था तब गोरीशकर हीराचन्द ओझा उस कार्यालय मे नियुक्त हुए और वही उसे प्रथम बार 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' के सम्बन्ध मे जानकारी ही नही मिली अपितु उसके महत्त्व को भी पूरी तरह से समझा था। अत वह उसकी प्रतिलिपि प्राप्त करने को समुत्सुक हो गया था, जो उसे जोधपुर राज्य के कविराजा मुरारदान से प्राप्त हुई। जोधपुर-बीकानेर एजेन्सी के भूतपूर्व रेसिडेण्ट, कनल पाउलेट से प्राप्त 'मुहणोत नैणसी री रयात' की प्रतिलिपि करवाकर मुरारदान ने उसे ओझा को भेट कर दिया था।[4] तब से ही 'मुहणोत नैणसी री रयात' सम्बन्धी प्रचार तथा इतिहास-लेखन मे उसका उपयोग निरतर बढता ही गया।

राजपूताना तथा वहा के विभिन्न राज्यो के इतिहास लिखते समय ओझा ने स्वय 'मुहणोत नैणसी री रयात' का उपयोग किया हे। मुशी देवीप्रसाद ने इसी रयात के कुछ अश का उर्दू मे खुलासा किया था और इसके बारे मे लेख लिखे थे। ओझा की उक्त प्रति की प्रतिलिपिया उनके मित्रो ने करवायी और रामनारायण दूगड ने तब उसका हिन्दी अनुवाद कर उसे काशी नागरी प्रचारिणी सभा की 'देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला' मे दो भागो मे प्रकाशित करवाया। तब से ही ऐतिहासिक शोध और इतिहास-लेखन मे इस ख्यात० का अधिकाधिक उपयोग किया जाने लगा हे। उसका महत्त्व यो निरन्तर बढता देखकर ही बदरीप्रसाद साकरिया ने मूल ग्रन्थ का सम्पादन किया, जिसे राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,

---

१ दूगड०, १, मुहणोत नणसी (भूमिका), पृ० ८।

२ गजटियर बीकानेर०, इण्ट्रोडक्शन पृ० ३४।

३ वीर विनोद०, २, पृ० ६८, पा० टि०, २, पृ० ६९, पा० टि०, १, पृ० १५१, पा० टि०, २, पृ० १६१, पा० टि०, १, पृ० १०५६, पा० टि०, १, पृ० १०९६, पा० टि०, २।

४ दूगड०, १, भूमिका, पृ० ८९।

जोधपुर, ने चार जिल्दो मे प्रकाशित किया।

नैणसी के दूसरे ग्रन्थ 'मारवाड रा परगना री विगत' का सर्वप्रथम महत्त्व तैस्सीतोरी ने समझा और अपने 'डिस्क्रिप्टिव कैटेलॉग ऑफ बार्डिक एण्ड हिस्टारिकल मेन्यूस्क्रिप्टस' (जोधपुर स्टेट) मे उसने उसका विस्तृत विवरण दिया। परन्तु डॉ० नारायणसिंह भाटी द्वारा सम्पादित उसके मूल पाठ को राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, द्वारा तीन जिल्दो मे प्रकाशित किये जाने से पूर्व आधुनिक इतिहासकार इसका उपयोग नही कर पाये थे। आज तो १६वी और १७वी शताब्दी के मारवाड के राजनैतिक ही नही प्रशासनिक और आर्थिक इतिहास के लिए यह ग्रन्थ प्राथमिक महत्त्व का समझा जाकर इतिहासकार निरन्तर इसका उपयोग ही नही कर रहे है, परन्तु गहराई तक उसका अध्ययन कर मारवाड के तत्कालीन इतिहास के सब ही विभिन्न पहलुओ पर यथासम्भव प्रकाश डालने मे लगे हुए है।

इस प्रकार लगभग ढाई सौ वर्ष के बाद ही अब मुहणोत नैणसी की कृतियो का अध्ययन सम्भव हो सका है। समकालीन अथवा कुछ ही बाद की राजपूत पक्षीय आधार-सामग्री के रूप मे नैणसी के ग्रन्थो का उपयोग दिनो-दिन अधिकाधिक बढता जा रहा है, जो स्पष्ट ही आधुनिक काल के इतिहासकारो की नैणसी के प्रति मूक श्रद्धाजलि है।

आधार-ग्रन्थ विवरण

(१) नवीन राजस्थानी हस्तलिखित आधार-ग्रन्थ-निर्देश

श्री रघुबीर लायब्रेरी, सीतामऊ, मे पहले ही कई एक महत्त्वपूण राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित आधार-ग्रन्थ सग्रहीत थे, जैसे जोधपुर राज्य की ख्यात, कविराजा की ख्यात, राणा रासो, खुमाण रासो आदि। फरवरी, १९७४ ई० मे जालोर के वशपरम्परागत कानूनगो घराने के वतमान वशज का हराज छोगालाल मेहता, जालोर से 'जालोर परगना री विगत' की दोनो बहिया प्राप्त की गयी थी। श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ, की स्थापना के बाद इसी दिशा मे विशेष प्रयत्न किये गये। पहले श्री सीताराम लालस, जोधपुर, के पास से वणशूर महादान सग्रह की 'जोधपुर राज्य की ख्यात' प्राप्त की गयी और उसके बाद दिसम्बर, १९७६ ई० मे कविराजा बाँकीदास मुरारदान के वतमान वशज कविराजा तेजदान, जोधपुर, से समूचा 'कविराजा-सग्रह' प्राप्त कर लिया गया, जिसमे सैकडो महत्त्वपूण ऐतिहासिक आधार-ग्रन्थ सम्मिलित है, जिनकी ओर न तो इतिहास के सशोधको का ध्यान गया और न उनकी कोई छान-बीन ही हुई है।

अपने शोध-काय के सन्दभ मे यो प्राप्त किये गये कई एक हस्तलिखित ग्रन्थो की देख-भाल और गहराई तक जॉच-पडताल करने पर वे बहुत ही महत्त्वपूण और उपयोगी जान पडे। ऐसे जिन हस्तलिखित ग्रन्थो का प्रथम बार इस शोध-ग्रन्थ मे उपयोग किया जा रहा है उनके बारे मे सक्षिप्त जानकारी दी जानी अनिवाय प्रतीत होती है सो यहाँ क्रमवार दी जा रही है, जिससे भावी सशोधको का भी ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो सके।

१ **उदेभाण चापावत री ख्यात**— इस ख्यात की मूल प्रति (कविराजा सग्रह, ग्रन्थ २१६), उसकी प्रतिलिपि (कविराजा सग्रह ग्रन्थ १००, ७५, ७६), और पण्डित श्यामकरण दाधीच द्वारा किया गया उसका आशिक हिन्दी अनुवाद श्री रघुबीर लायब्रेरी, श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ, मे सग्रहीत है। हिन्दी

अनुवाद के प्रारम्भ मे लिखा है कि 'राठोडो की ख्यात, पुराणी कविराजाजी श्री मुरारदानजी के यहा से लिखी गयी। यह ख्यात कविराजा साहब के पिता को कोटवाल शेरकरणजी के समय मे एक दीवाल मे मिली थी।' कविराजा मुरारदान से प्राप्त होने के कारण ही इस ख्यात का नाम 'कविराजा की ख्यात' रखा गया और तब से यह ख्यात इसी नाम से सुज्ञात है। परन्तु उक्त ख्यात की मूल प्रति मे एक त्रुटित पत्र मिला है, जिससे ज्ञात होता है यह ख्यात राव उदयभाण चापावत की थी। अत सस्थान मे सग्रहीन इस ख्यात का नामकरण 'उदेभाण चापावत री ख्यात' कर दिया गया है।

महाराजा जसवन्तसिह की मृत्यु (१६७८ ई०) के बाद औरगजेब ने जोधपुर दुर्ग पर आक्रमण कर दिया था। उस समय राव उदयभाण चापावत ने अपने पास की इस ख्यात की रक्षा मे स्वय को असमर्थ समझकर तत्सम्बन्धी अपनी वे बहिया ब्राह्मण श्री मुक्तेश्वर भट्ट को सौंप दी। परन्तु जब शाही सेनाओ के आक्रमण के कारण मुक्तेश्वर को भी विपत्ति का सामना करना पडा, तब तो उसने उदयभाण की उस ख्यात को कही दीवाल मे छिपाकर उस पर पत्थर जडवा दिये, यो वह लगभग २०० वर्ष तक दीवाल मे ही बन्द पडी रही थी।[1]

उक्त ग्रन्थ मे राव सीहा से महाराजा जसवन्तसिह के शासनकाल मे १६५८ ई० तक का राठोड शासको का अति सक्षिप्त इतिहास प्रारम्भ मे दिया गया है। तदनन्तर राठोडो की प्राय सब ही खापो की ब्यौरेवार विस्तृत वशावलिया दी है, जिनमे लगभग सन १६७० ई० तक के मुख्य वशजो की नामावली और उनके सदर्भ मे उल्लेखनीय घटनाओ सम्बन्धी टिप्पणियाँ दी है।

इस ग्रन्थ मे वर्णित विभिन्न खाँपो की तैस्सीतोरी ने विस्तृत क्रमबद्ध सूची दी है। इस मूल ग्रन्थ की प्राप्य प्रतिलिपि मे प्रतिलिपिकार ने यत्र-तत्र उन खापो के क्रम अवश्य कुछ उलट-पलट कर दिये है।[2] यह ख्यात जोधपुर राज्य के राजनैतिक इतिहास के साथ ही जागीरदारी व्यवस्था आदि के लिए अति महत्त्वपूर्ण है।

२ **भण्डारियाँ री पोथी**—(कविराजा सग्रह ग्रन्थ ७८)—यह ग्रन्थ अठा-

---

१ मूल प्रति (कविराजा सग्रह ग्रन्थ २१६) मे प्राप्त त्रुटित पत्र की प्रतिलिपि यहाँ दी जा रही है—

'थे मारी वासावली री वहीयाँ न हमारा नामावली री भटजी श्री व्रम्ण मुगतेश्वरजी नु सुपी। राव उदेभाण चापावत सुपी। तुरकाणी को फेल जीण सु थान सुपा छाँ। थे मार पील आषा रा गुर छो। जात राठोड थासु वीरच नही। हमारी वासावली री रषत परापरा की छै सु हमारा बेटा नु वाकब कीजो जात राठोड थारी उपर री री आजीवका दीया जासी ।'

२ तस्सीतोरी जोधपुर०, भाग १, खण्ड १ क्र० १८, पृ० ५९ ६३, क्र० ८, पृ० २८ २९।

१८वी शताब्दी के मध्य की प्रतिलिपि है, परन्तु मूल ग्रन्थ की रचना १६६२ ई० की है। 'सवत् १७१६ आ रयात नरसिंघदास दीवाण रै पोथी मे लिषाणी अचल-दास जी रा दादा रै' (प० ७२ क)। इस ग्रन्थ मे मुख्यतया जसवन्तसिंह कालीन मारवाड का विस्तत विवरण दिया गया हे। जसवन्तसिंह को शाही मनसब मे प्राप्त विभिन्न परगने, सवत १७१६ और १७१७ वि० मे गुजरात के परगनो से वास्तविक आय, धरमाट के युद्ध सम्बन्धी विवरण, आदि विषयक विस्तृत जान-कारी दी गयी हे। साथ ही सिरोही राज्य का भी विस्तृत विवरण इसमे दिया गया है। सिरोही के चौहानो और पारकर के सोढो का विवरण नैणसी की रयात० से पूणतया मिलता है। नैणसी की रयात० के विवरण की प्रामाणिकता की जाच करने और नैणसी कालीन मारवाड की प्रशासकीय व्यवस्था और आर्थिक स्थिनि की जानकारी के लिए यह पोथी बहुत ही उपयोगी हे। इस ग्रन्थ मे नैणसी की ख्यात० की ही भॉति आधार-स्रोतो का भी उल्लेख किया गया है। यथा—'आ साचोर रा सॉसणा री रयात लूणीयाहुण रै मीसण जगमालजी चीतलवाणा री पीढीया सहित मडाई छै'(प० ७ ख), 'थावलारा परगना सू चारण धधवाडियौ हरीदास आयो तिण आ वात कही' (प० ८ क), 'प्रोयत तुलछीदास भण्डारियॉ री पोथी मे उतराई' (प० २६ क), 'सीधला री पीढीया आसियै जसै मडाई' (प० ३६ ख), 'पारकर री वात रतनू जीवाजी रे लिषाई' (प० ३९ क)आदि। इसी प्रकार उसमे कई एक समकालीन पट्टो, परवानो और कागज-पत्रो की प्रति-लिपिया भी दी है। अत मारवाड और सिरोही का विस्तृत और प्रामाणिक विवरण है। साथ ही जालोर, साचोर परगनो तथा सीधल और सोढा खापो का भी सक्षिप्त विवरण दिया गया है। इसमे प्रतिलिपिकर्ता ने बाद मे अनेक स्फुट बाते भी जोड दी जिन पर प्रतिलिपिकर्ता के ही शब्दो मे उसकी व्यक्तिगत टिप्पणियाँ भी पठनीय है, जैसे 'आ वातॉ री ष्यात है। साच थोडौ ने भूट घणो है वाता मे' (प० ५३ क)।

३ **राठोडाँ री ख्यात**—(कविराजा सग्रह ग्रन्थ ७२)—ग्रन्थ मे प्राप्य विवरण के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इसकी रचना अथवा सकलन १६८० ई० मे पूण हो गया था, परन्तु बाद मे १७१० ई० तक का विवरण भी उसमे जोड दिया गया जान पडता है, क्योकि १६८० ई० के बाद की जानकारी बहुत सक्षिप्त ही दी है। उक्त ग्रन्थ मे राव सीहा से राव रिणमल तक का विवरण सक्षिप्त ही है और राव जोधा से जसवन्तसिंह की मृत्यु तथा बाद की, १६८० ई० तक, घटनाओ का विस्तृत विवरण दिया गया है। जोधपुर के विभिन्न शासको की रानियो तथा उनकी सतानो और उनके द्वारा सासण मे दिये गये गावो आदि का भी विस्तार से वणन दिया है। महाराजा जसवन्तसिंह कालीन विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियो का विवरण दिया है जिससे तत्कालीन

प्रशासनिक व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश पडता है। इसके अतिरिक्त इस ख्यात मे राठोडो की वशावली प्रारम्भ से जसवन्तसिंह तक, बीकानेर के शासको की वशावली प्रारम्भ से अनोपसिंह तक, मेवाड के राजाओ की वशावली महाराणा जयसिंह तक, कछवाहो की वशावली राजा बिशनसिंह तक, भाटियो की वशावली सबलसिंह तक तथा साथ मे बाघेलो, जाडेचो और हाडो की वशावलियाँ भी दी हुई है। अन्त मे रामपुरा के चन्द्रावतो, देवलिया के सीसोदियो और ईडर के राठोडा का सक्षिप्त विवरण भी दे दिया गया है। यह ख्यात न केवल मारवाड बल्कि राजस्थान के इतिहास के लिए भी एक महत्त्वपूण और उपयोगी ग्रन्थ है, जिसका अब तक कोई इतिहासकार उपयोग नही कर पाया है।

४ **राठोडाँ री ख्यात व वशावली**[1]—(कविराजा सग्रह ग्रन्थ ७४)—ग्रन्थ के प्रारम्भ मे रायसिंह (बीकानेर) की प्रशसा के गीत, तदनन्तर गुण जोधायण के कवित्त और राव जोधा सम्बन्धी विवरण दिया गया है। उसके बाद राठोडो की वशावली आदिनारायण से सीहा सेतरामोत तक दी है। सीहा सेतरामोत से महाराजा जसवन्तसिंह के समय मे १६७६ ई० तक के मारवाड के शासको का विस्तृत विवरण दिया गया है। राव गाँगा के बाद के विवरण मे सही क्रम टूट गया है, जो सभवत प्रतिलिपिकार की असावधानी के ही कारण हुआ होगा। राठोडो की विभिन्न खापो की पीढिया भी दी गयी हैं और साथ ही विशिष्ट व्यक्तियो की प्रमुख घटनाओ का उल्लेख कर दिया गया है जिससे तत्कालीन जागीरदारी व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश पडता है। उक्त ग्रन्थ मे बीका से राव करणसिंह सूरसिंहोत तक के बीकानेर के शासको का भी सक्षिप्त विवरण दिया गया है, इसमे प्रसगवश उल्लेख है कि 'पटा वालाँ नू पटौ दियो दूजा नू रोकड दैणी सरु कीवी रोज रु० २) सिरदार नैं अर ।।) घोडा रा सवार नैं अर।) पाला नैं दैण लागा।' (प० ५८ क) इस उल्लेख से उस समय की राजकीय सैनिक व्यवस्था पर नवीन प्रकाश पडता है।

इस ग्रन्थ के अन्त मे उमरावो की ख्यात दी गयी है, जिसमे चापावतो का सवत् १६२५ वि० (१८६८ ई०) तक का सक्षिप्त विवरण दिया गया है। स्पष्टत यह विवरण प्रतिलिपिकार ने ही जोडा है, जिससे ज्ञात हो जाता है कि इस ख्यात की यह प्रतिलिपि १६वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे तैयार हुई थी। परन्तु मूल ख्यात की रचना १६७६ ई० मे ही पूण हो चुकी थी।

इस ग्रन्थ मे मारवाड के राठोड शासको का विवरण अन्य सभी समकालीन ख्यातो से अधिक विस्तार से दिया गया है। जोधा के पूव का विवरण तब प्रचलित कथानको के आधार पर ही लिखा गया है, परन्तु जोधा के बाद का सारा विवरण

---

१ तैस्सीतोरी जोधपुर०, भाग १ खण्ड १, क्र० ६, प० २६ ३३।

अधिक प्रामाणिक और विश्वसनीय है। अत नैणसी की ख्यात० और विगत० मे वर्णित राठोडो के इतिहास की प्रामाणिकता की जाँच के लिए यह ग्रन्थ उपयोगी हे। साथ ही इसमे नैणसी की पोहकरण पर चढाई सम्बन्धी विवरण भी दिया गया हे। इस ग्रन्थ स राजपूतो मे वहुपत्नी विवाह प्रथा, सती प्रथा और जनानी डयोढी परम्परा सम्बन्धी उपयोगी जानकारी मिलती है।

५ **पीढियाँ फुटकर**—(कविराजा सग्रह ग्रन्थ २१७)—तैस्सीतोरी के अतिरिक्त अन्य किसी ने अब तक इस ग्रन्थ की देख-भाल भी नही की है।[1] इस ग्रन्थ की रचना १७वी शताब्दी के मध्य मे हुई। यह ग्रन्थ नैणसी के समय मे ही तैयार किया गया।

वतमान मे इस ग्रन्थ के प्रारम्भिक ६८ पत्र अप्राप्य है और प्राप्य पत्रो मे से कुछ पत्र त्रुटित भी हे। इस ग्रन्थ मे मेवाड के राणा मोकल (मोकल के पूव का विवरण अप्राप्य) से राणा जगतसिह तक का तथा डूगरपुर, वासवाडा ओर रामपुरा समरसी और राव दुर्गा तक का विवरण सक्षेप मे दिया गया है। जैसलमेर के भाटियो का विवरण कुछ विस्तार मे दिया हे। इसके अतिरिक्त हूल (गुहिलोत), भायलो (पँवार), चीबो और निरवाणो (चौहानो) का भी सक्षिप्त विवरण है। इसम दिये गये प्रारम्भिक विवरण को छोडकर बाकी सारा विवरण प्रामाणिक हे। सक्षिप्त होते हुए भी यह ग्रन्थ नैणसी की ख्यात० मे प्रस्तुत विवरण की जाच के लिए उपयोगी है।

६ **राठोडाँ री ख्यात**—(कविराजा सग्रह ग्रन्थ १११)—इस ग्रन्थ मे राव सीहा से महाराजा जसवन्तसिह के शासनकाल मे १६५८-५९ ई० तक का मारवाड राज्य का सक्षिप्त इतिहास दिया हे (प० ३८७ क-४०४ क)। नैणसी का पोहकरण पर आक्रमण और अन्य जानकारी भी मिलती है। यह ग्रन्थ मारवाड राज्य के इतिहास के साथ ही राजपूत समाज की कुछ विशेषताओ पर भी कुछ प्रकाश डालता है।

इस ख्यात मे १६५८-५९ ई० के बाद की किसी घटना का उल्लेख नही मिलता हे। अत यह नि सकोच कहा जा सकता है कि उक्त समय तक इसका लेखन-काय पूरा हो गया था। प्रतिलिपिकर्ता स्वय ने लिखा है कि 'आ ष्यात कितीक तौ ठाह बँध लिषाणी है ने कितीक इस्तविस्त वेठाह लिषाणी है। पोथी रा जूनाँ पाना था सो आघा पाचा होय गया, जिण सू वेठाह घणी लिषाणी है' (प० ३९४ क)। वतमान मे उपलब्ध प्रतिलिपि महाराजा मानसिह, जोधपुर के शासनकाल के अन्तिम समय की है। कविराजा सग्रह ग्रन्थ स० १११ मे एकाधिक ख्यातो तथा फुटकर बातो और काव्य की प्रतिलिपिया है उनमे से एक यह

---

१ तैस्सीतोरी जोधपुर०, भाग १, खण्ड १, क्र० २० प० ६६ ६९।

ख्यात है।

७ **गुरॉं मोतीचन्दजी री पोथी**--(कविराजा सग्रह ग्रथ स० १११, प० ४०५ क-४१६ ख, १२० क-१३४ ख) इस पोथी मे राजा धरमबिम्ब स महाराजा अजीतसिह १७०८ ई० तक के मारवाड राज्य का ऐतिहासिक विवरण है। सीहा तथा उसके पूव का विवरण पूणतया काल्पनिक ही है। सीहा से गागा तक अति सक्षिप्त उल्लेख है। राव मालदेव से अजीतसिंह तक का विवरण विस्तार से दिया है, उसमे भी राव मालदेव, महाराजा जसवतसिह और अजीतसिंह का वणन अधिक विस्नार से दिया गया है। इस ग्रन्थ मे नैणसी के विभिन्न सैनिक अभियानो, प्रशासनिक सेवाओ, पदच्युत किया जाना और वन्दी वनाया जाना और अन्त मे आत्महत्या सम्बधी जानकारी मिलती है। यह ग्रथ मारवाड की १७वी सदी की प्रशामकीय व्यवस्था और आर्थिक स्थिति पर भी प्रकाश डालना है।

१७०८ ई० म इस ग्रथ का लेखन बद हो गया। अत उस समय ही यह तैयार किया गया होगा। उपलब्ध प्रतिलिपि महाराजा मार्नामह के शामनकाल के अतिम वर्षों की है।

८ **राठोडाँ री वशावली**—(कविराजा सग्रह ग्रथ स० ३६)– प्रारम्भ मे कुछ पौराणिक विवरण दिया गया हे। तदनन्तर मारवाड के शासक राव सीहा से रामसिह तक की वशावली दी गयी हे। राव मीहा से अजीतसिह तक मारवाड के शासको का सक्षिप्न इतिहास और उनके पुत्रो का विस्तत विवरण दिया है। अजीतसिह मे विजयमिह तक का भी सक्षेप मे उल्लेख कर दिया गया है। साथ ही राठोडो की विभिन्न खापो की पीढिया १८३६ ई० तक दी हुई है। बीकानेर के राव बीका से अनोपसिंह तक का सक्षिप्न विवरण दिया गया ह। इम ग्रन्थ मे जाडेचो का भी विवरण हे। जालोर परगने का १६५६ ई० से १६७३ ई० तक का विस्तृत विवरण दिया गया है। प्रत्येक गाव की रेख, पट्टेदारा के गाव तथा सामण गावो का विवरण दिया हे। परगना मे निवास करने वाली जातिया तथा प्रजा से लिये जाने वाले करा का उल्लेख हैं।

इस ग्रन्थ के जालोर परगने के विवरण मे लिखा है कि 'कसबै जालौर महलयान री गढ री हकीकत सवत् १७१५ रा असाढ सुद १३ दिन लिपी' (प० १७ ख)। इससे अनुमान होता है कि ग्रथ की सामग्री सकलन का काय १६५६ से १६७३ ई० तक होता रहा। यो मूल ग्रथ १७वी सदी म ही तैयार किया गया था। १८वी शताब्दी के मध्य मे जब प्रतिलिपि तैयार की गयी तब प्रतिलिपिकर्ता ने मूल पाठ के साथ कुछ अन्य विवरण भी जोड दिया ह। परन्तु इमसे ग्रथ की प्रामाणिकता और महत्त्व कम नही होता है।

६ **'जोधपुर राज्य की ख्यात'—वणशूर महादान सग्रह**—इस ग्रन्थ का

उल्लेख तैस्सीतोरी ने किया है।[1] तब यह ग्रन्थ वणशूर महादान के सग्रह मे उपलब्ध था। इस ख्यात मे मारवाड राज्य का राव सीहा से महाराजा तखतसिंह (१८८३ ई०) तक का इतिहास दिया गया है। तखतसिंह के विवरण मे केवल उसकी सन्तानो का ही उल्लेख है। साथ ही जोधपुर के राजाओ की जन्म-पत्रियाँ, खरीतो, परवानो और पत्रो की प्रतिलिपियाँ भी दी गयी है। विभिन्न शहरो की स्थापना सम्बन्धी उल्लेख और मारवाड मे सासण गावो का विवरण दिया गया है। यद्यपि यह ग्रन्थ १९वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे तैयार किया गया था, परन्तु इसमे विभिन्न प्राचीन आधार-सामग्री का उपयोग किया गया है। जैसे राव अमर-सिंह के विवरण के अन्त मे लिखा है 'ओ साको मुता भेरवदास री पोथी परमाणे लीषीयो छे १७०३ रा फा० री लीषी थी लीण परमाणे तीलोकमलजी री पोथी सु लीषी' (प० ६ ख)। अत राव जोधा तथा उसके बाद का विवरण प्रामाणिक और विश्वसनीय ही है। जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह विषयक किसी अज्ञात लेखक द्वारा विशेष रूपेण रचित 'अजीत विलास' अथवा 'महाराजा अजीतसिंह जी री ख्यात' का सम्पूण मूल पाठ (प० ७७ क-१२१ क) भी इसी हस्तलिखित ग्रन्थ मे प्राप्य है। नैणसी के जीवन कार्यो के बारे मे भी कुछ विशेष जानकारी मिलती है। साथ ही मारवाड के राजनैतिक इतिहास के अतिरिक्त प्रशासकीय और सामाजिक जीवन सम्बन्धी भी पर्याप्त जानकारी मिलती है।

१० **जालोर परगना री विगत (छोटी और बडी)**---जालोर परगने के वश परम्परागत कानूनगो कान्हराज छोगालाल मेहता से ये दोनो बहियाँ, एक छोटी और दूसरी बडी, १९७४ ई० मे डॉ० रघुबीर ने प्राप्त की थी। वतमान मे ये दोनो बहियाँ, श्री नटनागर शोध-सस्थान मे सग्रहीत है। 'इण्डियन काउसिल ऑफ हिस्टारिकल रिसच, नयी दिल्ली, के लिए डॉ० रघुबीरसिंह के निदेशन मे 'जालोर परगना री विगत' के शीषक से उनका सम्पादन किया जा चुका है।

ये दोनो बहिया १६३६-३७ ई० के बाद उपलब्ध सामग्री के आधार पर १६६२ ई० मे तैयार की गयी थी। तब वहाँ का हाकिम मियाँ फरासत था। मूल बहियो की प्रतिलिपिया सन् १७११-१२ ई० मे तैयार की गयी थी, तब मूल पाठ के साथ कुछ और विवरण भी जोड दिये गये थे। वतमान मे उपलब्ध बहियाँ १८७२ ई० की प्रतिलिपिया है।

जालोर परगने की ये दोनो विगते (बहियाँ) भी 'मारवाड रा परगना री विगत' मे सग्रहीत अन्य परगनो की विगतो के समान ही हैं। जालोर परगने का सक्षिप्त इतिहास, १६४७ ई० से १६७७ ई० तक के काल मे जालोर परगने के प्रत्येक गाँव से प्राप्त राजस्व के आँकडे तथा जालोर परगना के गाँवो का

---

१ तैस्सीतोरी जोधपुर०, भाग १, खण्ड १, क्र० ५, पृ० १६ २१।

ब्यौरेवार वणन दोनो ही विगतो मे दिया गया है। जालोर नगर से प्रत्येक गाव की दूरी और दिशा, गाँव मे निवास करने वाली प्रमुख जातियो के नाम गॉव के पट्टेदार, गाव मे सिचाई के साधन आदि की जानकारी भी यथासम्भव दे दी गयी है। तत्कालीन जालोर नगर का विस्तृत विवरण भी दिया गया है। जालोर परगना मे लगने वाले विभिन्न करो का भी उल्लेख किया गया है। उक्त दोनो विगते मारवाड राज्य के १७वी शताब्दी मे राजनैतिक, सामाजिक, प्रशासकीय तथा आर्थिक इतिहास के लिए एक पूरक आधार-ग्रन्थ के रूप मे विशेष महत्त्वपूण और उपयोगी है।

(२) आधार-ग्रन्थ सूची

१ समकालीन तथा अन्य प्राथमिक ग्रन्थ

(अ) पुरालेखीय सामग्री—राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

१ 'तवारीख हकूमत मेडता', जोधपुर अपुरालेखीय बस्ता न० ५३ ग्रन्थाक ७ मे सन १९१५ मे मेडता के तत्कालीन कानूनगो द्वारा मेडता का तैयार किया गया ऐतिहासिक विवरण।

(ब) राजस्थानी-हस्तलिखित ग्रन्थ

(ये सब ही ग्रन्थ श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ, के आधीन श्री रघुबीर लायब्रेरी मे सग्रहीत हैं)

१ 'उदेभाण चापावत री ख्यात', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या १००, ७५, ७६।

२ 'गुरा मोतीचन्द री पोथी', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या १११।

३ जयपुर के कछवाहो की वशावली।

४ 'जोधपुर राज्य की ख्यात', भाग १-४, इस ख्यात के प्रथम भाग मे प्रारम्भ से महाराजा जसवन्तसिंह (१६७८ ई०) तक का जोधपुर के राठोडो का विस्तृत इतिहास दिया गया है, जिसका सम्पादन इण्डियन काउसिल ऑफ हिस्टारिकल रिसच, नयी दिल्ली, के लिए डॉ० रघुबीरसिंह के निर्देशन मे मैने किया है।

५ 'जोधपुर राज्य की ख्यात' (वही)—मूलत वणशूर महादान सग्रह की प्रति।

६ 'जोधपुर हुकूमत री बही', ठाकुर केशरीसिंह, खीवसर, की प्रति की प्रतिलिपि (१९६० ई०)। प्रकाशित ग्रन्थ मे पायी जाने वाली

सम्पादको की भूलो और छापाखाने की अशुद्धियो के लिए इस मूल प्रति को भी देखना आवश्यक हे ।

७ 'जालोर परगना री विगत' (छोटी बही) ।

८ 'जालोर परगना री विगत' (बडी बही) ।

९ 'दयालदास री ख्यात', भाग १-२, दयालदास सिढायच कृत ।

१० 'फुटकर ख्यात', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या ६ ।

११ 'फुटकर पीढियाँ', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या २१७ ।

१२ 'बुन्देलो की वशावली' (टकित प्रति) ।

१३ 'भडारिया री पोथी', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या ७८ ।

१४ 'मुदियाड री ख्यात', प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर मे सग्रहीत प्रति की प्रतिलिपि ।

१५ 'मुँहता नैणसी री ख्यात', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या १४० । यह प्रति भी वीठू पना की लिखी हुई प्रतिलिपि हे ।

१६ 'राठोडा री ख्यात', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या १११ ।

१७ 'राठोडा री ख्यात', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या ७२ ।

१८ 'राठोडा री ख्यात व वशावली', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या ७४ ।

१९ 'राठोडा री वशावली', कविराजा सग्रह ग्रन्थ सख्या ३९ ।

२० राठोडा री वशावली', उक्त ग्रन्थ मे राव सीहा से महाराजा मानसिंह तक का राठोडो का इतिहास है । बालमुकुन्द खीची, जोधपुर, से प्राप्त प्रति की टकित प्रति जिसमे प्रारम्भ से अजीतसिंह तक का ही इतिहास है ।

(स) प्रकाशित सस्कृत-राजस्थानी-हिन्दी ग्रन्थ

१ 'कविप्रिया', श्री केशवदास कृत, टीकाकार—सरदार कवीश्वर, लखनऊ, १८८६ ई० ।

२ 'कवि बाहादर और उसकी रचनाएँ', सम्पादक—भूरसिंह राठोड, १९७६ ई० ।

३ 'गजगुण रूपक-बन्ध', केसोदास गाडण कृत, सम्पादक—सीताराम लालस ।

४ 'जोधपुर हुकूमत री बही' (मारवाड अडर जसवन्तसिह), सम्पादक —सतीशचन्द्र, रघुबीरसिंह, जी० डी० शर्मा, मेरठ, १९७६ ई० ।

५ 'प्रबन्ध चिन्तामणि', श्री मेरुतुगाचाय विरचित, सम्पादक—जिन-विजय मुनि, भाग १, बगाल, १९८७ वि० ।

६ 'बाकीदास री ख्यात', सम्पादक—नरोत्तम स्वामी, राजस्थान पुरा-

तत्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर।

७ 'मारवाड के अभिलेख', डॉ० माँगीलाल व्यास कृत।

८ 'मारवाड रा परगना री विगत', सम्पादक—डॉ० नारायणसिंह भाटी, भाग १-३, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

९ 'मुहणोत नैणसी की ख्यात', रामनारायण दूगड कृत हिन्दी अनुवाद, भाग १-२, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

१० 'मुँहता नैणसी री ख्यात', स० बदरीप्रसाद साकरिया, भाग १-४, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

११ 'राठौड वंश री विगत एवं राठोडा री वंशावली', राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, १९६८ ई०।

१२ 'श्री यतीन्द्र विहार-दिग्दर्शन', श्री यतीन्द्र विजय रचित, भाग १ (१९२९ ई०) में उद्धृत जालोर के लेख।

(द) फारसी-ग्रन्थ तथा उनके अनुवाद

१ 'अकबरनामा', अबुल फजल कृत, बेवरीज कृत अंग्रेजी अनुवाद, भाग १-३, (बिब० इण्डिका), कलकत्ता।

२ 'आईन-इ-अकबरी', अबुल फजल कृत, ब्लाकमन और जेरेट कृत, अंग्रेजी अनुवाद, भाग १-३ (द्वितीय संस्करण), (बिब० इण्डिका), कलकत्ता।

३ 'आलमगीरनामा', मुहम्मद काजिम कृत (बिब० इण्डिका)।

४ 'खजाइनुल फुतुह', अमीर खुसरो कृत, मुहम्मद हबीब कृत अंग्रेजी अनुवाद, बम्बई, १९३१ ई०।

५ 'खलजी कालीन भारत', सैयद अतहर अब्बास रिजवी कृत हिन्दी अनुवाद, अलीगढ, १९५५ ई०।

६ 'जहांगीर का आत्मचरित (जहाँगीरनामा)', हिन्दी अनुवादक—ब्रजरत्नदास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

७ 'तबकात-इ-अकबरी', निजामुद्दीन अहमद कृत, अंग्रेजी अनुवाद बी० डे० कृत, भाग १-३ (बिब० इण्डिका), कलकत्ता।

८ 'तारीख-इ-दिलकशा', भीमसेन कृत, अंग्रेजी अनुवादक—सर यदुनाथ सरकार आदि, सम्पादक—वी० जी० खोब्रेकर, १९७२ ई०।

९ 'तारीख-इ-फरिश्ता', फरिश्ता कृत, जान ब्रिग्ज कृत अंग्रेजी अनुवाद, भाग १-४, १८२९ ई०।

१० 'तारीख-इ-शेरशाही', अब्बास खा सरवानी कृत, ब्रह्मदेव प्रसाद अम्बष्ठ कृत अंग्रेजी अनुवाद, पटना, १९७४ ई०।

११ 'तुजुक-ई-जहागीरी', जहाँगीर कृत, रोजर्स और बेवरिज कृत अंग्रेजी अनुवाद, भाग १-२ (द्वितीय सस्करण), १९६८ ई० ।

१२ 'पादशाहनामा', अब्दुल हामिद लाहोरी कृत, भाग १-२ (बिब० इण्डिका), कलकत्ता ।

१३ 'पादशाहनामा', मुहम्मद वारिस कृत (हस्तलिखित), श्री रघुबीर लायब्रेरी, श्री नटनागर शोध-सस्थान, मे सग्रहीत ।

१४ 'फुतूहात-इ-आलमगीरी', ईश्वरदास नागर कृत (हस्तलिखित प्रति), श्री रघुबीर लायब्रेरी, श्री नटनागर शोध-सस्थान, सीतामऊ, मे सग्रहीत ।

१५ 'मआसीर-इ-आलमगीरी', मुस्तैदखान कृत, सर यदुनाथ सरकार कृत अंग्रेजी अनुवाद, कलकत्ता, १९४७ ई० ।

१६ 'मआसिरुल-उमरा', शाहनवाज खा कृत, हिन्दी अनुवादक—व्रज-रत्नदास, भाग १-५, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

१७ 'मीरात-इ-अहमदी', अली मुहम्मदखान कृत, अंग्रेजी अनुवादक—एम० एफ० लोखण्डवाला, १९६५ ई० ।

१८ 'मीरात-इ-सिकन्दरी', मजु कृत, अंग्रेजी अनुवादक—फजलुल्लाह लुत्फुल्लाह फरीदी ।

१९ 'मुन्तखबुत-तवारीख', अब्दुल कादिर इब्न मुल्क शाह (अलबदायूनी) कृत, रेंकिंग, लो और हेग कृत अंग्रेजी अनुवाद, भाग १-३ (बिब० इण्डिका), कलकत्ता ।

२० 'शाहजहाँनामा', सम्पादक—डॉ० रघुबीरसिंह और मनोहरसिंह राणावत, मैकमिलन कम्पनी लि०, नयी दिल्ली, १९७५ ई० ।

२१ 'सूरवश का इतिहास', डॉ० शिव बिन्देश्वरीप्रसाद निगम कृत हिन्दी अनुवाद, भाग १ ।

२२ 'स्टडीज इन इण्डो-मुस्लिम हिस्ट्री', एस० एस० होडीवाला कृत, भाग १-२ ।

२३ 'हिस्ट्री ऑफ इण्डिया इज टोल्ड बाई इट्स आन हिस्टोरियन', इलियट और डासन कृत, भाग ३-७ ।

२ आधुनिक ग्रन्थ

(अ) हिन्दी

१ 'उदयपुर राज्य का इतिहास', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत, भाग १-२ ।

२ 'ओझा निबन्ध सग्रह', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत, भाग १-४।

३ 'ओसवाल जाति का इतिहास', सुखसम्पत राय भण्डारी, चन्द्रराज भण्डारी, कृष्णलाल गुप्त आदि कृत।

४ 'कूपावत राठोडो का इतिहास', राव शिवनाथसिंह कृत।

५ 'कोटा राज्य का इतिहास', मथुरालाल शर्मा कृत, भाग १-२।

६ 'चूरू मण्डल का शोधपूण इनिहास', गोविन्द अग्रवाल कृत।

७ 'जोधपुर राज्य का इतिहास', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत, भाग १-२।

८ 'जोधपुर राज्य का इतिहास', डॉ० माँगीलाल व्यास कृत, १९७५ ई०।

९ 'डूगरपुर राज्य का इतिहास', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत।

१० 'तवारीख जैसलमेर', नथमल मेहता कृत।

११ 'प्रतापगढ राज्य का इतिहास', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत।

१२ 'पृथ्वीराज रासो—इतिहास और काव्य', डॉ० राजमल बोरा कृत।

१३ 'पूव आधुनिक राजस्थान', डॉ० रघुबीरसिंह कृत।

१४ 'बीकानेर राज्य का इतिहास', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत, भाग १-२।

१५ 'बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास', गोरेलाल तिवारी कृत, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

१६ 'महाराणा प्रताप', डॉ० रघुबीरसिंह कृत।

१७ 'महाराजा जसवन्तसिंह और उसका काल', डॉ० निमलचन्द्र राय कृत।

१८ 'मध्यकालीन भारतीय सस्कृति', डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत, १९२८ ई०।

१९ 'मारवाड का इतिहास', प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत, भाग १-२।

२० 'मारवाड राज्य का इतिहास', जगदीशसिंह गहलोत कृत।

२१ 'मारवाड का सक्षिप्त इतिहास', प० रामकरण आसोपा कृत।

२२ 'मारवाड का शौयंयुग', डॉ० साधना रस्तोगी कृत।

२३ 'राजस्थान की जातिया', प्रस्तुतकर्ता—बजरगलाल लोहिया।

२४ 'राजस्थानी भाषा और साहित्य', डॉ० हीरालाल माहेश्वरी कृत, कलकत्ता, १९६० ई०।

२५ 'राजस्थानी सबद कोस', डॉ० सीताराम लालस द्वारा सम्पादित, भाग १-४।

२६ 'वीर विनोद', कविराजा श्यामलदास कृत, भाग १-२ ।
२७ 'शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार', सम्पादक—मनोहरसिंह राणावत, जोधपुर ।
२८ 'सिरोही राज्य का इतिहास', डा० गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत ।
२९ 'सोलहवी सदी मे राजस्थान', सम्पादक—मनोहरसिंह राणावत, अजमेर ।
३० 'हिन्दू राज्य तन्त्र', काशीप्रसाद जायसवाल कृत ।
३१ 'क्षत्रिय जाति की सूची', सकलनकर्ता—ठाकुर बहादुरसिंह कृत, बीदासर ।

(ब) अंग्रेजी

१ 'अकबर द ग्रेट', विंसेण्ट स्मिथ कृत (द्वितीय सस्करण) ।
२ 'अर्ली चौहान डायनेस्टीज', डॉ० दशरथ शर्मा कृत ।
३ 'इण्डिया एज नोन टु पाणिनी', वासुदेवशरण अग्रवाल कृत ।
४ 'एग्रेरियन सिस्टम आफ मुगल इण्डिया', इर्फान हबीब कृत, १९६३ ई० ।
५ 'एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान', कनल जेम्स टाड कृत, भाग १-३ (आक्सफोड सस्करण) ।
६ 'चौलुक्याज ऑफ गुजरात', अशोक मजूमदार कृत ।
७ 'दुर्गादास राठोड', डॉ० रघुबीरसिंह कृत ।
८ 'प्राविंशियल गवनमेण्ट ऑफ द मुगल्स', डॉ० परमात्माशरण कृत (द्वितीय सस्करण) ।
९ 'ब्रीफ फेमिली हिस्ट्री ऑफ मुहणोत्स्', (अप्रकाशित) टकित प्रतिलिपि श्री बदरीप्रसाद साकरिया के सौजन्य से प्राप्त ।
१० 'मनसबदारी सिस्टम एण्ड द मुगल आरमी', पुनर्मुद्रित, १९७२ ई० ।
११ 'मारवाड एण्ड द मुगल इम्परस', विश्वस्वरूप भागव कृत ।
१२ 'मुगल एडमिनिस्ट्रेशन', सर यदुनाथ सरकार कृत (चौथा सस्करण), १९५२ ई० ।
१३ 'मेडीवल मालवा', उपेन्द्रनाथ डे कृत ।
१४ 'राजपूत पॉलिटी' (ए स्टडी ऑफ पॉलिटिक्स एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द स्टेट ऑफ मारवाड, १६३८-१७४८), डॉ० घनश्यामदत्त शर्मा कृत, नयी दिल्ली, १९७७ ई० ।
१५ 'राजस्थान थ्रू द एजेज', प्रधान सम्पादक—डॉ० दशरथ शर्मा, भाग-१ ।

१६ 'नेक्चस आन राजपूत हिस्टी', डॉ० दशरथ शर्मा कृत, दिल्ली, १६७० ई० ।
१७ लेण्ड रेवेन्यू अण्डर द मुगल्स्', डॉ० नोमान अहमद सिद्दीकी कृत ।
१८ 'शेरशाह सूर एण्ड हिज टाइम्स्', डॉ० कालिकारजन कानूनगो कृत (द्वितीय सस्करण) ।
१६ 'स्टडीज इन राजपूत हिस्ट्री', डॉ० दशरथ शर्मा कृत, दिल्ली, १६७० ई० ।
२० 'सेण्ट्रल स्ट्रक्चर ऑफ द मुगल एम्पायर', इब्नहसन कृत, १६३६ ई० ।
२१ 'हिस्ट्री ऑफ औरगजेब', सर यदुनाथ सरकार कृत, भाग १-३ ।
२२ 'हिस्ट्री ऑफ द खलजीज', किशोरीशरण लाल कृत, इलाहाबाद, १६५० ई० ।
२३ 'हिस्ट्री ऑफ जयपुर स्टेट', (अप्रकाशित) सर यदुनाथ सरकार कृत ।
२४ 'हिस्ट्री ऑफ जहागीर', डॉ० बेनीप्रसाद कृत ।
२५ 'हिस्ट्री ऑफ शाहजहा ऑफ देहली', डॉ० बनारसीप्रसाद सक्सेना कृत, इलाहाबाद, १६३२ ई० ।

(स) कैटेलॉग, गजेटियर, जनल और पत्रिकाएँ आदि

१ कैटेलॉग ऑफ द राजस्थानी मेन्यूस्क्रिप्टस इन द अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर, १६४७ ई० ।
२ डिस्क्रिप्टिव कैटेलॉग ऑफ बार्डिक एण्ड हिस्टारिकल मेन्यूस्क्रिप्ट्स, डॉ० एल० पी० तैस्सीतोरी कृत, भाग १, खण्ड १ (जोधपुर स्टेट), १६१७ ई० ।
३ डिस्क्रिप्टिव कैटेलॉग ऑफ बार्डिक एण्ड हिस्टारिकल मेन्यूस्क्रिप्ट्स, डॉ० एल० पी० तैस्सीतोरी कृत, भाग २, खण्ड १ (बीकानेर स्टेट), १६१८ ई० ।
४ हिन्दो-राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थो की सूची, साहित्य सस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर ।
५ ओरछा स्टेट गजेटियर, १६०७ ई० ।
६ गजेटियर ऑफ द बीकानेर स्टेट, कैप्टन पाउलेट कृत (१८७४ ई०), पुनर्मुद्रित, १६३२ ई० ।
७ गजेटियर ऑफ द बाम्बे प्रेसिडेन्सी, प्रधान सम्पादक—जेम्स एम० केम्बल, (१८७७-१६०४ ई०) ।
८ राजपूताना गजेटियर, भाग २-३, इलाहाबाद, १६०६ ई० ।

९ इण्डियन एण्टिक्वेरी।
१० जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसायटी ऑफ बगाल, कलकत्ता।
११ प्रोसिडिंग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कॉंग्रेस।
१२ प्रोसिडिंग्स ऑफ राजस्थान हिस्ट्री काग्रेस।
१३ अहिल्या स्मारिका, खासगी ट्रस्ट, इन्दौर, १९७७ ई०।
१४ जैन सत्य प्रकाश, वष ५, अक १२।
१५ परम्परा (त्रैमासिक), राजस्थानी शोध-सस्थान, चौपासनी, जोधपुर।
१६ वरदा (त्रैमासिक), राजस्थान साहित्य समिति बीसाऊ, राजस्थान।
१७ शोध-पत्रिका (त्रैमासिक), साहित्य सस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर।
१८ हिन्दुस्तानी (त्रैमासिक), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद।